शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा

(हैदरा ाद विश्वविद्यालय की पीए ा.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्र ंध)

2012

शोधार्थी

के.श्रीलता

07HHPH09

विभागाध्यक्ष

प्रो.रवि रं ान

हिंदी विभाग,
मानविकी संकाय,
हैदरा ाद विश्वविद्यालय,
हैदरा ाद - 500 046

निर्देशक

डॉ.एम.श्याम राव

हिंदी विभाग,
मानविकी संकाय,
हैदरा ाद विश्वविद्यालय,
हैदरा ाद - 500 046

DEPARTMENT OF HINDI
School of Humanities,
University of Hyderabad,
Hyderabad – 500 046.

Date: . .20 .

This is to certify that I, K.SRILATHA, have carried out the research embodied in the present thesis entitled "**SHEKAR JOSHI KI KAHANIYON KA SAMAY AUR SAMAJ**", for the full period prescribed under Ph.D. ordinances of the University of Hyderabad.

I declare to the best of my knowledge that no part of this thesis was earlier submitted for the award of research degree of any University.

(Signature of the Candidate)
Name: **K.SRILATHA**
Enrolment No.:07HHPH09

(Supervisor's Signature)
Dr.M.SHYAM RAO

Head, Department of Hindi

Dean, School of Humanities.

परम श्रद्धेय

पू य पिता ी

को

सादर समर्पित

अनुक्रमणिका

शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा

पृ.सं.

भूमिका *I-III*

प्रथम अध्याय *1-9*

शेखर ोशी : व्यक्तित्व और कृतित्व

द्वितीय अध्याय *10-93*

शेखर ोशी की कहानियों का कथ्य और शिल्प

2.1 कथ्य

2.1.1 मध्यवर्ग

2.1.2 पहाड़ ीवन पर केंद्रित कहानियाँ

2.1.3 औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ

2.1.4 अकेलापन

2.1.5 बदलते ीवन मूल्य

2.1.6 आधुनिक समा ा

2.2 शिल्प

2.2.1 शब्द प्रयोग

2.2.1.1 मुहावरे एवं कहावतों का प्रयोग

2.2.1.2 ि ात्रात्मक भाषा

2.2.1.3 विषयानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा

2.2.1.4 प्रतीकात्मक भाषा

2.2.1.5 व्यंग्यात्मक भाषा

2.2.1.6 भावात्मक भाषा

2.2.2 शैली

2.2.2.1 वर्णनात्मक शैली

2.2.2.2 आत्मकथात्मक शैली

2.2.2.3 संवादात्मक शैली

2.2.2.4 स्मृतिपरक शैली

2.2.2.5 मनोविश्लेषणात्मक शैली

2.2.2.6 मिश्रित शैली

2.2.3 शैलीगत विशेषताएँ

2.2.3.1 भावात्मकता

2.2.3.2 आलंकारिकता

2.2.3.3 प्रतीकात्मकता

2.2.3.4 प्रवाहात्मकता

2.2.3.5 व्यंग्यात्मकता

2.2.3.6 आं ालिकता

2.2.3.7 रो ाकता

तृतीय अध्याय ***94-126***

शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित आँ ालिकता का स्वरूप

3.1 आँ ालिकता : अर्थ

3.2 आँ ालिकता : स्वरूप एवं परिभाषा

3.3 आँ ालिकता के नियो ाक तत्व

3.4 आँ ाल का नायकत्व

3.5 स्थानीय बोली

3.6 शेखर ोशी की कहानियों में आँ ालिकता का स्वरूप

3.6.1 कथां ाल का महत्व

3.6.2 भौगोलिक परिवेश

3.6.3 प्राकृतिक परिवेश

3.6.4 सामाि ाक परिवेश

3.6.5 आर्थिक परिवेश

3.6.6 अंधविश्वास

3.7 नायकत्व का लोप आँ ाल का नायकत्व

3.7.1 आँ ालिक रहन-सहन

3.7.2 खान-पान

3.7.3 वेश-भूषा

3.7.4 पर्व-त्यौहार

3.7.5 अं ाल की प्रतिनिधिकता

3.7.6 अं ाल की भाषा

ातुर्थ अध्याय ***127-222***

शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा

4.1 शेखर ोशी की कहानियों का देश काल

(औद्योगीकरण, शहरीकरण, तकनीकीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद)

4.2 शेखर ोशी की कहानियों में ाित्रित समा ा

4.2.1 सामाि ाक स्थितियाँ

4.2.1.1 आपसी संबंध

4.2.1.2 पीि ियों का अंतर

4.2.1.3 अकेलापन

4.2.1.4 मृत्युबोध

4.2.1.5 प्रेम

4.2.1.6 वृद्ध और विधवाओं की परिस्थिति

4.2.1.7 पर्वतीय ाीवन

4.2.2 आर्थिक स्थितियाँ

4.2.2.1 मध्यवर्ग

4.2.2.2 निम्न मध्यवर्ग

4.3 धार्मिक स्थितियाँ

पं ाम अध्याय ***223-259***

शेखर ोशी की कहानियों में वर्ग-संघर्ष

5.1 वर्ग

5.2 वर्ग की शाब्दिक व्युत्पत्ति

5.3 समा ा शास्त्रीय वर्ग विभा ान

5.3.1 उ ा वर्ग

5.3.2 मध्य वर्ग

5.3.3 निम्न वर्ग

5.4 वर्ग संघर्ष

5.5 शेखर ोशी की कहानियों में वर्ग संघर्ष

उपसंहार ***260-269***

ग्रंथ सू ाी ***270-274***

भूमिका

समय एक गतिशील प्रक्रिया है ो अपने आप को बदलते हुए आगे ब.ता है। समय के साथ समा ा में भी अनेक परिवर्तन आते हैं क्योंकि परिवर्तन संसार का नियम है। कुछ परिवर्तन स्थूल होते हैं तो कुछ परिवर्तन सूक्ष्म। ोतन मनुष्य इन परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से महसूस करता है तथा अपनी ोतना के माध्यम से समय के साथ समा ा में हो रहे परिवर्तनों का यथासंभव अपने लेखन कार्य के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। शेखर ोशी इसी प्रकार के एक प्रतिबद्ध लेखक हैं ो अपने समय में हो रहे सामा िक परिवर्तनों का यथार्थपरक ि ात्रण करते हैं।

शेखर ोशी अपनी समकालीन विसंगतियों एवं विडंबनाओं को न केवल प्रखरता के साथ अपनी कहानियों में र ाते हैं वरन् इन स्थितियों से सामान्य मनुष्य को नि ाात पाने के लिए क्रांति का भी आह्वान करते हैं। वे सामंती और रू.िवादी मान्यताओं से मुक्ति पाने का उपदेश देते हुए हमेशा आम आदमी के साथ खड़े हो ाते हैं। अपसंस्कृति के कारक तत्वों की तलाश करते हुए उसे पूँ ीवादी संस्कृति का अनिवार्य परिणाम माना तथा अपसंस्कृति के खतरों से आगाह किया।

समय और समा ा शेखर ोशी की र ाना की कसौटी है तथा अनुभव और प्रतिबद्धता ने उनमें प्रामाणिकता का रंग भरा है। इस कारण इस शोध प्रबंध का विषय मैंने "शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा" निर्धारित किया है। यह विषय एक ऐसे कहानीकार के कहानी-संसार के वैशिष्ट्य को उद्घाटित करता है, ि ासमें मनुष्य और परिवेश के नितांत नये रूप और अप्रकाशित छवियाँ प्रकट हुई हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को अध्ययन की सुविधा एवं विषय-विश्लेषण की दृष्टि से उपसंहार के अतिरिक्त पाँ ा अध्यायों में विभाि ात किया गया है।

प्रथम अध्याय 'शेखर ोशी : व्यक्तित्व और कृतित्व' है। इसमें शेखर ोशी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परि ाय देते हुए उनके साहित्यिक सृ ान का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'शेखर ोशी की कहानियों का कथ्य और शिल्प' में उनकी कहानियों के कथ्य को सम ाते हुए शिल्प के तात्पर्य और स्वरूप के साथ उनकी कहानियों की भाषा और शैली का विश्लेषण किया गया है।

तृतीय अध्याय 'शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित आँ ालिकता का स्वरूप' में आँ ालिकता का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा को स्पष्ट करते हुए आँ ालिकता के नियो ाक तत्व, अं ाल का नायकत्व, स्थानीय बोली, नायकत्व का लोप का विश्लेषण किया गया है साथ ही शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित आँ ालिकता के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

ातुर्थ अध्याय 'शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा' है। इसमें समय के साथ समा ा में हुई क्रांतियों से समा ा किस तरह बदल रहा है, इसका विश्लेषण करते हुए शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित परिवर्तनों पर दृष्टिपात किया गया है। साथ ही सामाि ाक अव्यवस्था के विभिन्न रूपों को दिखाते हुए आर्थिक स्थिति, धार्मिक व्यवस्था के कारण समा ा एवं सामाि ाक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है।

पं ाम अध्याय 'शेखर ोशी की कहानियों में वर्ग-संघर्ष' है। इसमें वर्ग की शाब्दिक व्युत्पत्ति और परिभाषा पर प्रकाश डालते हुए समा ाशास्त्री वर्ग विभा ान और वर्ग-संघर्ष पर विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही

शेखर ोशी ने किस प्रकार विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों की मानसिकता और संघर्ष को दिखाया है इसका विश्लेषण किया गया है।

इस शोध प्रबंध के विषय ायन में प्रो.सुवास कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शोध कार्य का मार्गदर्शन करने एवं मु ो प्रोत्साहित करने के लिए अपने शोध निर्देशक डॉ.श्यामराव के प्रति आभारी हूँ।

इस शोध लेखन में हैदराबाद विश्वविद्यालय की इंदिरा गाँधी मेमोरियल लायब्रेरी सामग्री संकलन में बहुत सहायक रही है। इस के साथ शोध के दौरान विषय को सम ाने, सामग्री ुटाने और आवश्यक परिवेश के निर्माण में अपने मित्र प्रणव कुमार ठाकुर और नगीनाबानो के प्रति विशेष रूप से आभारी हूँ। टंकन करके समय पर देने के लिए डॉ.राधा की विशेष आभारी हूँ।

विभागाध्यक्ष तथा विभाग के अन्य सभी गुरु ानों के प्रति आभार प्रकट करना ाहती हूँ िन्होंने मेरे ायनित विषय को स्वीकृति प्रदान कर मु ो प्रोत्साहित किया।

अंत में मैं अपने माता-पिता, भाई-बहन, सास-ससुर और विशेष रूप से मेरे पति प्रसाद ी के प्रति आभार प्रकट करती हूँ िनके आशीर्वाद एवं समर्थन से मु ो प्रेरणा मिलती रही।

श्रीलता कोत्तपल्ली

प्रथम अध्याय

शेखर ोशी : व्यक्तित्व और कृतित्व

‘नई कहानी’ के ा ित कहानीकारों में से प्रेम ंद की यथार्थ पंरपरा में लिखनेवालों में से शेखर ोशी प्रमुख हैं। उनका न्म अश्विन 3, संवत 1989 (सन् 1932) को अल्मोडा ानपद (उत्तर प्रदेश) के ‘ओलियागाँव’ में एक किसान परिवार में हुआ था।

प्रारंभिक शिक्षा अ मेर और देहरादून में हुई। इंटरमीडियट की प . ाई के दौरान ही सुरक्षा-विभाग में ई.एस.ई. अप्रेंटिसशिप के लिए ायन। उस अप्रेंटिसशिप के दौरान ही प्रगतिशील लेखकों, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओं और पत्रकारिता ागत से संपर्क हुआ। सन् 1955 से 1986 तक इलाहाबाद में एक सैनिक औद्योगिक प्रतिष्ठान में कार्यरत रहे। कथा लेखन को दायित्वपूर्ण कर्म माननेवाले सुपरि ित र ानाकार शेखर ोशी ने तत्पश ात् स्वै छिक रूप से पद त्यागकर स्वतंत्र लेखन का कार्य अपनाया। लेखन की शुरुआत कविताओं से हुई और फिर मुख्यतः कहानियों पर केंद्रित रहे।

<u>साहित्यिक ीवन</u>

र ानाकार ाब अपनी संवेदनाओं या अनुभवों को कलात्मक ंग से कागज़ पर लिखता है तो वह र ाना बन ाती है। उस र ाना के मूल में अपने अनुभवों या अनुभूतियाँ हो सकती हैं या समा में घटित होनेवाली घटनाएँ हो

सकती हैं या उन घटनाओं को अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा प्रस्तुत करनेवाली और कोई विषय वस्तु हो सकती है। इस क्रम में कई अंश ैसे सामा ाक, सांस्कृतिक, आर्थिक, रा ानीतिक परिस्थितियाँ या पारिवारिक स्थितियाँ या मित्र ैसे अनेक अंश र ानाकार को प्रभावित करनेवाले घटक हो सकते हैं।

र ानाकार को प्रभावित करनेवाले विषयों के बारे में स्वयं शेखर ोशी कहते हैं कि-"र ानात्मक लेखन एक सापेक्ष प्रक्रिया है। मनुष्य के मानसिक संस्कार, विभिन्न सामा ाक स्थितियों का दबाव, व्यक्तिमन का अहं, नि ाी अस्तित्व की पह ाान का आग्रह, राग-विराग, भावनात्मक संवेग, संवेदनक्षमता और नि ाी अनुभवों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देख पाने की दृष्टि कई ऐसे कारक हैं ो मिलकर संवेदना को र ाना तक पहुँ ाने में सहायक होते हैं या उसका कारण बनते हैं। मूलतः ये परिवेशगत स्थितियाँ ही हैं ो एक र ानाकार को दूसरे र ानाकार से भिन्न धरातल पर आंदोलित करती हैं।"[1]

शेखर ोशी के लेखन कार्य को प्रभावित करनेवाले अंश उनकी परिवेशगत स्थितियाँ ही हैं। क्योंकि अनुवंशिक या ींस कहने के लिए पितृपक्ष में इसका लिखित साक्ष्य नहीं है। और मातृ पक्ष में उनके मँ ाले मामा पंडित श्रीकृष्ण पंत शास्त्री हैं ो महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविरा ा के प्रिय भा ान थे और काशी के विद्वत् समा ा में उनका अ छा सम्मान था। उन्हें लगातार लेखन-कार्य करते हुए शेखर ोशी देखते थे।

शेखर ोशी का परिवार पहाड़ के छोटे-भूस्वामियों का परिवार था। पराये श्रम से समृद्ध और वर्णदृष्टि के लिए पूरी तरह समर्पित। उनके घर में व्यंकटेश्वर प्रेस, मुंबई से प्रकाशित बड़े आकार के पन्नों में मुद्रित भागवत और महाभारत की ो पुस्तकें थीं ि न्हें वैशाख ोठ की अलस दुपहरियों में

[1] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.7

घर के आँगन में एकत्र होकर ब ो-बू े भक्तिभाव और तन्मयता से भागवत का पाठ सुनते हुए ऊँघते रहते थे। उन्हें कभी-कभी 'माधुरी' और ' ाँद' की प्रतियाँ भी देखने को मिल ाती थीं। 'ब्रह्मानंद स्तोत्र' का भ ान उन्हें बहुत प्रिय थे। ि न्हें वे अक्सर गुणगुणाते रहते थे। उनका तनमयता देखकर उनकी माँ कहती थीं-"वह ोगी हो ाएगा...। नबि िया वैद्य क्या देखे, मु ो दिल की बीमारी है... की तरह के भ ान उन्हें बहुत प्रिय थे। काव्य का उनका प्रारंभिक परि ाय इन्हीं गीतों-भ ानों से हुआ था।

उनका ब ापन पूरा ग्रामीण वातावरण में संगीतमय था। अपनी परिवतेशगत स्थितियों के बारे में स्वयं शेखर ोशी कहते हैं कि-" ान्मदिन, छठी, नामकरण, अन्नप्रासन से लेकर यज्ञोपवीत और विवाह-संस्कार के गीतों का अटूट सिलसिला ालता ही रहता। बू ी पुरखिनों के पास इन गीतों का अक्षय भंडार था। सुमधुर ही नहीं, कर्कश या घेघायुक्त घर्घर कण्ठों की भागीदारी भी इनमें रहती थी ि ससे एक मनोरं ान का अनुभव होता था। खेती के सामूहिक गीतों के लिए तो हमारा अं ाल विख्यात है ही। गोडाई, धानरोपाई के दिन खेतों में किसी त्योहार-पर्व की सी रौनक रहती थी। हुड़के की थाप पर कमकर स्त्रियाँ अपने रंगबिरंगे परिधानों में गले में मूँगे और ाँदी के सिक्कों की मालाएँ ुलाते गीत की लय पर गोडाई या रोपाई करती ातीं और पूरी घाट उनके गीतों से गूँ ा उठती। ाड-वनों की साँय-साँय के बी ा, भरी दुपहरी में, कहीं दूर बंसी का स्वर उठता और कहीं दूसरी पहाड़ी से कोई ारवाहा या घसयारिन गीत की एक पंक्ति उठा देती। कुछ क्षणों के लिए वनप्रांतर में निस्तब्धता रहती और फिर प्रत्युत्तर में दूसरी ओर से पूरक पंक्ति का आलाप

उठता। ये मार्मिक और सारगर्भित तुकबंदियाँ हुआ करती थीं।"[2] इस प्रकार उनका ब ापन ग्रामीण वातावरण में संगीतमयता के साथ बीता था।

शेखर ोशी ब ापन में प्रकृति के बहुत निकट थे। वे उतना निकट थे कि पेड़ों की अलग-अलग पह ान के लिए उन्हें नामांकित किया गया था। और एक ेर में रखे हुए अखरोट या दाडिमों को देखकर ही वह पह ान ाते थे कि यह किस पेड़ का फल है। इसके साथ-साथ वे पशुओं से भी एक प्रकार का पारिवारिक रिश्ता रखते थे। ाब वह किसी गाय का नाम लेकर पुकारते थे तो ोरों के ुण्ड में से उस नाम की गाय रंभाती हुई ाली आती थी। अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि शेखर ोशी अपने ब ापन में प्रकृति के (पशु-पक्षियों से) बहुत निकट थे।

उनका यह परिवेश ाहाँ एक ओर अपार प्राकृतिक सौंदर्य, गीत-संगीत और सांस्कृतिक गतिविधियों से समृद्ध था, वहीं दूसरी ओर ारों ओर निपट गरीबी, दैन्य और मानवीय शोषण का ाल भी फैला हुआ था। उन सभी स्थितियों ने शेखर ोशी को प्रभावित किया है। वह परिवार की सामंती और रू ि वादी मान्यताओं से मुक्ति पाना ाहते थे। उनके लिए यह असंभव होता यदि उनका परि ाय गोर्की, राहुल, प्रेम ंद, यशपाल आदि लेखकों की र ानाओं से न हुआ होता। आगे ालकर ाब वे र ाना करने लगे तब उनकी र ानाओं में विषम परिस्थितियों को रेखांकित करने का प्रयत्न किया है।

ब ापन में कोर्स की पुस्तकों के अतिरिक्त पहली साहित्यिक कृति ो उन्हें ननिहाल में देखने को मिली वह कविवर सुमित्रानंदन पंत की 'उ छ्वास' नाम की एक पतली-सी काव्य पुस्तक थी। उस पुस्तक से ही उन्हें पंत ी की कविताओं के शब्द-विन्यास और भाषा सौंदर्य से परि ाय मिला। ब ापन में वे

[2] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.8

अंग्रेज़ी के अध्यापक महोदय के निर्देशन में हाथों में हॉकी स्टिक लेकर पूरी क्लास द्वारा 'मा र्ि ऑफ दि लाइटब्रिगेड' कविता का सभिनय पाठः कैन्नौन टु द राइट, कैन्नौन टु द लेफ्ट करवाते थे। तभी उन्हें कविता की शक्ति का एक नया साक्षात्कार मिला। इस प्रकार की परिवेशगत स्थितियों ने शेखर ोशी में कविताओं के प्रति रु ा पैदा करवायी। इसीलिए उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत कविताओं से की है।

छोटी उम्र में ही ीवन की परिस्थितियों ने उन्हें विभिन्न भौगोलिक और सामा ाि क परिवेशों में ीने के लिए विवश किया है। छोटी उम्र में ही मातृविहीन हो ाने के कारण बाद में उन्हें पर्वतीय अं ाल के प्राकृतिक सौंदर्य से वनस्पतिविहीन रा ास्थान में रहना पड़ा। वहाँ रहने का दुःखद अनुभव और अपने परि ाित परिवेश से कट ाने की कष्टप्रद अनुभूतियों ने उनकी संवेदना की धार को तेज़ कर दिया। सम ा विकसित होने पर ाब वे अपने नि ी अनुभवों को सामा ाि क परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया में उन्होंने 'दा यु' कहानी लिखी। उस कहानी के बारे में स्वयं शेखर ोशी कहते हैं कि-"'दा यु' कहानी लिखी तो उसका नायक मेरा ही प्रतिरूप था ो अपने परिवेश से विस्थापित होकर अपरि ातों की भीड़ में किसी आत्मीय को खो ा रहा था, लेकिन सामा ाि क यथार्थ ने उसे अहसास करा दिया था कि आत्मीय संबंधों के मूल में भी वर्ग स्वाथ होते हैं ो मानवीय संबंधों में दरार डाल देते हैं।"[3]

उन्होंने ीवन में कई उतार- ा.ाव देखे हैं। उनके ीवन का एक महत्वपूर्ण भाग कारखानों में बीता है। वहाँ के अपने अनुभवों को उन्होंने कहानियों के रूप में प्रस्तुत किया है। औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ लिखने की प्रेरणा उन्हें वहाँ से ही मिली है। इस संबंध में वे कहते हैं कि-"यहीं मु ो

[3] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.10

‘उस्ताद’ मिले ो न ाहते हुए भी अंतिम क्षणों में अपने शागिर्द को काम का गुर सिखाने को म ाबूर थे, यहीं हाथों की ‘बदबू’ में मैंने ि ा ीविषा की तलाश की, यहीं ईमानदार लेकिन ‘मेंटल’ करार दिए गए लोग थे, यहीं विरोध की आखरी ि ंगारी लिये ‘ ी ह ूरिया’ किस्म के लोग थे। यहीं ‘नौरंगी मिस्त्री’ था और यहीं मैंने श्यामलाल का ‘आशीर्व ान’ सुना और इन सबको अपनी कहानियों में अंकित कर पाया।"[4]

अतः शेखर ोशी पहले कहानीकार हैं ि ान्होंने पहली बार औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ लिखी हैं।

प ाास के दशक में उनका संपर्क लेखकों की ामात से दिल्ली में हुआ था। उस समय प्रगतिशील लेखक संघ की गतिविधियाँ ोरों पर थीं, ि ाससे उनकी वि ारधारा को एक दिशा मिली। सन् 55 में इलाहाबाद आने पर उनका संपर्क उनके अग्र ा और समकालीन लेखकों से हुआ था। तभी अपनी ौविक व्यस्तताओं के बी ा समय निकाल कर साहित्य का अध्ययन और अभ्यास करने का सुयोग उन्हें मिला। यहाँ आने के बाद उन्हें लगभग सभी नये और पुराने पी ़ी के प्रमुख लेखकों से मुलाकात हुई थी क्योंकि इलाहाबाद में ही यादातर लेखकों का ामघट है। प ाास और साठ का दशक गहरी साहित्यिक सरगर्मियों का काल रहा है। उस समय ‘प्रगतिशील’ और ‘परिमल’ खेमों में स्वस्थ र ानात्मक प्रतिस्पर्धा ालती रहती थी। उसी समय ‘संकेत’, ‘हंस’ और ‘निकष’ ौसे महत्वपूर्ण साहित्यिक संकलनों का प्रकाशन हुआ था। यही वह समय था ाब भैरवप्रसाद गुप्त के संपादन में निकलने वाली ‘कहानी’ पत्रिका के माध्यम से कहानी प्रमुख साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो रही थी। इन्हीं वर्षों में इलाहाबाद का अभूतपूर्व लेखक-सम्मेलन हुआ था, ि ासमें मुक्तिबोध

[4] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.11

भी आए थे और तब के नये कवि श्रीकांत वर्मा ने अपनी पह ान बनायी थी। इन सब आयो ानों में उनकी सा ीदारी का सौभाग्य उन्हें इलाहाबाद की अप्रेन्टिसशिप के कारण ही मिला था। इस प्रकार के साहित्यिक परिवेश से उन्हें प्रेरणा मिली।

शेखर ोशी ने अपने लेखन कार्य की शुरुआत कविताओं से की है। उन्होंने एक कविता में पहाड़ के उदासी ीवन को निम्न प्रकार से ित्रित किया है-

"भूरी मटमैली ादर ओ़े
बू े पुरखों से ार पहाड़
मिल- ुल बैठे ऊँघते-ऊँघते।
घाटी के ओठों से कुहरा उठता
मन-मारे, थके-हारे, बे ारे
दिन-भर िलम फूँकते-फूँकते-फूँकते।"

शेखर ोशी एक सफल कहानीकार हैं। उन्होंने अब तक 60 से भी यादा कहानियाँ लिखी हैं। उनकी पहली कहानी 'दा यु' है िसे सन् 1953 में अपनी पत्रिका 'पर्वतीय ान' के लिए लिखा था ो बाद में साहित्यिक संकलन 'संकेत' में प्रकाशित होकर ाित हुई। िसके संपादक अश्क थे। उसके बाद उन्होंने सन् 1957 में 'कोसी का घटवार' नामक कहानी लिखी ो 'कल्पना' पत्रिका के ानवरी अंक में प्रकाशित होकर ाित हुई।

इसी प्रकार उन्होंने कई ाित और प्रमुख कहानियाँ लिखी हैं। ैसे- बदबू, मेंटल, सीि़याँ, उस्ताद, नौरंगी बीमार है, आशीर्व ान, डांगरी वाले, ब ो का सपना, साथ के लोग, मृत्यु, दौड़, कविप्रिया, सहयात्री, पुराना घर,

नेक्लेस, गाइड, निर्णायक, हलवाहा, समर्पण, बिरादरी, कथा-व्यथा, बो ा, रंगरुट, परिक्रमा, विस ि, आदमी का डर, रास्ते, किं करोमि ानार्दन आदि।

उनके कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। पहला कहानी संग्रह 'कोसी का घटवार' सन् 1958 में प्रकाशित हुआ था। उनके कहानी संग्रहों की सू ी कालक्रम के साथ निम्नलिखित है।

अनुवाद :- उनकी कुछ कहानियाँ विभिन्न भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेज़ी, रूसी, पोलिश, ोक और ापानी भाषाओं में अनूदित हैं।

फिल्म :- 'दा यु' और 'कोसी का घटवार' नामक कहानियों पर फिल्म निर्मित हैं। 'दा यु' कहानी का फिल्म रूपांतरण िल्ड्रन फिल्म सोसायटी और दूरदर्शन के द्वारा हुआ था।

मं ान :- उनकी ार कहानियों का मं ान 'रवींद्रालय' लखनऊ में देवेंद्ररा । अंकुर के द्वारा किया गया है।

ऑडियो कैसेट :- 'हलवाहा' तथा 'नौरंगी बीमार है' में संकलित कहानियों का ध्वन्यांकन 'टॉकिंग बुक सेंटर' के द्वारा बंबई में छः कैसेट्स में किया गया है।

सम्मान/पुरस्कार :- सन् 1955 में 'धर्मयुग' द्वारा आयोि ात कहानी-प्रतियोगिता में उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला था। उसके बाद सन् 1987 में 'एक पेड़ की याद' शब्द ित्र संकलन के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के 'महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार' से सम्मानित हैं। साहित्य भूषण सम्मान, पहाड़ सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान इत्यादि इनके अन्य सम्मान हैं।

1. कोसी का घटवार-नया साहित्य प्रकाशन, 1958
2. साथ के लोग-संभावना प्रकाशन, 1978
3. मेरा पहाड़, लोकभारती प्रकाशन, 1989

4. प्रतिनिधि कहानियाँ, रा ाकमल पेपर बैक्स, 1994

5. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन, 1997

6. डांगरी वाले, आधार प्रकाशन, 1998

7. नौरंगी बीमार है, रा ाकमल प्रकाशन, 1998

8. ब ो का सपना, संभावना प्रकाशन, 2004

9. हलवाहा

इन के अलावा 'एक पेड़ की याद' नामक शब्द-ि ात्रों का संग्रह भी है।

आवरण ि ात्र :- सुबायत यादव (2 अक्तूबर, 1958, ौनपुर) की ि ात्रकृति। बनारस विश्वविद्यालय से कला-स्नातक। ललित कला अकादमी, उत्तरप्रदेश, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली (1983) तथा त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ल ाी (1987) में एकल कला प्रदर्शिनियाँ। ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश द्वारा कुछ ुनिंदा कलाकारों के साथ आयोि ात प्रदर्शनी-अहमदाबाद और ायपुर (1983) तथा तीन कलाकारों के साथ पराड़कर स्मृति भवन, वाराणसी (1983) में कलाकृतियों का प्रदर्शन। अन्य अनेक कला-प्रदर्शनियों में भी हिस्सेदारी। अन्य रा यों में आयोि ात कला-प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत-प्रशंसित। ललित कला अकादमी, नई दिल्ली तथा राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, नई दिल्ली समेत अनेक कला-दीर्घाओं और नि ाी संग्रहों में काम शामिल हैं। संप्रति, इंडिया टुडे (हिंदी) में कला-संपादक।

* * *

द्वितीय अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों का कथ्य और शिल्प

2.1 कथ्य

2.1.1 मध्यवर्ग

2.1.2 पहाड़ ीवन पर केंद्रित कहानियाँ

2.1.3 औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ

2.1.4 अकेलापन

2.1.5 बदलते ीवन मूल्य

2.1.6 आधुनिक समा ा

2.2 शिल्प

2.2.1 शब्द प्रयोग

2.2.1.1 मुहावरे एवं कहावतों का प्रयोग

2.2.1.2 ि त्रात्मक भाषा

2.2.1.3 विषयानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा

2.2.1.4 प्रतीकात्मक भाषा

2.2.1.5 व्यंग्यात्मक भाषा

2.2.1.6 भावात्मक भाषा

2.2.2 शैली

2.2.2.1 वर्णनात्मक शैली

2.2.2.2 आत्मकथात्मक शैली

2.2.2.3 संवादात्मक शैली

2.2.2.4 स्मृतिपरक शैली

2.2.2.5 मनोविश्लेषणात्मक शैली

2.2.2.6 मिश्रित शैली

2.2.3 शैलीगत विशेषताएँ

2.2.3.1 भावात्मकता

2.2.3.2 आलंकारिकता

2.2.3.3 प्रतीकात्मकता

2.2.3.4 प्रवाहात्मकता

2.2.3.5 व्यंग्यात्मकता

2.2.3.6 आं ालिकता

2.2.3.7 रो ाकता

द्वितीय अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों का कथ्य और शिल्प

2.1 कथ्य

शेखर ोशी 'नई कहानी' के प्रमुख कहानीकारों में से एक हैं। उन्होंने 1954-56 के आसपास लिखना शुरू किया था। स्वतंत्रता हमारे लेखकों के स्वपनों की पूर्ति करने में असफल रही। इसी कारण 'नई कहानी' के यादातर कहानीकार निराश होकर अपनी कहानियों की विषय-वस्तु के रूप में संत्रास, कुंठा, हताशा, एकाकीपन तथा सेक्स को अपनाया है। इन्हीं विषयों की कथा-भूमि को कहानीकार पूरी प्रमाणिकता और संवेदनशीलता के साथ 'नई कहानी' को स्थापित कर पाने में सफल हुए। लेकिन उस समय भी दबे-पिछड़े, संघर्षरत लोगों की ीवन स्थितियों के यथार्थ ित्रण को लेकर कुछ कहानीकार सक्रीय थे ैसे मार्कण्डेय, अमरकांत, भैरव प्रसाद गुप्त, शेखर ोशी आदि। हिंदी कहानी में पिछले ार दशकों से भी यादा समय से प्रेम ंद की पारदर्शी यथार्थ की परंपरा में लिखने वालों में शेखर ोशी का स्थान शीर्ष है।

शेखर ोशी अपने नि ी अनुभवों को कथा-वस्तु के रूप में अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। उनकी पहली कहानी 'दा यु' वैसी ही उप ा है। उन्होंने समा ा के प्रमुख वर्ग मध्यवर्ग को अपनी कहानियों के कथ्य के रूप में

स्वीकारा है। उसी प्रकार अपेन कारखाने के अनुभवों, पहाड़ी ीवन, बदलते ीवन मूल्यों एवं अकेलापन और आधुनिकता बोध को लेकर भी उनकी कहानियों में विस्तार से ि ात्रित किया गया है।

समकालीन ीवन की सामा ि ाक परिस्थितियाँ शेखर ोशी के र ाना-संसार को प्रभावित करती हैं। इसीलिए उन्होंने अपनी कहानियों में सामा ि ाक समस्याओं ैसे वर्ग-भेद, वर्ण-भेद, आर्थिक संकट, बेरो ागारी, ऊँ ा-नी ा की भावना, म ादूर-संघर्ष आदि को प्रमुख स्थान दिया। उनकी कहानियों में रू ि वादी परंपरा के खिलाफ विद्रोह की भावना व्यक्त होती है।

2.1.1 मध्यवर्ग

स्वातंत्र्योत्तर काल में धन अथवा अर्थ का बड़ा महत्व है। उसी आर्थिक स्थिति के आधार पर समा ा मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभक्त हुआ था वे हैं- उ ा वर्ग, मध्यवर्ग और निम्न वर्ग। इन तीनों वर्गों में उ ा वर्ग तथा निम्न वर्ग की तुलना में मध्यवर्ग की भूमिका प्रमुख है। वास्तव में इस मध्यवर्ग का उदय शिक्षा के द्वारा हुआ है। "सामा ि ाक और आर्थिक संघर्ष की स्थिति में शिक्षित मध्यवर्ग सबसे अधिक क्षुब्धावस्था में था। अतः नैतिक मूल्यों एवं ीवन के आदर्शों के प्रति सब से अधिक आस्थाहीन यही वर्ग था।"[1]

मध्यवर्ग एक विशेष प्रकार का ीवन बिताने का आदि है। यह वर्ग आर्थिक अभाव के कारण ीवन में उल ाते हुए उ ा वर्ग के समकक्ष में पहुँ ाने की महत्वाकांक्षा रखता है। ाब यह महत्वाकांक्षा पूरी नहीं हो पाती तब वह निराशा एवं कुंठा से ग्रस्त हो ाता है।

स्वतंत्रता से पूर्व नारी की तुलना में स्वातंत्र्योत्तर नारी के अधिकारों में परिवर्तन आ गया। शिक्षा के प्रभाव से नारी अपने अधिकारों की माँग करने

[1] हिंदी नाटक की भूमिका मध्यवर्ग के संदर्भ में, मूल ंद गौतम-पृ.52

लगी और उसमें स ागता आई। मध्यवर्गीय पुरुष की तुलना में नारी अधिक स ाग हुई और वह निरंतर उ ा वर्ग के समकक्ष पहुँ ाने की महत्वाकांक्षा रखती है। उसके साथ-साथ प्रदर्शन की प्रवृत्ति भी उसमें यादा है। मध्यवर्ग की सर्वप्रथम कम ोरी आर्थिक अभाव ो है वह शेखर ोशी की सभी कहानियों में देखने को मिलती है।

किसी भी व्यक्ति का सामा ि ाक गौरव, आदान-प्रदान सभी उस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर निर्भर होता है। परिवार, समा ा, रा ानीति, धर्म, साहित्य का विकास अर्थ पर ही आधारित है। एक शब्द में कहना है तो अर्थ ही वह शक्ति है ो सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में बंद कर सकती है। मध्यवर्ग के लोग अर्थाभाव के कारण असंतुष्ट से आक्रांत होकर विकसित नहीं हो पा रहे हैं। शिक्षित होने के बाद भी बेकारी से उत्पन्न समस्याओं का सामना भी इसी वर्ग को सबसे यादा करना पड़ता है।

'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' शीर्षक कहानी का वीरेंद्र नौकरी के अभाव में आत्मनिर्भर होने के लिए अंत तक संघर्ष करता रहा। वह नौकरी की प्रतीक्षा में हर रो ा डाकिया द्वारा लाये गये पत्र का इंत ाार करता रहता। वीरेंद्र का पिता उसे कई प्रकार के अखबारों में 'वांटेड' कालम देखने के लिए कहता है। वीरेंद्र को कई प्रकार के लोगों से कई साक्षात्कारों का सामना करना पड़ा। उसे "शारीरिक व्यक्तित्व के कारण अफसर न बन पाने की ि ंता नहीं, वरन यह सो ाकर कि कहीं पिता ी अपनी दवाएँ बंद कर वास्तव में मेरे लिए अंडे-मक्खन माँगना आरंभ न कर दे।"[2]

[2] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.25

वीरेंद्र के इस सो ा के पीछे मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक परिस्थिति का पता ालता है। अगर अंडे-मक्खन ैसी छोटी-सी ाी ों लानी हो तो उन्हें कहीं पर किसी ीज़ को त्याग देना पड़ता है।

आर्थिक अभाव के कारण वीरेंद्र अपने मित्रों से नहीं मिल पाता क्योंकि ाब सभी मित्र मिलते हैं तो किसी-न-किसी बहाने पार्टी मनाते थे। उनकी ओर से अंतिम पार्टी यूनिवर्सिटी कान्वोकेशन के दिन हुई थी। बाद में वह ाब भी गया उन लोगों का अतिथि बनकर ही गया था। अपनी इस आर्थिक विषमता के कारण वह धीरे-धीरे ऐसे अवसरों पर कोई बहाना बनाकर उनसे अलग होने लगा।

हमारा यह समा ा अर्थ केंद्रित समा ा है। अर्थ के आधार पर ही मनुष्य समा ा में अपना संबंध ोड़ता है। ाब वीरेंद्र पी.सी.एस. की लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण होता है तब शैली की माँ वीरेंद्र से अपनी बेटी का विवाह करने के लिए सो ाती है। लेकिन ाब यह स्वप्न, स्वप्न ही रह गया तब शैली का विवाह किसी और से निश ाय कर लेती है। इस से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक अभाव एक ऐसी समस्या है ि ास के आगे मित्रता या रिश्ता, प्रेम किसी का कोई महत्व नहीं है। इसी समस्या के कारण वीरेंद्र का सारा ीवन संघर्षमय हो ाता है।

आर्थिक अभाव मध्यवर्गीय लोगों के लिए एक अभिशाप की तरह है। वह इस समस्या से बाहर निकलने के लिए प्रयत्न करता रहता है और साथ में इस समस्या को छुपाना भी ाहता है। इस प्रयत्न में वह निरंतर संघर्ष करता रहता है। यह समस्या मध्यवर्ग में महीने के अंतिम सप्ताह में आती है।

शेखर ोशी की 'डरे हुए' शीर्षक कहानी इसी समस्या पर लिखी गयी है। इस कहानी में कमला और उसका पति महीने के अंतिम सप्ताह की इस

समस्या को हल करने के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। कमला अपनी पड़ोसी से भी सहायता नहीं लेना ाहती है। वह इस स्थिति को छुपाने के लिए अपने पति को बाहर ाते समय निरर्थक कुछ ले लेने को कहती है। वह दूसरों से कुछ पूछना भी नहीं ाहती इसीलिए वह कहती है-"नहीं ी, बड़े शहर में कोई किसी को नहीं पूछता। हमें आए दो महीने हो गए और ऊपर वाली ने एक दिन आकर पूछा भी नहीं। सब अपने आप में व्यस्त हैं।"[3] कमला इस समस्या से बाहर निकलने के लिए पुरानी पत्रिकाओं को बे ाने के लिए सो ाती है तो उसका पति कमला के कानों की बालियों को बे ाकर इस समस्या से बाहर निकलना ाहता है। दोनों इस समस्या से अपने बेटे को दूर रखना ाहते हैं। कमला कहती है कि-"वह आ रहा है। उसके सामने कुछ न कहना। दो ही दिन की तो बात है। मैं किसी तरह बहला लूँगी। िंता करने के लिए हम दोनों ही बहुत हैं। उस पर न ाने कैसा असर पड़े।"[4] कमला अपने बेटे के सवालों से डरती है। इतना प्रयत्न करने पर भी अंतिम दिन कमला को अपने बेटे के सामने अपनी असमर्थता स्वीकार करनी ही पड़ी। उसके प्रश्नों के उत्तर में उसे स्थिति पूरी तरह स्पष्ट कर देनी पड़ी थी। कमला के इस संघर्ष में वह हार गई। मगर आश ार्य की बात यह है कि उसका बेटा रोया िल्लाया नहीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि मध्यवर्ग के इस आर्थिक अभाव से ब ो भी अछूते नहीं रह पाते, बालक भी इस संघर्ष में परोक्ष रूप से भाग लेते हैं। आर्थिक अभाव की इस समस्या को ानकर वह गुमसुम सा रह ाता है।

'ब ो का सपना' कहानी में एक मध्यवर्गीय पिता अपनी बेटी के मासूम ोहरे पर सुखद आश ार्य की ामक देखना ाहता है। इसीलिए वह बेटी की इ िछत वस्तु ानकर उसे किस प्रकार भेंट देता है उसकी कल्पना इस कहानी में

[3] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.51
[4] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.52

है-"मैं उसे उस उपहार का पहला अक्षर सूत्र-रूप में बता दूँगा और फिर आकार-प्रकार कहीं-न-कहीं उसकी कल्पना सही उत्तर खो ा लेगी और तब मैं अपने ोले से निकालकर उपहार उसे दे दूँगा और किलककर उसे ले लेगी।"[5] मगर उसकी यह कल्पना सत्य के रूप में बदल नहीं पायी, क्योंकि वह ि ास ोली में अन्य ीज़ों के साथ उपहार भी ला रहा है, वह देने में ही छूट गया था। यह ानकर वह घबराता है। उनका यह घबराना स्वाभाविक है क्योंकि आर्थिक दबाव की इस परिस्थिति में ीज़ों के छूटना ोट की दर्द से कहीं कम नहीं है। वह पैसों की ब ात के लिए पुरानी पैंट को काटकर बनायी गयी ोली का उपयोग करता है और कैंटीन के लाईन में बहुत देर तक खड़े होकर आवश्यक ीज़ों के साथ-साथ टाफी का पैकेट भी लेता है ि ासे वह उपहार के रूप में देना ाहता है। कोई यह सो ा सकता है कि क्या टाफी का पैकेट भी असामान्य वस्तु है? लेकिन वह स्वयं कहता है-"मेरी ैसी स्थिति में उसके लिए यह मामूली ीज़ भी लगभग असामान्य ही थी।"[6] इस से उस परिवार की आर्थिक परिस्थिति का पता ालता है। मध्यवर्गीय समा ा के लोगों के सामने अर्थाभाव के कारण परिवार के सदस्यों की ओर उनकी आवश्यकताओं की ओर भी सही ंग से ध्यान न दे पाने की विवशता होती है। उस मध्यवर्गीय परिवार की ीज़ों का छूट ाने का संबंध प्लाटफार्म के छोकरों से रखते हैं। अगले दिन ाब पिता काम से वापस आता है तब उनके द्वारा छोकरों का नहा-धोकर साफ-सुथरे बने हुए-हीरों का विषय सुनती है। वह प्रसन्न और संतुष्ट होती है। उसी समय पिता को अपनी बेटी के ोहरे पर सुखद आश ार्य की ामक देखने की इ ा पूरी होती है।

---

[5] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.9

[6] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.9

'सहयात्री' कहानी का अग्रवाल एक मध्यवर्गीय व्यक्ति है। एक व्यक्ति को ि ान स्थितियों के आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति कहा ाता है, वे सारे गुण इसमें हैं ैसे प्रदर्शन की प्रवृत्ति और उ ा वर्ग में सम्मिलित होने की महत्वाकांक्षा। इसी प्रदर्शन प्रवृत्ति के कारण वह रेल यात्रा में सहयात्रियों को टैक्सी खराब होने का विषय बताकर उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करना ाहता है। इसी क्रम में वह खुद के बारे में बहुत कुछ बोल देता है कि वह लखनऊ के सेक्रेटेरियेट में काम करता है। इसी काम के सिलसिले में वह पहाड़ी इलाके में आया था।

वह लोअर क्लास के ि ास कंपार्टमेंट में यात्रा कर रहा है उस में अगले स्टेशन पर किसी को नहीं आने देता। वह कंपार्टमेंट के दरवा ो को बंद कर देता है। ऊपर से वह कहता है-"बड़े भेड ाल वाले लोग होते हैं साहब ये तीर्थयात्री भी। यह नहीं सो ाते भई कि एक ागह सब नहीं बैठ सकते तो दो-दो ार- ार की टोली में इधर-उधर बैठ ायें। नहीं साहब, हाँ एक ायगा वहीं सब घुसेंगे।"[7] इस प्रकार वह बद्री-केदार से लौटकर आनेवाले यात्रियों के प्रति अपना मत प्रकट करता है। बाद में हर नये स्टेशन पर गाड़ी के पहुँ ाने से पहले वह अगल-बगल बैठे हुए यात्रियों को ोतावनी दे देते थे-"यहाँ सम्हलकर रहिए साहब। यह दूध वालों के लौटने का टाइम हो रहा है। भाई लोग खिड़कियों से डिब्बे अंदर फेंक देते हैं। भाई साहब! ारा यह किवाड़ बंद कर लीि ाएगा, यहाँ आगरा वाली गाड़ी के पैसें ार इसमें ा.ते हैं।"[8] इस प्रकार अग्रवाल ी अपने डिब्बे में किसी को नहीं आने देता। एक गरीब किसान अपने ब ो को ट्रेंन पर बिठाने की अनुमति माँगता है तो अग्रवाल उन्हें उसी ागह पर पैर सिकोड़कर बैठने के लिए कहता है। अग्रवाल के व्यवहार से पता

[7] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.107
[8] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.109

ालता है कि वह निम्न वर्ग के लोगों से दूर रहना ाहता है और उन्हें उन लोगों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है। ाो व्यक्ति दूसरों की सहायता नहीं करना ाहता है, वही व्यक्ति एक नवयुवक को अपने उस कम्पार्टमेंट में आने को आमंत्रित करता है क्योंकि अग्रवाल उस नवयुवक को उ ावर्गीय व्यक्ति सम ाता है। उ ा वर्ग में सम्मिलित होने की महत्वाकांक्षा से वह उस नवयुवक की सेवा करता है, उसे अपने बर्थ के बिस्तर पर सोने के लिए ागह देता है तथा स्वयं गुडमुड़कर ट्रंक पर सोता है। इस कहानी से एक मध्यवर्गीय व्यक्ति का ारित्र स्पष्ट होता है।

'नेकलेस' शीर्षक कहानी में एक मध्यवर्गीय परिवार के लड़के का विवाह बिना माँ-बाप के आश्रम में रहनेवाली लड़की के साथ निश ाय होता है। उसका ुनाव केवल उसके व्यक्तिगत गुणों के कारण होता है। आर्थिक अभाव के कारण ससुराल वाले नई बहू को कुछ साधारण आभूषण ही बनवा पाते हैं। ैसे-हाथ-कान के ोवर, अंगूठी। गले का कोई ोवर न होने के कारण लड़का तथा ससुर भी ि ांतित हैं। अब इस परिवारवालों के सामने यह एक समस्या बन गयी है। इस समस्या से बाहर निकलने के लिए परिवारवाले यह तय करते हैं कि-"फिलहाल काम ालाने के लिए किसी सगे-संबंधी का ोवर लेकर यह कमी पूरी कर ली ाए।"[9] यह बात कोई नई या असामान्य नहीं है। अक्सर मध्यवर्गीय परिवारों में इस प्रकार का लेन-देन, उधार-बदले ालता रहता है। यही इस कहानी में भी होता है। नई बहु को अन्य सभी आभूषणों के अतिरिक्त वह ामकीला नेक्लेस बहुत पसंद आता है। बाद में वह सामान्य-सा नेकलेस भी उनका अपना न होने का स ा ानकर आँसू बहाने लगती है। इस समस्या का समाधान ूँ. ते हुए परिवारवाले मौन हैं। इस मौन को तोड़ते हुए ब ो लड़ते-

[9] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.

ागड़ते वहाँ घुस ाते हैं। उनके लड़ने का विषय भी खेल में नेक्लेस ही है। इस कहानी के समानांतर में ब ों की कहानी ालती है। उनके खेल में भी यही नेक्लेस की समस्या है ि सका समाधान तरु करता है। "गुड़िया में लियाकत होगी तो वह अपने लिए एक नहीं, दो-दो नेक्लेस ुटा लेगी।" तरु के इस वाक्य से सभी संतुष्ट होते हैं और नई बहू भी हल्की मुस्कान से नेक्लेस लौटाती है। इस प्रकार पूरी कहानी में आर्थिक अभाव और महत्वाकांक्षा के कारण कुंठा और निराशा देखने को मिलती है। नेक्लेस एक मध्यवर्गीय नारी के मनोविज्ञान को सशक्त रूप में व्यक्त करनेवाली कहानी है।

'गाईड' एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के यात्रा की कहानी है। यह यात्रा दुनियादारी आदमी शर्मा ी के निर्देशन में होती है। वे लोग अपने छोटे-से-छोटे विषय पर सतर्क रहते हैं। अंत में केलेवाला उन्हें एक नकली नोट पकड़ा देते हैं तो वापस आते समय उस नोट को शर्मा ी कुली के हाथ में रख देता है। इस कहानी में मध्यवर्ग के लोग किस प्रकार छोटी उपलब्धियों के लिए भी ओछी से ओछी तथा अमानवीय हरकतें करते हैं सह ा ही इस कहानी में हमें देखने को मिलता है।

'प्रतीक्षित' कहानी में हम मध्यवर्गीय नारी के मनोविज्ञान को देख सकते हैं। इस कहानी में रमेश दा केफों में काम करनेवाले म ादूरों को सहायता करते हुए उनके आंदोलनों में भाग लेता है ि सका विरोध उसकी पत्नी मन्नो से किया ाता है। वह अपने परिवार तक ही सीमित रहना ाहती है। मन्नो अपने पति के साथ ही यादा समय बिताना ाहती है। इसी कारण से उन दोनों के बी ा में ागड़ा होता है। रमेश में बदलाव न आने के कारण वह अंत तक खुश नहीं रहती। इस कहानी के द्वारा शेखर ोशी मध्यवर्गीय नारी के मनोविज्ञान को कुशलता पूर्वक प्रस्तुत किया है।

'बंद दरवा ोः खुली खिड़कियाँ' कहानी की सरो ा एक मध्यवर्गीय नारी है। उसमें उ ा वर्ग में मिलने की महत्वाकांक्षा के साथ-साथ प्रदर्शन प्रवृत्ति भी है। इसीलिए उसके घर आए हुए दोस्त के सामने निम्न वर्ग के पड़ोसियों के व्यवहार के प्रति अपना गुस्सा प्रकट करते हुए उ ा वर्ग के 'सिविल लाइन्स' कोठियों में ट्राई करने की बात कहती है। वह अपनी बेटी मिनी को बड़ी गाइडेंस के साथ अ छे मैनर्स सिखाती है। उसके साथ-साथ वह मिनी को महादेवी वर्मा, पंत और ब ान ैसे हिंदी के प्रमुख कवियों के गीत सिखाती है। उनका प्रदर्शन ाब वह अपनी दोस्त के सामने करने के लिए कहती है तो मिनी गालियाँ भरा गाना गाने लगती है। सरो ा गुस्से में आकर थप्पड़ मारती है। अंत में वह अपने ूठे प्रदर्शन में असफल होने के कारण दुखी रह ाती है।

मानव ीवन में संस्कार का बड़ा महत्व है। इस के आधार पर ही हम मनुष्य को द र्ा करा सकते हैं। यादातर लोगों का कहना है कि मध्यवर्गीय लोगों में निम्न और उ ा वर्ग की तुलना में संस्कार यादा पाये ाते हैं। इन्हीं मध्यवर्गीय लोगों के संस्कारों को प्रस्तुत करनेवाली कहानी 'पुराना घर' है। इस कहानी में उ ा वर्ग के डॉक्टर अपनी पत्नी और दीदी के साथ अपना पुराना घर देखने को ाते हैं। उस घर का मालिक ो एक मध्यवर्गीय व्यक्ति है, उन लोगों का स्वागत करता है। वे लोग अपने मास्टर व्यास साहब के ब ो- ानकर अपनत्व की भावना से पूरे परिवार को अतिथियों का परि ाय कराता है। उनके इ छानुसार पूरा घर दिखाकर आदर के साथ उनकी विदाई करता है। लेकिन वह डॉक्टर ो एक उ ावर्ग के हैं, उनके घर आये हुए म ादूर ब ों को वहाँ से दफा करता है। इस प्रकार 'पुराना घर' कहानी मध्यवर्गीय लोगों के संस्कार का एक नमूना है।

मध्यवर्गीय लोगों को ीवन में अनेक संघर्ष करने पड़ते हैं। यह संघर्ष बड़ों तक सीमित न रहकर ब ों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। 'भूत' एक मध्यवर्गीय बालक के संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में समीर को पड़ोसी ब ा गप्पु नी ा दिखाते हुए इस प्रकार कहता है-"काँ ा की गोलियों से छोटे लोग खेलते हैं और उनकी हवेली में तो संगमरमर की गोलियों से बक्से भरे पड़े हैं। अब की बार गाँव से लौटकर दिखा देगा।"[10] समीर अपनी विवशता के कारण रोने लगता है। ब ों के इस वर्ग भेद के मूल में बड़ों का वर्ग भेद भी शामिल है क्योंकि एक समान बनाए हुए क्वाटर्स में उ ा वर्ग के लोग अपनी विशिष्टता दिखाने के लिए कई परिवर्तन करते हैं। ैसे मेहंदी की बाड़ लगाना, ारदीवारी खीं ाकर छोटा-मोटा फाटक लगा लेना, दरवा ों के ऊपर या सामने वाली खिड़की की आड़ी सलाखों के ऊपर अपनी नाम पट्टी लगाना आदि। निम्नवर्ग के लोग अपने अस्तित्व की रक्षा में प्रतिस्पर्धा को हास्यास्पद बना देते हैं। कॉलोनी के इस वर्ग संघर्ष के मूल में प्रद्युम्नसिंह का ' ायभवन' है। उस को देखकर मध्यवर्ग के लोग अपनी विशिष्टता दिखाना ाहते हैं। समीर पर भी इसका प्रभाव है। इसीलिए ाब वह गाँव ाता है तो हवेली से संगमरमर की गोलियाँ लाना ाहता है। इस प्रकार कहानी में समीर पात्र के द्वारा वर्ग-संघर्ष देख सकते हैं।

मध्यवर्गीय परिवारों में पारिवारिक विघटन का एक कारण अर्थाभाव भी है। इसके कारण वह अपने ब ों को विरासत के रूप में केवल शिक्षा ही दे पाते हैं। वे अपने ब ों से ये आशा रखते हैं कि-वे अ छी नौकरी पाकर आर्थिक रूप से उनकी सहायता करें। यही आशा 'कविप्रिया' कहानी में पंडित ी अपने बेटे गिरीश से करता है। लेकिन गिरीश सिफारिशों के बल पर मिली

[10] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.92

हुई नौकरी का तिरस्कार करता है ि ससे क्रोधित होकर पंडित ी उसे घर से बाहर निकालता इस प्रकार अर्थाभाव के कारण गिरीश के परिवार में दरार आ गया है। नौकरी का अभाव और अर्थाभाव को दूर करने के लिए गिरीश कविवृत्ति स्वीकारता है। यह विषय पंडित ी गिरीश के दोस्त के द्वारा सुनकर उसकी सामा ाक स्थिति द र्ा करते हुए गाली देता है। इस प्रकार यह एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के दर्द और संघर्ष की कहानी है।

2.1.2 पहाड़ ीवन पर केंद्रित कहानियाँ

हिंदी कहीन में अब तक कई कहानीकारों ने पहाड़ केंद्रित कहानियाँ लिखी हैं। ाब भी पहाड़ की ा ार्ा होती है तब अनायास ही मनोहरश्याम ोशी, रमेश ंद्र, शैलेश मटियानी, शिवानी, बटरोही, पंक ा बिष्ट, शेखर ोशी ैसे कहानीकारों के नाम याद आ ाते हैं। मगर आश ार्य की बात यह है कि सभी पहाड़ केंद्रित कहानियाँ लिखते हैं लेकिन उनकी कहानियों में पहाड़ की अलग-अलग छवियाँ प्रस्तुत करते हैं। किसी ने पहाड़ियों के ान ीवन में हुए और होनेवाले परिवर्तन को अपनी कहानियों में ि त्रित किया है तो किसी ने पहाड़ के सौंदर्य को केंद्र में रखकर एक रोमानी दुनिया की कल्पना की है। इसलिए हमारे दिमाग में यह प्रश्न उठता है कि इन र ानाकारों ने पहाड़ के ि स संसार को हमारे सामने प्रस्तुत किया है, वह किस हद तक सही है तथा वह समग्रता में पहाड़ के ान ीवन, वहाँ की संस्कृति, सामा ाक परिवेश, पर्यावरण आदि को सही ंग से रेखांकित कर पाया है या नहीं? लेकिन शेखर ोशी की पहाड़ी ीवन पर आधारित कहानियाँ किसी एक छवि को प्रस्तुत नहीं करती बल्कि समग्र पहाड़ी ीवन को उनके आ ार-व्यवहार, रीति-रिवा ा धार्मिक, आर्थिक और सामा ाक परिस्थितियों को प्रकट करती हैं। दूसरे शब्दों में शेखर ोशी की कहानियाँ हमें संपूर्ण पहाड़ी ीवन को दर्शाती हैं। उनकी कुछ कहानियाँ सीधे

‘शहर’ से ालकर ‘पहाड़’ से ुड़ती हैं तो कुछ पहाड़ से निकलकर शहर की भीड़ में सम्मिलित होती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में पहाड़ी ीवन से संबंधित अलग-अलग विषयों को कथ्य या विषय-वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है।

पहाड़ पर केंद्रित कहानियाँ ाब भी लिखी ाती हैं उसमें अक्सर शोषण और उनके बाह्य परिवेश से कटाव की ा ार्ा होती रही है। शेखर ोशी भी इसी विषय को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। हर एक को अपने परिवेश के प्रति लगाव रहता है। नौकरी या ीवनोपा न के लिए ाब वह अपने परिवेश से दूर हो ाता है या कट ाता है तब उस में अपने परिवेश से कट ाने का दुःख अवश्य रहता है। इसी विषय को शेखर ोशी ने ‘टूटन’ कहानी में प्रस्तुत किया है। इस कहानी में नौकरी की व ाह से शहर में रहनेवाला त्रिलो ान अपने माता-पिता के देहांत के बाद उनकी ामीन- ायदाद बे ाकर शहर में घर बनाने की यो ाना से गाँव लौटता है। ये यो ाना स्वयं त्रिलो ान की इ छा के विरुद्ध है। लेकिन वह अपनी पत्नी और ब ों की इ छा से सम ौता कर लेता है। गाँव ाने के बाद उसे अपना ब ापन और माता-पिता का प्यार याद आ ाता है। वह अपनी ामीन- ायदाद बे ाने के सिलसिले में लीलाधर ी की राय लेने ाता है तो उनकी बातों में इस का विरोध स्पष्ट होता है-"आदमी परदेस में कितना ही बड़ा बन ाय, कितनी भी संपत्ति ोड़ ले, रहेगा परदेसी ही। परदेस तो विमाता की गोद है। कितना भरे करे विमाता-विमाता ही रहेगी। अपना घर अपनी भूमि की बात ही और है। यही असली माँ है। स ा कहना, इतने साल तुम परदेस में रहे हो लेकिन ो शांति तुम्हें यहाँ मिलती है वह क्या कभी क्षण-भर के लिए भी वहाँ मिली?" [11] लीलाधर ी के इन बातों से वह

[11] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.

असंतुष्ट होकर सुबेदार दानसिंह को अपनी ामीन- ायदाद बे ा देता है। ाते समय अपने गाँव को देखकर उसे अपने ब ापन की यादें याद आती हैं और साथ में अपने परिवेश से कट ाने के दुःख के कारण वह घुटनों में सिर देकर रोने लगे। अंत में अपनी गलती का अहसास होने के कारण वह इस प्रकार कहने लगता है-"ठाकुर, बुरा मत मानना। मु ासे गलती हो गयी। मैं यह सौदा नहीं करूँगा। तुम अपने रुपये वापस ले लो। कोर्ट-क ाहरी का दुहरा ख र्ा मैं भर दूँगा।"[12] उनकी इन बातों से अपने परिवेश से कट ाने का दुख और अपने गाँव के प्रति लगाव स्पष्ट हो ाता है।

यही विषय हमें 'व्यतीत' कहानी में भी मिलता है। इस कहानी में बाबू हर साल गर्मियों में अपने गाँव ाने की कल्पना करता है। लेकिन रमेश की छुट्टियों का अभाव और उनकी व्यस्तता के कारण वे लोग ा नहीं पा रहे हैं। अपने इस गाँव ाने की इ छा को वह तीन साल उम्र की आशा को पहाड़ की फल, पत्ते, फूल, पानी के बारे में बताते हुए प्रकट करता है। इससे पहले रमेश अपने पिता, बाबू से कुछ समय के लिए दफ्तर की, पड़ोसियों की या रिश्तेदारों की बातें करते हैं। लकिन अपनी व्यस्तता के कारण और कहीं बाबू उन्हें गाँव ले ाने की बातें पूछेंगे। इस डर के कारण वह अब कटा-कटा-सा रहने लगा है। इसी कारण से बाबू हमेशा अपने काल्पनिक ागत में डूबते रहते हैं। अ ानक एक दिन उनको पता ालता है कि निगम साहब पहाड़ ानेवाले हैं, तो वह अपना उत्साह रोक नहीं पाता इसीलिए वह वहाँ ाने की तैयारियों के बारे में, देखने योग्य मंदिरों के बारे में, पहाड़- ा.ते समय लेनेवाले सु ावों के बारे में सू ाना देता है और अंत में वह खुद न ाने के दुख के कारण खड़े-खड़े टूरिस्ट विभाग के उस पुराने कैलेंडर के ित्र को देखते रह ाते हैं। इस कहानी में न केवल बाबू का अपने परिवेश से कट ाने का दुख प्रकट हो रहा

[12] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.

है। बल्कि युवकों का बु ुर्गों के प्रति उपेक्षित भाव और बु ुर्गों का समर्पित भाव प्रस्तुत हो रहा है।

केवल नौकरी की व ाह से शहर में बस ाने से अपने गाँव से कट नहीं ाते बल्कि संपूर्ण रूप से तब कट ाते हैं ाब हमारे परिवार का अंत गाँव में होता है। यही बात हमें 'विस ार्न' कहानी में मिलता है। 'विस ार्न' कहानी में नौकरी के कारण दोनों भाई तारी और गिरीश शहर में बस ाते हैं तो गाँव में केवल भाभी ाो बाल विधवा है वह रह ाती हैं। दोनों भाई अपने साथ ालने का आग्रह करने पर भी भाभी अपनी आखिरी साँस पुरखों की देहरी पर ही छोड़ने की दुहाई देती है। दोनों भाई अपनी ामीन- ायदाद शेरसिंह को इस सम ौते पर बे ाते हैं कि " ाब तक भाभी ीवित हैं, वह उस मकान में रहेंगी और न रहने पर ही शेरसिंह उस हिस्से को भी अपने अधिकार में ले लेगा।"[13] विधवा भाभी के देहांत के बाद वह गाँव लौटता है तो सभी अपनी-अपनी तरफ से भाभी के प्रति उनकी सहानुभूति दिखाते हैं तो कुछ लोग भाभी को तारी और गिरीश के प्रति प्रेम का उल्लेख करते हैं। तारी को अपने ब ापन की कुछ यादें याद आती हैं। वह बारह दिन भाभी को नदी में पिण्डदान करता है। पिण्डदान के अंतिम दिन में ाब तारी पिण्डदान के बाद "तिलां ालि दी तो उसे अपने अंदर एक भयंकर शून्य का अनुभव होने लगा। उस सर्पिल रंगती नदी के किनारे शिलाखंड पर बैठे-बैठे उसे लगा, ैसे अं ाली में तिल-कुश लेकर उसने भाभी को हनीं बल्कि गाँव के तारी को विसर्ि ात कर दिया है ाो आ ा से सबके लिए अ ानबी हो ाएगा।"[14] इस प्रकार तारी का अपने गाँव से कट ाने का दुख प्रस्तुत होता है। "और गाँव के लिए यह सबसे बड़ी त्रासदी है, एक प्रकार से गाँव ि ास अनमोल हीरे को शहर इसलिए भे ाता है, कि वह अपनी (गाँव)

[13] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.149
[14] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.153

स्थिति में कुछ बदलाव ला सकेगा लेकिन शहर की लंबी गुफा उसे निगल ाती है।"[15]

गाँव से शहर में बस ाने से संयुक्त परिवार टूट ाता है। इस टूटते परिवार का बुरा असर बु ुर्गों और असहाय विधाओं पर पड़ता है। उनकी दयनीय और विवश स्थिति को शेखर ोशी ने 'परिक्रमा' नामक कहानी में प्रस्तुत किया है। इस कहानी में हरिदत्त ी के ार लड़कों में से दो लड़कों की मृत्यु के कारण से घर में दो अभाग्य विधवाओं पर दोनों सुहागिनों का अधिकार लता रहता है। दोनों सुहागिनों को अपने कमाऊ पतियों के कारण अपने-आप पर समान गर्व है। घर में व्याप्त कलह को दूर करने के लिए रामदत्त बँटवारे के बारे में ाब बात करता है तो हरिदत्त इसका विरोध करते हुए कहता है। "रामी! िस दिन मैं मर ाऊँगा, उस दिन तुम पहले बँटवारा करना फिर मेरी अर्थी उठाना। पर ाब तक मैं िंदा हूँ। कभी ऐसी बात इस घर में नहीं उठेगी।"[16] हरिदत्त की इन बातों से परिवार टूटने का दुख बु ुर्गों को होता है यह विषय स्पष्ट हो रहा है। अ ानक हरिदत्त की मृत्यु से दोनों भाई शहरों में बस ाने से गाँव में केवल अभाग्य विधवाएँ रह ाती हैं। एक दिन ोठी बहु का बेटा भुवन के पत्र से उसे अ छा पद मिलने की सू ाना मिलती है तो दोनों सुहागिनें ोठी बहु पर अपार प्रेम दिखाती हैं और अपने साथ रहने के लिए आग्रह करती हैं। लेकिन अ ानक भुवन पत्र के द्वारा अपनी कार एक्सीडेंट की खबर सुनाता है तो दोनों सुगागिनें ोठी बहु को गाँव ाने से नहीं रोकते। दोनों विधवाएँ एक दूसरे का सहारा बनकर वापस गाँव लौट ाती हैं। इस कहानी से यह बात स्पष्ट हो ाती है कि आर्थिक परिस्थिति किस प्रकार टूटते परिवार को प्रभावित करती है।

---

[15] हंस, सं.रा ेंद्र यादव, अप्रैल-1990

[16] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.143

पहाड़ी ीवन में सबसे यादा दिखनेवाली और एक समस्या है शोषण। यह शोषण मध्यनिम्नवर्गीय और निम्नवर्गीय लोगों के साथ होता है ो केवल पेट की समस्या से ू ा रहे हैं। 'बो ा' कहानी एक निम्नवर्गीय कुली का उ ा वर्ग के लोग किस प्रकार शोषण करते हैं इस स्थिति को प्रस्तुत करती है। इस कहानी में एक युवा कुली की आर्थिक विसंगतियों की ओर संकेत करते हुए, विषम परिस्थितियों में भी उसके सामा िक और नौतिक बोध को कहानीकार ने प्रस्तुत किया है। यह वहाँ के युवा की सबसे बड़ी त्रासदी है कि-"होश संभालने के बाद से ही उसे कभी प्रधान की ोर-बकरियों को ाराने की ि म्मेदारी सौंप दी ाती तो कभी खेतों में हाथ बटाने के लिए बुला लिया ाता।"[17] सही-गलत मार्ग अख्तियार कर उन्हें काम पर बनाये रखा ाता। "ले यार, एक बीड़ी दम लगा ले, फिर से दस-बारह पौधे रह गये हैं, इन्हें भी निबटा देना इसी हाथ।"[18] पर ऐसा नहीं है कि पहाड़ के तरुण कुली इस बात को सम ाते नहीं हैं, बल्कि सब कुछ ानते और सम ाते हुए भी वे सहने के लिए विवश हैं। इस प्रकार निम्न मध्यवर्गीय म ादूरों का उ ावर्गीय लोगों के द्वारा शोषण किया ाता है।

'हलवाहा' कहानी में यही शोषण दूसरे तरीके से हमारे सामने आता है। इस कहानी में उ ा वर्ग के बद्री प्रधान निम्न वर्ग के ीवानंद के खेत को अपने खेतों में मिला लेना ाहता है। इसके लिए वह उनकी संवेदनाओं को भी उभारने से बा ा नहीं आता-" ाब से तुम्हारे पिता गु ारे हैं, अब गाँव में किसी से बोलने-बतियाने को मन नहीं करता। देह में ताकत होती और तुम्हारी तरह ार अ छर प .ा होता तो इस खेती-बाड़ी की माया छोड़कर परदेश में कहीं

[17] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.116
[18] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.116

कोई रो ागार खो ा लेता।"[19] ीवानंद को खेत बे ाने के लिए म ाबूर करते हुए बद्री प्रधान ीवानंद के हलवाहे को टकनपुर की नयी सड़क निर्माण के काम में लगा लेता है और ीवानंद को भी उस काम में रखने के लिए तैयारियाँ करता है। लेकिन अंत में ीवानंद इस शोषण का विरोध करते हुए स्वयं अपने खेत में हल ाला लेता है ो उनकी ाति के विरुद्ध है। इस प्रकार इस कहानी में गाँव का सामंत वर्ग किस प्रकार गाँव की भोली-भाली ानता से ब ी हुई ामीन हड़पने का षडयंत्र करता है उसे प्रस्तुत किया गया है।

पहाड़ की प्रमुख विशेषता उसका सौंदर्य और वातावरण है। इसका ित्रण 'मेरा पहाड़' संग्रह की सभी कहानियों में है। 'सिनारियो' कहानी में प्रकृति ित्रण के साथ-साथ उनकी आर्थिक परिस्थितियों का उल्लेख भी किया गया है। रवि अपनी वृत्तित्र की शूटिंग के लिए अपने मित्र के पहाड़ी गाँव आ पहुँ ाता है। वहाँ के सौंदर्य को देखकर वह इस प्रकार उस का वर्णन करने लगता है-"आसमान साफ था। अस्त होते हुए सूर्य का आलोक किन्हीं अदृश्य दिशाओं से आकर उस संपूर्ण हिम-विस्तार को सिंदूरी आभा से भर गया था। धीरे-धीरे वह सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रृंखला की सलवटें गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पह ान बनाने लगी थी।"[20] रवि अपेन मित्र महेश के घर में रहता है ाहाँ महेश की माँ आँमा और बेटी सरुली रहते हैं। रात में ाब वह सो रहा था तब आँम माित्र के लिए रवि का कपड़ा टटोलती है और अपनी ला ारी प्रकट करते हुए कहती है कि-"अब बाँ ा की लड़कियाँ नहीं मिल पाती और ीड़ के कोयलों की दबी आग सुबह तक ूल्हे में नहीं रहती। स्पष्ट था कि माित्र का ख र्ा का भार उनके लिए

[19] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.24
[20] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.129

महँगा पड़ता था।"[21] आँमा की इन बातों से उनकी आर्थिक स्थिति स्पष्ट हो रही है। सरुली द्वारा बहुत दूर से बड़े मकान से माँगकर लाये हुए अंगारे तुषार बी ा में धरती पर बिखर ाते हैं और ब ो हुए निःशेष अंगारों से दोनों बू ियाँ और ब ी बहुत प्रयत्न के बाद ूल्हे को ालाती हैं।

धार्मिक परिस्थितियाँ

पहाड़ियों में भगवान के प्रति विश्वास यादा होता है। वे लोग उनके सुख-दुखों का संबंध भगवान से ोड़ते हैं। 'कथा-व्यथा' कहानी में यही बात स्पष्ट होती है। यह कहानी एक महिला ीवंती पर केंद्रित है, ो अपने अकेलेपन की व्यथा को समा ा और भगवान के साथ बांटकर दूर करना ाहती है। इस कहानी में दो कथाएँ साथ-साथ ालती है। एक सत्यनारायण भगवान की और दूसरी ीवंती की। अगर सत्यनारायण कथा आदर्शवाद को प्रस्तुत करती हैं तो ीवंती की कथा ीवन के यथार्थवाद को प्रकट करती हैं-"इतिश्री स्कंधपुराणे रेवा खंड सत्यनारायण कथाया... प्रथम, द्वितीय, तृतीय, ातुर्थ... एक के एक अध्याय समाप्त होते ा रहे हैं। ीवंती का मन कथा के बाहर भटक रहा है.. भगवान ने एक लड़की दी थी, उसे ही वह सुखी देख पाती।"[22] ीवंती भी अपने ओर बेटी के सुखी ीवन के लिए सत्यनारायण कथा कराना ाहती है, लेकिन अर्थाभाव के कारण से नहीं करा पाती है। वह अपनी ामा-पूँ ी दान कर देती है और भगवान पर विश्वास रखते हुए कथा सुनते-सुनते वह सो ाने लगती है-"भगवान उसे भी स्वप्न में दर्शन देकर कहेंगे- ीवंती! अब तेरे ीवन में रोग, शोक, दुख, दारिद्रय मिट गये हैं। तेरी भगवती को मैं पुत्ररत्न दूँगा, तेरे ामाई को देश में रो ागार मिल गया है। दो ी के पास

---

[21] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.132
[22] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.108

गिरवी पड़े अपने खेत तू इस वर्ष छुड़ा लेगी। तेरे गोठ में दो बैल बंध ाायेंगे।"[23] स्पष्टतः यह कहानी एक साधारण भारतीय महिला के सपनों को और उसकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा को प्रस्तुत करती है। ाीवंती कथा न कर पाने की स्थिति में उसने ाो पैसा कथा में दान दिया था, वह सिक्का खोटा निकल ाता है, ऐसा वह स्वप्न देखती है और उसका मन दुःखी हो उठता है-" ाीवंती घुटनों में सिर डाले सो ाती रही कि सुबह के सपने स ा होते हैं।"[24]

इस कहीन से पहाड़ी एवं भारतीय महिलाओं की धार्मिक परिस्थिति स्पष्ट हो रही है। सो ाने वाली बात यह है कि आखिर वे कौन-सी स्थितियाँ हैं, ि ासके कारण आम भारतीय महिलाएँ अंधविश्वास और रू ि वाद का शिकार होती है।

'छोटे शहर के बड़े लोग' नामक कहानी से शेखर ाोशी पहाड़ की सामा ाक स्थिति को प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी में मछलीवाला और मूँगफलीवाला दोनों पहाड़ी इलाके से ही शहर आकर अपना-अपना व्यापार करते हैं। मछलीवाले की ब ती हुई बिक्री ने मूँगफलीवाले को ईर्ष्यालु बना देती है। अपने इस ईर्ष्या के कारण वह मूँगफलीवाले की गैरहा ारी में उसका मे ा तोड़ता है। इस घटना से उस प्रांत में हल ाल म ाती है। वहाँ के कुछ लोग मछलीवाले का पक्ष लेते हैं तो कुछ मूँगफलीवाले का। वे लोग इस मामले को यूँ ही शांत नहीं करना ाहते हैं। ाब मछलीवाला वापस आकर इस स्थिति तो देखता है तो वहाँ के कुछ बु ुर्ग आपसी समन्वय के कारण सारा दोश ट्रक पर लगाकर मामले को शांत करते हैं। इस प्रकार उस शहर में कुछ बु ुर्ग लोग हैं तो कुछ ईर्ष्या और तमाशा देखनेवाले लोग भी हैं ि ान से वहाँ की सामा ाक स्थिति का ि ात्रण स्पष्ट होता है।

---

[23] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.111
[24] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.111

पहाड़ी इलाके के यादातर लोग खेती-बाड़ी पर निर्भर होते हैं। उनके तन मन खेतों पर ही रखते हैं। 'रास्ते' कहानी में हम इसी प्रकार के किसान को देख सकते हैं। इस कहानी में 'मैं' और 'दादा' नामक पात्र शादी के लिए दूसरे गाँव ाते हैं। मगर दादा का सारा मन गाँव के खेतों पर ही है। वह शादी में रहकर भी खेतों के बारे में इस प्रकार सो ाने लगता है-"इस साल सब खेती ौपट होकर रहेगी। अकेले किशन के बस का नहीं है यह सब। थोकदार लोग रात में ारूर पानी तोड़ देंगे-बेईमान हैं ससुरे सब।"[25] लौटते समय ाल्दी घर पहुँ ाने के लिए बटिया रास्ते को ुन लेते हैं। गाँव की सीमांत से ही दादा खेतों में काम करनेवाले म ादूरों को ाते हुए देखकर ऊँ ो स्वर में हाँकते हुए कहता है-"अरे पिरमुवाँ, ब ुली! अभी ार हाथ दिन शेष हैं, तुम लोग कहाँ भागे ा रहे हो रे!"[26] दादा को तब तक शांति नहीं मिलती ाब तक वह इस हफ्ते में हुए काम को न देख लेता।

इस प्रकार शेखर ोशी पहाड़ियों के खेतों के प्रति लगाव और किसान ीवन को 'रास्ते' कहानी के द्वारा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

पहाड़ी लोग यादातर अंधविश्वाासी होते हैं। वे लोग हुणियाँ और बाबाओं पर विश्वास रखते हैं। 'आदमी का डर' और 'रंगरुट' इन्हीं अंधविश्वासों पर आधारित कहानियाँ हैं। पहाड़ी और ग्रामीण प्रांतों में सर्दियों में एक वि ित्र प्रकार के लोग घूमते हैं ि न्हें 'हुणियाँ' कहते हैं। ब ों को मनाने के लिए अगर माँ 'हुणियों' का नाम लेती हैं तो ब ा सहमकर ुप हो ाता है। 'आदमी का डर' इन्हीं हुणियों के प्रति और उनके वेश-भूषा के प्रति ब ों के डर को प्रस्तुत करनेवाली कहानी है। नि नि वन में एक ब ो का

[25] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.
[26] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.

मुठभेड 'हुणिया' से होने से उस पर क्या बीतता है, उसको इस कहानी में प्रस्तुत किया गया है।

इसी प्रकार 'रंगरूट' कहानी में ' ाऊ बाबा' के प्रति उस गाँववालों के अंधविश्वास को प्रकट किया गया है। पहाड़ी गाँवों में उ ा शिक्षा न होने के कारण शहरों में प. कर गर्मियों की छुट्टियों में गाँव वापस आनेवाले ब ों के व्यवहारों में कई परिवर्तन आते हैं। ैसे कोई अपनी वेश-भूषा में परिवर्तन दिखाता है तो कोई फोटो कैमरा से गाँववालों को आकर्षित करना ाहता है। बड़े घर का ानुवाँ मौ ा लेने के लिए हल ालाता है तो नब्बू को बाँसुरी से प्रेम हो ाता है। कुछ लड़के लोकगीतों से संगीत साधना की दीक्षा लेने की यो ानाएँ भी बनाने लगे थे। उसी समय कहानी में 'मैं' नामक पात्र को उस गाँव के ' ाऊ बाबा' के अस्तित्व को लेकर िंता होती है। उस गाँव में ' ाऊ बाबा' का बड़ा महत्व है। बाबा को लोग भगवान ैसे मानते हैं। उनके महिमाओं के बारे में कई कथाएँ भी हैं। लेकिन कहानी के अंत में शिक्षित 'मैं' नामक पात्र के द्वारा इस अंधविश्वास का विरोध देख सकते हैं।

'स्वप्न देश की एक उदास शाम' शीर्षक कहानी बिछड़े हुए पहाड़ी दोस्तों के दर्द की कहानी है। इस कहानी में देबिया और मोहन दोनों पहाड़ी गाँव में अप्पर प्राइमरी तक साथ प.ते हैं। गाँव में उ ा शिक्षा न होने के कारण मोहन प.ने के लिए शहर ाला ाता है तो देबिया गाय-बैलों को ाराते हुए गाँव में रह ाता है। देबिया पहाड़ की ा.ाई पर ाय की दुकान ालाते हुए ीवन-यापन करता है। अ ानक एक दिन उसकी मुलाकात अपने पहाड़ी मित्र मोहन से हो ाती है तो दोनों मित्र बड़ी देर तक अपनी विगत शैशव की, गाँव-पड़ोस की, दैनिक ीवन-संघर्ष की बातें करने लगते हैं। ाब मोहन अपने साथ के लड़कों के बारे में पूछता है तो देबिया इस प्रकार ावाब देता है-

"मोहन बाबू, सब ाले गये। कोई कहीं, कोई कहीं ाहाँ ि सके सींग समाये।"[27] देबिया की इन बातों से अपने मित्रों से बिछड़ने का दुःख और दर्द पता ालता है। देबिया अपने पहाड़ी मित्रों को वापस पहाड़ में देखना ाहता है। इसीलिए वह मोहन से विनती करते हुए कहता है-"शाम को इधर आ ाया कीि ए, भला लगता है, दो घड़ी बातों में ही कट ाती है। आप ैसे लोगों के दर्शन हो गये बड़ा सौभाग्य।"[28] अंत में दोनों मित्र विदाई लेते हुए एक-दूसरे की आँखों में किसी स्वप्न को खो ाने लगते हैं।

इस प्रकार शेखर ोशी ने 'मेरा पहाड़' कहानी संग्रह के द्वारा पूरे पहाड़ी और ग्रामीण ीवन की विवशता, दर्द और संघर्ष को सहानुभूति के साथ सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है।

2.1.3 औद्योगिक परिवेश की कहानियाँ

शेखर ोशी के ीवन का एक महत्वपूर्ण भाग कारखानों में बीता है। उन्होंने अपनी अनुभूतियों को यथार्थ के आधार पर कथा-वस्तु के रूप में अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। ि ससे कहानियों में एक प्रकार की सह ाता और सरलता आ गई। उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा कारखाना म ादूरों के ीवन संघर्ष, दर्द और मर्म को खोलकर सामने रख दिया है। उनकी इस कहानी-कला का विकसित रूप उनकी कहानियों में दिखाई देता है। 'बदबू' ने नई-कहानी के दौर को ाक ोरा तो 'सीि याँ' और 'मेंटल' ैसी कहानियों ने सत्तर के दशक की प्रतिबद्ध कहानियों की तरह व्यवस्था और श्रमिकों के सामूहिक टकराव को प्रस्तुत किया है। 'नौरंगी बीमार है' कहानी के द्वारा म ादूर के ईमानदारी से बेईमानी तक की यात्रा को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया

[27] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.160
[28] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.160

है। इस प्रकार हम देखते हैं कि शेखर ोशी म ादूर और उनके संघर्ष को अपनी कहानियों में महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।

म ादूरों का संघर्ष उनके म ादूर बनने के साथ ही आंरभ होता है। ाब वह काम सीखने के लिए उस्ताद के पास ाता है तभी से वह म ादूर बन ाता है। उसी सीखने की प्रक्रिया में ही उसे उस्ताद से संघर्ष करना पड़ता है। म ादूर का प्रारंभिक संघर्ष हमें 'उस्ताद' शीर्षक कहानी में दिखाई देता है। यह मिस्त्री से उस्ताद तक ब ने एक तकनीशियन और उससे ुड़े प े-लिखे अपरेंटिस के संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में एक शिष्य मोटर इं ान का काम सीखने के लिए उस्ताद के पास ाता है। उस्ताद अपनी पूरी विद्या शिष्य को नहीं बताना ाहते। इसीलिए उन्होंने 'वाल्व टाइमिंग' को नियंत्रित करने का बारीक हुनर शिष्य को नहीं बताया। अब तक किसी शिष्य को नहीं बताया। इस विषय को ाानने के लिए शिष्य को उस्ताद के साथ संघर्ष करना पड़ा। म ादूर का यह संघर्ष अंत तक ालता रहा। लेकिन ाब वह शहर छोड़कर कहीं और नौकरी करने ा रहा है तो तब उस्ताद को फिक्र होती है कि अगर मेरा शिष्य 'वाल्व टाइमिंग' का काम नहीं कर पाया तो उस्ताद की ही बदनामी होगी। शिष्य बाहर ा रहा है और उससे कारखाने में उस्ताद के महत्व के घटने का खतरा नहीं है। इसलिए वह स्टेशन ाकर शिष्य को वह ज्ञान दे आते हैं।

म ादूर का यह आरंभिक संघर्ष हमें 'बदबू' कहानी में भी मिलता है। कहानी में 'वह' नामक पात्र को कारखाने में पहले दिन साबुन लगाने पर भी अपने हाथों से बदबू आती है। अन्य किसी म ादूर को ऐसा नहीं लगता। यानी वही अकेला ऐसा है, ो लगातार बदबू महसूस करता है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह कारखाने के म ादूरों से भिन्न है। मेने ामेंट या कारखाने के मालिक के खिलाफ लड़ना ाहता है। इसीलिए वह म ादूरों को एकत्रित करने का प्रयत्न

करता है। इस प्रयत्न में उसे पग-पग पर आंतरिक और बाह्य संघर्ष का अनुभव करना पड़ता है। क्योंकि म ादूर अपने स्वार्थ के लिए अपने साथी का भी नुकसान कर बैठते हैं। इतना ही नहीं, वे मालिकों, साहबों के दलाल भी बनते हैं और अपने लिए अपमान ानक स्थितियों का स्वयं निर्माण भी करते हैं। इसीलिए अंत में वह इस संघर्ष में हार ाता है। अब उसे अपने हाथों में साबुन लगाए बिना भी 'बदबू' नहीं आती क्योंकि अब वह भी सैकड़ों की तरह है, उनके इस संघर्ष की हार स ाइयों के आगे ला ार होने के कारण हुई है। वास्तव में 'बदबू' सर्वहारा की अभिशप्त एकता की कहानी है।

शेखर ोशी अपनी 'सीि ियाँ' और 'मेंटल' कहानियों के द्वारा व्यवस्था और श्रमिकों के सामूहिक टकराव को प्रस्तुत करते हैं। 'सीि ियाँ' कहानी में मालिक म ादूरों को टी-ब्रेक के लिए पंद्रह-बीस मिनट वक्त भी नहीं देना ाहते हैं क्योंकि उन्हें इस बात का डर है कि इस बीस मिनट में सारे म ादूर मिलकर कोई नई समस्या उनके सामने लाकर रख देते हैं। इस स्थिति का निवारण करने के लिए मैने ामेंट ने ट्रालियों के द्वारा ाय अलग-अलग शाप में भे ाने की यो ाना बनाई है। इसी विषय को लेकर म ादूर और व्यवस्था के बी ा संघर्ष होता है। संघर्ष की इस प्रक्रिया में व्यवस्था के खिलाफ म ादूर अपना-अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं कि-"बहुत हरामी है भैय्या, अपना काम निकालना हो तो बेटा-बेटा, भैय्या-भैय्या कहेगा और काम निकल गया तो बस-फिरी। कोई ाह्म पह ानै न रखेगा।"

"कारीगरी की कोई इ ात नहीं इसके लिए, उल्टा-सीधा कैसा ही होय बस काम ालाऊ हो ाना ाहिए। दिन-भर बस हाब! हाब! प्रोडक्सन ब ाओ। प्रोडक्सन ब ाओ।"[29] व्यवस्था की तरफ से मैने ार इन सारी बातों का ावाब

[29] डाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.41

देना ाहता है लेकिन उनके अहं या पद के कारण म ादूरों के पास नहीं ा पाता। इस प्रकार व्यवस्था और श्रमिकों के बी ा का संघर्ष ालता रहा। इसी प्रकार का संघर्ष या टकराव हमें 'मेंटल' कहानी में भी मिलता है। इस कहीन में 'वह' नामक पात्र एक सत्यवादी, ईमानदार, स्वाभिमान म ादूर है। ि सके कारण उसकी सर्विस बुक में कहीं कोई लाल निशान नहीं है। अपनी कारीगरी के लिए कई बार उन्होंने बड़े अफसरों से भी शाबाशी पाई। लेकिन इतनी मेहनती म ादूर पर एक दिन भी वह साहब के हाथ में फाँस ुभाने का इल ाम मिस्त्री उस पर लगाता है। इस के बाद कई बार वह साहब खुशमि ा ा से इसी विषय पर म ाक करने लगते हैं, तो साथी उसका साथ देते हैं। अंत में उस पर टूलकिट से औ ार ुराने का आरोप लगाते हैं। वह स्वाभिमान म ादूर होने के कारण उससे ये सब सुना नहीं ाता। वह व्यवस्था से संघर्ष करने लगता है। संघर्ष की इस प्रक्रिया में उसका अंतः संघर्ष विस्फोटित होकर वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठत है और पागल यानी मेंटल बन ाता है। इस प्रकार शेखर ोशी व्यवस्था और श्रमिकों के बी ा के संघर्ष को विस्तारपूर्वक हमारे सामने रख देते हैं।

औद्योगीकरण से कई लोग किसान से म ादूर बन गये। लेकिन ामीन के प्रति उनके लागव के कारण अपनी ामीन को ब ाये रखना ाहते हैं। इस ामीन ब ाने की प्रक्रिया में उन्हें कई संघर्ष करने पड़ते हैं। 'आखरी टुकड़ा' इसी ामीन संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में 'मँगरू' एक किसान था। लेकिन सरकारी लोगों की ामीन आक्रमणों की व ाह से वह किसान से म ादूर बन ाता है। वह अपनी ामीन पर बने कारखाने में म ादूरी करते हुए ब ी हुई उस ामीन के टुकड़े को देखकर संतुष्ट है। क्योंकि उस ामीन पर मंगुरू का पिता ान लगाते थे। मरते समय भी वह कराहते हुए कहा था-"पुरखों की

थाली हैं, मालिक! इसका सौदा मत करो।"[30] लेकिन अंत में स्वयं मँगरे का बेटा सूर ा उस ामीन को कारखाने में बदल देता है। इस प्रकार यह दो पीि यों के वि ाार एवं कार्यशैली के शाश्वत द्वंद्व की कहानी है। इस कहानी में शेखर ोशी ने किसान से म ादूर बने एक म ादूर के अंतः और बाह्य संघर्ष को प्रस्तुत किया है।

म ादूर ीवन में रिटायरमेंट दिन का बड़ा महत्व रहता है। उस दिन एक म ादूर किस प्रकार वि ाार करता है वह अपने अनुभवों को किस प्रकार बाँटना ाहता है इन सारी बातों को 'आशीर्व ान' शीर्षक कहानी में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार यह एक स्मरणीय कहानी भी है। इस कहानी में श्यामलाल अपने म ादूरी ीवन का अंतिम दिन पूरा कारखाना घूमते हुए अपने अनुभवों को याद करता है। वह अपने कारखाने के सभी सदस्यों से मिलते हुए विदाई लेता है। शाम को उसका सेवा-निवृत्ति के अवसर पर विदाई समारोह आयोि ात किया गया है। "उसने सो ा, अगर अलखनारायण ने उससे भी बोलने का अनुरोध किया तो वह बताएगा उन्हें उस कारखाने के बारे में, कारखाने के पुरखों के बारे में ि ान्होंने इसकी एक-एक ईंट रखी है, उस ामाने के बारे में ाब सिर उठाने का मतलब सिर कटाना होता था, उन ीतों के बारे में ि ान्हें ीतना आसान नहीं था, उन हारों के बारे में ि ान्हें भूलना आसान नहीं है। वह उन्हें हुनर की इ ात करने के लिए कहेगा, वह उन्हें अपने औ ाारों से प्यार करने के लिए कहेगा, वह उन्हें अपने शरीर की हिफा ात करने के लिए कहेगा। ठेले पर ैनल फेंकता मुल्लू, कैं ा मशीन का ऑपरेटर, पटरी क्रेन वाला लड़का, ग्राइंडर परखड़ा रामलखन उसकी आँखों के आगे घूम गए।"[31] लेकिन म ादूर नेताओं का भाषण समाप्त होते-होते छुट्टी का सायरन ब ा उठा।

---

[30] डाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.57

[31] डाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.

श्यामलाल अपने समय की मुश्किलें और काम के प्रति निष्ठा की बातें शुरू किया ही नहीं म ादूर घर ाने के लिए बेताब हो उठते हैं। लोग आशीर्व ान का इंत ार किए बगैर ही श्यामलाल का ायकार करते हुए ाले ाते हैं, रुँधे गले से श्यामलाल शून्य में देखते हुए सिर्फ सिर हिलाता रहता है।

शेखर ोशी अपनी कहानियों के द्वारा म ादूर ीवन के विविध दशाओं का, उनके संघर्ष, दुःख-दर्द आदि को प्रस्तुत करते हैं। 'डाँगरी वाले' संग्रह की सारी कहानियाँ म ादूर ीवन संघर्ष की कहानियाँ हैं।

'बदबू' से होते हुए एक म ादूर की यात्रा को 'आशीर्व ान' तक लाते हुए उसके ीवन के सारे अनुभवों, दुःख, संघर्ष आदि को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। शेखर ोशी स्वयं म ादूर थे। इसीलिए उन्होंने स्थितियों का इतना सह ा, सरल एवं स ीव ित्रण किया है। इसी कारण उनकी कहानियाँ प्रसिद्ध एवं बहु ा ित हुई हैं।

2.1.4 अकेलापन

बीसवीं सदी के पाँ ावें-छठे दशक से विश्व भर की मानसिकता में बदलाव आया था। इसी बदलाव को प्रत्येक भाषा के साहित्यकारों ने अपनी शक्ति के अनुसार र ाना के माध्यम से पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया। इस बदलाव के मूल में एक ओर दूसरे महायुद्ध के भयावह अनुभव थे, विज्ञान की प्रगति थी, बदलती अर्थ व्यवस्था थी, ब ते शहर थे, भूमिगत संघर्ष था, नैतिक मूल्यों पर होनेवाले आघात थे, टूटते परिवार थे और इन सबके कारण दिन-ब-दिन अकेलेपन का अनुभव करनेवाले व्यक्तियों की संख्या ब ती ा रही थी। वास्तव में अकेलापन औद्योगीकरण, शहरीकरण और इनके दबाव में टूटते सामा िक, पारिवारिक संबंधों के फलस्वरूप पैदा हुई एक समस्या है। इसी समस्या को केंद्र में रखकर नई कहानी के दौर के कहानीकारों ने कथाभूमि

का ायन किया ैसे निर्मल वर्मा, मार्कण्डेय, अमकरांत, भैरव प्रसाद गुप्त, शेखर ोशी आदि।

'हिंदी कहानीःअलगाव का दर्शन (The theme of Alienation in modern hindi short stories)' में नयी कहानी में अलगाव-बोध को दर्शाते हुए गार्डन ाल्र्स रोडरमले ने लिखा है कि-"'नगर की पृष्ठभूमि' में अकेलापन और अलगाव की विषय-वस्तु नयी कहानी में बार-बार आती है खुद लेखकों की तरह उनके पात्र भी कहीं और से बड़े शहर में आये हैं। लेकिन ीवन में यह अलगाव का बोध केवल शहर के कारण ही आये हैं, बल्कि औद्योगिक समा ा ब ़ती आर्थिक विषमता, परिवार, स्त्री-पुरुष संबंध में बिखराव, ि ांदगी की दौड़ में आगे अंधा-धंदे ब ़ने की प्रवृत्ति आदि कारणों से भी आया है। यह बोध आगे भी ालता रहता है।"[32]

ाब कोई आदमी अपनी ागह छोड़कर दूसरी ागह बस ाता है। तब वह अपने आप को अ ानबी-सा महसूस करता है और खुद को अकेला ि ांदगी के साथ लड़ते हुए सो ाता है। मनुष्य अपने बीते हुए ीवन की घटनाओं को बार-बार दोहराता है। "मनुष्य की भावनाएँ बड़ी वि ात्र होती हैं। नि ानि, एकांत स्थान में निस्संग होने पर कभी-कभी आदमी एकाकी अनुभव नहीं करता। लगता है, इस एकाकीपन में भी सब कुछ कितना अपना है। परंतु इसके विपरीत कभी-कभी सैकड़ों नर-नारियों के बी ा ानरवमय वातावरण में रह कर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है, ाो कुछ है, कितना अपनत्वहीन। पर यह अकारण ही नहीं होता। इस एकाकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की ाड़ें होती हैं-विछोह या विरक्ति की किसी न किसी कथा के मूल में।"[33]

---

[32] हंस, रा ोंद्र यादव, अप्रैल-1990

[33] कहानी की बात, मार्कण्डेय-पृ.23

मानव इसी विरक्ति भावना के कारण पीड़ित होकर ीने की लालसा खो बैठती है। उसके लिए ीना और मरना एक समान होता है। ाब से मानव विरक्ति से अपने-आप को दूसरों से दूर रखते हुए सीमित रहता है तबसे उसका अकेलापन ब ने लगता है।

बीसवीं सदी में आये हुए इस बदलाव के कारण समा ा में एक समस्या खड़ी हो गई है। उसी अकेलेपन को केंद्र में रखकर कई कहानीकार कहानियाँ लिखी थीं। नई कहानी के सभी कहानीकार अकेलेपन को अपनी कहानियों की विषय-वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया है। शेखर ोशी ने भी इसी अकेलेपन को अपनी कहानियों के लिए कथ्य के रूप में अपनाया है।

'दा य' शेखर ोशी की आरंभिक कहानी है। इस कहानी में मदन नामक लड़का नौकरी के कारण पहाड़ी इलाके से शहर में आकर एक होटल में काम करता है। वह शहर में अपने आप को अकेला महसूस करता है तथा उसकी आँखें बराबर किसी ऐसे आदमी की तलाश करती रहती हैं, ि सि वह अपना कह सके। उसी समय उसका परि ाय ागदीश बाबू से होता है। दोनों एक ही पहाड़ी प्रांत से संबंधित होने के कारण दोनों में अपनत्व की भावना ागती है। उसी कारण वह पहाड़ी बालक ागदीश बाबु को दा यु (बड़े भाई) कहता है। कुछ समय के लिए दोनों का एकाकीपन दूर हो ाता है। लेकिन ीवन में ब ता हुआ अलगावबोध और अपनी 'अस्मिता' बनाने की कोशिश के कारण ागदीश बाबू का मध्यवर्गीय संस्कार ाग उठता है। इसी कारण से उसे यह महसूस होने लगता है कि छोटी हैसियतवाला यह पहाड़ी बालक भीड़ भरे होटल में बार-बार 'दा यु' कहकर उसके 'प्रेस्टि ा' को कम कर देता ह। इसी कारण से वह क्रोधित होकर अपनापन छोड़ देता है-" ागदीश बाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन

'प्रेस्टि ।' का अर्थ सम । सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहा, पर मदन बिना सम ाये ही सब कुछ सम । गया था।"[34] इस प्रकार उस पहाड़ी बालक का अकेलापन केवल कुछ ही समय के लिए दूर होता है।

शेखर ोशी ने इस कहानी के बारे में लिखा है-" ीवन की परिस्थितियों ने छोटी उम्र में ही मु ो विभिन्न भौगोलिक और सामा ाक परिवेशों में ीने के लिए विवश किया है। छोटी उम्र में ही मातृविहीन हो ाने के बाद पर्वतीय अं ाल के प्राकृतिक सौंदर्य से वनस्पति विहीन रा ास्थान में विस्थापित कर दिए ाने का दुखद अनुभव और अपने परिवेश से कट ाने की कष्टप्रद अनुभूतियों ने मेरी संवेदना की धार तेज़ कर दी। सम । विकसित होने पर अपने नि ी अनुभवों को सामा ाक परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया आरंभ होने के कारण ाब मैंने 'दा यु' कहानी लिखी तो उसका नायक मेरा ही प्रतिरूप था ो अपने परिवेश से विस्थापित होकर अपरि ातों की भीड़ में किसी आत्मीय को खो । रहा था। लेकिन सामा ाक यथार्थ ने उसे एहसास करा दिया था कि आत्मीय संबंधों के मूल में भी वर्ग स्वार्थ होते हैं ो मानवीय संबंधों में दरार डाल देते हैं।"[35]

यही अकेलापन अथवा अलगाव बोध हमें 'कोसी का घटवार' नामक कहानी में भी मिलता है। यह कोसी नदी के तट (पन ाक्की) के मालिक गुसाई और लछमा की प्रेम कहानी है। ि ासमें आरंभ से लेकर अंत तक अकेलेपन खालीपन और सुनसान वातावरण का ही वर्णन है। नौकरी से लौटे गुसाई ने समय काटने के लिए कोसी नदी के तट पर एक पन ाक्की लगा ली है लेकिन "कभी-कभी गुसाई को यह अकेलापन काटने लगता है। सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, ि ांदगी-भर साथ देने के लिए ो अकेलापन उसके द्वार

[34] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.12
[35] हाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.10

पर धरना देकर बैठ गया है।"[36] इस अकेलेपन के मूल में गुसाई की असफल प्रेम कहानी है। गुसाई लछमा से प्यार करता है और उससे शादी भी करना ाहता है। लेकिन लछमा का पिता परदेश में बंदूक की नोक पर ान रखने वाले से अपनी बेटी की शादी नहीं करना ाहता है। गुसाई फौ ा में काले बालों को लेकर गया था। ाब वह अपने खि ाड़ी बाल लेकर लौटता है तो पता ालता है कि इस बी ा में लछमा भी विधवा बन गयी है। उसका एक बेटा भी है। अपने पिता को और गुसाई से किशोर उम्र का प्यार खोकर लछमा भी कम अकेली नहीं है। लछमा को न पाने से गुसाई में ाो अभाव और विरक्ति की भावना है वह पूरी कहानी में देखने को मिलती है। ाब दोनों मिलते हैं तब गुसाई लछमा की आर्थिक परिस्थिति ान कर पैसों की सहायता करना ाहता है। लेकिन लछमा इन्कार कर देती है। ऐसी दरारों से भरे किनारों के साथ-साथ बहने वाली कोसी नदी का परिवेश प्रतीकात्मक भी है और उद्दीपक भी। यही बात घट की धीमी ालन की भी है। किसी भी तरह न कटनेवाले अकेलेपन की अनुभूति पूरी कहानी पर हावी है। लछमा से मिलने से उसका अकेलापन थोड़ी देर के लिए ही दूर होता है बाद में वह फिर से अकेली बन ाती है। इस प्रकार पूरी कहानी में गुसाई के अकेलेपन की समस्या अंकित हुई है।

'संवादहीन' कहानी में ताई अपनी बहु-बेटों का शहरों के प्रति मोह के कारण गॉवं में अकेली रहती है। "अपनी अकेली ान के लिए ताई दो ून का एक ून ूल्हा फूँक लेती, व्रत-उपवास के बहाने ौका- ूल्हा टाल ाती, पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही, पर सूने घर की भाँय-भाँय ैसे उन्हें काटने को दौड़ती थी।"[37] ताई अपने इस अकेलेपन को दूर करने के लिए मिट्ठू नामक तोता पालती है। मिट्ठू 'सीताराम' शब्द बोल कर विशिष्ट तोते के

---

[36] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.

[37] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.37

रूप में अपनी उपस्थिति द र्ा करता है। ताई तीर्थयात्रा पर ाते हुए मिट्ठू को ागन मास्टर के घर में रखती है। लेकिन तोता अपनी पक्षीबुद्धि दिखाकर उड़ ाता है। उस स्थान को भरने के लिए ागन मास्टर और एक तोते को लाते हैं ि ासमें कोई विशिष्टता नहीं है। इस प्रकार ताई अपने विशिष्ट तोते को खो कर फिर अकेली पड़ ाती है। इस प्रकार पूरी कहानी में ताई के अकेलेपन और सूनेपर का वर्णन है। इस कहानी के माध्यम से विशेष और सामान्य के बी ा बहुत मोटी लकीर खीं ा कर इस कठिन काम को बहुत ही कलात्मक ंग से शेखर ोशी ने कर दिखाया है।

इसी क्रम में 'रिक्त' कुछ दूसरी तरह की कहानी है। इस कहानी में मीना काले ा में नौकरी करती है। अपने रिटैरमेंट के बाद घर में अकेली रहती है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वह अलग-अलग अखबारों में प्रकाशित एक ही तरह के समा ाारों को तीन-तीन बार प ़ती है ो टी.वी. में भी प्रसारित हो ुके थे। वह अपने-आप को व्यस्त रखना ाहती है। इसीलिए वह बिखरे अखबारों के पन्नों को अपने अकेलेपन का साथी मानती है। वह उन बिखरे पन्नों को मोड़कर क्रमवार मे ा पर लगाये रखती है। इस अकेलेपन के कारण उसके लिए एक दिन बिताना भी कठिन और उसके सामने एक प्रश्न ैसा ही है। मीना अपने ब ापन के दिनों को याद करती हुई सभी की व्यस्तता पर सो ाते हुए प्रस्तुत ीवन में अपनी सहेलियों की व्यस्तता को देखकर ईर्ष्या करती है। वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए कुछ समय के लिए मिसे ा साह से मिलने के लिए सो ाती है। लेकिन उसकी बातें सुनकर बाद में उसका मन कडवाहट से भर ाता है। वह अपने मित्रों को पत्र लिखने के लिए बैठती है। मगर उसकी सम ा में नहीं आता कि वह क्या लिखे। वह हारकर बाल्कनी से आते- ाते सवारों को, ब ों को, धोबिन को देखती रह ाती है।

इस से यह स्पष्ट होता है कि वह अकेलेपन से पीड़ित होकर उसका मन भी अकेला और सूना हो ाता है। इस कहानी में कोई 'कहानी' नहीं है बल्कि संपूर्ण कहानी में मीना के सूनेपन और अकेलेपन का ही वर्णन है।

अकेलेपन के कई कारण हैं। 'दा यु' कहानी में अगर हम अ ानबियों के बी ा अपनों को खो ाने वाले लड़के को देखते हैं तो इसके विपरीत अपनों के बी ा में रहते हुए भी अपने-आप को अकेला महसूस करने का पात्र हमें 'ि ाद्दी' शीर्षक कहानी में मिलता है। इस कहानी में रा ोंद्र छोटी उम्र में ही मातृविहीन होने के कारण वह अपने मामा के घर में रहने लगता है ो उनकी मामी के विरुद्ध है। रा ोंद्र के पिता आने के समा ाार से घर के सब लोग उसका पक्ष लेने लगते हैं। मामी तेल लगाकर नहलाती है तो ांदन ीवन में पहली बार रा ु का पक्ष लेकर सल्ली पर आक्रमण करता है। रा ु के व्यवहार से घर में उसकी स्थिति क्या है यह उसके पिता सम ा ाते हैं। लेकिन वह रा ु को अपने साथ नहीं ले सकते यह उनकी म ाबूरी है। ाते समय रा ु उसके साथ ालने की ि ाद्द करता है। लेकिन वह हमेशा की तरह गुम-सुम मौन रह ाता है। इस तरह रा ु अपनों के बी ा रहते हुए भी अपने-आप को अकेला या सूना महसूस करता है। इसीलिए वह कहीं भी ि ाद्द नहीं करता। वह अपने-आप को अकेला महसूस करते हुए सभी ीज़ों या विषयों को स्वीकार करता है। एक मातृविहीन लड़के के दुख-दर्द और अकेलेपन को सफलतापूर्वक शेखर ोशी हमारे सम्मुख 'ि ाद्दी' कहानी के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

शेखर ोशी अकेलेपन को अपनी कुछ कहानियों में कथ्य के रूप में लिया है तो कुछ कहानियों में पात्रों के द्वारा सिर्फ इसका उल्लेख किया है ैसे 'रास्ते' कहानी में ारवाहे के द्वारा, 'कथा-व्यथा' में ीवंती के द्वारा और 'बिरादरी' कहानी में समा ा के अकेलेपन को रेखांकित किया है।

2.1.5 बदलते ीवन मूल्य

बीसवीं शताब्दी में मूल्य शब्द का बड़ा ही महत्व है। सामान्यतः 'मूल्य' शब्द के अर्थ की बात सो ाने से उसका सीधा संबंध किसी वस्तु के कीमत या दाम से होता है। यह आ ा के अर्थ केंद्रित युग के प्रभाव का ही परिणाम है ो दाम या कीमत की ा ार्ि के बिना दैनिक कार्यों में आगे नहीं ब ़ सकते। इसीलिए 'मूल्य' शब्द का प्रयोग सामान्यतः आर्थिक अर्थ के रूप में ही किया ाता है। इसके अतिरिक्त 'महत्व' के अर्थ में भी इस शब्द का प्रयोग किया ा सकता है।

हिंदी में प्रयुक्त 'मूल्य' शब्द संस्कृत की 'मूल' धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय संयुक्त कर देने से बना है ि ासका अर्थ कीमत, म ादूरी आदि से होता है।"[38] 'मूल्य' शब्द अंग्रेज़ी के VALERE से बना है ि ासका अर्थ अ छा, सुंदर होता है।

मानव ीवन को साकार और क्रमबद्ध बनाने के लिए समय-समय पर ीवन के कुछ मानदंडों का निर्धारण किया ा रहा है और उन्हीं के आधार पर मूल्य की अवधारणा अस्तित्व में आयी। इससे स्पष्ट है मूल्य का संबंध ीवन से है। अतः मूल्य शब्द का आशय मूलतः ीवन-मूल्य अर्थात् ीवन के मापदंड से ही होता है। साहित्य में ीवन-मूल्यों की ा ार्ि प्रायः समा ाशास्त्रीय अर्थ में ही की ाती है। समा ाशास्त्र की मान्यताओं के आधार पर ीवन मूल्य एक आदर्श ीवन-पद्धति है ि ासका पालन करना समा ा के लिए आवश्यक माना ाता है। किसी भी दृष्टिकोण या वि ाार को ीवन-मूल्य के रूप में स्वीकार करने के लिए उमसें दो विशेषताओं का होना आवश्यक है। एक तो यह है कि वह दृष्टिकोण अर्थात् वै ाारिक सत्य, सुंदर और शिवं से युक्त हो,

[38] हिंदी उपन्यास और ीवन-मूल्य में उद्धृत, डॉ.मोहिनी शर्मा-पृ.1

दूसरे वह मनुष्य के ि ंतन का, उसकी वि ाारणा का परिणाम हो। अतः ाीवन-मूल्य ाीवन के प्रति एक दृष्टिकोण है, ि ासके निर्माण में मनुष्य का व्यक्ति, समा ा और वस्तु के साथ एक वै ाारिक संबंध है ि ासके निर्माण में मनुष्य की मूल प्रवृत्तियाँ और उसके सामा ाीकरण के प्रमुख तत्व ैसे आदर्श, नैतिकता, परंपराएँ, नॉर्म, तथ्य आदि का योगदान होता है। ाीवनम ूल्य से ही मानव संस्कृति सुसंबद्ध और साकार बनती है। समा ा में कुछ लोग आदर्शवादी भावना से प्रेरित होकर यह मान कर ालते हैं कि ाीवन मूल्य स्थिर और शाश्वत होते हैं। लेकिन स ा बात तो यह है कि ाीवन मूल्य न तो स्थिर होते हैं और न ही शाश्वत क्योंकि विकसित समा ा और सभ्यता के साथ-साथ ाीवन-मूल्यों में भी बदलाव होता रहा है। इस बहुआयामी समा ा में ाीवन मूल्यों का बदलाव अनिवार्य और आवश्यक बन गया है। ऐतिहासिक परिस्थितियों में बदलाव आने से ाीवन मूल्यों के स्वरूप में भी बदलाव होता रहता है। इसलिए आ ा के ि ंतक यह मान कर ालते हैं कि ाीवन-मूल्य शाश्वत नहीं हैं। इन्हीं बदलते ाीवन मूल्यों को शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। कुछ आलो ाक शेखर ोशी को आदर्शवादी मानते हैं। सो ाने की बात यह है कि अगर वे आदर्शवादी होते तो उनका यथार्थ आदर्श के फ्रेम से बाहर नहीं आ पाता लेकिन उनकी सारी कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर लिखी गई हैं। वे अपने पात्रों के द्वारा यथार्थ को आदर्श से बाहर निकालकर पाठक के सामने रखते हैं।

श्रमिक ाीवन के बारे में रहस्यवादी अवधारणाएँ समा ा और साहित्य में प्र ालित हैं। मसनल म ादूर ईमानदार, मेहनती, सत्यवादी और स्वाभिमानी ही होता है। ये इकहरी अवधारणाएँ हैं ि ानकी परिणति स्याह या सफेद विश्वास में होती है। 'नौरंगी बीमार है' इस कहानी का नौरंगी एक ईमानदार म ादूर का

उदाहरण है। उसकी ईमानदारी पर सब को विश्वास है। बड़े बाबू नौरंगी की ईमानदारी पर विश्वास प्रकट करते हुए कहते हैं कि-"बहुत ईमानदार आदमी है साहब नौरंगी मिस्त्री। मैं आपको एक पुराना डेलीआर्डर दिखाऊँगा। ार-पाँ ा साल पहले की बात है। तब महेंद्र सिंह साहब थे यहाँ, उन्होंने गलती से इन्हें ार सौ रुपया यादा दे दिया था। वे वर्कशॉप में गए, एक-दो बार रुपया गिना, लगा कि कुछ गड़बड़ है। वापस कर गए तत्काल। कहाँ मिलते हैं ऐसे लोग, इस ामाने में। ीफ साहब खुद यहाँ आकर उन्हें शाबाशी और ईनाम दे गए थे, इनसे हाथ मिलाया था।"[39] इतना ईमानदार आदमी भी एक मूल्य छोड़कर दूसरा मूल्य अपनाता है। वह भी पे-काउंटर से मिले अधिक पैसे दबा लेता है। बात छिपाने के लिए और लोगों की टीका-टिप्पणिी से ब ाने के लिए बीमारी के बहाने से छुट्टी ले लेता है। ाब साथी उसे देखने घर पहुँ ाने लगते हैं तो वह बीमारी का बहाना छोड़कर ठसके से काम पर लौट आता है। म ादूर ि ासे हम ईमानदारी का प्रतीक मानते हैं वे भी इसी ाटिल समा ा के ही अंग हैं और उनमें भी ाटिलताएँ उतनी ही हैं इसीलिए म ादूर भी बदलता है और वह एक मूल्य छोड़कर दूसरा मूल्य अपनाता है। इस प्रकार शेखर ोशी ईमानदार म ादूर व्यक्ति का ईमानदारी से बेईमान तक की इस यात्रा को यथार्थ के आधार पर निस्संको ा अपनी कहानियों में व्यक्त करते हैं। मगर हम यह नहीं कह सकते हैं कि हर म ादूर ईमानदार से बेईमान बनता है। कुछ ऐसे भी म ादूर होंगे ो परिस्थितियों के प्रभाव से बदलते हैं।

' ी ह ूरिया' कहानी में ापरासी यह मान कर ालता है कि उक्त आदर्श ापरासी को सिर्फ विनम्र बनाता है इसलिए वह आदर्श बनने के मोह में सभी को खुशामदी और मक्खनबा ी करता रहता है। लेकिन अपने साथी की

[39] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.91

मृत्यु पर अफसर की बातें सुनकर वह अपना आक्रोश संभाल नहीं पाया और अफसर से तं ा और तुर्शी से भरी बातें कर बैठता है। इससे यह पता ालता है कि एक ापलूस म ादूर ो आदर्श बनने का प्रयत्न करता है वह भी परिस्थितियों के प्रभाव से आदर्श को छोड़कर यथार्थवादी बन ाता है। इस प्रकार शेखर ोशी बाह्य और आंतरिक परिवर्तनों पर निरंतर अपनी नज़र रखते हैं।

'गलता लोहा' सवर्ण म ादूरों और पिछड़े दस्तकारों के बी ा ब.ती व्यावसायिक नज़दीकी, परस्पर स्वीकृति की ही कहानी नहीं है बल्कि वह हमें बताती है कि समा ा का नया स्तरीकरण भी श्रम ही करता है। इस कहानी में गरीब ब्राह्मण ांद्रदत्त का बेटा मोहन प.ने में कुशाग्र है। गंगाराम लुहार का भोंदू बेटा धनराम उसका सहपाठी है। स्कूल मास्टर त्रिलोक सिंह मोहन की सवर्ण मेधा पर विश्वास करते हैं कि ब्राह्मण का बेटा है तो प.ं ही ाएगा। मोहन आगे की प.ाई के लिए लखनऊ ाता है। मगर ि ास पहाड़ी भाई ने नौकर ैसे बनाकर साथ रखा। मोहन बी.ए. पास करने की ब ााय आई.टी.आई. से टेक्निकल ट्रेनिंग करके नौकरी करता है। गाँव लौट कर एक दिन हंसुए की फाल ते ा करने लुहार मित्र धनराम के पास पहुँ ो। धनराम लोहे की छड़ को गर्म कर मोड़ने की कोशिश कर रहा था, पर वह ंग से हो नहीं पा रहा था। टेक्नीशियन मोहन ने ाटपट उस छड़ को सुघड़ता से मोड़ डाला। इस प्रकार ब्राह्मण का बेटा सभ्यता की दौड़ में पुराने पड़ गए विश्वासों और अवधारणाओं को छोड़ते हुए तकनीकी की ओर ब.ता है। शेखर ोशी को इस प्रकार होने वाले सह ा परिवर्तनों पर विशेष रु ा है। इसीलिए अ ानक होनेवाले इस बदलाव पर अपनी सहमति को कहानी के अंत में प्रकट कतरे हैं।

"उसकी आँखों में एक स कि की ामक थी-ि ासमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार- ीत का भाव।"[40]

'डांगरीवाले' एक म ादूर परिवार की कहानी है ाो धीरे-धीरे आधुनिकता की ओर ब ़ रहा है। परमेश्वर डांगरी पहन कर कारखाने में काम करता है। उसका बेटा प ़-लिखकर इं ाीनियर बनता है। वह अपने परिवार को मध्यवर्ग से उ ा वर्ग में पहुँ ाने के लिए निरंतर प्रयत्न करता रहता है। इसीलिए वह घर में डाइनिंग टेबुल लाता है और अपनी शादी में आधुनिक पद्धति से बुफे और एट-होम रखता है। परमेश्वर को ये सब पसंद नहीं है। वह विवश होकर परिवारवालों की खुशी के लिए इस बदलाव को स्वीकार करता है। आधुनिक वि ाारधारा के प्रभाव के कारण ाीवन की स्थिति में परिवर्तन आया है। इसीलिए इस कहानी में परमेश्वर भी इस बदलाव को स्वीकार करता है। वह भी यह ाानता है कि वही ब ाता है ाो समय के साथ ाल सकता है। केवल वह ही नहीं उनके साथी ि ासे परमेश्वर का इं ाीनियर बेटा पिछड़ा सम ाता था वे लोग भी इस बदलाव को स्वीकारते हुए खड़े-खड़े प्लेट- ाम्म ा से खाते हैं। उनहें देखकर इं ाीनियर ाकित होता है। इस से स्पष्ट होता है कि मनुष्य आधुनिक वि ाारधारा के कारण स्थितियों के अनुकूल अपने मूल्य बदलते रहते हैं। शेखर ाोशी इस प्रकार होनेवाले परिवर्तनों पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि-"बरामदे में तख्त पर बैठे-बैठे खपरैल की छवान की ओर ताकते हुए सो ाने लगे, ाी ें धीरे-धीरे कैसे बदल गई हैं। अ ाानक होनेवाले बदलाव से उन्हें हमेशा डर लगा रहता है, ैसे किसी अनिष्ट की आशंका हो, लोगों की नज़र लग ााने का डर हो। पूरा घर पक्का सीमेंट का हो गया है। एक-एक वर्ष के अंतराल में ाीज़ें बदलती गई है।"[41]

---

[40] डांगरी वाले, शेखर ाोशी-पृ.80
[41] डांगरी वाले, शेखर ाोशी-पृ.97

इस आधुनिक समा ा में आधुनिक वि ाारधारा से प्रभावित व्यक्ति प्रा ाीनता से नवीनता की ओर अग्रसर होता है। ैसे प्रा ाीनकाल में आस्था और विश्वास एक महत्वपूर्ण मूल्य था। किंतु आधुनिक गतिशील युग में इस मूल्य की कोई कीमत न रही और मूल्य का संक्रमण आ ा अनास्था और अविश्वास में हो गया। आधुनिक मानव का मन केवल उन्हीं मूल्यों को मानने के लिए तैयार है ाो उसे भौतिक सुख प्राप्ति के लिए सहायक हो। इस प्रकार भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए एक धार्मिक व्यक्ति किस प्रकार अपने मूल्य बदलता है यह हम 'किं करोमि ानार्दन' शीर्षक कहानी में देख सकते हैं।

'किंकरोमि ानार्दन' का नित्यानु यु एक धार्मिक व्यक्ति ह। वह सांसारिक ाीवों के प्रति किसी प्रकार का अन्याय न करने और असत्य प्रलोभन आदि विकारों को त्याग देने का संकल्प लिया था। कहानी में समस्या इसी विषय को लेकर उठती है। घर के सभी सदस्य पड़ोसी, गाँव में होनेवाले विवाह उत्सव में भाग लेना ाहते हैं। मगर सेब के पेड़ों की रक्षा के लिए किसी को घर में रहना अनिवार्य है। इसी विषय को लेकर घर की बहुओं के बी ा वाद-विवाद होता है। घर की बड़ी बहु अपने श्वसुर की निंदा करते हुए कहती है कि-"हाँ, बड़े धर्मात्मा हैं। सर्दियों में एक दिन भी नहाया नहीं, बण्डी पहने ही ौके में भात खाने बैठ ाते थे, आ ा एक छोटी-सी बात के लिए उनका धरम बिगड़ ाएगा।"[42] इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक वि ाारधारा वाला मानव अपनी सुविधाओं के लिए धार्मिक मूल्यों का भी खंडन करता है। घर की इस समस्या को हल करने के लिए स्वयं नित्यान य अपने ाीवन मूल्यों को बदल कर बगी ो की रखवाली का काम अपनाता है। इससे घर का वातावरण प्रसन्न हो ाता है। इस प्रसन्नपूर्ण वातावरण के लिए नित्यान य अपने पुराने

[42] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.37

मूल्यों को छोड़कर नये मूल्य अपनाता है। इससे यह पता ालता है कि आधुनिक वि ाारधारा वाला मानव अपनी सुविधाओं के अनुसार प्रा ाीन मूल्यों को न करते हुए नवीन मूल्य अपनाता है। इस नवीन मूल्यों के पीछे अस्तित्ववादी वि ाारधारा समाविष्ट है।

इस आधुनिक समा ा में सभी लोग अपना एक अस्तित्व बनाये रखना ाहते हैं। ाब उनके अस्तित्व को कोई ठेस पहुँ ाती है, तो वह प्रा ाीन मूल्य छोड़कर नवीन मूल्य अपनाता है। इस बदलते ाीवन मूल्यों के मूल में आधुनिक वि ाारधारा है। आधुनिक वि ाारधारा के प्रभाव के कारण ाीवन की स्थिति में परिवर्तन आया है। स्थितियाँ, संदर्भ और प्रसंग के अनुसार मानव ाीवन में बदलाव आया है। यही हमें 'हैड मासिं ार मंटू' नामक कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी में मंटू एक ापरासी है। वह अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए हमेशा कोशिश करता है। अपने-आप को ऊँ ा दिखने के लिए वह कहता है कि-"ब्लडी बीडी पीता है, सिगरेट पियो। नहीं है तो हम से लो। बड़ा-बड़ा इं ानियर लोग-सीनियर मासिं ार मंटू से सिगरेट माँग कर पीता है।"[43] इसी प्रकार अपना महत्व ातलाते हुए कहता है-"बड़ा बाबू नहीं रहता तो छोकरा बाबू लोग फोन नहीं उठाता-डरता है। फोन पकड़ने का भी तमी ा नहीं। दस बार हलू-हलू बोलेगा। डरना क्या। हम नहीं डरता-यस, यस, सीनियर मासिं ार मंटू बोलता।"[44] मंटू अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बनाए रखते हुए साथ में सभी को ाहाँ तक कि अफसर लोगों को भी आला आफीसर कहते हुए नी ाा दिखाता है। इस प्रकार अपने महत्व पर बल देनेवाले मंटू को ाब मैने ार विश्वनाथ अपने कलम के बारे में पूछता है तब मंटू बाहर आकर गुस्से से तिलमिला ाता है। उसका गुस्सा तभी शांत होता है ाब मैने ार को अपने

[43] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.
[44] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.

मित्रों के द्वारा अपमानित करता है। इस तरह अस्तित्ववादी वि ाारधारा से प्रभावित होकर मंटू विनम्रता के मूल्य छोड़कर नवीन मूल्यों को अपनाते हुए मैने ार साहब पर प्रतीकार लेता है।

2.1.6 आधुनिक समा ा

आधुनिक समा ा में मानव अपने अस्तित्व के प्रति स ाग हुआ। ि ासके कारण वह सारे विषयों को अपने केंद्र में रखकर देखने लगा। वह समा ा में अपना एक अलग अस्तित्व बनाये रखना ाहता है। समा ा के इस परिवर्तन को शेखर ोशी अपनी कहानियों के कथ्य के रूप में स्वीकार किया है। 'साथ के लोग' कहानी इस सामा ाि क मर्म को खोलकर सामने रख देती है। इस कहानी की तीन घटनाओं के द्वारा समा ा में व्याप्त ईर्ष्या, अहं, सामा ाि क द ा आदि समस्याओं को लेखक हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इस कहानी का आरंभ एक व्यापारी का रेल डिब्बे में प्रवेश होने से होता है। वह ामकती हुई आकर्षक ीज़ निकालकर यात्रियों को बोली लगाने के लिए आमंत्रित करता है। उस बोली में एक ग्राहक को इनाम के रूप में ाम ामाता हुआ पंप शू मिलता है। ि ास पर ईर्ष्या प्रकट करते हुए कई यात्री अपना-अपना मत प्रकट करने लगते हैं। उसी समय दो नवयुवक अपने महत्व को ातलाने के लिए बेयर पर ि ाल्लाने लगते हैं तो बेयर अपना पक्ष सुनाकर उन्हें निरुत्तर कर देता है। उन नवयुवकों की बात- ीत में उनका अहं व्यक्त होता है। कहानी की तीसरी घटना में बिना टिकट यात्रा करनेवाले बू े को ोकर पाँ ा रुपया ुरमाना लगता है। वह बू ा उन पैसों के लिए सभी से सहायता माँगता है। एक विद्यार्थी उसे दयनीय ोहरे पर अपने पिता की छवी देखकर सहायता करना ाहता है। "लेकिन आसपास बैठे हुए लोगों की नैतिक मान्यता और अपने इस असाधारण व्यवहार के लिए सबकी नज़रों में हास्यास्पद बन ाने की आशंका से उसने मन

मसोसकर ुप्पी साध ली और बलि-पशु की तरह ले ाए ाते बु े को ला ार देखता रहा।"[45] और अपनी इस गलती का समर्थन करते हुए वह मन-ही-मन विश्वास करने लगता है कि-"एकांत में बू े से एक रुपया लेकर ही ोकर उसे अगले स्टेशन पर छोड़ देगा।"[46] इस कहानी के द्वारा सामान्य मनुष्य की समा ा के साथ ो मुठभेड़ होती है उसे हम देख सकते हैं।

आधुनिक काल को वैज्ञानिक काल भी कहा गया है क्योंकि इस काल में कई वैज्ञानिक हमले हुए हैं। इन वैज्ञानिक हमलों का प्रभाव समा ा पर पूरी तरह पड़ा है। आ ा के आधुनिक समा ा में व्याप्त वैज्ञानिक हमले और उस पर मानव की खोखला मनःस्थिति को हम 'विडुआ' शीर्षक कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी में दिग्वि ाय अपनी ि ाद पर शादी में वीडियो निकालता है। दो दिन बाद उसे देखते हुए एक दूसरे से इस प्रकार कहने लगते हैं-"वो देखो नरेंदर, कैसा भकर-भकर खा रहा है।

वह दिग्वि ाय भैया है, कैसे टे े-टे े खड़े हैं।

अरे, वह देखो ुरिया। बिलकुल साहब बनकर प्लेट ाम्म ा से खा रहा है।"[47]

एक शादी में फिल्माए गए वीडियो टेप को देखने की ललक भर से पूरा सामाि ाक परिवेश उपस्थित कर देते हैं। बीते हुए समय को आ ा देखते हुए कल तक सुरक्षित रखने की इ ा की तरह नहीं देखकर केवल अपनी उपस्थित को बार-बार दोहराने की हल्की हरकत की तरह लिया गया। 'विडुआ' आ ा के समा ा में व्याप्त खोखली मनःस्थिति को स्पष्ट करती है। यही खोखलापन हमें 'दौड़' शीर्षक कहानी में भी मिलता है। इस कहानी में 'कोर दिवस' के

---

[45] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.22
[46] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.22
[47] नौरंगी बीमार है, शेखर ोशी-पृ.44

आयो ान में 'मटका रेस' रखते हैं ि ासमें तीन पण्डाल के महिलाएँ भाग लेती हैं। पहले दो पण्डाल की महिाएँ संको ा का अभिनय करते हुए मैदान में उतरती हैं तो तीसरे पण्डाल की महिलाओं के लिए किसी औप ाारिकता की आवश्यकता नहीं है। रेस में भाग लेते हुए अ ानक पहले और दूसरे पण्डाल की महिलाएँ एक के बाद एक मटका बिखरा देती हैं। "उनके ोहरों पर परा ाय की छाप नहीं थी, वरन् उन्हें देखकर ऐसा लगता था ौसे उन्होंने दौड़ में अब भी भाग ले रही शेष महिलाओं को अपनी कमनीयता से पराि ात कर दिया हो।"[48] अब मैदान में केवल देहात की तीसरे पण्डाल की महिलाएँ हैं ि ानका लक्ष्य अब सभी को पीछे छोड़कर पुरस्कार प्राप्त करना है। पहले दो पण्डाल की महिलाओं के ारित्र में समा ा में व्याप्त खोखलेपन को देख सकते हैं।

'निर्णय' कहानी आ ा के समा ा के खोखलेपन को स्पष्ट करते हुए उन कारणों पर भी बारीकी से नज़र डालती है। इस कहानी में श्रीधर ो शहर में अ छी नौकरी पर है वह अपने गाँव देहात को स ाने-सँवारने में अपना योगदान देना ाहता है। इसी उद्देश्य से वह शहर छोड़कर गाँव आता है। थोपा हुआ आदर्श व्यवहार में ाब उतरता है तो कई ागहों से उसे घटिया और क्रूर स्थितियों का सामना करना पड़ता है। यही श्रीधर के विषय में भी होता है। गाँव के सभी लोग श्रीधर को पोलिटीशियन के रूप में देखते हैं। वैसे भी आ ा के गाँव शहरों से ाटिल तथा असुरक्षित हो गये हैं। हमारा संस्थागत ीवन ारित्र और उस पर निर्भर रहने की सामाि ाक आदत ने गाँव के सौंदर्यबोध को नष्ट कर दिया है। ऐसे में उसमें ीने और रहने की इ छा अ ानक सामान्य से विशिष्ट बन ाती है। शेखर ोशी ने इस आदर्श को व्यावहारिक बनाने की कोशिश की है। श्रीधर की मार्फत अंधकार को ीर कर किरण की तलाश करने

[48] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.45

की ो इ छा उन्होंने बनाई है वह बेहद ारूरी है। पर वह स्थिति यथार्थपूर्ण नहीं है। संभवतः इसीलिए शेखर ोशी यहाँ अपनी उस विश्वसनीय भाषा का प्रयोग नहीं कर पाए हैं।

'निर्णायक' कुछ इसी प्रकार की कहानी है। इस कहानी में बास अपने एक कर्म ारी को एक और मौका देकर उसे सुधारना ाहता है। थोपे हुए आदर्श के कारण कर्म ारी कुछ दिनों के लिए विनम्र बनने का नाटक करता है। अंत में वह कर्म ारी अपने व्यवहार को सामने लाते हुए कहता है-"ि ांदगी? यह कुत्ते की ि ांदगी है-मेरी भी, तुम्हारी भी और उस साले बॉस की भी ि ासे तुम खुदा सम ाते हो।"[49] बॉस का थोपे हुए आदर्श के कारण उसे इस प्रकार की क्रूर और घटिया स्थितियों का सामना करना पड़ता है।

आधुनिक समा ा में हमेशा कई परिवर्तन होते रहते हैं। 'बिरादरी' कहानी इसी सामाि ाक परिवर्तन के नए रूप को हमारे सामने लाती है। इस कहानी में ीवन और हरिप्रिया के बेटे रा ु की विवाह तिथि तय होती है। विवाह के पहले दिन तक बिरादरी के लोग न आने के कारण ीवन बारात में ाने के लिए आस-पास के ाने-पह ाने लोगों को तैयार करता है। लेकिन विवाह के दिन अपनी बिरादरी के लोग आने से ीवन बारात में अपने बिरादरी के लोगों को भे ाना ाहता है तो हरिप्रिया इस का विरोध करते हुए कहती है कि-"बिरादरी एक दिन की नहीं होती, हमारे तो असली बिरादर अब वे ही हैं ि ासके साथ हमारा मरना- ीना लगा है, उन्हें छोटा कर परदेसी बिरादरों की फिकर करोगे तो ये भी अपने न रहेंगे और वे भी।"[50] इस प्रकार हरिप्रिया बिरादरी का नया अर्थ बताती है। 'बिरादरी' कहानी के माध्यम से शेखर ोशी न केवल रू ़ मूल्यों की पुनर्र ाना करते हैं बल्कि उसे नए संदर्भ में स्थापित भी

---

[49] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.70

[50] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.79

करते हैं। हमारे वर्तमान सुख-दुःख तथा ीवन की आवश्यकताओं में शामिल ान-संसार ही हमारी वास्तविक बिरादरी है। वह अतीत के रिश्तों पर तय लोगों की ामात बिरादरी नहीं होती। बिरादरी को इस रूप में देखना बेहद नया है आवश्यक सामा िक संसार र ाने ैसा है ि ासमें मनुष्य की ऊ ाा, पह ाान और कर्म के बी ा आधुनिक सो ा नज़र आती है।"[51]

आधुनिकता का ही एक रूप मृत्युबोध है। इस विषय पर भी शेखर ाोशी अपनी कहानी 'मृत्यु' में लिखा है। इस कहानी के तीनों पात्र मैं नामक पात्र, कौस्तुभ और शकून शनिवार की उस शाम रात तक बारी-बार से मृत्यु के उन क्षणों पर ा ाा करते रहे ि ानके वो पृथक-पृथक रूप में साक्षी रहे थे। लेकिन उनमें से किसी ने भी मृत्यु के उन क्षणों की ा ाा नहीं की ि ानके वो तीनों संयुक्त रूप में साक्षी रहे थे।

शेखर ाोशी ने आधुनिक समा ा की यौवन समस्याओं पर भी कहानियाँ लिखी हैं। 'प्रथम साक्षात्कार' यौवन समस्यओं की ही कहानी है। इस कहानी में एक किशोर और यौवन की वयःसंधि की लड़की को प्रेम पत्र किस प्रकार प्रभावित करता है और उस पत्र से उसका वैवाहिक ीवन किस प्रकार विघटित होता है, यह कहानी इस विषय को स्पष्ट करती है। इस कहानी में प्रफुल्ल और ाया कई कठिनाइयों के बाद प्रेम विवाह करते हैं। लेकिन एक दिन प्रफुल्ल को ाया के किसी प्रेमी का पत्र मिलता है तो उनके परिवार का विघटन होता है। वह ाया के युवावस्था के प्रारंभिक दिनों के रवि नामक लड़के का प्रेम पत्र था। ाया को रवि का यह व्यवहार अ छा नहीं लगा। लेकिन "वह पत्र तब ाया को कैसी अनोखी अनुभूति से भर गया था। तब पहली बार उसने गौर से अपने अंग-अंग को देखा था। आत्ममुग्ध-सी वह देर तक आईने को देखती ही रह गई

---

[51] साक्षात्कार, फरवरी-मा ि 93

थी। उस दिन अ ाानक ही वह आत्मविश्वास से भर उठी थी। ाीवन का प्रत्येक कार्य-व्यापार उसे रु ाकर लगने लगा था। आ ा उस युवक का ोहरा-मोहरा भी उसे ठीक तरह याद नहीं और फिर न कभी ाीवन में उससे ाया की भेंट ही हुई। लेकिन इस पत्र से ुड़ी पहले आत्म-साक्षात्कार की वह अनुभूति ही ाया के मन में ाीवन भर के लिए ैसे एक सुगंध भर गई थी।"[52] आ ा इस पत्र के कारण पारिवारिक विघटन होने पर भी ाया उस पत्र को ाह कर भी फाड़कर टुकड़े-टुकड़े नहीं कर पाती है। इस प्रकार शेखर ोशी यौवन समस्याओं को कलात्मक ंग से हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

अतः शेखर ोशी 'नयी कहानी' के दौर के कहानीकार होने पर भी अपने आप को तथाकथित अस्तित्ववाद को आधुनिकता के दायरे से मुक्त रखा है। इसीलिए उनकी कहानियों में आधुनिक खोखलेपन के प्रति अपना विरोध कहानी के पात्र के द्वारा ही पाठकों के सामने लाने का प्रयत्न किया गया है। उनकी 'विडुआ', 'दौड़' आदि कहानियों में इस विषमता को हम देख सकते हैं।

2.2 शिल्प

तात्पर्य और स्वरूप

'शिल्प' शब्द अंग्रेज़ी भाषा के 'टेकनीक' शब्द का हिंदी रूपांतरण है। सामान्य अर्थ में यह एक तरीका अथवा ंग है। साहित्य में शिल्प का अत्यन्त महत्व है। र ानाकार शिल्प के द्वारा अपनी कथा-वस्तु को अलंकृत करता है। शिल्प के बिना कोई भी र ाना सफलता प्राप्त नहीं कर सकती। शिल्प कलात्मक निर्वाह के लिए साधना की एक प्रणाली है। शिल्प का संकु ित अर्थ निर्माण

[52] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.129

करना अथवा र ाने का ंग है। लेकिन साहित्य-क्षेत्र में इसका अर्थ किसी कृति को कलात्मक ंग से र ाने के अर्थ में माना ा सकता है।

'शिल्प' शब्द की व्युत्पत्ति संदिग्ध है। 'उणादी कोश' के अनुसार "'शिल्प' शब्द शील समाधौ धातु से 'प' प्रत्यय और शील को हस्व लगाकर बनता है।"[53] अमरकोश में "'शिल्प' को 'कर्मकादिकम' कहा है।"[54] वी.एस.आप्टे के मतानुसार-"इस शब्द की व्युत्पत्ति शील्+अक है।"[55] हलायुध कोश में इसका अर्थ "'क्रियाकौशलम' के रूप में दिया गया है।"[56] शिल्प शब्द का शाब्दिक अर्थ बृहत् हिंदी कोश में इस प्रकार बताया गया है-"शैली, कार्य पद्धति, विशेष उपाय, यंत्र ातुर्य, प्राविधि।"[57] शिल्प के लिए रूपकार शब्द का भी प्रयोग है, क्योंकि र ानाकार शिल्प के द्वारा ही किसी भी र ाना को एक आकार अथवा रूप प्रदान करता है।

शिल्प अभिव्यक्ति का एक माध्यम है ि ासके द्वारा र ाना में सौंदर्य का उद्भव होता है। शिल्प के बिना साहित्य में विकास संभव नहीं हो सकता। र ाना में शिल्प का प्रयोग ि ातना सरल और सटीक होगा उतनी ही उस कृति में स ाीवता होगी। र ानाकार अपनी बात को सीधा और सरल तरीके से न कहकर अनेक उपकरणों की सहायता लेता है। उनमें से शिल्प एक है। वह उन उपकरणों से अपनी कृति को सशक्त एवं प्रभावशाली बनाता है।

शिल्प को कई विद्वानों ने अनेक प्रकार से परिभाषित किया है। ैनेंद्र कुमार ने टेकनीक से संबंधित अपनी कृति में कहा है कि "टेकनीक एक ाँे के नियमों का नमा है। पर ाँे की उपयोगिता इसी में है कि वह स ाीव मनुष्य के

---

[53] उणादिकोश-13/28

[54] अमर कोश, सं.शक्तिधर शास्त्री-पृ.349

[55] V.S.Apte, Sanskrit-English Dictionary-p.3 h 1554

[56] हलायुध कोश-पृ.593

[57] बृहत हिंदी कोश, ज्ञान मंडल लिमिटेड, बनारस-पृ.1750

ीवन में काम आए, वैसे ही, 'टेकनीक' साहित्य-सृ ान में योग देने के लिए है।"[58]

शरद ोशी ने शिल्प के संबंध में अपने वि ाार इस प्रकार व्यक्त किये हैं। "शिल्प तो एक लिविंग प्रोसेस है। यदि लिविंग प्रोसेस-वह विकसनशील प्रक्रिया अपने-आप में कहीं रुक ाये तो शिल्प मुर्दा हो ायेगी।"[59]

लिथोन सर्सेलियन ने शिल्प के बारे में कहा है-"शिल्प स ो अर्थ में वह माध्यम है, ि ासके ारिये लेखक अभिव्यक्ति के लिए बाध्य करनेवाली अपनी सारी अव्यक्त अंतःप्रेरणाओं के बी ा यथार्थ तौर पर यह अनुभव करता है कि मैं क्या कहना ाहता हूँ। यह वह माध्यम है ि ासके उसकी र ानात्मकता एक रूप रंग पकड़ पाती है।"[60]

डॉ.छेटीलाल पाण्डेय ने कहा है कि-"भावों के अंतिम रूप पाने तक ो भी प्रयास है वे सब शिल्प कहे ायेंगे।"[61] आधुनिक साहित्य के शिल्प के संबंध में डॉ.एम.एल.मेहता के अनुसार-"आ ा के साहित्य का शिल्प क्या है? मेरा तत्काल उत्तर हैःइंद्रिय सं ोतना। ... नयी कहानी एक ओर यही सही ंग से ग्रहण करता है तो दूसरी ओर सार्थक अभिव्यक्ति को कलात्मक मोड़ देता भी है।"[62] अतः स्पष्ट है कि किसी विषय को सीधा न कह कर कहानी में शिल्प के द्वारा विषय या सार्थक अभिव्यक्ति को कलात्मक ंग से बताते हैं ि ासके द्वारा पाठकों में उस कृति को प. ने की ि ाज्ञासा और आकर्षण ब. ता है। शिल्प

---

[58] साहित्य का श्रेय और प्रेय, ैनेंद्र कुमार-पृ.370
[59] ज्ञानोदय, फरवरी 66, शरद ोशी
[60] टेकनीक्स ऑव फिक्शन राइटिंग, लियो ान सर्सेलियन, मार्क शोटर लिखित भूमिका-पृ.161
[61] छायावादोत्तर काव्य शिल्प, डॉ.छेटीलाल पाण्डेय-पृ.18
[62] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानीःवस्तु विकास एवं शिल्प विधान-पृ.243

की कमज़ोरी साहित्यकार के अधूरे ज्ञान एवं उस कृति के विषयी ज्ञान के अभाव को प्रदर्शित करता है।

शिल्प का स्वरूप

र ानाकार किसी कृति की र ाना के लिए विषय को ूँ.ता नहीं। वह अपने ीवन में घटित किसी एक घटना को शब्दों के आकर्षक ाँो में रखकर सह ा ंग से समा ा के सामने प्रस्तुत करता है। वस्तुगत घटना को रूपायित करने के लिए अनेक उपकरणें की सहायता लेनी पड़ती है। इन उपकरणों को ही र ाना का शिल्प तत्व कहा ाता है। इन तत्वों का विस्तृत विवे ान एवं संगठित रूप ही शिल्प का स्वरूप है।

सृ ानशील लेखक की र ाना-प्रक्रिया में शिल्प के सभी उपकरणों का स्वाभाविक प्रयोग होता है। विद्वानों ने शिल्प के कथानक, कथोपकथन, पात्र एवं ारित्र-ि ात्रण, देशकाल एवं वातावरण, भाषा, शैली तत्व प्रमुख रूप से स्वीकार किए हैं। बाद में इन तत्वों के साथ-साथ प्रतीक और बिंब को भी सम्मिलित किया गया है। र ानाकार के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह सभी तत्वों का प्रयोग करे।

कथानक

कहानी के शिल्प का प्रथम अंग कथानक है। शिल्प के अनेक तत्वों में से इस तत्व का अधिक महत्व है। क्योंकि इस तत्व के अभाव में शिल्प स्वरूप का विवे ान ही नहीं किया ा सकता। सभी उपकरण इसी तत्व पर आधारित हैं। कथावसतु को संगठित एवं सशक्त बनाने के लिए शिल्प के अन्य तत्वों की सहायता ली ाती है। किसी भी कहानी की सफलता उसकी कथावस्तु पर और किसी भी कथा-वस्तु की सफलता उसके शिल्प पर आधारित है। र ानाकार शिल्प के द्वारा कथा-वस्तु में कौतूहल एवं उत्सुकता लाता है। कथावस्तु के

प्रस्तुतीकरण में संक्षिप्तता, मौलिकता, रो ाकता, क्रमबद्धता, विश्वसनीयता, उत्सुकता, कौतुलता, शिल्पगत नवीनता, प्रभावात्मकता आदि विशेषताओं का बहुत महत्व होता है। कथाकार इन सारी विशेषताओं के सहारे कथा-वस्तु को कलात्मक ंग से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

शेखर ोशी समय के साथ समा ा में होने वाले परिवर्तनों को उनकी कहानियों की कथावस्तु के रूप में स्वीकारा है। वह अपने अनुभवों के आधार पर कहानियाँ लिखी हैं। 'दा यू' उनकी वैसी ही कहानी है। उन्होंने मध्यवर्ग, बदलते ीवन मूल्य, औद्योगिक परिवेश, पहाड़ केंद्रित कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने छोटे-छोटे विषयों पर भी कहानियाँ लिखी हैं। ैसे ब ों के डर पर 'आदमी का डर', पहाड़ों के रास्तों पर 'रास्ता' और एक युवनावस्ता की लड़की पर प्रेम पत्र किस प्रकार प्रभाव डालता है इस पर 'प्रथम साक्षात्कार' आदि कहानियाँ लिखी हैं।

<u>पात्र एवं ारित्र ित्रण</u>

कथा-वस्तु के बाद पात्र एवं ारित्र-ित्रण कहानी का विशिष्ट तत्व है। कहानीकार शिल्प के विभिन्न उपकरणों से पात्रों का परि ाय एवं उनका ारित्र-ित्रण पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। कहानीकार पात्रों का ारित्र विश्लेषण कहानी की अंतिम घटना तक करना ाहता है िससे पात्रों का संपूर्ण ीवन- ारित उद्घाटित होता है। किसी भी र ानाकार की कथावस्तु एवं ारित्र-ित्रण में ितनी स्वाभाविकता, मौलिकता, स ीवता, यथार्थता होगी उतनी ही वह र ाना उत्कृष्ट होगी। लेखक किसी भी घटना का ायन एवं उसमें वर्णित पात्रों का वर्गीकरण स्वयं करता है। ैसे प्रमुख पात्र, सहायक पात्र, पुरुष पात्र, स्त्री पात्र, खलपात्र, यथार्थवादी पात्र, मनोवैज्ञानिक पात्र, रा ानैतिक पात्र, ऐतिहासिक पात्र आदि। र ानाकार इन सभी पात्रों को नज़र में रखते हुए अपनी

र ाना को आकार एवं रूप प्रदान करता है। पात्र एवं ारित्र-ित्रण कहानी की कलात्मकता को व्यंि ात करने के साथ-साथ उसके आदर्श एवं भाव को भी प्रकट करते हैं। पात्रों के द्वारा ही कथावस्तु को अभिव्यक्त किया ाता है। कहानी की अपेक्षा नाटक विधा में पात्र एवं ारित्र-ित्रण का विशेष महत्व रहता है। क्योंकि नाटक में पात्रों के बिना कथावस्तु आगे ब. ही नहीं सकती। कहानियों में पात्र एवं ारित्र-ित्रण ैसे शिल्प उपकरण को नकारा नहीं ा सकता। पात्रों के द्वारा ही पाठक ज्ञाना ि कर अपने आपको परिवर्तित करते हैं। इसीलिए यह तत्व महत्वपूर्ण है।

शेखर ोशी की कहानियों के पात्रों का ित्रण पाठकों को आकर्षित करता है। वह अपने पात्रों के द्वारा समकालीन समा ा की समस्याओं को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। 'दा यु' कहानी में मदन पात्र के द्वारा वर्ग संघर्ष को देखा ा सकता है। शेखर ोशी के इस पात्र के ारित्र ित्रण में हम यह देख सकते हैं। " ागदीश बाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रेस्टि ा' का अर्थ सम ा सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहा। पर मदन बिना सम ाए ही सब कुछ सम ा गया था।"[63] शेखर ोशी के इस ारित्र-ित्रण के द्वारा निम्न वर्ग के मदन और मध्यवर्गीय ागदीश बाबू के बी ा के वर्ग संघर्ष को देखा ा सकता है।

'कविप्रिया' कहानी में 'शीला' पात्र के ारित्र-ित्रण के द्वारा गिरीश के प्रति उसका प्रेम स्पष्ट होता है। और इसी कहानी में गिरीश पात्र के ारित्र-ित्रण के द्वारा उसका आदर्श स्पष्ट होता है। कहानी में उसका ित्रण इस प्रकार है-"मैं सिफारिश के बल पर किसी और के पेट पर लात नहीं मार सकता।"[64] 'टूटन'कहानी में 'त्रिलो ान' के ारित्र-ित्रण के द्वारा और 'व्यतीत' कहीन में

---

[63] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.12

[64] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.155

बाबू पात्र के ारित्र-ित्रण के द्वारा अपेन परिवेश से कट ाने के दुख को प्रस्तुत किया गया है।

टूटते परिवार का दुख बु ुर्गों पर पड़ता है। यह हम 'परिक्रमा' कहानी में 'हरिदत्त' के ित्रण द्वारा देख सकते हैं। हरिदत्त बंटवारे के विरुद्ध अपना मत इस प्रकार प्रकट करता है "रामी! िस दिन मैं मर ाऊँगा, उस दिन तुम पहले बँटवारा करना फिर मेरी अर्थी उठाना। पर ाब तक मैं िंदा हूँ, कभी ऐसी बात इस घर में नहीं उठेगी। क्रोध और दुख के कारण उसका शरीर काँपने लगा था और आँखें भर आयी थीं।"[65]

'कोसी का घटवार' शीर्षक कहानी में गुसाँई का ारित्र-ित्रण इस प्रकार है-"कभी-कभी गुँसाई को यह अकेलापन काटने लगता है। सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, िंदगी भर साथ देने के लिए ाो-अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है, वही। िसे अपना कह सके, ऐसी किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं। पालतू कुत्ते-बिल्ली का स्वर भी नहीं। क्या ठिकाना ऐसे मालिक का, िसका घर-द्वार नहीं, खाने-पीने का ठिकाना नहीं।"[66] गुसाँई पात्र के इस ारित्र-ित्रण से उसके ीवन में व्याप्त अकेलापन स्पष्ट हो रहा है।

<u>कथोपकथन</u>

यह शिल्प स्वरूप का तीसरा तत्व है। इस तत्व से ारित्र-ित्रण उद्घाटित होता है। कथोपकथन ितना संक्षिप्त, मार्मिक, सरस एवं मन भावक होगा उतनी ही कथावस्तु भी आकर्षित करनेवाली एवं परिमाि ति होगी। र ानाकार संवादों के माध्यम से कथावस्तु का विकास, पात्रों की ाारित्रिक व्याख्या, देशकाल, वातारण का ज्ञान तथा अपना उद्देश्य पूरा करता है। संवाद के अनेक भेद हैं। र ानाकार अपनी कहानियों में इन सारे भेदों का प्रयोग करता

---

[65] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.143

[66] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.61

है। ैसे भावात्मक, नाटकीय, व्यंग्यात्मक, दार्शनिक आदि। इन सभी भेदों का आयो ान पात्रों के ारित्रांकन को प्रभावशाली बनाने के लिए किया ाता है। कथोपकथन कहानी शिल्प का वह उपकरण है िससे कथावस्तु परिष्कृत, स ाीव, सटीक एवं अभिनव बनती है। कहानियों में संवाद संक्षिप्त, उपयुक्त, अनुकूल एवं मार्मिक होने पर भी पाठक रसानुभूति का अनुभव करता है।

शेखर ोशी की कहानियों का संवाद संक्षिप्त, सरल एवं स ाीव है। 'किं करोमि ानार्दन' शीर्षक कहानी में नित्यान यु की धार्मिक भावना पर व्यंग्य करते हुए उनकी बड़ी बहु कहती है। "हाँ, बड़े धर्मात्मा हैं। सर्दियों में एक दिन भी नहाया नहीं, बण्डी पहने ही ौके में भात खाने बैठ ाते थे, आ ा एक छोटी-सी बात के लिए उसका धरम बिगड़ ाएगा।"[67] इसके उत्तर में नित्यान यु की पत्नी कहती है-"बु ापा आएगा, तो ानोगी बिटिया। अभी तो हाथ-पैर ालते हैं न! इसीलिए बंदर की तरह उछल-कूद म ा रही है।"[68] यहाँ एक व्यंग्यात्मकता का प्रयोग करती है तो दूसरी दार्शिक संवाद का प्रयोग करती हैं।

उनके संवाद उपयुक्त, अनुकूल और कथावस्तु को आगे ब ाते हैं। 'स्वप्न देश की एक उदास शाम' कहानी में दोनों पहाड़ी मित्र ाब बहुत दिनों के बाद मिलते हैं, उनके संवाद इस प्रकार हैं-"देबदा, अपने साथ के लड़कों में से कोई दिखाई नहीं दिया। मथुरिया, ितुव, बहादुर, भूपाल... कितने ही थे।"

"हाँ, मोहन बाबु, सब ाले गये। कोई कहीं, कोई कहीं, ाहाँ िसके सींग समाये।"

र ानाकार-"उदास स्वर में देबिया ने उत्तर दिया।"[69]

---

[67] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.11
[68] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.11
[69] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.160

यहाँ शिक्षित वर्ग के द्वारा एक प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है तो अनप ़ पहाड़ी मित्र के द्वारा पहाड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है। पात्रों के सामा ाक द र्ा के अनुसार संवादों का प्रयोग करके र ानाकार को सफल बनाया है।

कहानी के शिक्षित पात्रों के संवादों में अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग हुआ ैसे 'प्रतीक्षित' कहानी में डॉक्टर के द्वारा।

डॉक्टर-"साधारण केस है। लेकिन आपकी घबराहट की क्या दवा है। इनएक्सपीरिएन्सड पीपुल।"

र ानाकार-"हमारी अनुभवहीनता पर बुड् े डॉक्टर का सहानुभूति-प्रदर्शन स्वाभाविक था।"

"थोड़ी देर बाद, मैटरनिटी वार्ड से सहसा नव ाात शिशु ने केहाँ... केहाँ के स्वर में अपने आगमन की सू ाना दे दी।

<u>वातावरण</u>

यह भी शिल्प स्वरूप का तत्व है। यह तत्व कहानी में सह ाता और सरलता लाने में सहायक होता है। वातावरण के ाित्रण द्वारा कहानी किस परिवेश में ाल रही हैं पता ालता है। शेखर ोशी पहाड़ी केंद्रित कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में वातावरण का ाित्रण स ाीव है।

'छोटे शहर के बड़े लोग' शीर्षक कहानी में पहाड़ी इलाका गर्मियों में किस प्रकार रहता है इस का ाित्रण किया गया है। "गर्मियों के मौसम की बात भिन्न है ाब पूरा कस्बा सैलानियों की रंगीनी से खिल उठता है और वे लोग सुबह से लेकर देर रात तक बा ाार, सड़कों व होटलों के छ ाों पर ाहकते-फुदकते रहते हैं। तरह-तरह की कारों, वैनों और गाड़ियों की ाि ल्लपों से कस्बा गूँ ाता रहा है। सैलानियों की पोशाक, उनका केश-विन्यास, उनकी

ाल- ाल लोगों की उत्सुकता और ा ार्ा का विषय बनी रहती है।"[70] शेखर ोशी के इस वातावरण के ित्रण द्वारा पहाड़ों का सामाि ाक ीवन स्पष्ट हो रहा है।

'टूटन' कहानी में गाँव का वातावरण इस प्रकार ित्रित हैं "दांयी ओर देवी का मंदिर। त्रिलो ान के हाथ अन ाने ही श्रद्धा से ुड़ गये। उधर पेड़ों की ओट में ारना या ाहाँ वे अपने हम ोलियों के साथ ब ापन में घंटों नंग-धड़ंग नहाया करते और पानी की गूल में पत्तों की नाव बहाकर दुपहर बिता देते थे। वह गौ ार था, आ ा भी गाय- ोरों को छोड़कर ब ो वहाँ गुल्ली डंडा खेल रहे होंगे। वह पुराने स्कूल का खंडहर था-प्रेम वल्लभ मास्साब ने हाथ की छड़ी से न ाने कितनी बार उनकी हथेलियाँ लाल की थीं। वह सिमरवाला खेत हर साल रोपाई के दिन वहाँ हुड़के की थाप पर रोपाई होती थी।"[71] शेखर ोशी के इस ित्रण के द्वारा त्रिलो ान का गाँव के प्रति प्रेम व्यक्त हो रहा है।

'आदमी का डर' शीर्षक कहानी में ंगल का ित्रण हुआ है। "सुबह से ही आसमान हिमानी बादलों से गहराया हुआ था। देवदारु का वन सामान्यतः वैसे भी छायादार वृक्षों के कारण अंधकारपूर्ण लगता है और दिन तो बादलों के कारण और भी डरावना प्रतीत हो रहा था।"[72] इस प्रकार के ित्रण के द्वारा ब ों के डर पर ोर देते हैं। कहानी में यह ित्रण ब ो के डर को बताने में सहायक होता है।

औद्योगिक परिवेश की कहानियों में वातावरण का ित्रण उस परिवेश को पुष्ठ करता है। ैसे-"कुछ कारीगर अपनी ागह से उठकर धीरे-धीरे मैदान की ओर ाले आ रहे थे। कुछ लोग अब तक आकर दीवार के ऊपर बैठ ुके

---

[70] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.32
[71] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.93
[72] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.114

थे और शेष अपनी मशीनों के पास खड़े हुए हाथ पोंछ रहे थे। वे सब एक ही तरह के मटमैले, ीले- ाले ओवर हॉल में लिपटे हुए थे।"[73] इस ित्रण के द्वारा कहानी का औद्योगिक परिवेश स्पष्ट हो रहा है। शेखर ोशी की कहानियों के कथ्य के आधार पर वातावरण का ित्रण किया है।

भाषा

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम ही नहीं बल्कि शिल्प का प्राण तत्व भी है। लेखक परिवेश को ध्यान में रखकर भाषा का प्रयोग करता है। र ानाकार की सफलता उसकी भाषा पर निर्भर रहती है। भाषा ितनी सरल, भावव्यं ाक एवं बोधगम्य होगी उतनी ही र ाना प्रौ ., सशक्त एवं प्रभावशाली होगी। कहानी की भाषा के संबंध में डॉ.शोभा बिसारिया कहती हैं कि-"कहानी एक लघु साहित्यिक विधा है इसीलिए इसकी भाषा सरल, सह ा होनी ाहिए। दुरूह भाषा कहानी की प्रभावशीलता को कम कर देती है तथा कहानी नीरस लगने लगती है।"[74] शब्दों के कुशल संयो ान एवं सम्मिश्रण से भाषा समर्थ एवं शक्तिशाली ही नहीं बनती, बल्कि स ीव एवं साकार भी हो ाती है। भाषा वह माध्यम है िससे वि ारों को अभिव्यक्त किया ाता है तथा इसीसे कथा-वस्तु की आत्मा स ाग एवं ागृत होती है।

शेखर ोशी की कहानियों की भाषा सह ा और सरल है। उन्होंने पात्रानुकूल लोक भाषा का प्रयोग किया है। अत्यन्त सह ा और ठंडी भाषा के माध्यम से ये कहानियाँ हमारे समक्ष िस यथार्थ का उद्घाटन करती हैं, उसके पीछे समकालीन ान- ीवन की बहुविधि विडंबनाओं को महसूस किया ा सकता है। सपनों की वास्तविकता से अपरि ित ब ों की खुशी हो या

---

[73] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.36

[74] डॉ.शोभा विसारिया, कहानीकार प्रसाद-पृ.65

बिरादरी की दलदल में फँसे व्यक्ति की मनोदशा-लेखकीय दृष्टि उन्हें एक अर्थ-गंभीर्य से भर देती है। उसके पास आदर्शवादी निर्णय है तो उसके सामने खड़ा कठोर और भयावह यथार्थ भी है। शेखर ोशी की कहानियों की अपनी एक अलग भाषा रही है, ो 'मेरा पहाड़' की कहानियों में भी पूरे रंग-ओ-अब के साथ मौ ूद है।

"शेखर ोशी ने 'अपने पहाड़' को बिना किसी संवेगात्मक तरफदारी के ि ास यथातथ्य भाषा में प्रस्तुत किया है, वह संवेदना को एक समृद्ध ज्ञान की कोटि में ले ाता है ओर संवेदना से अ ित इस ज्ञान को पुनः र ानात्मक और यथार्थपरक संवेदना में बदल देता है। यह प्रक्रिया पहाड़ को एक ऐसी काया देती है ि ाससे वं ित पहाड़ ऐंद्रिक बिंब तो हो सकता है, लेकिन वास्तविक पहाड़ नहीं हो सकता।"[75]

ाब वे पहाड़ के सौदंर्य की ा ार्ा करते हैं तो लगता है पहाड़ के एक साथ कई बिंब दृश्यमान हो उठे हैं-"दिन का तीसरा पहर ालान पर था, ीड के पेड़ों की लंबी परछाइयाँ अ ागर की तरह सड़क के आर-पार पसर गयी थीं।"[76] शेखर ोशी की पहाड़ केंद्रित कहानियों में पहाड़ के इस सौंदर्य में ामीन से कटने का कहीं अहसास भी है-"गाँव के सीमांत पर बहती वेगहीन नदी का रेंगता ाल"[77] तो कहीं ीवन के एकाकीपन का त्रासद ो 'किट्-किट्' की आवाज़ के साथ एक दिशा पा रही है-"काठ की ि ाड़िया किट्-किट् बोल रही थी और उसी गति के साथ गुसाई को अपने हृदय की धड़कन का आभास हो रहा था।"[78]

---

[75] मेरा पहाड़, शेखर ोशी
[76] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.115
[77] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.148
[78] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.67

'गोपुली बुबु' कहानी में शेखर ोशी संवादात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। "आ भाऊ! बैठ ाा! तूमाया-मोह-वाला हुआ, आकर भेंट कर गया, हमें भी संतोष हो गया, तू ठीक है? ब ो कुशल से हैं? ीते रहे, बड़ी उमर पायें।"[79]

शेखर ोशी की कहानियों में अक्सर पहला वाक्य बड़ा अर्थवान होता है। लेकिन उसकी अर्थवत्ता का पता कहानी के अंत में ालता है। 'कोसी का घटवार' में पहला वाक्य है-"गुसाई का मन िलम में नहीं लगा।" पन ाक्की के घटवार की उदासी का संकेत है यहाँ और वही कथा का केंद्र बिंदु भी है। 'ब ो का सपना' में पहला वाक्य है-"मैं उसके ोहरे पर सुखद आश ार्य की ामक देखना ाहता था।" यह बी ा वाक्य है। उपहार देकर गरीब बाप अपने ब ो के सपने को पूरा कर उसे ाकित करना ाहता है। क्या हुआ यह? नहीं, उपहार तो रास्ते में खो गया। ैसे देश का सपना आज़ादी के बाद खो गया। कहानी उसी खोए सपने की है।

शेखर ोशी यथार्थ और पाठक के बी ा एक गैप छोड़ते हैं। उनकी कहानियों में एक अंतराल रहता है िासमें आदर्श और यथार्थ दोनों की गुं ाइश रहती है। "वह कहानियों में टिप्पणियाँ करेन से ब ाते हैं। शब्दों के मामले में मितव्ययी हैं। इसलिए यथार्थ और पाठक के बी ा के अंतराल के कारण उनके यहाँ 'बोला' ितना महत्वपूर्ण है, उतना ही अबोला भी। पहले वह पाठक को अपनी विश्वसनीयता की गिरफ्त में लेते हैं और फिर उसे निष्कर्ष पर पहुँ ाने के लिए छोड़ देते हैं।"[80] 'गलता लोहा' कहानी में पुरोहित खानदान का मोहन लोहर का काम अपनाने की बात को लेखक कहानी के अंत में इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं-"उसने धनराम की ओर अपनी कारीगरी की

[79] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.38
[80] आ ाकल, मा ि 1995-पृ.46

स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक स कि की ामक थी- ि ासमें न स्पर्धा थी ओर न ही किसी प्रकार की हार- ीत का भाव।"[81] इसीलिए उनके यहाँ 'बोला' ि ातना महत्वपूर्ण है, उतना ही अबोला भी।

2.2.1 शब्द प्रयोग

शेखर ोशी अपनी कहानियों में तत्सम, तद्भव, उपसर्ग, प्रत्यय, अरबी-फारसी, उर्दू शब्दों का प्रयोग करते हैं।

तत्सम शब्द-मातृविहीन, शीघ्र

तद्भव शब्द-निबटाया, ल छन, तिकोनी आदि

अरबी-फारसी, उर्दू शब्द-माफिक, फ ीहत, मदद, बरबाद, मुहल्ला, हु ूर आदि।

उपसर्ग-अभागिनी, असुविधा, विभाग

प्रत्यय-ब ापन

युग्म शब्द- ाट-पट, ठीक-ठाक, बंधी-बँधाई

एक समान दो शब्द-हाँफती-हाँफती, धीरे-धीरे, मोड़-मोड़, पीछे-पीछे, टहलते-टहलते, ारते- ारते आदि।

उन्होंने अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। ैसे- एक्सीडेण्ट, लाईफ, क्वार्टर, पायलट, पॉलिटिक्स, स्लीपिंग बैग, फोटोग्राफी, ड्रीमलैंड, होटल, पेपरमेंट, फोटो, ट्रेनिंग आदि। शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में ध्वन्यात्मक शब्दों का काफी प्रयोग किया है। ैसे- ुँ ालाहट, बड़बड़ाहट, हड़बड़ाहट, किट-किट, खिस्सर-खिस्सर, छप्प-छप्प, छि छर-छि छर, ट्प-ट्प-टप आदि। इन सभी के साथ-साथ उन्होंने पहाड़ी केंद्रित कहानियों में पहाड़ी भाषा के शब्दों का सफल प्रयोग किया है। ैसे माँ के लिए

[81] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.80

ई ा, भुलि (छोटी बहन), दा यु (बड़ा भाई), मुकर्रर (मुकद्दमे), डाँड़ो (पर्वतों), नौल (बावडी) आदि। उन्होंने अपनी कहानियों में कई ागह गालियों का भी प्रयोग किया है। ैसे-'स्साला', 'ससुरे', साले-कमीने हैं, आवारा- "मर! अब ले क्यों नहीं लेता", (कोसी का घटवार), "साला यह घोड़ा भी डर गया" (समर्पण), "प ने लिखने के नाम पर तो इसे मौत आती है। कल को फेल होगा, तो इसके बाप यही तो कहेंगे कि मेरे बेटे से घर का काम कराते रहे होंगे, पास कैसे होता?" (ाद्दी)

इन शब्दों के अतिरिक्त शेखर ोशी की भाषा में संस्कृत भाषा का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणार्थ-सुस्कृत भाषा का एक प्रयोग द्रष्टव्य है-"एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः"[82] यह संस्कृत भाष का प्रयोग 'कथा व्यथा' कहीन में पडित ाी के द्वारा किया गया है। इसी कहानी में एक और उदाहरण- "इति श्री स्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायण कथायाः प्रथमोध्याय.." और "ॐ ाय लक्ष्मीरमणा, स्वामी ाय लक्ष्मीरमणा..." "किं करोमि ानार्दन" कहानी में संस्कृत भाषा का प्रयोग नित्यान यु के द्वारा किया गया है। "धलम छेत्ते कुलु छेते थमवेता ाुाुत्यवः..." 'सिनोरियो' कहानी में "अस्तुतरस्यांदिश देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिरा ाः..." आदि।

2.2.1.1 मुहावरे एवं कहावतों का प्रयोग

शेखर ोशी की कहानियों में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग अनेक स्थानों पर हुआ है। ाहाँ भी इनका प्रयोग हुआ वहाँ भाषा के सौंदर्य में द्विगुणित वृद्धि हुई है। शेखर ोशी की कहानियों में आये कुछ मुहावरे देखिए-"मिट्टी के साथ िंदगी मिट्टी हो गयी" (हलवाहा), "आँखों की ओट हो ाएँगे", " ोहरा

[82] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.105

तमतमा गया था" " ोर-डाँगरों के होंठ आकाश को लगे हैं" आदि। इनके अतिरिक्त गला भर आना, क ोटते रहना आदि मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है।

शेखर ोशी की कहानियों में कहावतों का भी प्रयोग हुआ है। ैसे 'समर्पण' कहानी में "कैलखूर के प्रेत की बात" उस अं ाल की कहावत बन गयी है। यह कहावत उस अं ाल के लोगों में प्र ालित है।

2.2.1.2 ित्रात्मक भाषा

शेखर ोशी ने ित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है। कहानीकार ाब किसी प्राकृतिक दृश्य अथवा वातावरण का ित्रण करता है तब उसकी भाषा ित्रमय हो ाती है। इस संबंध में 'सिनारियो' शीर्षक कहानी का एक ित्रमय उदाहरण द्रष्टव्य है। "आसमान साफ था। अस्त होते हुए सूर्य का आलोक का आलोक किन्हीं अदृश्य दिशाओं से आकर उस संपूर्ण हिम-विस्तार को सिंदूरी आभा से भर गया था। धीरे-धीरे वह सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रृंखला की सलवटें गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पह ान बनाने लगी थी।"[83]

2.2.1.3 विषयानुकूल एवं पात्रानुकूल भाषा

शेखर ोशी की कहानियों की भाषा विषय एवं पात्रों के अनुकूल है। 'किं करोमि ानार्दन' नामक कहानी में नित्यान यु एक धार्मिक व्यक्ति है। इसीलिए उनकी भाषा में धार्मिकता स्पष्ट गो ार होती है "हे कृष्ण! इस कुरुक्षेत्र में मु ो कुछ नहीं सू ाता। मुरारी! कोई राह बताओ! "स्वप्न देश की एक उदस शाम" नामक कहानी में दो पहाड़ी मित्र ि नमें से एक शिक्षित है उसकी भाषा अंग्रेज़ी शब्द मिश्रित है-"सौभाग्य तो हमारा सबसे बड़ा है दुकानदार ी। आप लोगों का दर्शन हुआ, आपके देश का दर्शन हुआ-एकदम ड्रीमलैंड-स्वप्न देश का

[83] शेखर ोशी-पृ.67

माफिक है। मैं तो इतना सौंदर्य देखकर पागल हो ााऊँगा। और ाो अशिक्षित उसकी भाषा में पहाड़ी भाषा देखी ाा सकती है-"हाँ, हवा-आँधी ाल रही है, बी ा ांगलात का मामला ठहरा। कोई ि ार-ि ानगारी इधर-उधर उड़ गयी तो फ ाीहत होगी।" 'व्यतीत' कहानी में तीन साल की उम्र की भाषा का प्रयोग हुआ है। मुन्ना दद्दा इक्कूल। आशु रेल के लिए छुक्-छुक, मोटर के लिए घुर्र-घुर्र शब्दों का प्रयोग करती है। 'गोपुली बुबु' कहीन में पहाड़ियों की लोक भाषा ाो खि ाड़ी है उसे देखा ाा सकता है। "मेरी कथा ही कथा हुई ब ाू। क्या कहूँ, क्या न कहूँ। कह के भी क्या होगा? तू प ़ा-गुणा लड़का हुआ, तूने दुनियाँ देखी है। हम इसी गुफा में पैदा हुए, यहीं मर-खप ााएँगे। हमारी कथा तो इन्हीं डाँडों-टीलों ने देखी, इन्हीं डाँडों-टीलों ने सुनी।" शहर के प ़े-लिखे पात्रों द्वारा अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग हुआ है। ौसे 'मृत्यु' कहानी में प्रो.मायुर ने वाइंट सेमिनार में कहा है-"लाइफ को रू ़ अर्थ की परिधि में हम नहीं बाँध सकते। अगर मैं कहूँ मिस पाण्डेय इ ा फुल आफ लाइफ।" 'प्रतीक्षित' कहानी में डॉक्टर अंग्रेज़ी शब्द 'इनएक्सपीरिएन्सड पीपुल' शब्द का प्रयोग करता है। अतः हम कह सकते हैं कि शेखर ाोशी की भाषा विषयानुकूल एवं पात्रानुकूल है।

2.2.1.4 प्रतीकात्मक भाषा

कहीं-कहीं शेखर ाोशी की कहानियों की भाषा प्रतीकात्मक बन गयी है। स्वातंत्रयोत्तर युगीन कहानी की भाषा में यह गुण अपेक्षाकृत अधिक पाया ााता है। नई कहानी के लेखकों की भाषा में भी यह दिखाई देता है। 'गलता लोहा' कहानी में उनकी यह विशेषता द्रष्टव्य है-"उसने धनराम की ओर अपीन

कारीगरी की स्वीकृति पाने की मुद्रा में देखा। उसकी आँखों में एक स कि की ामक थी-ि ासमें न स्पर्धा थी और न ही किसी प्रकार की हार- ाीत का भाव।"[84]

'दा यु' कहानी में " ागदीश बाबु ने आँखें उठकार मदन की ओर देखा, उन्हें लगा ैसे अभी वह वालामुखी-सा फट पड़ेगा।" मदन अधिक दुख के कारण क्रोधित होने की बात को स्पष्ट करने के लिए " वालामुखी-सा फट पड़ेगा" शब्द का प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार 'रास्ता' कहानी में "ना-ना भइया। कैसा धाम कैसी छाया। ाब अपने पाँव ही काटकर दूसरों को सौंप दिये तो फिर कमी-बैसी कैसी?" उन्होंने दूसरों की बात पर ाले आने के विषय को सूि ात करने के लिए यहाँ "पाँव ही काटकर सौंप दिया" ैसे प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है। 'कोसी का घटवार' कहानी में समय बहुत हुआ इसे सूि ात करने के लिए प्रतीकात्मक भाषा में "सूर ा कहाँ का कहाँ ाला गया है" का प्रयोग किया गया है।

2.2.1.5 व्यंग्यात्मक भाषा

शेखर ाोशी अपनी कहानियों में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग करते हैं। 'आशीर्व ान' कहानी में ाब श्यामलाल अपनी सेवा-निवृत्ति के अवसर पर आयोि ात विदाई समारोह में ाब वह अपनी अनुभूतियों पर भाषण देना शुरू किया तब उस पर व्यंग्य करते हुए "अब भई रामायण शुरू"[85] इस प्रकार व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। इसी प्रकार 'किं करोमि ानार्दन' नामक कहानी में "हैं रे मोहनियाँ, बरात में पूडी उडाने तू नहीं गया?"[86] व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। इसी कहानी में और एक स्थान पर व्यंग्यात्मक भाषा का उदाहरण द्रष्टव्य है-"बकरी की ि ांता तु ो क्या पड़ी है, बरात देखने ाा।

[84] डांगरी वाले, शेखर ाोशी-पृ.80
[85] डांगरी वाले, शेखर ाोशी-पृ.115
[86] मेरा पहाड़, शेखर ाोशी-पृ.40

बकरी शाम तक घर ाली ही ाएगी।"[87] इस प्रकार की व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग नित्यान यु के द्वारा किया ाता है ाब एक लड़का बकरी का कारण दिखा कर सेव फलों को ोरी करने आता है।

2.2.1.6 भावात्मक भाषा

शेखर ोशी अपनी कहानियों में भावात्मक भाषा का प्रयोग भी करते हैं। उनकी कहानियों में करुणा से पूर्ण भाव अनेक स्थानों पर आये हैं। ऐसे ही करुणा ानक प्रसंगों में उनकी भावात्मकता द्रष्टव्य है-"मदन को ागदीश बाबू के व्यवहार से गहरी ोट लगी। मैने ार से सिरदर्द का बहाना कर वह घुटनों में सर दे कोठरी में सिसकियाँ भर-भर रोता रहा। घर-गाँव से दूर, ऐसी परिस्थिति में मदन का ागदीश बाबू के प्रति आत्मीयता-प्रदर्शन स्वाभाविक ही था। इसी कारण आ ा प्रवासी ीवन में पहली बार उसे लगा ैसे किसी ने उसे ई ा की गोद से, बाबा की बाँहों से और दीदी के आँ ाल की छाया से बलपूर्वक खीं ा लिया हो।"[88]

2.2.2 शैली

'शैली' शब्द अंग्रेज़ी के 'स्टाईल' शब्द का हिंदी रूपांतरण है। इसका शाब्दिक अर्थ अभिव्यक्ति का ंग या तरीका है। आ ा 'शैली' शब्द भाषा के र ाना तक ही सीमित न हरकर कवि और लेखकों की उस संपूर्ण र ाना-पद्धति और र ाना-साधनों तक विस्तृत हो गया ि ासे कृति के बाह्य अवयवों अथवा रूप पक्ष का निर्माण होता है। आ ार्य नंददुलारे वा ापेयी ने शैली के प्रयोग के बारे में लिखा है कि-"आ ा शैली शब्द का प्रयोग कला और शिल्प के समस्त उपकरणों की अभिव्यक्ति के लिए किया ाता है, यद्यपि मूलतः स्टाइल या

[87] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.41
[88] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.12

शैली कवि या लेखक की शाब्दिक अभिव्यं ाना के विवे ान का ही आशय रखता रहा है।"[89]

कहानीकार विभिन्न शैलियों के माध्यम से अपने वि ाारों की अभिव्यक्ति करता है। शैली के अभाव में कहानी संगठित एवं परिपक्व होने में असमर्थ रहती है। कहानीकार की विशिष्ट अभिव्यक्ति में आलंकरिकता, प्रतीकात्मकता, रो ाकता, भावात्मकता तथा व्यंग्यात्मकता आदि विशेषताओं के होने से ही कहानी सशक्त एवं प्रौ. ा होती है। किसी भी कथावस्तु को सरल एवं सफल बनाने के लिए सरल एवं उपयुक्त शैली की आवश्यकता होती है और यह तभी संभव है ाब कथाकार सभी शैलियों का प्रयोग करने में कुशल हो। शेखर ाोशी ने अपने कहानी लेखन में निम्नलिखित शैलियों का प्रयोग किया है।

2.2.2.1 वर्णनात्मक शैली

शेखर ाोशी ने अपनी कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। यह शैली सबसे सरल एवं प्रा ाीन है। इसमें वि ाारों एवं घटनाओं का विशद वर्णन होता है। उनकी इस शैली का एक अनुपम उदाहरण देखिए-"गाड़ी ाटके देकर आगे ब.ी, तो शाम घिर आयी थी। छोटे स्टेशन पर इक्का-दुक्का यात्रियों के ा.ने-उतरने की ाहल-पहल, स्टेशन की बत्तियों और दो- ाार खोम ो वालों के शोरगुल को पार करती हुई गाड़ी आगे निकली, तो डिब्बे में फिर वही एकरसता फैल गयी। दो- ाार बु ाुर्ग खेत-खलिहान और अना ा-गल्ले की हालत पर ि ंता प्रकट करने लगे। एक विद्यार्थी ने अपने थैले से कोई पत्रिका निकाल ली थी, कहीं किसी कोने से बी ा-बी ा में एक नन्हे-मुन्ने का रोने

[89] रीति और शैली, आ ाार्य नंददुलारे वा ापेयी-पृ.163

का स्वर उठ ाता था।"[90] इस प्रकार की वर्णनात्मक शैली का प्रयोग 'साथ के लोग' शीर्षक कहानी में भी हुआ है।

इसी प्रकार वर्णनात्मक शैली का एक और उदाहरण हम 'निर्णय' कहीन में देख सकते हैं-

"धीरे-धीरे लोगों की संख्या कम होती गयी और अंत में केवल एक बू े व्यक्ति को छोड़कर और सब लोग उठकर ाल दिये तो एकांत का लाभ उठाकर ैसे उस बु ुर्ग ने श्रीधर के निकट आकर बहुत आत्मीयता से फुसफुसाकर पूछ ही लिया-"बेटा, कोई घूसखोरी, गबन का मामला तो नहीं हुआ? घबराना नहीं। सब ठीक हो ाएगा। देवी रक्षा करेंगी।"[91]

'प्रथम साक्षात्कार' कहानी में भी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है- " ाया ते ी से बालकनी की ओर लपकी। उसकी बे ैन दृष्टि गली में आते- ाते लोगों के बी ा प्रफुल्ल को खो ाने लगी। पर वह अब तक बहुत दूर निकल गया था। बाएँ कंधे पर कोट लटकाए, थका-हारा-सा प्रफुल्ल, सिर ुकाए अपने विगत छः मास के ीवन का लेखा- ोखा ले रहा होगा।"[92]

'कविप्रिया' कहानी में शीला और मौसी की स्थितियों का वर्णन वर्णनात्मक शैली के द्वारा इस तरह प्रस्तुत किया गया है-"मौसी ने ाते- ाते आवाज़ दी, शीला, ारा रसोईघर में आ ाओ, मैं मंदिर ा रही हूँ। हाथ का काम छोड़, ईंटों की क ी, छोटी दीवार को लाँघकर शीला मौसी की रसोई में आ बैठी। मौसी मंदिर से शीघ्र नहीं लौटेंगी। दसों देवताओं की पू ा, दसों की मनौती और दसों को उलाहना देना होगा। गाँव-पड़ोस की बू ी-बालियों से अपना दुख दर्द कहेंगी। स ी या ूठी सहानुभूति पाकर कुछ ी हलका हो

---

[90] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.19
[91] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.128
[92] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.124

ाएगा, तो एक बार फिर भरी-भरी आँखों से उन देवताओं से कितना कुछ कहकर लौटेंगी।"[93]

इस प्रकार शेखर ोशी घटनाओं और स्थितियों के वर्णन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करते हैं। ि ससे कहानी में सह ाता का उद्भव हुआ है। कहानी में इस शैली के प्रयोग के द्वारा घटनाएँ हमारे सामने स ीव हो उठती हैं।

2.2.2.2 आत्मकथात्मक शैली

शेखर ोशी की कहानियों का एक रूप यह भी है। इसमें कहानीकार प्रथम पुरुष में कथा का वर्णन करता है। इस शैली में केवल एक ही पात्र विशेष का ि त्रण रहता है। पात्र स्वयं अनुभव की हुई घटना का ि त्रण करता है। 'ब ो का सपना, निर्णायक, प्रतीक्षित, गाईड, रास्ते, सहयात्री' आदि कहानियों में इस शैली का प्रयोग हुआ है। 'निर्णायक' कहानी में आत्मकथात्मक शैली का एक उदाहरण देखिए-"मु ो उसका अपने सम्मुख इस तरह उपस्थित होना करुणा ानक लग रहा था। यदि इसका हलका-सा भी आभास मु ो पहले हो गया होता तो शायद मैं अपेन आपको इस स्थिति से ब ा ले ाता। यूँ भी सामान्य स्थिति में मु ो उसके ीवन का निर्णायक बनने का कोई अधिकार नहीं था। पर यह उसके बॉस की व्यक्तिगत सनक थी। वह मेरे ही स्तर का कर्म ारी था और उसका बॉस अधिक दिन नहीं हुए मेरा भी बॉस रह ुका था। हम दोनों में अंतर केवल इतना था कि अपने व्यवहार से मैं बॉस का विश्वासपात्र बन गया था और उसने अपनी आदतों के कारण यह स्थिति पैदा कर दी थी कि अब मैं उसके भविष्य के निर्णय में सहायक बनकर बैठा हुआ था।"[94]

---

[93] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.78
[94] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.64

इसी शैली का एक और उदाहरण 'गाईड' कहानी में देखिए-"मेरी पत्नी आश्वस्त थी कि उस लंबी यात्रा में वे मेरे सहभागी बनने को सहमत हो गए थे। मैं अपाहि ा या बीमार हूँ, ऐसी बात नहीं। अकेले भी मैंने अनेकों बार लंबी-लंबी यात्राएँ की हैं और सकुशल अपने प्रस्थान बिंदु पर लौट आया हूँ। लेकिन मेरा अनुमान है, मेरी पत्नी हर बार मेरे प्रवासकाल में ि ातने भी दुःखद संयोग हो सकते हैं, उन्हें मेरे साथ ोड़कर व्यर्थ ही ि ांतित होती रहती होगी। तैयारी से लेकर विदा लेने तक मु ो बीसियों प्रकार के आदेश देना वे नहीं भूलती।"[95]

'ब ो का सपना' नामक कहानी में यही शैली पाई ाती है। "शाम को स्टेशन से साइकिल के अड्डे तक और वहाँ से फिर घर तक मैं अपनी कुछ दूसरी ही मानसिक उल ानों में खोया-खोया-सा ालता रहा। ऐन घर के पास पहुँ ाकर ाब वह मु ो अपनी स्कूल की पोशाक में पीठ पर बो ाीला बस्ता लटकाए दिखाई दी तो मु ो एकाएक ोले का खयाल आया था और मैं लगभग घबरा गया। महीने के प्रारंभ में ही यह भारी ोट लग गई थी। मेरा घबराना स्वाभाविक था। मु ो देखकर वह निकट आ गयी थी। मैं साइकिल से उतरकर उसके साथ-साथ घर की ओर ालता रहा। शायद उसे मेरी उदासीनता खल गई थी। इस कारण उनसे हमेशा की तरह साइकिल पर बैठने की ि ाद नहीं की।[96]

2.2.2.3 संवादात्मक शैली

इस शैली में लिखी गयी कहानियों में संवाद एवं वार्तालाप रहता है। इसके द्वारा पात्रों का सफल ारित्र ि ात्रण होता है। शेखर ोशी ने अपनी

---

[95] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.59

[96] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.9

कहानियों में इस शैली का भी प्रयोग किया है। 'निर्णय' कहानी में इस शैली का प्रयोग देख सकते हैं।

"मैं सो ाता हूँ इसे हमदर्दी की ाूरत है, ालो यह भी करके देख लेते हैं। वह सुधार पर है-बहुत फर्क है अब।"

"वाकई! आपने बहुत साइकोलोि ाकल ंग से इसे देखा है- ारूर असर होगा।"

"इस आखिरी कालम के बारे में तुम्हारी क्या राय है?"

उन्होंने पूछा, "क्या तुम सम ाते हो वह स ामु ा-प्रमोशन डि ार्व करता है?"

"क्यों नहीं? ाब आपके व्यवहार से खराब रिपोर्ट पर आया हुआ आदमी औसत से अ छा हो सकता है तो उसके प्रमोशन के योग्य होने में क्या संदेह है?"[97]

'उस्ताद' नामक कहानी में भी संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। यहाँ पात्रों के संवादों के द्वारा कहानी का रहस्य को खुल कर सामने आता है।

"कभी वालटैमिंग बाँधा है?" फकीरा ने बात स्पष्ट कर दी।

"नहीं।" मु ो स्वीकार करना पड़ा।"

"कभी देखा भी नहीं बाँधते हुए?" यह गिरधर की आवाज़ थी। सुनकर ऐसा लगा कि कहीं इन शब्दों में व्यंग्य छुपा हुआ है।"

"नहीं, लि ात-सा होकर फिर स्वीकार करना पड़ा।"

"कोई देखने दे, तब तो! वालटैमिंग बांधते वक्त ही तो बाबू को ााय पीने या किसी गाड़ी का रेडेटर साफ करने ाना पड़ता है। गिरधर ने ही फिर कहा।"[98]

---

[97] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.65

[98] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.19

यहाँ इन संवादों के द्वारा उस्ताद वालटैमिंग बाँधने का काम न सिखाने की बात स्पष्ट हो रही है ो इस कहानी का मुख्य विषय है। यहाँ संवादात्मक शैली के द्वारा र ानाकार इस रहस्य को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं।

2.2.2.4 स्मृतिपरक शैली

शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में अधिकतर इसी शैली का प्रयोग किया है। इस शैली में पात्र उन घटनओां को व्यक्त करते हैं ो पहले घट ुकी हैं। इस प्रकार की शैली के प्रयोग द्वारा लेखक अपनी कहानियों में एक प्रकार का कुतुहल एवं रहस्यात्मकता लाना ाहता है। िसके द्वारा पाठकों में उस कृति के प्रति आकर्षण ब .ाना ाहता है। इस शैली का सफल प्रयोग पर ही उस कृति की सफलता निर्भर करती है। इस प्रकार की शैली में लिखी शेखर ोशी की कहानियाँ कलात्मक एवं रो ाक हैं। प्रथम साक्षात्कार, रिक्त, ब ो का सपना, कविप्रिया, निर्णायक, शुभो दीदी, नेक्लेस आदि कहानियाँ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

'प्रथम साक्षात्कार' कहानी का आरंभ इन वाक्यों से होता है-" ाया तेज़ी से बालकनी की ओर लपकी। उसकी बे ैन दृष्टि गली में आते- ाते लोगों के बी ा प्रफुल्ल को खो ाने लगी।"[99] ाया की इस स्थिति के मूल में उसके यौवनावस्था का प्रणय पत्र है। इस विषय को कहानी में ाया पात्र के माध्यम से स्मृतिपरक शैली के द्वारा आगे बताया गया है। वह उस घटित घटना को इस प्रकार व्यक्त करने लगती है-"वे कैशौर्य और यौवन की वयःसंधि के दिन थे। उस छोटे शहर में मुहल्ले, अड़ोस-पड़ोस में ो पारिवारिकता थी उसे लेकर कभी अपेन-पराए का भेद नहीं मालूम पड़ता था-कम-से-कम ब ापन में तो

[99] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.124

बिलकुल ही नहीं..." [100] अतः स्पष्ट है कि इस प्रकार की स्मृतिपरक शैली की कहानियों का आरंभ घटना या संवादों से होता है और उस घटना या संवादों के कारण आगे कहानी में बताया गया है।

इस कहानी में अगर स्मृतिपरक शैली प्रयोग के बिना कथा को यूँ ही साफ बताने से कहानी उतनी सफल नहीं होती थी। इस शैली के प्रयोग द्वारा लेखक पाठकों को आकर्षित करता है।

इसी शैली का प्रयोग 'मृत्यु' कहानी में भी हुआ है। कहानी का आरंभ इस वाक्य से होता है-"पिछले शनिवार की बातें याद कर अपने आप पर हँसी आने लगती है।"[101] इस वाक्य को प.ते ही पाठकों के मन में यह कौतुहल ागता है कि पिछले शनिवास क्या हुआ है? लेखक इस रहस्यात्मकता को अंत तक संभालते हुए अंत में स्मृतिपरक शैली के द्वारा उस रहस्य को मैं नामक पात्र के द्वारा उद्घाटित करते हैं-"शनिवार की उस शाम को बड़ी देर तक हम लोग बातें करते रहे बारी-बार से मृत्यु के उन क्षणों की हम लोग ा ार्ा करते रहे, िनके हम पृथक-पृथक रूप में साक्षी रहे थे। लेकिन हम में से किसी ने भी मृत्यु के उन क्षणों की ा ार्ा नहीं की, िनके हम तीनों संयुक्त रूप में साक्षी रहे थे।"[102]

उनकी कुछ कहानियाँ स्मृतिपरक शैली से ही आरंभ होती हैं। ैसे 'शुभो दीदी' शीर्षक कहानी। इस कहानी का आरंभ स्मृतिपरक शैली से संवादों के द्वारा होता है और उन संवादों के मूल कारण को कहानी में आगे बताया गया है। कहानी का आरंभ इन संवादों से होता है। "'उसे तो तीसरा ाल रहा है' माँ

---

[100] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.128
[101] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.46
[102] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.51

ने धीमे स्वर में कहा था। बात पिता ी को बतायी ा रही थी, पर माँ का मुँह उनकी ओर न था।

"किसकी बात कह रही हो?" पिता ी ने कालर का बटन लगाते हुए सहसा रुककर माँ से पूछा था।

"शुभा की ही कह रही हूँ, ी! अभी बे ारी की क ी उम्र है, खेलने-खाने के दिन।" माँ कह रही थी, और लगता था, ैसे अंदर-ही-अंदर किसी असहन वेदना से वह छटपटा रही हो।"[103]

कहानी प.ते हुए पाठकों को माँ की इस िंता का कारण पता नहीं ालता। इसके कारण पाठकों में आगे प.कर इस रहस्य को ानने की िज्ञासा होती है। ो आगे मैं नायक पात्र के स्मृतिपरक शैली के द्वारा बताया ाता है।

इस प्रकार शेखर ोशी ने इस आधुनिक शैली के प्रयोग के द्वारा अपनी कहानी कौशल्य को पाठकों के सम्मुख सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है।

2.2.2.5 मनोविश्लेषणात्मक शैली

यह आधुनिक साहित्य की सर्वाधिक प्र ालित एवं प्रसिद्ध शैली है। इसमें कहानीकार कहानी के पात्रों की मनःस्थिति का ित्रण करता है। शेखर ोशी अनेक कहानियों में इस शैली का प्रयोग करते हैं। 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी में 'वीरेंद्र' की मनःस्थिति का ित्रण प्रस्तुत शैली के माध्यम से देखिए-"मेरी ओर से अंतिम पार्टी शायद यूनिवर्सिटी कन्वोकेशन के दिन हुई थी। उसके बाद इस ब ाकाने खेल में मैं ाब भी गया, उन लोगों का अतिथि ही बनकर गया। फिर धीरे-धीरे ऐसे अवसरों पर मैं कोई बहाना बनाकर उनसे अलग हो ाता। शैल भी अब पहले की तरह आग्रह नहीं करती। वह ैसे मेरी कठिनाई को सम ा गई थी। कभी-कभी मामा के घर में उससे भेंट होने पर

[103] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.71

एक-दो औप ाारिक बातें होती। तब एकटक अपनी ओर उसे देखते हुए मु ो लगता कि ैसे वह और भी कुछ कहना ाहती हो। आ ा भी सो ाता हूँ, क्या स ामु ा शैल के अंतर्मन में कहीं कुछ था, ो अंत तक अनकहा ही रह गया हो।"[104]

'प्रतीक्षित' कहानी में इस शैली का प्रयोग हुआ है। ैसे-"अभी सिर से पैर तक सफेद वस्त्र में स ाी नर्स मुस्कराकर मु ो बधाई दे ाएगी। लड़का... या लड़की? लड़की हुई तो सृष्टि के इस विकास क्रम में तनिक भी हस्तक्षेप न होने पर भी लड़की की सू ाना देते हुए नर्स की प्रसन्न मुखाकृति पर असंतोष की एक हल्की-सी छाया तैर ायगी। कौन ाने नवगत शिशु लड़का ही हो और हार्दिक मुस्कान के साथ नर्स मु ो अपने संग लिवा ले ाय। परंतु भाभी के लिए किसी भी स्थिति में मातृत्व का गौरव कम नहीं होगा।"[105]

2.2.2.6 मिश्रित शैली

यह शैली समन्वयात्मक कही ा सकती है। इसमें कहानीकार एक ही कथावस्तु में विभिन्न शैलियों का प्रयोग करता है। शेखर ोशी की अनेक कहानियाँ ऐसी हैं ि ानमें अनेक शैलियों का प्रयोग हुआ है। 'निर्णायक' कहानी में आत्मकथात्मक, स्मृतिपरक, संवादात्क, मनोविश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक आदि शैलियाँ एक साथ देखी ा सकती हैं। इस शैली में घटना, पात्र सभी का महत्व रहता है।

2.2.3 शैलीगत विशेषताएँ

कहानी में सफल शैली के प्रयोग के लिए अनेक विशेषताओं का होना वाँछित है। व्यावहारिक दृष्टि से देखा ाये तो आकर्षक एवं कलात्मक शैली ही

---

[104] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.27
[105] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.130

कहानी या कृति को अधिक सरल एवं रो ाक बनाती है। पूर्व वर्णित शेखर ोशी की कहानियों की शैलियों में भावात्मकता, आलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहात्मकता, व्यंग्यात्मकता, आं ालिकता एवं रो ाकता आदि विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं ि ानका विवे ान निम्नलिखित है-

2.2.3.1 भावात्मकता

शैली की इस विशेषता में कहानी का ारित्रांकन मूर्तिमय एवं स ाीव हो उठता है। शेखर ोशी की अनुभूतिपरक एवं करुणा प्रधान कहानियों में यह गुण बहुलता से पाया ाता है। इस संबंध में शेखर ोशी द्वारा लिखी गयी 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी का एक उदहारण द्रष्टव्य है-"इला ने कहा था, वीरेंद्र दादा, आ ा मत टालना, शैल फील करेगी। उसकी इंगे ामेंट की खुशी में पार्टी दी है। ... साथ की इस कुरसी पर शैल सिर ाुकाए बैठी है। इला, रश्मि, मीना खूब ाुहल कर रही है और मैं भी उनका साथ दे रहा हूँ... ैसे एकदम तटस्थ हो गया हूँ। कोई म ााक की बात शुरू करते-करते अ ाानक इला ाुप हो गई है। हम सभी इला की ओर और फिर ाहाँ ाकर इला की दृष्टि रुक गई है उस ओर देखते हैं। शैल की आँखों से टपटप आँसू गिर रहे हैं।"[106]

इसी प्रकार 'कविप्रिया' शीर्षक कहानी में भी इस शैली को देख सकते हैं- "भावावेग में शीला की आँखें भर आयीं। कमरे की निस्तब्धता को ीरती हुई मौसी के पैरों की आवाज़ निकटतर होती गयी। इससे पहले कि मौसी कुछ पूछती, शीला ने ही आँखों पर आँ ाल रखकर धुएँ की शिकायत कर दी।"[107]

यही भावात्मक शैली हमें 'दा यु' कहानी में भी देखने को मिलती है। "मदन को ागदीशबाबू के व्यवहार से गहरी ोट लगी। मैने ार से सिरदर्द का

---

[106] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.28
[107] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.82

बहाना कर वह घुटनों में सर दे कोठरी में सिसकियाँ भर-भर रोता रहा। घर-गाँव से दूर, ऐसी परिस्थिति में मदन का ागदीश बाबू के प्रति आत्मीयता-प्रदर्शन स्वाभाविक ही था। इसी कारण आ ा प्रवासी ीवन में पहली बार उसे लगा ैसे किसी ने उसे ई ाा की गोद से, बाबा की बाहों से और दीदी के आँ ाल की छाया से बलपूर्वक खीं ा लिया हो।"[108]

इस प्रकार शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में भावात्मक शेली का प्रयोग किया है।

2.2.3.2 आलंकारिकता

शेखर ोशी अपनी कहानियों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग भी करते हैं। इन अलंकारों के प्रयोग से उन्होंने अपनी कहानियों को सुसि ात किया है। उनकी 'गाइड' कहानी का एक उदाहरण देखिए-"उनके ोहरे पर कुछ वैसी ही गंभीरता थी ैसी बिना पूर्व सू ाना के किसी गोष्ठी या मीटिंग का अध्यक्ष मनोनीत कर दिए ाने पर किसी अप्रस्तुत व्यक्ति की होती है।"[109]

इसी प्रकार 'निर्णायक' कहानी में अलंकार के प्रयोग से उन्होंने कथावस्तु को आकर्षक बनाया है। ैसे-"बॉस के ोहरे पर गहरा आत्मसंतोष का भाव था। एक डूबते हुए आदमी को ब ाकर किनारे पर ले आनेवाले कुशल तैराक के ोहरे पर ो परोपकार और वि ाय की गरिमा होती है, कुछ-कुछ वैसा ही उनके ोहरे पर भी दिखाई दे रहा था।"[110] और इसी प्रकार 'बंद दरावा ो-खुली खिड़कियाँ' शीर्षक कहानी में उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है-"सलवटों से भरा करता पाय ामा और यह सुसि ा त ड्राइंग रूम। लगता है

---

[108] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.12
[109] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.60
[110] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.65

ैसे ाँदी की एक बहुत ऐशट्रे मैं एक मैं हूँ-बीड़ी की अध ाले टुकड़े-सा एक कोने में रखा हुआ।"[111]

'स्वप्न देश की एक उदास शाम' नामक कहानी में भी अलंकारों का प्रयोग हुआ है। ैसे माँ के सम्मुख किसी ने उसके होनहार बालक की प्रशंसा कर दी हो और वह स्वयं भी सब कुछ भूलकर उसके गुणों का वर्णन करने लगे, इसी प्रकार ूल्हे में आग ालाता हुआ देबिया उत्साहपूर्वक अपना मत देने लगा-"यह तो कुछ भी नहीं, बाबू साहब, आप इस बैसाख- ोठ में आये हैं, अगर क्वार-कार्तिक में आप यहाँ आकर देखें तो दुनिया ही बदल ाती है।"[112]

2.2.3.3 प्रतीकात्मकता

शैली की यह विशेषता शेखर ोशी की कहानियों में सांकेतिक प्रसंगों के अंतर्गत देखी ा सकती है। उनकी 'किं करोमि ानार्दन, उस्ताद, निर्णायक, गोपुली बुबु' आदि कहानियों में इस प्रकार की शैलीगत विशेषता देखी ा सकती है। 'उस्ताद' कहानी में इस शैलीगत विशेषता का एक उदाहरण देखिए-"वह क्या कहना ाहते थे मैं नहीं सम ा, ऐसी बात नहीं थी। दूध के दाँत कब के टूट ुके थे। मैंने भी खुलकर ठहाका लगाया, "नहीं, उस्ताद ी, ऐसी बात नहीं है।"[113] यहाँ इस संदर्भ में लेखक 'मैं छोटा ब ा नहीं हूँ' यह कहना ाहता है। इस विषय को वह प्रतीकात्मक शैली में 'दूर्ध के दाँत कब के टूट ुके' का प्रयोग किया है। इसी प्रकार 'किं करोमि ानार्दन' नामक कहानी में प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग इस प्रकार हुआ है-"तीनों बहुओं का विवाहोत्सव

---

[111] कोसी का घटवार,शेखर ोशी-पृ.51
[112] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.156
[113] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.17

में ाने का निर्णय पत्थर की लकीर की तरह अटल है।"[114] यहाँ दृ.निश ाय को प्रतीकात्मक शैली में पत्थर की लकीर की तरह अटल प्रयोग के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

2.2.3.4 प्रवाहात्मकता

शेखर ोशी की शैलीगत विशेषताओं में प्रवाहात्मकता का विशेष महत्व है। उनकी कहानियों में इसे सर्वत्र देखा ा सकता है। इससे कहानियों में स ावता के साथ-साथ विकास को भी बल मिलता है। 'सिनारियो' का एक उदाहरण देखिए-"आमाँ सरुली को 'सैप' के पास बिठाकर ुकी कमर लिये हुए फिर सीि याँ उतर गयी। दीये के मंदर प्रकाश में कुछ लिख-प. पाना संभव नहीं था। रवि अपना मन बहलाने के लिए सरुली से बतियाने लगा। अब तक सरुली की ि ाक मिट ुकी थी और वह वा ाल होकर अपनी प.ाई-लिखाई, घर-परिवार और गाँव-पड़ोस की बातों में रम गयी थी। काफी देर बाद ाब आमाँ लौटी तो वह थाली में भो ान लिए हुए थीं।"[115]

यही प्रवाहात्मक शैली हमें 'रंगरुट' कहानी में भी दिखाई देती है। "गाँव में रोग-व्याधि फैल ाए, सूखा पड़े या वर्षा-पाले की तबाही हो, लोग फूल-पाती, भेंट- ा.ावा या मुर्गा-नारियल लेकर ाऊ बाबा के थान पर पहुँ ा ाते। अपने पुरुषार्थ से ब.कर उनके ामत्कार पर भरोसा रहता था। और तभी रात में किसी-न-किसी पुण्यात्म को ाऊ बाबा सपने में दर्शन दे ाते और उस संकट का निदान बता ाते। ाऊ बाबा के ऐसे विश्वास पात्रों में गाँव के दो-तीन प्रमुख और समृद्ध के लोग ही अक्सर हुआ करते थे।"[116]

---

[114] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.39
[115] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.131
[116] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.137

2.2.3.5 व्यंग्यात्मकता

शेखर ोशी की कहानियों की शैलीगत विशेषताओं में व्यंग्यात्मकता भी दृष्टिगत होती है। उनकी यह विशेषता अधिकांशतः हास्य व्यंग्य प्रसंगों में देखी ा सकती है। इस संबधं में 'शुभो दीदी' कहानी का एक अंश देखिए- "कौन ाने लँगडी-लूली या कानी-भेंगी, कैसी है। अ छी लड़की होती, तो एक विशू बाबू ही तो नहीं रह गए थे।"[117] इस प्रकार की व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग विशू बाबू की पड़ोसी स्त्रियों के द्वारा किया गया है। उनके व्यंग्य का लक्ष्य विशू बाबू की पत्नी हैं। इसी कहीन में 'माँ' नामक पात्र पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं-"बहिना! गले साफ कर लो, इनकी ोठानी आएँगी, तो ये गीत तो गवायेंगी ही।"[118]

'प्रथम साक्षात्कार' कहानी में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है। प्रफुल्ल स्वयं के प्रेम पत्र को देखकर ाया को खी ाने की ि ाद से अपने आप पर व्यंगय करते हुए कहता है-"कभी-कभी आदमी भी कैसी बेवकूफी करता है।"[119]

इस प्रकार की हास्य-व्यंग्य शैली का प्रयोग शेखर ोशी की अनेक कहानियों में देखने को मिलता है।

'विडुवा' कहानी में इस शैली का प्रयोग इस प्रकार हुआ है-"समधी की दावत में भरपेट पूड़ी-मिठाई खाने के लिए उपवास कर रहे होंगे।" इस प्रकार की व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग कहानी में बड़े ठाकुर के द्वारा तब किया ाता है ाब छोटे ठाकुर अपने विडिओं की ि ाद्द पर खाना नहीं खाते।

'टूटन' कहानी में त्रिलो ान के गाँव में रहने की यो ाना पर व्यंग्य करते हुए उनके ब ो इस प्रकार व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हैं-"अम्मा, आप

---

[117] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.73
[118] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.73
[119] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.127

लोग एक गाय रख लेना। दूसरा कहता-अकेली गाय ही क्यों दो बैलों की भी तो ारूरत पड़ेगी-खेतों के लिए। तीसरा स्वर उठता, फसल काटने के मौके पर हम सब लोग भी गाँव ालेंगे और कटाई-मड़ाई करके अपने लिए भी लेते आएँगे। छोटे, ो खिलाड़ी किस्म का लड़का था अपने मतलब की बात ोड़ देता-"अम्मा हमारे लिए धीर ामा करती रहेंगी। हर बार एक कनस्तर शुद्ध घी लेकर आएँगे।"[120]

इस प्रकार शेखर ोशी की अनेक कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हम देख सकते हैं।

2.2.3.6 आं ालिकता

लोक कथात्मक पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कहानियों में यह विशेषता विशेष रूप से पाई ाती है। इसमें किसी प्रदेश एवं स्थान विशेष का ित्रण होता है। यह विशेषता शेखर ोशी की अनेक कहानियों में देखी ा सकती है। 'मेरा पहाड़' संग्रह की सभी कहानियाँ आँ ालिक कहानियाँ ही हैं। उनके द्वारा लिखी गयी 'विस नि' कहानी का एक उदाहरण देखिए-"गाँव के सीमांत पर बहती वेगहीन नदी का रेंगता ाल। नदी किनारे घुटनों-घुटनों तक धोती लपेटे, नंगे बदन, कंधे पर अपसव्य यज्ञोपवीत डाले हुए तारी यांत्रिक ंग से पुरोहित ाी के आदेशानुसार पिण्डदान कर तिलां ालि देते-देते सिसकियाँ भरने लगा।"[121]

'स्वप्न देश की एक उदास शाम' शीर्षक कहानी में भी इस शैली को देखा ा सकता है। " ांगलात की सड़क के किनारे पहाड़ी रास्ते की ा.ाई पर ाड़ के पत्तों का छप्पर डालकर देबिया ने ााय की दुकान खोल ली थी। दो-

---

[120] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.91

[121] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.148

ाार बीड़ी के बण्डल, दियासलाई और ाना-गुड-मिसरी थैले में रखकर देबिया सुबह ही घर से ाला आता।"[122]

शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में ि ास अं ाल को प्रस्तुत किया है, वह अल्मोड़ा पहाड़ी अं ाल है। उनकी सारी कहानियों में यही पहाड़ी अं ाल का ि ात्रण है।

2.2.3.7 रो ाकता

शेखर ोशी की कहानियों की शैलीगत विशेषताओं में इसे विशेष द ार्ा दिया ाा सकता है। उनकी इस विशेषता का, कहानियों में कहीं भी अभाव नहीं है। इस संबंध में 'शुभो दीदी' कहानी को देख सकते हैं-"सहसा शुभा दी ने धीमी आवा ा में माँ को पुकारा। माँ दौड़कर उसके पास गयी। शुभो दी ने आँखें खोलकर धीमे से स्वर में न ाने क्या कहा, हम सम ा नहीं पाए। पर माँ ने नव ाात शिशु को अपनी बाँहों में लेकर शुभो दी के आगे कर दिया। बड़ी व्यग्रता से शुभो दी ने शिशु के सिर पर हाथ फेरा। गहरे भूरे बालों को देखकर ैसे उसे अपार संतोष हुआ, उस क्षण उसकी आँखों में अनोखी ामक आ गई थी। सभी से सुना, शुभो दी कह रही थी-"सन्तु, सफेद नहीं काले बाल।" शुभो दी ने ये ही शब्द अंतिम बार कहे थे।

माँ उस दिन फूट-फूट कर रोई थी। उसकी लक्ष्मी दूसरी बार उनसे विदा हो गई थी।"[123]

उपर्युक्त विवे ान के पश ाात हम आसानी से कह सकते हैं कि शेखर ोशी की कहानियों की भाषा शैली में ाो विविधता है, वह उन्हें कहीनकार के रूप में श्रेष्ठता ही प्रधन करती है। शेखर ोशी की भाषा में वह शक्ति है ाो

---

[122] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.155

[123] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.77

पाठक के अंतर्मन को क ोटती हुई गंतव्य स्थान तक पहुँ ाती है। शेखर ोशी की कहानियाँ सह ा और ठंडी भाषा के माध्यम से हमारे समक्ष ि ास यथार्थ का उद्घाटन करती हैं, उसके पीछे समकालीन ान- ीवन की बहुविध विडंबनाओं को महसूस किया ा सकता है। उनके द्वारा र ित कहानियों की शैली सशक्त एवं आकर्षक है। उन्होंने विविध शैलियों का कहानियों में प्रयोग किया है। उनकी कहानियों में प्रतीकात्मकता, व्यंग्यात्मकता, ि त्रात्मकता पाठकों को अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित करते हैं। इनकी शैलीगत विशेषताओं में भावात्मकता, आलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहात्मकता, व्यंग्यात्मकता, आं ालिकता, रो ाकता आदि प्रमुख हैं।

* * *

तृतीय अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित आँ ालिकता का स्वरूप

3.1 आँ ालिकता : अर्थ

3.2 आँ ालिकता : स्वरूप एवं परिभाषा

3.3 आँ ालिकता के नियो ाक तत्व

3.4 आँ ाल का नायकत्व

3.5 स्थानीय बोली

3.6 शेखर ोशी की कहानियों में आँ ालिकता का स्वरूप

3.6.1 कथां ाल का महत्व

3.6.2 भौगोलिक परिवेश

3.6.3 प्राकृतिक परिवेश

3.6.4 सामा ाक परिवेश

3.6.5 आर्थिक परिवेश

3.6.6 अंधविश्वास

3.7 नायकत्व का लोप आँ ाल का नायकत्व

3.7.1 आँ ालिक रहन-सहन

3.7.2 खान-पान

3.7.3 वेश-भूषा

3.7.4 पर्व-त्यौहार

3.7.5 अं ाल की प्रतिनिधिकता

3.7.6 अं ाल की भाषा

तृतीय अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित आँ ालिकता का स्वरूप

3.1 आँ ालिकता : अर्थ

'अं ाल' शब्द से ही 'आँ ालिकता' या 'आँ ालिक' शब्द बने हैं। अं ाल शब्द में 'इक्' प्रत्यय लगाने से 'आँ ालिक' शब्द बना है, िासका अर्थ है अं ाल संबंधी। हिंदी में अं ाल का अर्थ है ' ानपद' या 'क्षेत्र' ो अपने में एक पूर्ण भौगोलिक इकाई होता है। र ानाकार या लेखक ाब से किसी विशेष क्षेत्र या ानपद के अं ाल को लेकर र ानाएँ करने लगे तब से 'आँ ालिकता' एक साहित्यिक विधा के रूप में पह ानी गई।

किसी साहित्यिक कृति में ाब किसी अं ाल विशेष के समा ा और ीवन का उस क्षेत्र की समस्त विशेषताओं के साथ ित्रण होता है तो उस कृति को आँ ालिक कह सकते हैं। प्रत्येक अं ाल की अपनी एक विशिष्टता होती है। उसका रहन-सहन, प्रथाएँ, उत्सव, आदर्श और आस्थाएँ, मौलिक मान्यताएँ, सामाि ाक, सांस्कृतिक, आर्थिक संबंध दूसरे अं ाल से भिन्न होते हैं। और इन प्रवृत्तियों से अपनी एक अलग आँ ालिकता का निर्माण करते हैं। इन सभी विशेषताओं का ाब किसी कहानी में ित्रण होता है तो उस कहानी को आँ ालिक कहानी कहते हैं।

3.2 आँ ालिकता : स्वरूप एवं परिभाषा

आँ ालिकता के स्वरूप निर्धारण में अनेक तत्वों का सामूहिक योगदान होता है। उन सभी तत्वों का स ाीव ित्रण ही आँ ालिकता के स्वरूप को निर्धारित करता है। आँ ालिकता किसी क्षेत्र विशेष के ाीवन शैली को प्रस्तुत करती है। िसमें उस अं ाल की अपनी विशिष्ट-संस्कृति देखने को मिलती है। इस प्रकार के अं ाल या क्षेत्र के ाीवन को अभिव्यक्त करनेवाली र ाना को हम आँ ालिक र ाना कहते हैं।

अं ाल की प्रकृति, सह ा वातावरण, ान ाीवन, वेश भूषा, ाीवनयापन, आर्थिक व्यवस्था, वर्गगत भेदभाव, विश्वास, संस्कार, खान-पान आदि आँ ालिकता के तत्व हैं। िनकी सहायता से अं ाल का समग्र स ाीव ित्रण करते हैं। आं ाल विशेष का ित्रण, उसका पिछड़ापन, अं ाल के समस्त ान ाीवन की पूर्ण तथा वस्तुन्मुखी अभिव्यक्ति ये सभी आं ालिकता के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। डॉ.सुवास कुमार के अनुसार-"आँ ालिकता के प्रमुख तत्व है कथां ाल का महत्व, व्यक्ति नायक का लोप, स्थानीय रंगत का प्रस्तुतीकरण प्रतिनिधिकता और भाषा का लोकधर्मी स्वरूप।"[1]

आँ ालिकता के स्वरूप को लेकर आलो ाकों में मतभेद है। कुछ आलो ाक स्थानीय विशेषताओं को महत्व देकर इसको स्थानीयता से ाोड़ देते हैं। किसी कहानी या उपन्यास में स्थानीयता का ित्रण थोड़ा-बहुत होता है िससे उस अं ाल की भौगोलिक और सांस्कृतिक वातावरण में होनेवाले मानवीय कार्यकलापों को पाठक सम ा सकते हैं। स्थानीयता के ित्रण में वहाँ का वातावरण तथा भाषा-बोली स्पष्ट होती हैं िससे कथा को स ाीवता प्राप्त होती है।

---

[1] आँ ालिकता, यथार्थवाद और फणीश्वरनाथ रेणु, डॉ.सुवास कुमार

कुछ आलो ाकों ने आँ ालिक कथा साहित्य के लिए भौगोलिक इकाई की आवश्यकता पर ोर दिया है। केवल प्रादेशिकता को उभारने वाला भौगोलिक वातावरण आँ ालिक नहीं हो सकता। इसके केंद्र में समा ा का विविधांगी ित्रण होता है। यह समा ा किसी विशिष्ट भौगोलिक इकाई से ुड़ा हुआ हो सकता है और नहीं भी। इसका भाव यह है कि आँ ालिकता में ित्रित समा ा को हम 'स्थानीय रंग' और 'प्रादेशिकता' से भिन्न देखते हैं।

आँ ालिकता एक विशेष अं ाल के ग्राम- ीवन का प्रतीक है। यही आँ ालिकता का स्वरूप स्पष्ट करता है। आँ ालिकता में किसी विशेष अं ाल या गाँवों के भौगोलिक परिवेश के साथ उसके ीवन का यथार्थ ित्रण होता है। वह अं ाल ग्रामीण या नगर कुछ भी हो सकता है, ो अपनी विशेषता को प्रस्तुत करता है।

मूलतः स्वतंत्रता पूर्व कथा साहित्य में ग्रामीण ीवन की यथार्थ परिस्थितियों का ित्रण मिलता है। स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में ग्रामीण ीवन का वर्णन प्रायः आँ ालिकता के नाम से वर्णित है।

अं ाल विशेष के ान ीवन का व्यापक ित्रण आँ ालिकता के स्वरूप को निर्धारित करता है। इसमें अं ाल विशेष के संपूर्ण ान- ीवन तथा उसके अनेक रूपों को प्रस्तुत किया ाता है। वहाँ के मनुष्यों के दैनिक ीवन से संबंधित समस्याओं को व्यक्त किया ाता है। मनुष्यों के संपूर्ण ीवन क्रम को सह ाता एवं पूर्णता के साथ प्रस्तुत करना ही आँ ालिक कथाकार का उद्देश्य है।

लेखक की वस्तुन्मुखी दृष्टि आँ ालिकता के स्वरूप को निर्धारित करती है। आँ ालिक कथाकार अं ालवासियों के व्यक्तित्व विकास में अं ाल के प्रभावों को स्पष्ट करने के लिए अं ाल, वहाँ के लोगों और समस्यओं का

वस्तुन्मुखी विवरण देता है। आँ ालिकता के वर्णन में लेखक को किसी के प्रति पूर्वग्रह होने की या भावुक होने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ केवल अं ाल के वास्तविक दैनिक ीवन का यथार्थवादी ित्रण ही अपेक्षित है।

आँ ालिकता में यथार्थ को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसीलिए आँ ालिक उपन्यास या कहानी स्वाभाविक, विश्वसनीय और आकर्षणीय होती है। आँ ालिकता का आधार स्तंभ यथार्थवाद है। मनोवैज्ञानिक, नृतत्वविधा, ीवविज्ञान आदि से संबंधित तथ्यों का, प्रत्यक्ष ीवन यथार्थ, सामाि ाक अनुभवों के आधार पर किये गये ित्रण में आँ ालिकता का स्वरूप मिलता है। यथार्थ को आधार बनाने से ही आँ ालिकता इतनी प्रगतिशील और मूल्यवान बनी है।

आँ ालिकता 'ग्रामीण हो या शहरी' इसके संबंध में विद्वानों के बी ा में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों ने ग्रामां ाल को महत्व दिया है तो कुछ ने नगरां ाल को, कुछ विद्वानों ने दोनों ग्राम और शहर को समान रूप से महत्व दिया है। लेकिन यह स ा है कि आँ ालिक कथा-साहित्य का ुकाव गाँवों की ओर ही था। डॉ.आदर्श सक्सेना ग्रामीण अं ाल को प्रधानता देते हुए कहते हैं-"किसी पर्वत-श्रृंखला के सहारे बसे, किसी नदी के किनारे स्थित किसी सागर तट पर फैले ग्रामों को, िानकी बोली, उत्सव, त्योहार, रहन-सहन, संस्कार, लोक-कथाएँ, लोकगीत आदि एक से होते हैं, एक सी ीवन व्यवस्था से बंधे होते हैं। 'अं ाल' की संज्ञा से अभिहित किये ा सकते हैं।"[2] यादातर लोग यह सम ाते हैं कि आँ ालिकता का सीधा संबंध ग्राम से है। इस बात का समर्थन अनेक विद्वानों ने किया है।

[2] हिंदी के आँ ालिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि, आदर्श सक्सेना-पृ.21

लेकिन वास्तव में आँ ालिकता का संबंध ग्राम और शहर दोनों से हो सकता है। कुछ हद तक आँ ालिकता के गुण शहरों में भी मिल ाते हैं। नगरों की पिछड़ी हुई बस्तियों में इसे हम देख सकते हैं। महेंद्र ातुर्वेदी का मानना है कि आँ ालिकता का संबंध ग्राम और शहर दोनों से हैं-"आँ ालिक उपन्यास की वर्ण्य वस्तु विशुद्ध रूप से ग्रामीण हो यह अनिवार्य नहीं है। किसी उपनगर को भी कथा-क्षेत्र के रूप में ग्रहण किया ाा सकता है। यह भी हो सकता है कि कथां ाल का एक रूप गाँव की ओर हो और दूसरा शहर की ओर।"[3] मुख्यतः आँ ालिकता का ित्रण ग्रामीण वर्णन में ही सफलता प्राप्त कर सकता है। क्योंकि ग्रामीण वर्णन से ही व्यापक रूप से अं ाल के भौगोलिक ान ाीवन को स्पष्टतः और सह ा रूप से व्यक्त किया ाा सकता है।

परिभाषा : किसी क्षेत्र विशेष के ाीवन सत्य का उद्घाटन, उस अं ाल का लोक व्यवहार, नैतिक आदर्श और संस्कृति संबंधी विशेषताओं से समन्वित होकर आँ ालिकता कहालाता है। आँ ालिकता के संबंध में वि ाार करते हुए ैनेंद्र कुमार ने लिखा है-"आँ ालिक प्रवृत्ति वह दृष्टि है, ि ासके केंद्र में अमुक पात्र या ारित्र उतना विशिष्ट नहीं ितना वह स्वयं भू भाग या अं ाल है।"[4]

इस परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि आँ ालिकता किसी विशेष अं ाल का आँ ालिक निरूपण है। किसी विशेष अं ाल या ानपद के ाीवन का स ाीव ित्रण है। उस अं ाल की मिट्टी की महक और वहाँ के लोगों की मनःस्थिति का नि ाी, सह ा, यथार्थ वर्णन ही आँ ालिकता कहलाता है। पंडित रा ानाथ पांडेय का कथन है कि-"प्रत्येक भूभाग की मिट्टी की एक खास महक होती है। उसी के अनुरूप वहाँ के समस्त ाीवधारियों, मानव प्राणियों में भी अपनी-

---

[3] हिंदी उपन्यासःएक सर्वेक्षण, महेंद्र ातुर्वेदी-पृ.207-208

[4] हिंदी उपन्यासःसिद्धांत और विवे ान, डॉ.महेंद्र शर्मा-पृ.178

अपनी एक अलग मनःस्थिति या गंध होती है ो अन्य किसी भू-भाग में उगे हुए फूल पत्तों और प्राणियों की गंध से भिन्न होने के कारण अपनी एक अलग विशिष्टता रखती है। यह गंध उस देश के निवासियों की भाषा, आ ार-वि ार तथा मानसिकता में प्रतिबिंबित होती है।"[5]

वस्तुतः आँ ालिकता कथा साहित्य की आवयविक संर ाना एवं शिल्पविधि से सीधा संबंध रखती है। आँ ालिक उपन्यासकार किसी एक विशेष स्थान की पृष्ठभूमि, बोली और रीति-रिवा ा को केवल स्थानीय रंगत के रूप में नहीं, बल्कि महत्वपूर्ण अंतर्दशा के रूप में ि ात्रित करते हैं ो पात्रों के स्वभाव सो ाने वि ारने के ंग तथा भावनाओं एवं व्यवहार को प्रभावित करती है। इस प्रकार की अभिव्यक्ति ही आँ ालिकता है।

आँ ालिकता को और स्पष्ट करते हुए डॉ.आदर्श सक्सेना ने लिखा है- "अं ालों की अपनी एक विशिष्ट सृष्टि होती है, ि ासमें भूतप्रेत होते हैं, ईर्ष्या प्रतिहिंसा होती है, अन्याय पाप होता है, कसक होती है, पीड़ा होती है, परंतु कहीं पर मीठापन अवश्य छिपा होता है।"[6]

आँ ालिकता की परिभाषा में दो बातों का विशेष महत्व है। अं ाल का आंतरिक रूप और अं ाल का बाह्य रूप। डॉ.ओमनंद सारस्वत के अनुसार "आँ ालिकता एक प्रकार की अन्तर्मुखता है ाहाँ व्यापक यथार्थ को छोड़कर मर्यादित यथार्थ को महत्व दिया ाता है ि ासे व्यापक यथार्थ व्यं ित होता है।"[7] अपने आंतरिक रूप में आँ ालिकता अं ाल की सांस्कृतिक यथार्थ को ि ात्रित करता है ि ासे उस अं ाल का बाह्य तत्व ैसे धार्मिक, रा ानीतिक पक्ष भी अपने आप सामने आते हैं। डॉ.सुवास कुमार के अनुसार-"आँ ालिकता

[5] आँ ालिकता और हिंदी उपन्यास, डॉ.कु.नगीना ैन-पृ.8
[6] मैला आं ाल की र ाना प्रक्रिया, डॉ.देवेश ठाकुर-पृ.11
[7] उपन्यास का आँ ालिक वातायन, डॉ.रामपत यादव-पृ.41

र ाना का स्थापत्य होती है, न कि विशेषता। इसी स्थापत्य के कारण आँ ालिक उपन्यास को गैर आँ ालिक उपन्यासों से अलगाया ा सकता है। आँ ालिक उपन्यास के केंद्र में संपूर्ण अं ाल का ीवन होता है। आँ ालिक उपन्यास में व्यक्ति का वही महत्व अंकित होता है ो महत्व उसका समा ा में वास्तविक तौर पर है। आँ ालिक उपन्यास में ीवन संपूर्ण अं ाल के साथ गतिशील होता है।"[8]

इस प्रकार हम देखते हैं कि आँ ालिकता र ाना के स्थापत्य से अभिन्न होती है।

डॉ. ावाहर सिंह का कथन है कि-"आँ ालिकता एक प्रवृत्यात्मक विशेषता है ि ासकी पह ाान आँ ालिक उपन्यासों के वस्तु तत्व से लेकर शिल्प तत्व तक सर्वत्र की ा सकती है।"[9]

किसी भी अं ाल विशेष की ीवन शैली, बोली-भाषा, सांस्कृतिक-परिवेश, भौगोलिक-प्राकृतिक परिवेश, रीति-रिवा ा, आ ाार-वि ाार, खान-पान, रहन-सहन, धार्मिक विश्वास, नैतिक व्यवहार, छल-कपट, पाप-पुण्य, ईर्ष्या-द्वेष, प्रेम, अंधविश्वास, मूर्खता, दुरा ाार सहित उस अं ाल को ही नायक बनाकर उसकी समग्र समस्त विशेषताओं को गुण दोष रहित र ाना में अभिव्यक्ति प्रदान करना ही आँ ालिकता है। संक्षेप में किसी अं ाल विशेष के संपूर्ण ीवन तथा वातावरण का समग्र, स ीव ि ात्रण बिना किसी एक पक्ष में न रहकर उस समस्त अं ाल की स्थानीय विशेषता के साथ ि ात्रण करना ही आँ ालिकता है। डॉ.ह.के.कडवे का कहना है कि "आँ ालिकता साहित्य की वह प्रवृत्ति है ाहाँ किसी अं ाल विशेष की प्राकृतिक पार्श्वभूमि में वहाँ का समग्र

[8] कथा का आँ ालिक शिल्प और राष्ट्रीयता का प्रश्न, डॉ.सुवास कुमार-पृ.33
[9] हिंदी के आँ ालिक उपन्यासों की शिल्पविधि, डॉ. ावाहर सिंह-पृ.50

लोक ीवन अपनी संपूर्ण गतिशीलता एवं मानवीय ेतना के साथ स्थानीय बोली के माध्यम से स ीव रूप में वर्णित होता है।"[10]

आँ ालिकता एक भाववा ाक संज्ञा है। ो किसी क्षेत्र या अं ाल से संबंधित है। क्षेत्र या अं ाल उस भौगोलिक खंड को कहते हैं ो सामा ाक और सांस्कृतिक रूप से सुगठित और विशिष्ट एक ऐसी इकाई है ि ासके निवासियों के रहन-सहन, प्रथाएँ, उत्सववादी, आदर्श और आस्थाएँ मौलिक मान्यताएँ तथा मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ परस्पर समान और दूसरे क्षेत्र के निवासियों से इतने भिन्न हों कि उनके आधार पर यह क्षेत्र या अं ाल विशेष इसी प्रकार के दूसरे क्षेत्र से एकदम अलग प्रतीत हो। इस प्रकार के अं ाल या क्षेत्र के ीवन की अभिव्यक्ति ही आँ ालिकता है।

3.3 आँ ालिकता के नियो ाक तत्व

आँ ालिक कथा साहित्य की र ाना में उसके नियो ाक तत्व प्रमुख काम करते हैं। आँ ालिक कथा साहित्य में आँ ालिकता उसके तत्वों पर आधारित होती है। सभी तत्वों का अपना-अपना महत्वपूर्ण योगदान होता है। आँ ालिक कथा साहित्य में किसी क्षेत्र या अं ाल विशेष के ीवन का समग्र ि ात्रण मिलता है। इस समग्र ि ात्रण में लेखक किसी स्थान विशेष की कथा को ुनता है, किसी काल विशेष की संस्कृति या क्षेत्र विशेष के लोगों का ि ात्रण कर वहाँ की संपूर्ण संस्कृति को उ ागर करता है। समस्त अं ाल की ान- ीवन में होनेवाली दैनंदिन घटनाओं को, वहाँ की विशेषताओं को, वातावरण और भौगोलिक परिवेश के साथ ि ात्रण करता है। लेखक इस पूरे ि ात्रण को उस अं ाल की भाषा या बोली को मध्यम बनाकर करता है।

---

[10] हिंदी उपन्यासों में आँ ालिकता की प्रवृत्ति, डॉ.ह.के.कडवे-पृ.27

आँ ालिकता एक प्रवृत्ति है ि ासका प्रयोग साहित्य में होता है। आँ ालिकता में किसी विशेष अं ाल की प्राकृतिक पार्श्वभूमि में वहाँ का समग्र लोक ीवन, रीति-रिवा ा, रहन-सहन, अपनी गतिशीलता के साथ स्थानीय-बोली के माध्यम से स ीव रूप में सामने आता है। इस प्रकार से ाब कोई लेखक अपनी र ाना में ाति विशेष की ीवन शैली या किसी क्षेत्र विशेष की पृष्ठभूमि पर कथा को गूँथ कर वातावरण में होनेवाली प्रत्येक घटना का स्थानीय बोली से ि ात्रण कर किसी एक अं ाल को नायक का रूप देता है, ि ासके नायकत्व में संपूर्ण कथा बहती है। फलस्वरूप कह सकते हैं कि ि ास र ाना में नवीन कथा विन्यास, अं ाल का नायकत्व, वातावरण निर्माण और स्थानीय बोली का ि ात्रण नहीं होता वह र ाना आँ ालिक नहीं हो सकती।

3.4 आँ ाल का नायकत्व

आँ ालिक कथाकार का उद्देश्य अं ाल विशेष के ीवन का समग्र स ीव एवं संपूर्ण ि ात्रण करना होता है न कि व्यक्ति का ारित्र ि ात्रण। इसीलिए आँ ालिक कथा साहित्य में व्यक्ति प्रधान न होकर अं ाल प्रधान होता है। इस प्रकार के कथा साहित्य में व्यक्ति नायक की प्रमुखता नहीं होती बल्कि नायक के स्थान पर पूरा अं ाल ही नायक होता है। "इसका कारण यह है कि यहाँ पर किसी पात्र को नायक के रूप में ि ात्रित न करके अं ाल की सर्वांगीणता के ि ात्रण पर अधिक बल दिया ाता है। अतः अं ाल स्वयं ही नायक के रूप में साकार हो ाता है।"[11]

अं ाल के नायकत्व से कोई पात्र महान और कोई गौण हो ाता है। यह पात्र प्रतिनिधि होते हैं। हर पात्र में उसकी अपनी व्यक्तिगत विशेषता होती है किंतु प्र ातीय तत्वों की प्रधानता के कारण वर्ग-पात्र के रूप में समा ा के

[11] उपन्यास का आं ालिक वातायन, डॉ.रामपत यादव-पृ.70

अनेक वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस बात की पुष्टि महेंद्र ाी के कथन से मिलती है-" ैसे विभिन्न मिट्टी के प्रकारों में लगाये गये पौधों में भिन्न-भिन्न सौंदर्य और सुगंध होता है वैसे ही नये और आकर्षक पात्र हमें आँ ालिक उपन्यासों ने दिए।"[12]

अं ाल में विभिन्न प्रकार के लोग रहते हैं। कुछ लोग अ छे होते हैं और कुछ लोग बुरे भी। कुछ पात्र अपने व्यक्तिगत विशेषताओं से पह ाने ाते हैं। पात्रों की हर क्रिया अं ाल की यथार्थता को सामने लाती है। 'अं ाल' विभिन्न प्रकार की मनस्थितियों को सामने लाती है। अं ाल के संपूर्ण पात्र आवश्यकतानुसार आते हैं और ाले ाते हैं। पात्रों की कोई संख्या निर्दिष्ट नहीं है लेकिन सभी पात्र उस अं ाल के अंग मात्र हैं। सभी पात्र उस अं ाल का आँ ालिकता को स्पष्ट करने में सहयोग देते हैं।

आँ ालिक कथा साहित्य में कुछ पात्र आँ ालिक और कुछ अनाँ ालिक होते हैं। कुछ पात्र उस अं ाल से बाहर होते हुए भी उस अं ाल से ुड़ ाते हैं। इस से यह स्पष्ट होता है कि हर पात्र उस अं ाल में पैदा न होने पर भी उस अं ाल में आने से वह अं ाल का ही बनकर रह ाता है। इस बात की पुष्टि सुषमा प्रियदर्शिनी के कथन से और भी विश्वसनीय बन ाती है। "आँ ालिक उपन्यासों के पात्रों के रूपाकार में स्थानीय विशेषता और बहिरंग में स्थानीय वेश-भूषा की अनिवार्यता परिलक्षित होती है। इन पात्रों में अं ाल का अंतरंगत आत्म और बाह्य ीवित रूपाकार का ही मानवीकरण होता है। इसलिए वे ीवन और ोतन होते हैं। उपन्यास में अंकित ीवन को वे स्वयं ीते हैं केवल प्रतिनिधित्व ही नहीं करते, वरन् उसे गति भी प्रदान करते हैं।"[13]

---

[12] हिंदी उपन्यासःसिद्धांत और विवे ान, डॉ.महेंद्र-पृ.140

[13] हिंदी उपन्यास, डॉ.सुषमा प्रियदर्शिनी-पृ.79-80

आँ ालिक कथा साहित्य में अनेक पात्र होते हैं और सभी की अपनी महत्वपूर्ण सत्ता है और हर पात्र अपने लिए नहीं उस अं ाल के लिए ीता है।

3.5 स्थानीय बोली

आँ ालिक कथा साहित्य के संबंध में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। अं ाल विशेष के ान ीवन का यथार्थ ि ात्रण प्रस्तुत करने के लिए उसी अं ाल की स्थानीय बोली, लोक भाषा, शब्द, मुहावरों, कहावतों आदि के प्रयोग से ही उस अं ाल की आँ ालिकता को स्पष्ट किया ाता है ो आँ ालिक कथा साहित्य का प्रमुख तत्व है। आँ ालिक कथा साहित्य में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करने के लिए ही स्थानीय बोली का प्रयोग किया ाता है। मगर आँ ालिक कथा साहित्य में केवल अं ाल विशेष के ान ीवन की विशिष्ट अभिव्यक्ति होती है। इसलिए आँ ालिक कथाकार पात्रों के साथ-साथ उसी अं ाल विशेष की भाषा का ही प्रयोग करता है। केवल संवाद या बात ीत में ही नहीं बल्कि कथाकार के द्वारा प्रस्तुत वर्णनों में भी स्थानीय बोली के शब्दों, मुहावरों, कहावतों, लोकोक्तियों तथा शैली आदि का प्रयोग आँ ालिक कथा साहित्य में होता है। आँ ालिक कथा साहित्य में अनेक पात्रों के कथोपकथन एवं संवादों के द्वारा भाषा का प्रयोग होता है। कुछ लोग अशिक्षित होते हैं ो सामान्य साधारण लोक भाषा बोलते हैं। कुछ लोग ो शिक्षित हैं वे लोग पंडिताऊ भाषा बोलते हैं। दोनों की भाषा में अंतर है। आँ ालिक कथा साहित्य में उस अं ाल की स्थानीय बोली का प्रयोग होता है। ऐसा न होने से उस अं ाल की विशिष्टता पूरी नहीं होती। इस प्रकार हर अं ाल में अपनी एक स्थानीय बोली होती है ि ास के माध्यम से उसे अं ाल की आँ ालिकता स्पष्ट की ाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि स्थानीय बोली की अपनी एक विशिष्टता है।

3.6 शेखर ोशी की कहानियों में आँ ालिकता का स्वरूप

शेखर ोशी 'नई कहानी' के महत्वपूर्ण कहानीकारों में से एक है। उन्होंने '54-56' के आसपास लिखना शुरू किया था, यानी आज़ादी के बाद के 'उठान' के दिनों में। साहित्य में उनका प्रवेश वास्तव में 'कोसी का घटवार' नामक कहानी से हुआ था ो 'कल्पना' पत्रिका के ानवरी 1957 ई. के अंक में प्रकाशित हुई थी। इसी कहानी से उनको विशेष ख्याति मिली। आरंभ से लेकर अब तक उन्होंने कुछ साठ कहानियों से यादा लिखी है। उनकी कहानी स ामु ा में 'शार्ट-स्टोरी' होती है। इसलिए विभिन्न संकलनों में दोहराई ाने के बाव ूद उनके छह ही संकलन हैं। डांगरी वाले तथा प्रतिनिधि कहानियाँ नई कहानियों का नहीं, बल्कि उनके अनुवंगी संकलन कहना अधिक उपयुक्त होगा।

शेखर ोशी अपनी सारी कहानियाँ, मौदानी गाँव, पहाड़ी गाँव, शहर का निम्न मध्यवर्ग तथा धनिक वर्ग को केंद्र में रखकर लिखी थी। उनकी कहानियों में आँ ालिकता का स्वरूप मिलता है। ैसे 'कोसी का घटवार, दा यु, हलवाह, गलत लोहा, छोटे शहर के बड़े लोग' आदि। इस प्रकार शेखर ोशी आँ ालिक कहानीकारों में से एक हैं ैसे फणीश्वरनाथ रेणु। मनोहरश्याम ोशी, रमेश ंद्र, शैलेश मटियानी, शिवानी बटरौही, पंक ा बिष्ट आदि।

अतः आँ ालिकता के तत्वों के आधार पर इस की आँ ालिकता को स्पष्ट करते हैं।

3.6.1 कथां ाल का महत्व

कथां ाल आं ालिकता का प्रमुख तत्व है। अं ाल विशेष ही आँ ालिक कहानी में अभिव्यक्ति पाता हैं। आँ ालिक र ानाकार स्थान विशेष की अभिव्यक्ति करता है। इस का कथानक व्यक्ति नहीं, अं ाल केंद्रित होता है। आँ ालिक कहानी में कथां ाल अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है।

शेखर ोशी की कहानियों का कथां ाल अल्मोडा पहाड़ी गाँव है। पहाड़ी गाँवों के साथ-साथ उन्होंने शहरों की छोटी बस्तियों को केंद्र में रखकर कहानियाँ लिखी हैं ाहाँ शहर का निम्न मध्य वर्ग तथा धनिक वर्ग रहता है।

3.6.2 भौगोलिक परिवेश

अं ाल को बनाने में भौगोलिक परिवेश का विशिष्ट महत्व है। भौगोलिक पृष्ठभूमि का अर्थ है र ाना में अं ाल के भूखंड विशेष की समस्त प्राकृतिक-भौगोलिक व भौतिक स्वरूप का यर्थाथ ित्रण। इसीसे अं ाल विशिष्ट बनता है। अं ाल विशेष का भूभाग, नदी, नाले, खेत-खलिहान, पर्वत, मैदान, पेड़-पौधे, बं ार मरुभूमि या ीवंत ांगल, पशु-पक्षी, की ाड़ कादों आदि समस्त वस्तुओं का अं ाल के ान ीवन से विशिष्ट संबंध होता है। इस का ित्रण ही भौगोलिक परिवेश है।

अं ाल विशेष की विशिष्ट भौगोलिकता ही उसे देश के नक्शे पर विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। मानव ीवन पर भौगोलिकता का विशिष्ट प्रभाव पड़ता है। भौगोलिकता के साथ-साथ भौगोलिक परिस्थिति भी अपने तरीके से मानव ीवन को प्रभावित करती है। भौगोलिक परिवेश ही एक अं ाल को दूसरे अं ाल से भिन्न करता है। भौगोलिक विशिष्टताओं के कारण अं ाल की विशिष्ट ीवन पद्धति भी होती है।

शेखर ोशी की कहानियों का भौगोलिक परिवेश कुछ इस प्रकार है- 'कोसी का घटवार' उन की बहु ाित आँ ालिक कहानियों में से एक है। इस कहानी का भौगोलिक परिवेश अन्य अं ालों के भौगोलिक परिवेश से भिन्न है। यह कहानी पूरी कोसी नामक नदी के तट पर होती है ाहाँ गुस्साई पन ाक्की लगाया था। उस गाँव में काफल का पेड़ है और दाड़िम के फूल हैं। इस प्रकार

से वह एक प्राकृतिक परिवेश से घिरा हुआ एक छोटा-सा गाँव है ि‍ासे हम मैदानी केंद्रित गाँवों का प्रतिनिधि मान सकते हैं।

'दा यु', 'छोटे शहर के बड़े लोग' इन कहानियों का भौगोलिक परिवेश भिन्न है। इन कहानियों में पहाड़ी गाँव के नी ‍ो शहरी बस्ती का ि‍ात्रण हुआ। ‍ाहाँ अनेक पेशों के लोग आते हैं। ‍ैसे दा यु कहानी में मदन काम के लिए बस्ती आता और 'छोटे शहर के बड़े लोग' में मछली वाला पहाड़ी गाँव रामपूर से बस्ती आता है। उसी प्रकार मूंगफली वाला और अन्य पेशे के लोग भी अपने रो ‍ागार के कारण ही बस्ती में आते हैं। लेकिन दोनों कहानियों में ि‍ात्रित बस्तियों में अंतर है। दा यु कहानी में ि‍ात्रित बस्ती आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करती है और 'छोटे शहर के बड़े लोग' नामक कहानी में ि‍ात्रित अं ‍ाल पहाड़ी गाँवों से आये हुए विभिन्न पेशेवालों का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों अपने-अपने विशिष्ट अं ‍ाल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

'सिनारियो' कहानी में ि‍ात्रित गाँव पहाड़ी गाँव है ि‍ासके एक तरफ से हिमालय पर्वत है। उस हिमालय का ि‍ात्रण लेखक के शब्दों में इस प्रकार है- "हिमालय का ऐसा विस्तृत और अलौकिक फलक उसने पहले कभी नहीं देखा था। आसमान साफ था। अस्त होते हुए सूर्य का आलोक किन्हीं अदृश्य दिशाओं से आकर उस संपूर्ण हिम विस्तार को सिंदूरी आभा से भर गया था। धीरे-धीरे वह सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रृंखला की सलवटें गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पह ‍ाान बनाने लगी थी।"[14] और उस गाँव में आमां के घर का वर्णन इस प्रकार है-"वह पतथर की दीवारों और पथरीली प्लेटों की ‍ालवाँ छत वाला छोटा सा घर था। नि ‍ाले खंड में एक रसोई घर और उसके पिछवाड़े ‍ाोर-पशुओं की कोठरी थी। बनी

[14] शेखर ‍ाोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ‍ाोशी-पृ.62

हुई सीि.यों से ऊपर पहुँ ाने पर छोटा बैठक और उसके पीछे एक और छोटी कोटरी थी ाहाँ कोने में लाल-मिट्टी से पूते हुए छोटे ाबूतरे पर कुछ मूर्तियाँ और ताँबे-पीतल के पू ाा के बर्तन रखे हुए थे।"[15]

इस प्रकार हिमलाय पर्वत, मिट्टी के घर, ताँबे-पीतल के बर्तन, माि ास और अंगारे तुषार का महत्व, प्रधानता उस पहाड़ी अं ाल को और अन्य अं ालों से अलग करते हुए अपनी विशिष्टता को व्यक्त करता है।

'गलत लोहा' कहानी में ि ात्रित पहाड़ी गाँव ाहाँ प्राइमरी स्कूल तक है। उस गाँव के एक तरफ नदी हैं। प्राइमरी स्कूल से आगे प.ाई के लिए उस गाँववालों को ाार मील ाना पड़ता था। दो मील की ा.ाई के अलावा बरसात के मौसम में रास्ते में पड़ने वाली नदी की समस्या है। उस गाँव में विभिन्न ाति के लोग रहते हैं। ैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, लुहार आदि।

'हलवाहा' कहानी में ि ास अं ाल का ि ात्रण हुआ है वह है पहाड़ी गाँव। ि ासके एक तरफ नदी है और नदी के किनारे पर खेत है। हलवाहे, तेली, ोली, ब.ई, लोहर सबको खाने-कमाने को ामीन हैं और गाँव में नयी सड़क का निर्माण हुआ था। इस तरह उस अं ाल की अपनी एक विशिष्टता है। इस में बद्री प्रधान उ ा वर्गीय किसानों का प्रतिनिधित्व करता है तो ीवानंद निम्न वर्ग का। लेकिन दोनों भी एक ही बिरादरी के हैं। यह अं ाल निम्नवर्गीय किसानों की समस्याओं का प्रतिनिधित्व करता है।

'समर्पण' तथा 'विस ि' कहानी में ि ात्रित अं ाल नदी किनारे का गाँव है। 'समर्पण' में ि ात्रित अं ाल बागेश्वर से तेरह मील का रास्ता है। बी ा में कैलखूर नाला है। गाँव में शिल्पकार, ब्राह्मण, लुहार, वैद्य आदि लोग रहते हैं। विस ि कहानी में ि ात्रित अं ाल भी नदी किनारे का गाँव है ि ास गाँव में गाय-

[15] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.63

बैल हैं। बाँ ा के पेड़ हैं। काफल, हिसालू, खुबानी के फूल, फल हैं, खेत हैं। गाँव के एक तरफ ांगल हैं। एक प्रकार से यह प्राकृतिक परिवेश से घिरा हुआ एक छोटा-सा पहाड़ी गाँव है। ि सि हम पहाड़ी केंद्रित गाँवों का प्रतिनिधि मान सकते हैं।

3.6.3 प्राकृतिक परिवेश

मानव तथा प्रकृति का घनिष्ट संबंध होता है। अं ाल का प्राकृतिक परिवेश के ि त्रण के बिना अं ाल का स ीव ि त्रण संभव नहीं हो सकता। प्रकृति के अंतर्गत उन भौगोलिक दृश्यों के साथ-साथ मनुष्य और पशु-पक्षी सबको शामिल देखते हैं।

शेखर ोशी अपनी कहानियों में प्रकृति का ि त्रण बड़े ही स्वाभाविक ंग से किया है। उन्होंने यादातर पहाड़ी गाँवों को केंद्र में रखकर कहानियाँ लिखी हैं। ि समें प्रकृति-ि त्रण विशेष रूप से दिखायी देता है। 'कोसी का घटवार' नामक कहानी में 'कोसी' नामक एक नदी है। ि सके तट पर गुस्साई ने पन ाक्की लगाया है। उसका ि त्रण इस प्रकार है-

"खस्सर-खस्सर ाक्की का पाट ाल रहा था। किट-किट-किट-किट खप्पर से दाने गिरानेवाले ि ड़िया पाट पर टकरा रही थीं।

छि छर-छि छर की आवाज़ के साथ मयानी पानी को काट रही थी।"[16]

इस प्रकार नदी तथा पन ाक्की का ि त्रण किया गया है।

उस गाँव के एक तरफ ांगल है ाहाँ लछमा और गुस्साई पहली बार मिलते हैं। उस मिलन का सह ा और मार्मिक ि त्रण इस प्रकार है-

"गाँव की सीमा से बहुत दूर, काफल के पेड़ के नी ो गुस्साई के घुटने पर सिर रखकर लेटी-लेटी काफल खा रही थी। पके, गदराए, गहरे लाल-लाल

[16] शेखर ोशी : प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.18

काफल। खेल-खेल में काफलों की छीना- ापटी करते गुसाई ने लछमा की मुट्ठी भीं ा दी थी। टप-टप काफलों का गा.ा लाल रस उसकी पेट पर गिर गया था।"[17] इस प्रकार काफल फलों का वर्णन है। उस गाँव में काफल फलों के साथ-साथ दाडिम फूल भी दिखाई देते हैं।

'सिनारियो' कहानी में सूर्यास्त समय में हिमालय पर्वत का सुंदर ित्रण है। "आसमान साफ था। अस्त होते हुए सूर्य का आलोक किन्हीं अदृश्य दिशाओं से आकर उस संपूर्ण हिम विस्तार को सिंदूरी आभा से भर गया था। धीरे-धीरे वह सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रृंखला की सलवटें गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पह ाान बनाने लगी थी।"[18] रात में उस हिमालयों का वर्णन लेखन ने इस प्रकार किया-" ाँदनी के आलोक में ाँदी के पहाड़ अलौकिक सौंदर्य की सृष्टि कर रहे थे।"[19] इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी में सूर्यास्त और रात में हिमालय पर्वत का सौंदर्य बड़े ही आकर्षक और मनमोहक रूप से ित्रित किया गया है।

'विस ित' कहानी में ांगल तथा पेड़-पौधों का सह ा ित्रण हुआ है। "काफल-हिसालू के फलों का वह मीठा स्वाद, पके धान के खेतों की वह मादक गंध ओखल में धान कूटती युवतियों की ूड़ियों की ांकार।" इस प्रकार उस अं ाल के प्राकृतिक परिवेश को शेखर ोशी ने 'विस ित' कहानी में प्रस्तुत किया है।

'हलवाहा' कहानी में पूरे गाँव का सुंदर ित्रण है। "20-25 ोपडीनुमा घरों का छोटा-सा गाँव, अंधेरे में डूबा-सा लग रहा था। किसी-किसी घर के बाहर ीड़ की मशाल के आलोक में कोई लकड़ी फाड़ रहा था, कोई गाय-भैंस

---

[17] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.19
[18] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.62
[19] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.64

की टहल कर रहा था, किसी घर से ब ो के रोने की आवाज़ आ रही थी और कहीं किसी घर के बाहर बर्तन मां ाने का स्वर सुनाई दे रहा था।"[20] इस वर्णन के द्वारा शेखर ोशी एक स ो गाँव का प्राकृतिक परिवेश सह ा ंग से प्रस्तुत किया है।

पशु-पक्षी भी प्रकृति का एक हिस्सा है उनका ित्रण भी शेखर ोशी की कहानियों में मिलता है। 'हलवाहा' कहानी में ाब ीवानंद पदम को काम के लिए बुलाने उनके गाँव आता है तब "एक कुत्ता भौंकने लगा। ीवानंद उसे पु ाकार कर ुप करने का प्रयत्न कर रही रहा था कि 4-5 कुत्तों ने आकर समवेत स्वर में भौंकना शुरू कर दिया।"[21] ाब ीवानंद निराश से पदम के गाँव से वापस अपने घर लौटता है तब ीवानंद की गाय "मालिक का दुलार पाकर खैर ुगाली करती हुई टुकर-टुकर उसे ताकने लगी।" 'किस्सागो' कहानी में ांगल में गायों का ित्रण इस प्रकार हुआ है-"दोपहर में सब गाएँ पानी पीकर लौटी तो कोई धूप में पसर गई कोई पेड़ के नी ो ुगाली करने लगी।"[22] इस कहानी में पशुओं का प्रेम ित्रण भी हुआ था। "बाघिन ने लप्प से लपककर ब ो को ताक लिया और थोड़ी देर तक उसे ाटती-पलासती रही।"[23]

इस प्रकार शेखर ोशी अपनी कहानियों में ांगलों का, पशु-पक्षियों का, पेड़-पौधों का, सूर्य- ांद्र का, पर्वतों, नदी-नाले आदि का सुंदर सह ा ित्रण किया है। िससे उस अं ाल का प्राकृतिक परिवेश पाठकों के सामने आता है।

---

[20] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.55
[21] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.56
[22] शेखर ोशी:संकलिक कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.133
[23] शेखर ोशी:संकलिक कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.131

उस अं ाल में पड़नेवाली गर्मियों का सुंदर ित्रण 'गोपुली बुबु' कहानी में हुआ है। ाो इस प्रकार है-"कैसी गर्मी पड़ रही है रे। ाब यहीं ऐसी भट्टी ाल रही है तो मैदानों में तो और ही हाल हो रहा होगा। वर्षा-बूंदी का कहीं नाम नहीं है। सोते भी सूख गए हैं। नदी-नालों में कहीं एक बूँद पानी नहीं दिखाई देता। ोर-डाँगरों के होंठ आकाश को लगे हैं। ऐसा होना ही हुआ। पहाड़ सब खोखला कर दिये हैं। पेड़-पौधों का कहीं नाम नहीं है। ाहाँ ि सके हाथ लग ाता है वह डाल-पात नो ा-काट ले ाता है। छोटे लोग छोटे पेड़ों को उ ाड़ते हैं बड़े लोग बड़ों को। अ ाब गदर म ाा रखा है रे। ाड़ देवदार बाँ ा फयाँठ ाो हाथ लगा उसे ही छनका देते हैं। कहीं छाया में बैठने के लिए भी पेड़ नहीं दिखते। ाब पेड़-पौधे ही नहीं होंगे तो वर्षा-बूँदी कहाँ से होगी।"[24] इस प्रकार उस अं ाल में पड़नेवाली गर्मियों के साथ-साथ वहाँ के प्राकृतिक परिवेश को भी लेखक ने सफलतापूर्वक स्पष्ट किया है।

इन्हीं गर्मियों का सुंदर ित्रण हमें 'छोटे शहर के बड़े लोग' कहानी में मिलता है। उसका विस्तृत वर्णन लेखक के शब्दों में इस प्रकार है-"गर्मियों के मौसम की बात भिन्न है। ाब पूरा कस्बा सैलानियों की रंगीनी से खिल उठता है और वे लोग सुबह से लेकर देर रात तक बा ाार, सड़कों व होटलों के छ ाों में ाहकते-फुदकते रहते हैं। तरह-तरह की कारों, वैनों और गाड़ियों की ि ल्लपों से गूं ाता रहता है। सैलानियों की पोशाक उनका केश-विन्यास, उनकी ाल- ाल लोगों की उत्सुकता और ा ार्ा का विषय बनी रहती है। शराब ुआ और रोमांस के कारण आये दिन एक नया शगुफा खिलता है और सी ान खत्म हो ाने पर कस्बे के लोग वर्ष भर फिर इन घटनाओं की ुगाली करते रहते हैं।"[25] गर्मियों के बाद सर्दियों में लोग ठण्ड से ब ाने के लिए

[24] शेखर ाोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ाोशी-पृ.59
[25] शेखर ाोशी:संकलिक कहानियाँ, शेखर ाोशी-पृ.137

मैदानी क्षेत्रों में ाले ाते हैं। इस प्रकार इस कहानी में उस अं ाल में होनेवाली गर्मियों और सर्दियों का ित्रण करते हुए उस अं ाल के समस्त प्राकृतिक परिवेश को लेखक ने स्पष्ट रूप से ित्रित किया है।

3.6.4 सामाि ाक परिवेश

इसमें समा ा के ित्रण के साथ वहाँ के निवासियों के रहन-सहन, आपसी संबंध, स्थितियों आदि का सह ा वास्तविक तथा यथार्थ ित्रण हुआ है। शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित समा ा मध्यवर्ग और निम्नवर्गीय हैं। इनकी कहानियों में विभिन्न पेशे के लोग हैं ैसे हलवाहा, शिल्पकार, घटवार, बॉय (होटल में काम करनेवाला), फोटोग्राफर, लोहार, कथाकार, घोड़ों पर माल लादनेवाला, मछलीवाला, मूंगफलीवाला आदि। उन पहाड़ी गाँवों में ाातिगत भेदभाव है ो 'समर्पण' कहानी में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

" ााय शेष हो ाने पर ब ुवा दोनों गिलास नल पर धो लाया और दुकानदार के आदेशानुसार उन्हें एक किनारे टिका दिया। वास्तव में कोने पर रखे हुए ये ार-छः गिलास उसकी ाति के लोगों के ही लिए थे, ो इसी प्रकार ग्राहकों द्वारा धोकर रख दिए ाते थे।"[26] इस प्रकार के ाातिगत भेदभाव को कुछ लोग अपने मन में उसे एक अधिकार की तरह स्वीकार कर लिया ो 'गलता लोहा' कहानी में स्पष्ट होता है। इस कहानी में घनराम ो एक लोहार है, वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं सम ा बल्कि वह उसे मोहन का अधिकार ही सम ाता रहा था। क्योंकि मोहन एक ब्राह्मण है ो उ ा ातीय है। इस प्रकार समा ा में ाातिगत भेदभाव को कुछ लोगों ने स्वीकार कर लिया और कुछ लोगों ने विद्रोह किया। 'समपर्ण' कहानी में विद्रोह ब ुवा ि से पंडित ी कह कर बुलाता है उसके द्वारा किया गया व्यवहार ो इस प्रकार है-

[26] शेखर ोशीः प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.38

"आप अपना ाय का गिलास धोकर लाए। मु ो बहुत बुरा लगा। आगे से आप कभी ऐसा मत कीि ए। ब्राह्मण-क्षत्री का गिलास यह दुकानदार धो सकता है तो आपका क्यों नहीं धो सकता?"[27]

अपनी ाति के प्रति प्रेम भाव में दिखाई देता है। समर्पण कहीन में ब ुवा पंडित ी की क्रिया देखकर प्रसन्न होता है। लेखक के शब्दों में-"अपनी ात बिरादरी के ही एक व्यक्ति को इस प्रकार की क्रिया करते देखकर उसे आश र्य के साथ-साथ गर्व और प्रसन्नता भी हुई।"[28]

शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित समा ा में वर्गगत भेद भाव है। 'दा यु' कहानी में ागदीश बाबु और मदन दोनों पहाड़ी होने पर भी वर्गगत भेदभाव से ागदीशबाबु मदन को 'दा यु' कहने पर डाँटता है। 'गलत लोहा' कहानी में रमेश और मोहन एक ही ाति के होने पर भी मोहन को रमेश और उनके घरवाले एक नौकर ैसे देखते हैं और उसे आगे की प ाई के लिए मना करते हैं। क्योंकि रमेश एक उ ा वर्ग का लड़का है ो मोहन की प्रगति को प्रोत्साहित नहीं करता।

समा ा में सिपाही के लिए कोई आधार नहीं है। 'कोसी का घटवार' नामक कहानी में लछमा को गुसाई को देने में लछमा के पिता ी मना करते हैं। उनका कहना है कि-"ि सके आगे-पीछे भाई-बहन नहीं, माई-बाप नहीं, परदेश में बंदूक की नोक पर ान रखनेवाले को छोकरी कैसे दे दें हम।"[29] समा ा में एक प्रकार से ईर्ष्या, द्वेष फैली हुई है। 'छोटे शहर के बड़े लोग' नामक कहानी में मूंगफलीवाला ईर्ष्या से मछलीवाले का मे ा तोड़ता है क्योंकि मछलीवाले का व्यापार अ छा ाल रहा है।

---

[27] शेखर ोशी:संकलिक कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.38
[28] शेखर ोशी:संकलिक कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.38
[29] शेखर ोशी:संकलिक कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.19

समा ा में स्त्री का कोई महत्व या अपना अस्तित्व नहीं है। 'कोसी का घटवार' नामक कहानी में लछमा गुसाई से प्यार करती है। लेकिन शादी के विषय में अपने आप निर्णय नहीं लेती। इसलिए वह किसी और से शादी कर लेती है ाो बाप की पसंद है। 'हलवाहा' कहानी में ाीवानंद की पत्नी उसकी मनःस्थिति को सम ा रही थी। लेकिन कुछ कहने का साहस उसमें नहीं है। 'वि ाि' कहीन में तारी की भाभी ाो एक बाल विधवा है, वह आ ाीवन विधवा ही रह ाती है। वह दूसरी शादी नहीं करती ाो समा ा के विरुद्ध है। गाँव में डॉक्टर की कमी से कई स्त्रियाँ प्रसव पीड़ा से मर ाती हैं। 'गोपुली बुबु' शीर्ष कहानी में इस स्थिति का ि ात्रण देख सकते हैं।

गाँव के लोग बड़े अंधविश्वासी होते हैं। भूत-प्रेत, ाादू-टोना पर अधिक विश्वाास करते हैं। इस प्रकार की गाँव की विशिष्ट सामाि ाक व्यवस्था अं ाल को विशिष्टता प्रदान करती है। इससे उस विशिष्ट अं ाल का परि ाय मिलता है। शेखर ाोशी की कहानियों में वर्णित ग्राम्य-समा ा में अनेक प्रकार के व्यक्तियों के होते हुए भी कोई व्यक्ति विशेष प्रमुख नहीं है। कहानियों में कई पात्रों की प्रधानता होने पर भी कोई नायक नहीं है। वह केवल उस अं ाल की सामाि ाक व्यवस्था के अंग्र मात्र हैं। यह सामाि ाक व्यवस्था विशिष्ट अं ाल के पहाड़ी गाँव के ान- ाीवन का ही परि ाय देती है।

3.6.5 आर्थिक परिवेश

शेखर ाोशी ने अपनी कहानियाँ मध्यवर्ग और निम्न वर्ग को केंद्र में रखकर लिखा है। इसीलिए उनकी कहानियों में आर्थिक दबाव दिखाई देता है। 'कोसी का घटवार' नामक कहानी में आर्थिक दबाव दिखाई देता है। लछमा की आर्थिक स्थिति देख कर गुसाई अपनी ाोब टटोलते हुए संको ा पूर्ण स्वर से कहता है कि-"लछमा।" लछमा ने ि ाज्ञासा से उसकी ओर देखा, एक नोट

उसकी ओर ब ाते हुए गुसाई ने कहा-"ले काम ालाने के लिए रख ले, मेरे पास अभी और है। परसों दफ्तर से मनी आर्डर आया था।"[30] लेकिन लछमा ने सहायता लेने से इनकार कर दिया। मगर गुसाई अंदर ाकर ाल्दी- ाल्दी अपने आटे की टीन से दो- ाई सेर के करीब आटा लछमा के आटे में मिला कर वह संतोष की एक सांस लेता है। इस प्रकार 'कोसी का घटवार' नामक कहानी एक घोर गरीबी तथा उसके प्रति स्वतः उमड़ती हुई गहरी मानवीयता की कहानी है।

'सिनारियो' कहानी में आमाँ की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। उसके पास मा ाि स खरीदने के लिए पैसा नहीं है। इस स्थिति का वर्णन लेखक के शब्दों में इस प्रकार है-"मा ाि स का ख र्ा का भार उनके लिए महँगा पड़ता था।"[31] आमाँ को आर्थिक क्षमता न होने के कारण वह सरुली को किसी और के मकान से अंगारे तुषार माँग कर लाने के लिए भे ाती है।

'हलवाहा' कहानी में ीवानंद ो एक सामान्य किसान है ि सके पास म ादूरी पर हलवाही करवाने की आर्थिक क्षमता नहीं है। इसलिए अंत में वह अपने खेत में वह स्वयं हल ालाता है ो उनके बिरादरी के विरुद्ध है। ीवानंद की आर्थिक परिस्थिति किसानों की आर्थिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है। 'छोटे शहर के बड़े लोग' कहानी में लोग मछलीवाले की आर्थिक क्षतिको लेकर दुःखी थे। क्योंकि मछलीवाला आर्थिक रूप से संपन्न नहीं है। इसलिए बगल के दुकानदारों ने उसके प्रति दुःख व्यक्त किया है।

'ग ाल लोहा' कहानी में वंशीधर तिवारी एक ब्राह्मण हैं, ो पुरोहिताई के बूते पर घर-संसार ालाता था। पी ि यों से ाले आ रहे पैतृक धंधे ने उन्हें निराश कर दिया था। दान-दक्षिणा के बल पर वे किसी तरह परिवार का आधार

[30] शेखर ोशीः प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.27
[31] शेखर ोशीः प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.65

पेट भर पाते थे। मोहन उनका बेटा प ़-लिखकर वंश का दारिद्रय मिटा दे यही उनकी हार्दिक इ छा थी।

3.6.6 अंधविश्वास

ग्रामीण लोग अधिकतर अंधविश्वासों को मानते हैं। उन्हें भूत-प्रेत, डायन, ाादू-टोना आदि मिथकों में विश्वास है। शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित ग्रामां ाल में भी प्र ालित अंधविश्वासों को स्थान मिला है।

'कोसी का घटवार' शीर्षक कहानी में गुसाई वर्षों बाद लछमा से मिलकर बिदाई लेते समय कहता है-"कभी ाार पैसे ुड़ ाएँ तो गंगानाथ का ागर लगाकर भूल- ूक की माफी मांग लेना। परिवार वालों को देवी-देवताओं के कोप से ब ा रहना ाहिए।"[32] क्योंकि लछमा गुसाई से वादा करती है-

"गंगनाय यूं की कसम ैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूँगी।"[33]

मगर ऐसा नहीं कर पाती हें। इसीलिए गुसाई देवी-देवताओं के क्रोध से ब ाने के लिए ागर लगाने के लिए कहता है। उनका मानना यह है कि कसम खाने के बाद पूरी न करने से देवी-देवता क्रुद्ध होकर आदमियों या ब ों को निगल लेते हैं। ऐसे अंधविश्वास पहाड़ी अं ाल में अधिक दिखाई देते हैं।

'समर्पण' कहानी में ाब ब ुआ सौ-बेसिर-पैर की बातें कर रहा था तब कोई भी 'कौन', 'क्या' कुछ प्रश्न नहीं पूछते क्योंकि वे लोग ाानते हैं, कैलखूर के प्रेत की बात कह रहा होगा। बरसों पहले एक नेपाली डोट्याल लड़की के िरान के समय वहाँ दबकर मर गया था। इस प्रकार उस पहाड़ी अं ाल में भूत-प्रेतों में लोगों का अंधविश्वास दिखाई देता है।

---

[32] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.28
[33] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.20

'किस्सागो' कहानी में बहादुर और पिरदा ांगल से गु ारते समय भूत-प्रेत से डरते हैं। उस डर का ि त्रण इस प्रकार से हुआ है-"वह बकरी का छौना पारगाँव में किसी का होगा, डार से बिछुड़ गया है। एक बार रुन- ुन कुछ थमी तो पीछे मुड़कर देखा, वह छौना भाटिया बकरे के आकार का हो गया था और खसम-खराम पीछे ाला आ रहा था। मु ो खटका लग गया था, मैंने पिरदा से कुछ नहीं कहा। वह ठहरा कम ोर दिल का आदमी। उसकी घिग्घी बँध ाती और उस अंधेरी सुनसान रात में मेरे लिए उसे संभालना मुश्किल हो ाता। मैंने मन ही मन गायत्री पाठ शुरू कर दिया। अगले मोड़ पर पलट कर देखा, वह ऊँ ा ाबरीला बैल बन गया था। पूरे शरीर पर ये लंबे-लंबे बाल, बड़े-बड़े गोल सींग, अंगार सी सुलगती आँखें। वैसे ही खराम-खराम पीछे ाला आ रहा था। ता ुब की बात थी, उसके खुरों की टाप नहीं सुनाई दे रही थी। घुंघरू की आवाज़ तो पहले ही बंद हो ुकी थी। पिरदा ने पूछा-छौना पीछे छूट गया? मैंने हामी भर दी लेकिन कुछ और नहीं बताया। पिरदा उसे न देखता तो अ छा होता। लेकिन अगले मोड़ पर आगे लीसे का टाल था, उसके लैम्प की धीमी रोशनी दिखाई देने लगी थी। तभी वह अल छन डुकारते हुए तेज़ी से आगे आया और उसने छप्पसे कोसी में छलाँग लगा दी। टाल के मुँशी ने हाँक दी तो हम दो घड़ी उसके पास बैठ गए। यही गलत हुआ। मुंशी ने खुलासा कर दिया-आप लोगों ने गलत की, पथरिया के दुकानदार से छिलुके की मशाल ले लेते। आग से अलबत्त डरता है। पिरदा तब से गुमसुम हुआ फिर आखिर तक गुमसुम ही रहा। ागर, ाड-फूँक कुछ काम नहीं आया।"

उपरोक्त विवे ान सभी तथ्यों के आलोक में हम पाते हैं कि शेखर ोशी की कहानियों में कथां ाल को ही सर्वाधिक महत्व मिला है। ि ससे र ाना की आं ालिकता सिद्ध होती है।

3.7 नायकत्व का लोप आँ ाल का नायकत्व

आं ालिक कहानियों में किसी व्यक्ति-विशेष की कथा नहीं होती। उस में किसी अं ाल विशेष की समग्र अभिव्यक्ति होती है। इसीलिए इन कहानियों में कोई व्यक्ति-नायक नहीं होता बल्कि समस्त अं ाल ही यहाँ पर नायक के रूप में ित्रित होता है। शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित अं ाल अलमोड़, अल्हड िाले के पहाड़ी गाँव हैं। इसी पहाड़ी अं ाल को नायकत्व मिला है।

इस पहाड़ी अं ाल में निम्न और मध्य वर्ग के लोग रहते हैं िनका अपना अलग पेशा है। ैसे शिल्पकार, लोहार, ब्राह्मण, किसान, कथाकार, मछलीवाला, मूँगफलीवाला आदि। इन सारी कहानियों में एक-एक पात्र और उनके पेश के द्वारा इस अं ाल की समस्या पर लेखक ने ोर दिया है। 'हलवाहा' कहानी में ीवानंद के द्वारा मध्यवर्गीय किसानों की समस्याओं को प्रतिपादित किया तो 'गोपूली बुब' नामक कहानी से उस अं ाल की वैद्य की कमी से हुए प्राण हानि को स्पष्ट करता है। इसी प्रकार 'गलता लोहा' कहानी से एक निम्नवर्गीय ब्राह्मण का बेटा नि ी ीवन में एक लोहार बन ाता है। इस प्रकार कहानियों में सारे पात्र उस अं ाल के अंग मात्र हैं। वास्तव में अं ाल ही नायक है।

3.7.1 आँ ालिक रहन-सहन

पहाड़ी अं ाल के लोगों के घरों का 'सिनारियो' कहानी में आमाँ के घर का ित्रण करते हुए लेखक ने लिखा है-"वह पत्थर की दीवारों और पथरीली प्लेटों की लवाँ छत वाला छोटा सा घर था। नि ाले खंड में एक रसोईघर और उसके पिछवाड़े ोर-पशुओं की कोठरी थी। एक ओर बनी हुई सीि ियों से ऊपर पहुँ ाने पर छोटा बैठक और उसके पीछे एक और छोटी कोठरी थी ाहाँ कोने में लाल मिट्टी से पुते हुए छोटे ाबूतरे पर कुछ मूर्तियाँ और ताँबे

पीतल के पू ा के बर्तन रखे हुए थे।"[34] इस प्रकार हम देखते हैं कि आमाँ का घर उस अं ाल के रहन-सहन को प्रतिनिधित्व करता है।

'विस र्न' कहानी में तारी का मकान का ित्रण हुआ है। "मकान कहने-भर को ही मकान था। वर्षों से देख-रेख न होने के कारण लवाँ छत की पथरीली स्लेटें अपनी ागह से उखड़कर इधर-उधर हो गई थीं। दीवारों का पलस्तर ाड़ ुका था और पूरब की ओर वाली दीवार में कूबड सा निकल आया था। गाँव वालों ने अपनी सुविधा के लिए न ाने कब से उसे इसी कारण कूबडघर का नाम दे दिया था। ऊपर की मं िल में छत से टपकते बरसाती पानी के कारण गड्े पड़ गए थे। खिड़कियों और दरवा ों की लकड़ियों का रंग-रोगन कब का उड़ ुका था और दीमक ने उन्हें ठठरी बना कर रख दिया था।"[35] और उस अं ाल का निम्न वर्ग ैसे 'हलवाहा' कहानी में पदम ोपड़ी में रहता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित निम्न वर्ग ोपड़ी में और मध्यवर्ग मकान में रहता है। उनकी कहानियों में कहीं-कहीं फंतासी का आभास भी दिखाई देता है।

3.7.2 खान-पान

उस पहाड़ी अं ाल में यादातर लोग रोटी खाते हैं। रोटी के साथ-साथ ावल भी खाते हैं। 'कोसी का घटवार' कहानी में गुसाई लछमा के हाथ की बनी हुई रोटी की तारीफ करते हुए कहता है-"लोग ठीक ही कहते हैं, औरत के हाथ की बनी रोटियों में स्वाद ही दूसरा होता है।"[36] उस अं ाल के लोगों में

---

[34] शेखर ोशी: प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.63
[35] शेखर ोशी: प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.100
[36] शेखर ोशी: प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.27

ााय पीने की आदत है। 'सिनारियो' कहानी में रवि ाब आमाँ के घर में प्रवेश करता है, तब आमाँ रवि के लिए पीतल के गिलास में ााय लेकर आती है।

प्रा ाीन काल से लेकर आ ा तक ाब पुरुष दुःख या गम में होता है तब वह शराब पीता है। यही प्रथा इस अं ाल में भी दिखाई देती है। 'कोसी का घटवार' कहानी में गुसाई को ाब लछमा के विवाह का पता ालता है तब वह शराब पीना शुरू करता है। इस विषय को लेखक ने अपने शब्दों में स्पष्ट किया है-"'रम डे' था उस दिन। हमेशा आधा पैग लेने वाला गुसाई, उस दिन दो पैग लेकर अपनी ाारपाई पर पड़ गया था।" तम्बाकू, सिगरे, बीड़ी आदि इस अं ाल के लोग पीते हैं। इन सारी ाीज़ों का उल्लेख शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में किया है।

3.7.3 वेश-भूषा

पहाड़ी अं ाल के लोग धोती पहनते हैं। कुछ लोग कहीं-कहीं पैंट पहनते हैं। 'कोसी का घटवार' कहानी में हवलदार धरमसिंह का पैंट देखकर ही गुसाई प्रभावित होकर फौ ाी में प्रवेश करता है। इसका वर्णन लेखक के शब्दों में इस प्रकार है-"ऐसा ही फौ ाी पैंट पहनकर हवलदार धरमसिंह आया था, लाँड्री की धुली। नोकदार, क्री ावाली पैंट। वैसी ही पैंट पहनने की महत्वाकांक्षा लेकर गुसाई फौ ा में गया था।"[37] इस प्रकार अल्मोडा और अल्हड पहाड़ी के लोग धोती और पैंट पहनते हैं। औरतें घाघरा ओ ़नी पहनते हैं।

3.7.4 पर्व-त्यौहार

अलमोडा पहाड़ी के लोग ईद, मुहर्रम, होली-दीवाली आदि मनाते हैं। एक-दूसरों के त्यौहारों में सभी लोग भाग लेते हैं। इसका ित्रण हमें 'छोटे शहर के बड़े लोग' नामक कहानी में मिलता है। " ाहाँ ईद और मुहर्रम के

[37] शेखर ोशीःप्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.18

अवसर पर दूसरे संप्रदाय के लोग उनके त्यौहार-पर्व में शामिल होते हैं वहाँ वे भी होली-दीवाली और रामलीला में समान रूप से अपनी भागीदारी का निर्वाह करते हैं।"[38] इस प्रकार उस पहाड़ी अं ाल के लोग मिल- ाुल कर सभी पर्व-त्यौहार मनाते हैं। इन सारी बातों का वर्णन शेखर ोशी की कहानियों में मिलता है।

3.7.5 अं ाल की प्रतिनिधिकता

शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित अं ाल अल्मोड़ा पहाड़ और उस पहाड़ के आस-पास की बस्तियाँ हैं। पहाड़ी गाँवों का ीवन अपनी विशिष्ट समस्याओं के साथ कुछ ऐसी समस्याओं के लिए हुए हैं, िनका समाधान राष्ट्रीय स्तर पर ही हो सकता है। दरिद्रता, गरीबी, शोषण, अंधविश्वास, ातिगत भेद-भाव, वग्रगत भेद-भाव, आर्थिक-पिछड़ापन ये सब पहाड़ी गाँवों की समस्याएँ होती हुई भी समस्त भारत के देहातों की भी समस्याएँ हैं। उस अं ाल की विशिष्ट समस्या अस्पताल की कमी, किसानों की समस्या, सभी निम्न-मध्यवर्ग के पेशेवर लोगों की समस्याओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस प्रकार अल्मोड़ा पहाड़ी अं ाल एक पिछड़ा हुआ व ्र देहात होते हुए भी भारत के पिछड़े हुए गाँवों या अं ालों का प्रतिनिधित्व करता है। एक प्रकार से आँ ालिकता प्रतीकात्मक स्तर पर क्षेत्रीय भी है।

3.7.6 अं ाल की भाषा

आँ ालिक साहित्य का एक अत्यन्त प्रमुख तत्व है उसकी अपनी भाषा या अं ाल विशेष की भाषा का खुलकर प्रयोग। आँ ालिक कथाकार अं ाल विशेष की लोक भाषा का पात्रानुकूल प्रयोग करता है। ऐसी भाषा का प्रयोग ही आं ालिकता का प्रमुख तत्व माना ाता है।

---

[38] शेखर ोशीः संकलित कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.138

शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में सह ा एवं सरल भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने पात्रानुकूल लोक भाषा का प्रयोग किया है। उस पहाड़ी अं ाल के लोग ो अशिक्षित हैं अपनी पहाड़ी बोली में एक दूसरे से बात ीत करते हैं। 'हलवाहा' कहानी में ीवानंद पदम को 'पदम हो ऽऽऽ।' कहकर पुकारता है तो पदम 'आया ऽ मालिक' से आवाज़ देता है। इस प्रकार अपनी पहाड़ी बोली में लोग बात ीत करते हैं।

उस पहाड़ी अं ाल के लोग गाली मिश्रित शब्द और वाक्यों का प्रयोग करते हैं। ैसे 'स्साला', 'ससुरे', 'साले कमीने हैं', 'मर! अब ले क्यों नहीं लेता', 'साला यह घोड़ा भी डर गया' (समर्पण) आदि।

लेखक ने संबोधनों और हंसी के सू ाक शब्दों को उनसे संबंधित पात्रों के अनुकूल रूपायित किया है। हंसी को 'खिस्स' शब्द से प्रस्तुत किया है।

शेखर ोशी अपनी कहानियों में तरह-तरह की ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। क्की की पाट के लिए 'खिस्सर-खिस्सर', ि ाड़ियों की आवाज़ के लिए 'किट-किट' पैंट के मोड़ते समय उस ध्वनि के लिए 'छप्प-छप्प-छप्प', "'छि छर-छि छर' की आवा ा के साथ मयानी पानी को काट रही थी।"

"टप्-टप्-टप्। वह सिर नी ाा किये आँसू गिराने लगी।"

"टप-टप काफलों का गा ़ा लाल रस गिर गया था।"[39]

संवाद सह ा और स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत किये गये। संवदों में सामान्य लोक व्यवहारों और शब्दों का प्रयोग हुआ है।

"आ भाऊ! बैठ ाा! तु माया-मोहा वाला हुआ, आकर भेंट कर गया। हमें भी संतोष हो गया। तू ठीक है? ब ो कुशल से हैं? ीते रहें, बड़ी उमर पाएँ। दुलहन ठीक है? उन्हें भी ले आते, अपने पुरखों का घर देख ाते।"

---

[39] शेखर ोशीः प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.18

"हाँ भाऊ! दूसरों की ही कथा मैंने तु ो सुनाई, अपनी क्यों सुनाती? मेरी कथा सुन कर तु ो नींद कहाँ आती।"

"अतर की दम लगाकर आया है। नशे में टन्न है।"

"कल शाम से ही दोनों में ाख- ाख हो रही थी।"

"वह भी कम गुस्सेबा ा नहीं है, अभी आकर न ाने क्या कर देगा।"[40]

इस प्रकार संवादों में उस पहाड़ी अं ाल की बोली स्पष्ट दिखाई देती है। पहाड़ी लोगों के संवादों को लेखक ने स्पष्ट, सह ा, सरल एवं स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत किया है।

शेखर ोशी ने भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रतीकों और मुहावरों का भी सफल प्रयोग किया है। उन्होंने यवनावस्था और वृद्धावस्था को सू ित करने के लिए प्रतीक का प्रयोग इस प्रकार किया है। "काले बालों को लेकर गया था, खि ाड़ी बाल लेकर लौटा।"[41] 'समर्पण' कहानी में एक ते ास्वी आदमी के लिए प्रतीक का प्रयोग किया गया है। ैसे-"सूर्य की तरह सामने ामक रहा है।" "छोटे शहर के बड़े लोग" नामक कहानी में "ताल के स्थिर ाल में फेंके गए कंकड की ि ंदगी को आंदोलित कर गया था।"[42] इस प्रकार शेखर ोशी ने अपनी कहानियों में कई बार प्रतीकों का प्रयोग करके भाषा को और भी सौंदर्यात्मक बना दिया है।

उन्होंने भाषा में मुहावरों का भी प्रयोग किया। ो भाषा में एक प्रकार से आकर्षण और सौंदर्य पैदा करता है। ैसे ' ोहरा तमतमा गया था'। 'समर्पण' कहानी में पंडित ी को ब ुवा के आँखों से बहुत दूर ाने को सू ित करने के लिए लेखक ने मुहावरे का सहारा लिया ो इस प्रकार है-"आँखों की ओट हो

---

[40] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.137
[41] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.20
[42] शेखर ोशी:प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.137

ाएँगे।" दुख को सू ित करने के लिए 'सिनारियो' कहानी में से मुहावरे का प्रयोग इस प्रकार हुआ है-"महेश शायद संको ा के कारण उसके हाथों घर के लिए कुछ भि ावा नहीं पाया था। लेकिन अपने सैलानी स्वभाव के विपरीत उसे अपना यूँ खाली हाथ ाले आना खलने लगा।" "मिट्टी के साथ िंदगी मिट्टी हो गयी। ोर-डाँगरों के होंठ आकाश को लगे हैं। (गोपुली बुबु) आदि मुहावरों का प्रयोग उन्होंने किया। उन्होंने अपनी भाषा में संस्कृत तथा अंग्रेज़ी शब्दों का भी प्रयोग किया है। संस्कृत शब्दों का प्रयोग ग्रामीण अं ाल और धार्मिक परिवेश में किया है। 'समर्पण' कहीन में कई बार संस्कृत शब्दों का प्रयोग हुआ है ैसे 'शुद्धि शुद्धि'। गायत्री मंत्र का प्रयोग 'आूम भू भूः, ओम भू भूः', 'नमः शिवाय-नमः शिवाय'। अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग उन पात्रों के द्वारा किया गया है ो पहाड़ी अं ाल के पास की बस्तियों में रहते हैं। 'दा यु' कहानी में यादातर अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग हुआ है। ैसे-ड्रे, साइनबोर्ड, कैफे, सिंगल ाय, आर्डर, प्रेस्टि ा, मीनू, टेबल आदि। इन शब्दों के साथ-साथ ग्रामीण तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है। ोहिन्न (ैहिन्द), ह्यं (हिम), शाब (साब), नमस्ते,नवप्रसूता, किवाा आदि तद्भव शब्द मिलते हैं। कहावतों का भी प्रयोग उन्होंने 'समर्पण' कहानी में किया है। "कैलखूर के प्रेत की बात" उस अं ाल में कहावत बन गयी है ो लोगों में प्र ालित हो गई है।

इस प्रकार शेखर ोशी ने उस अं ाल की भाषा को प्रस्तुत किया है ो पहाड़ी खि ाड़ी भाषा है, ि ासका प्रयोग उस अं ाल के लोग करते हैं।

* * *

ातुर्थ अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों का समय और समा ा

4.1 शेखर ोशी की कहानियों का देश काल

(औद्योगीकरण, शहरीकरण, तकनीकीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद)

4.2 शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित समा ा

4.2.1 सामा िक स्थितियाँ

4.2.1.1 आपसी संबंध

4.2.1.2 पीि यों का अंतर

4.2.1.3 अकेलापन

4.2.1.4 मृत्युबोध

4.2.1.5 प्रेम

4.2.1.6 वृद्ध और विधवाओं की परिस्थिति

4.2.1.7 पर्वतीय ीवन

4.2.2 आर्थिक स्थितियाँ

4.2.2.1 मध्यवर्ग

4.2.2.2 निम्न मध्यवर्ग

4.3 धार्मिक स्थितियाँ

चतुर्थ अध्याय

शेखर जोशी की कहानियों का समय और समाज

समय नदी की धारा है, जिसमें सब कुछ बह जाता है। लेकिन कुछ क्षण ऐसे होते हैं, जो इतिहास बनाया करते हैं। वह एक गतिशील प्रक्रिया है। किसी के लिए भी वह एक क्षण रुकता नहीं। समय जो एक बार बीत गया उसे वापस लाया नहीं जा सकता। हमारे जीवन में समय का बड़ा महत्व है। समय और समाज अन्योन्याश्रित है क्योंकि समय एक गतिशील प्रक्रिया है और निरंतर बदलता रहता है। उसी प्रकार समाज भी प्रगति की ओर अपने आप को बदलते हुए आगे बढ़ता है। इस प्रकार समय और समाज एक जैसा ही है। स्वतंत्रता के पूर्व हमारे समाज का जो स्वरूप है, वह समय के साथ अपने आप को बदलते हुए प्रगति की ओर उससे दस गुना आगे बढ़ चुका। यह एक सत्य है। जिसे कोई तिरस्कार नहीं कर सकता।

कोई भी रचनाकार समाज से विमुख होकर यदि किसी कृति को जन्म देता है तब उसमें सामाजिक चित्र अपने असली रूप में उभर नहीं पाता। लेखक समाज से संपृक्त रहता है। जिस युग में वह जी रहा है उसकी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक गतिविधियों से वह पूर्णतः जुड़ा हुआ रहता है। जब समाज की समस्याएँ लेखक के सामने होती हैं, तब वह उनमें इतना उलझ जाता है कि व्यक्ति संबंधी परेशानियाँ उसे आकर्षित नहीं करती। लेखक पर केवल स्वयं की वैयक्तिक व परिवेशगत परिस्थितियाँ ही केवल प्रभाव नहीं

डालती अपितु ि ास समय के समा ा में वह ाी रहा है उस का प्रभाव भी लेखक पर पड़ता है। वह समय के साथ समा ा में हो रहे परिवर्तनों को अपने साहित्य के द्वारा पाठकों के सामने लाता है। इसी विषय को प्रेम ांद अपनी शब्दावली में इस प्रकार प्रकट करते हैं कि-"साहित्यकार बहुदा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। ाब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे प्रभावित रहना असंभव हो ाता है।"[1] प्रत्येक परिस्थिति समान नहीं रहती। देश में अनेक लहरें उठती हैं ैसे स्वतंत्र संग्राम, भ्रष्टा ार, रा ानीतिक बदलाव आदि। उन सभी परिस्थितियों से साहित्यकार अन ान नहीं रह सकता। लेखक उन परिस्थितियों को अपनी प्रतिभा के बल पर साहित्य का रूप देता है।

4.1 शेखर ोशी की कहानियों का देश काल

(औद्योगीकरण, शहरीकरण, तकनीकीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद)

मनुष्य हमेशा देश और काल के अनुरूप बदलता रहता है। इसी बदले हुए मानवीय ोतना को उ ागर करने का प्रयत्न हर लेखक करता है। वह अपने ारों ओर के परिवेश के सभी बारीक और स्थूल आयामों को तो रूपायित नहीं कर सकता है। परिवेश का वह रूप ि ासने लेखक की ोतना को ाक ोरा है, वह उसे ग्रहण कर लेता है। हर लेखक का अपना परिवेश होता है। वह अपने परिवेश से इतना ुड़ ाता है कि उसकी र ाना से उसे अलग करना असंभव-सा हो ाता है। अपने परिवेश के बारे में लिखते-लिखते स्वयं लेखक उस परिवेश का प्रतिनिधित्व करने लगता है। इस विषय की पुष्टि हमें

[1] हंस, मा ि 1932-पृ.40

 ैनेंद्र कुमार के शब्दों से मिलती है-"एक बिंदु पर आकर स्वयं लेखक ही अपना परिवेश हो ाता है।"[2]

प्रा ाीन युग के और आ ा के परिवेश में काफी अंतर है। पहले की दुनिया परिवर्तनशील होते हुए भी छोटी थी। तब का लेखक आस-पास के सीमित कटघरे में बंद रहता था। मगर आ ा की दुनिया में ाो परिवर्तन आ रहा है, लेखक उसे अपने साहित्य के द्वारा पाठकों के सामने लाता है।

देश, काल या वातावरण शब्द से ही स्पष्ट है कि काल-देश-प्रदेश अथवा स्थान से संबंधित है। र ानाकार का काल अथवा समय क्या है और स्थान तथा समय की परिस्थितियाँ क्या है, उनका पात्रों पर कैसा प्रभाव पड़ता है? इस दृष्टि से उनके तीन भेद किए ा सकते हैं-सामा िक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक।

पहले के अंतर्गत लेखक सामा िक स्थिति, रीति-रिवाज़, वेश-भूषा, पात्रों के ाीवनगत स्तर, उनकी शिक्षा, संस्कृति आदि का ित्रण करता है।

दूसरे के अंतर्गत लेखक उसके परिवेश तथा संदर्भ में पात्रों की मनोदशा का भावात्मक स्वरूप प्रस्तुत करता है और उसे अधिक मार्मिकता प्रदान करता है। तीसरे का उपयोग ऐतिहासिक उपन्यासों में ही होता है।

उपन्यास या कहानी का संबंध किसी देश या काल से होता है। "व्यक्ति या घटना को उसकी पूर्ण यथार्थता में ित्रित करने के लिए उसके दिक् और काल का ित्रण भी अनिवार्य होता है। इसी दिक् काल को उपन्यास में 'देशकाल', 'वातावरण' या परिवेश भी कहते हैं।"[3] देशकाल का वह वर्णन ितना ही स ाीव, यथार्थ और सुसंगत होगा, उपन्यास उतना ही अधिक सफल रहेगा। इस वर्णन को वास्तविक बनाने के लिए उस देशकाल के आ ाार-वि ाार,

---

[2] समयसीमा और सिद्धांत, ैनेंद्र कुमार-पृ.7

[3] श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधानः डॉ.पी.वी.कोटमे-पृ.59

रीति-नीति, रहन-सहन, भाषा ओर वेशभूषा का सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक है। बाह्य प्रकृति के वर्णन द्वारा भी वातावरण की सृष्टि की ाती है। यह प्राकृतिक वर्णन कभी स्वतंत्र रूप से होता है और कभी-कभी पात्रों की मनःस्थिति के अनुसार। इस दृष्टि से इनके तीन भाग किये ा सकते हैं-सामा िक, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक आदि।

1. उपन्यासकार सामा िक स्थिति, रीति-रिवा ा, वेशभूषा, पात्रों का ीवनगत स्तर, उनकी शिक्षा, संस्कृति आदि का ि त्रण करता है।
2. उपन्यासकार उसके परिवेश तथा संदर्भ में पात्रों की मनोदशा का भावात्मक स्वरूप प्रस्तुत करता है और उसे अधिक मार्मिकता प्रदान करता है।
3. ऐतिहासिकता का उपयोग ऐतिहासिक उपन्यासों में ही होता है।

कहानी या उपन्यास में देशकाल और वातावरण के अभाव कहानीकार अपनी बात कह नहीं सकता। कहानी की सफलता पर देशकाल का बड़ा महत्व हैं। "किसी परिवार, वर्ग अथवा ाति पर सामा िक वातावरण का सर्वाधिक प्रभाव रहता है। निकट भविष्य में ही मनोविज्ञान निःसंदेह इतना सक्षम हो ाएगा कि वह मानव वि ारों और भावनाओं की बुनावट को स्पष्ट करके सामने रख देगा। अतः हमारे लिए यह सम ाना संभव हो ाएगा कि व्यक्ति के कार्य करने, ि ंतन करने और प्यार करने की क्या प्रक्रिया है, यह उसी प्रकार संभव होगा ैसे कि आ ा सामा िक संदर्भ में ही सम ा पाते हैं। वह अकेला नहीं है, उसका सामा िक अस्तित्व है। समा ा से पृथक उसकी कोई सत्ता नहीं है और ाहाँ तक उस सामा िक वातावरण से उपन्यासकार का संबंध है, उसकी

घटनाओं का वह निरंतर परिवर्तित करनेवाला होता हे। इसकी ा र्ा 'एमिल ोला' ने की है।"[4]

परिवर्तन की इस अंतर्धारा के बारे में अरुण प्रकाश स्वयं अपना मत इस प्रकार प्रकट करते हैं-"आम तौर पर नाटकीय ीवन सभी को आकृष्ट करता है। भावावेगों का ारम होता है। इसके आकर्षण में पाठक, श्रोता, दर्शकों के साथ-साथ लेखक भी पड़ ाता है। लेकिन ीवन के सारे परिवर्तन नाटकीय नहीं होते। बड़े परिवर्तन स ामु ा में नाटकीय होते हैं। लेकिन परिवर्तन की स्फूर्त अंतर्धारा भी ुप ाप बहती है। वस्तुतः यही अंतर्धारा बड़े नाटकीय परिवर्तनों की पूर्व-पीठिका होती है। ो कि हर लेखक का दायित्व होता है कि वह परिवर्तन की इस अंतर्धारा को सम ो और उसे पाठकों तक पहुँ ाए लेकिन ऐसे लेखक कम हैं। शेखर ोशी उनमें से एक हैं।"[5]

शेखर ोशी 'नई कहानी' के दौर के कहानीकार हैं। 'नई कहानी' के दौर में ाब अधिकांश कहानीकारों ने अपनी कहानी में कुंठा, हताशा, संत्रास, एकाकीपन तथा सेक्स को केंद्र में रखकर कथाभूमि का ायन किया और पूरी प्रामाणिकता तथा संवेदनशीलता के साथ 'नयी कहानी' को स्थापित कर पाने में सफल भी हुए, उस समय भी दबे-पिछड़े, संघर्षरत लोगों की ीवन स्थितियों के यथार्थ-ि ात्रण को लेकर कुछ कहानीकार सक्रिय थे और आशान्वित भी। भैरव प्रसाद गुप्त, अमरकांत, मार्कण्डेय आदि के साथ ही शेखर ोशी का नाम इस परंपरा के कहानीकारों में लिया ाता है।

सन् 1950 से भारतीय समा ा में व्यापक परिवर्तनों का दौर शुरू हुआ। वैसा तो ीवन और ागत् में सदा ही कुछ-न-कुछ परिवर्तन होता रहता है परंतु सामा ि ाक ीवन में उसी युग को परिवर्तन का काल कहा ा सकता है

---

[4] हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग, डॉ.त्रिभुवन सिंह-पृ.15

[5] आ ाकल, मा र्ा 1995-पृ.45

ि ासमें और सब बातों की अपेक्षा परिवर्तन प्रमुखता से दिखाई देता हो। इंग्लैंड में 19 वीं शताब्दी महान परिवर्तनों की शताब्दी थी। लगभग पूरी शताब्दी वहाँ परिवर्तनों की आंधी ालती रही कि ीवन और समा ा के सारे प्रसंगों पर ोतना हावी रही। यह स ामु ा वह काल था ाब परिवर्तन ने प्रमुखता ग्रहण कर ली थी।

19 वीं शताब्दी के इस महान परिवर्तनों के बारे में ओंकारनाथ श्रीवास्तव कहते हैं कि-"वहाँ पूरे वेग के साथ 'औद्योगिक क्रांति' होती रही और सामाि ाक ीवन के ऊपरी तौर-तरीकों में ही नहीं, बल्कि उनके फलस्वरूप मानव के सूक्ष्म भाव-यंत्र में भी परिवर्तन होते रहे। यह वह काल था ाब नित्य नए आविष्कार हो रहे थे। लोग एक आविष्कार के ामत्कार के बाद स्थिर हों इसके पहले ही कोई दूसरा आविष्कार उसे भी मात देकर और भी बड़ा ामत्कार पैदा कर देता था। थाप की शक्ति ने ही काफी क्रांति कर दी थी, उसकी परणतियाँ अभी प्रारंभिक अवस्था में ही थीं कि बि ाली की खो ा हो गयी ि ासने परिवर्तन की गति को बहुत तीव्र कर दिया।"[6]

औद्योगीकरण

भारत वर्ष में औद्योगीकरण का प्रारंभ स्वतंत्रता से पूर्व ही हो गया था। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही इस दिशा में तीव्रता से प्रयास हुए। पहिए का आविष्कार करना, मानवेतन शक्ति के माध्यम से गतिशील बनाना, पन ाक्की, बि ाली, बैटरी आदि आविष्कार औद्योगीकरण के आरंभिक ारण कहे ा सकते हैं। भारत की प्रथम पं ावर्षीय यो ाना कृषिप्रधान यो ाना थी। किंतु द्वितीय पं ावर्षीय यो ाना में औद्योगिक विकास को महत्व दिया गया। देश में उद्योग धंधों का व्यापक रूप में प्रसार हुआ। हस्थ तथा कुटीर उद्योगों की ागह

[6] हिंदी साहित्यः परिवर्तन के सौ वर्ष, ओंकारनाथ श्रीवास्तव-पृ.4

मशीनों ने ले ली। पदार्थों का उत्पादन फैक्ट्रियों में होने लगा। कृषि के क्षेत्र में बी ा बोने के लिए लोहे के हल को और फसल काटने के लिए मशीनों का उपयोग किया ाने लगा। ि ासके कारण फसल में काफी वृद्धि हुई। छोटे किसान इन साधनों को ुटाने में असमर्थ थे तथा वे अपनी खेती-बाड़ी छोड़ कर नगरों में निवास करने लगे। विषम आर्थिक परिस्थितियों के कारण गाँवों के किसान शहरी म ादूरों में परिवर्तित होने लगे। फैक्ट्रियों में मज़दूरों का शोषण होने लगा।

1960 के आसपास औद्योगीकरण का प्रभाव देश पर अधिक था। परिणामस्वरूप उप ाऊ ामीन कारखानों में बदलने लगी। उस समय के इस बदलाव को शेखर ोशी अपनी कहानी 'आखरी-टुकड़ा' के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी में दो पी ि यों के लोग अपनी ामीन को कारखानों के निर्माण से ब ाते हैं, लेकिन तीसरी पी ि स्वयं अपनी ामीन को कारखानों में बदल देती है।

"कपड़े ाड़कर वह उठा और बाहर निकल आया। लोग अपनी मशीनों की सफाई में ुटे थे। कुछ लोग बाहर नलों पर हाथ धोते हुए, बातों में व्यस्त थे। लोहारखाने के पास से होते हुए, उसने अपनी छिपी-छिपी हताश दृष्टि से लॉन के पश्चिमी टुकड़े की ओर देखा। पसीने से ामकती हुई सूर ा की बाँह दिखाई दे रही थी। वह अब भी अपनी टोली को लेकर काम पर ुटा हुआ था। ामीन के उस खाली टुकड़े के किनारे-किनारे लोहे के खंभे गा कर, उसने बाड़ लगा दी थी और भट्टी-निहाई और दो- ार फ्रेम ामाकर लोहारखाने की सीमा को वहाँ तक ब ा लिया था।"[7]

[7] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.64

इस संदर्भ में पूरन ंद्र ोशी ने अपनी पुस्तक 'संस्कृति, विकास और सं ार क्रांति : बदलते परिप्रेक्ष्य में' प्रसिद्ध इतिहासकार एरिक हाब्सबाम के हवाले से बताया है कि-"औद्योगीकरण और शहरीकरण ने आम लोगों की संस्कृति को नष्ट करना शुरू कर दिया। ि स शहर में फैक्टरी स्थित थी वहाँ कोई व्यक्ति उस अवस्था में नहीं रह सकता ि स अवस्था में वह अपने गाँव में रहता था। पुरानी संस्कृति को छोड़ने तथा नई संस्कृति को अपनाने की इस संक्रमण कालीन अवधि में श्रमिक वर्ग की अवस्था सर्वाधिक दयनीय थी।"[8]

औद्योगीकरण के फलस्वरूप किसान स्वयं म ादूरों में बदलने लगे। "नई सड़क का निर्माण बड़ी तेज़ी से ाल रहा था। ठेकेदार के आदमी आस-पास के गाँवों में घूम-घूमकर मज़दूर इकट्ठा करते। खेती-पाती के मौसम में खेतिहर लोग अपने ही कामों में व्यस्त थे लेकिन ऐसे लोग ि न्हें पहले दूसरों की खेती पर म ादूरी मिल ाती थी, अब अपेक्षाकृत अधिक और नकद रो ी के लाल ा में ठेकेदार के साथ लग ाते थे। वहाँ सभी के लिए काम सुलभ था-ब ो और औरतें मिट्टी हटाने, पत्थर ोने का काम करते और मर्द लोग पहाड़ की कटाई-सफाई का काम सँभालते।"[9] गाँव का ाँ ा ारमरा उठा, हर व्यक्ति औद्योगिक नगरों की ओर दौड़ लगाने लगे। पापी पेट के लिए रो ी भी अब गाँव में मयस्सर न थी, आर्थिक बेकारी को सहता हुआ एक सर्वहारा वर्ग विकसित हुआ। पहले ि स तरह से कृषक वर्ग महत्वपूर्ण था उसी तरह का राष्ट्रीय महत्व अब श्रमिक वर्ग को भी मिलने लगा। कृषि के क्षेत्र में श्रमिक वर्ग का बड़ा महत्व है। औद्योगिक क्रांति की व ाह से कृषि क्षेत्र के श्रमिक अब म ादूरी को महत्व देने लगे। परिणामस्वरूप मध्यवर्ग की छोटे-छोटे किसानों को श्रमिक की हालत में पाने लगे। यह परिवर्तन ो समय के साथ समा ा में हुआ है उसको

[8] आलो ाना, अप्रैल- ून 2002

[9] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.53

हम 'हलवाहा' कहानी में देख सकते हैं। कहानी की इन पंक्तियों से यह विषय स्पष्ट होती है-"उन्हें यह सो ाकर थोड़ी निराश हुई कि ीवानंद ने पद्म को आखिर रा ी कर ही लिया है। बद्रीप्रधान अपनी उत्सुकता नहीं रोक पाए। टहलते-टहलते नदी की ओर ाले गए। ो कुछ उन्होंने देखा उसे देखकर उन्हें सहसा विश्वास नहीं हुआ क्रोध, घृणा तथा ग्लानि के कारण उनका शरीर काँपने लगा-कुल-घातक ि ाबुआ स्वयं हल ाला रहा था। फाल की टे ़ी-मे ़ी लकीरें उसके नौसिखिएपन की गवाही दे रही थीं।"[10] इस प्रकार औद्योगीकरण के कारण गाँव के छोटे किसान म ादूरों में बदलने लगे।

औद्योगिक विकास का प्रभाव देश की अर्थ व्यवस्था पर पड़ा। समा ा में सामंती अर्थव्यवस्था का स्थान धीरे-धीरे पूं ीवादी अर्थव्यवस्था ने लेना शुरू किया। ि ासके फलस्वरूप पूं ीपति और म ादूर वर्ग विकसित हुए। शहरों के इन कारखानों में म ादूरों का शोषण होने लगा। शोषण के इस प्रारंभिक दौर में कुछ म ादूरों ने इसके खिलाफ विद्रोह किया, लेकिन म ादूरों में एकता की भावना न होने के कारण वह विद्रोह सफल नहीं हो पाया। इस स्थिति का ि ात्रण 'बदबू' शीर्षक कहानी में किया गया है।

"ि ानकी उसे प्रतीक्षा थी उनमें से कोई भी न आया था, केवल हरीराम ने आकर अब तक दो-तीन बीड़ियाँ फूँक ली थीं। हरीराम की ओर से ही दो-तीन बार बात ीत शुरू करने का प्रयत्न किया ाा ुका था, लेकिन उसके अटूट मौन के कारण हर बार वह प्रयत्न विफल सिद्ध हुआ था। इस बार फिर हरीराम ने ही बात छेड़ी।

"घनश्याम की तो बीवी बीमार हो गई, लेकिन मोहन, राधे, हनीफ वगैरह किसी को तो आना ाहिए था।"[11]

---

[10] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.58

[11] उपन्यास का समा ाशास्त्र, डॉ.विश्वंभर दयाल गुप्त-पृ.68

"शायद उनके ब ो बीमार हो गए हों, ुँ ालाकर उसने उत्तर दे दिया।

हरीराम ने फिर बात दुहराई, इस बार स्वर में ाटुकारिता की भरमार थी।

"हम तो तुम्हारे पीछे हैं भाई। ैसा तुम कहोगे वैसा करेंगे। मैं तो ठीक टैम पर आ गया था, देख लो।"

"तुम ही ठीक टैम पर न आओगे तो ाफ साहब को रिपोट कौन देगा?" हरीराम की ओर उपेक्षापूर्ण दृष्टि डालकर घृणा से उसने कहा और अपनी साइकिल उठाकर बाहर ाल दिया।"[12]

'बदबू' म ादूरों को एक होने का संदेश देनेवाली कहानी है।

कारखानों में म ादूरों का शोषण कई प्रकार से मालिक वर्ग करते थे। म ादूरों को 'टी-ब्रेक' के लिए पंद्रह-बीस मिनट का भी नहीं देना ाहते हैं क्योंकि "उन्हें आशंका लगी रहती थी कि न ाने वे लोग ऐसे ही समय कोई नई यो ाना बना लें और एक-एक कर वह भीड़ उनके ैम्बर के इर्द गिर्द ामा हो ायें। फिर वही सिलसिला शुरू होगा, दरवा ो पर ठक्-ठक् के साथ उनमें से कुछ प्रमुख लोग अंदर और फिर अनुमति लेने की दिखावटी औप ारिकता पूरी करेंगे और फिर कोई नई समस्या उनके सामने रख दी ाएगी- ैसे शतरं ा की ाल ालते हुए अपनी गोट धीरे-से आगे या दायें-बायें सरका दी ाती है-खूब सो ा-सम ाकर ताकि आप भी ाल ालें आपको मात ही मिले। बाहर उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हुए ुंड से उठती हुई अ ीबोगरीब आवाज़ें और ाहरीला गुबार ऐसे मौकों पर उनका मन होता था कि ोर से ीखें कि आखिर तुम ाहते क्या हो या कि बहुत हो ुका अब मेरी ान बख्सो। लेकिन यह उनकी गरिमा और पद के अनुरूप न होता।"[13] इस प्रकार म ादूरों को

[12] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.136
[13] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.38

एकत्रित होने के लिए समय न दे कर उन से यादा से यादा काम करवाकर शोषण करने लगते थे। इस विषय को शेखर ोशी 'सीि.याँ' कहानी द्वारा हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

शहरीकरण

औद्योगीकरण के कारण भारत में अनेक परिवर्तन दृष्टिगो ार हुए। लेकिन इसका प्रभाव प्रमुख रूप से सामाि ाक व्यवस्था पर पड़ा। औद्योगीकरण के कारण ानसंख्या शहरों की ओर ब.ने लगी ि ासे शहरीकरण का उदय हुआ। वास्तव में औद्योगीकरण के साथ ही शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। क्योंकि उद्योग क्रांति की व ाह से शहरों में म ादूरी करने के लिए लोगों को शहरों की तरफ आगे ब.ना पड़ा।

वास्तव में शहरीकरण का मुख्य कारण यह है कि गाँवों की खेतीबारी साल भर का काम नहीं है। शिक्षा, दवा, रो ागार आदि की आवश्यक सुविधाएँ भी गाँव में नहीं हैं। परिवार के सदस्य ि ास गति से ब.ते हैं उसके अनुसार ामीन की संपत्ति या उप ा नहीं ब.ती। फलतः प.ने तथा कमाने के ाक्कर में पड़कर गाँव के लोग शहरों की ओर अपने परिवर का रुख कर रहे हैं। क्योंकि शहरों में अनेक सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं ैसे शिक्षा स्वस्थ, यातायात के साधन, उपभोग की वस्तुएँ आदि।

पहाड़ियों के शहरीकरण का कारण कुछ भिन्न है। क्योंकि पहाड़ी प्रांत में गर्मियों में मेला होता है। इस के कारण वहाँ के लोगों को रो ागार मिलता है लेकिन वर्षा काल में रो ागार की तलाश में उन्हें शहरों की ओर ाना पड़ता है। इस स्थिति का ि ात्रण हमें 'बो ा' कहानी से मिलता है। "गर्मियों की समाप्ति के साथ ही सब सैलानियों का मेला उठने लगा ओर वर्षा की ाड़ी शुरू हो गई तो वह रो ागार की तलाश में नी ो उतर आया था। घर से ो पैर

बाहर निकला तो फिर ाल्दी घर की ओर नहीं मुड़ पाया। इस बी ा उसने कई पापड़ बेले थे-होटल की बेथरागिरी से लेकर घरेलू नौकरी तक।"[14] इस प्रकार लोगों के शहरीकरण के कारण कई हैं।

विश्वंभरदयाल गुप्त ने अपने एक कथन में बताया है कि-"औद्योगिक क्रांति के पश ाात गाँवों ने अपना रूप नगरों में प्रकट कर एक नई संस्कृति एवं समुदाय को ान्म दिया छोटे गाँव कस्बों में और कस्बे, शहरों में विकसित हुए तथा बड़े-बड़े नगर अंतर्राष्ट्रीय नगरों के रूप में विकसित होते ाा रहे हैं।"[15]

पहाड़ी या ग्रामीण लोग शहर में केवल नौकरी या रो ागार से ीवन निर्वाह करने के लिए रहते हैं। उनके मन में अपने गाँव या पहाड़ के प्रति लगाव रहता है और साथ ही विस्थापन का दुख। पहाड़ियों के इस लगाव के बारे में डॉ.विक्रम सिंह लिखते हैं कि-"कुमाँऊनी ग्रामीण परिवेश के अधिकांश व्यक्ति आपको शहरों में मिल ायेंगे ि न्हें परिस्थितियोंवश पहाड़ से विस्थापित होना पड़ा ह। उनसे बात ीत करके देखिए आपको मानना पड़ेगा कि विस्थापन से पहाड़ या ग्रामीण परिवेश के प्रति उनका लगाव, दायित्व कम नहीं हुआ है, अपनी अस्मिता और ाड़ों को स्वीकार करने में उन्हें गर्व महसूस होता है, पहाड़ी की याद दिल और दिमाग की गहराइयों में स्पंदित होती रहती है।"[16]

ग्रामीण या पहाड़ियों के इस लगाव को हम 'व्यतीत' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी का मुख्य ारित्र बाबू ी की राम कहानी इसी लगाव या ुड़ाव को रेखांकित करती है। किंतु विडंबना यह है कि बाबू ी ैसे अनेक व्यक्तियों को आर्थिक अभावग्रस्तता तथा पारिवारिक उल ानों के ालते इस परिवेश को एक बार पुनः देख आने का अवसर तक नहीं मिलता। अपनी

---

[14] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.46

[15] उपन्यास का समा ाशास्त्र, डॉ.विश्वंभरदयाल गुप्त-पृ.68

[16] अनुसंधान, अप्रैल-2011

ला ाारी के कारण वह इस तरह से मौन और खोये-खोये रहते हैं। बाबू ाी का यह लगाव हमें शशि की इन बातों से स्पष्ट होता है-"गाँव की, ामीन- ाायदाद की बातें होती-यही उनका प्रिय विषय था। ाीवन के पिछले साठ-बासठ वर्षों तक गाँव में ि ास घर-संसार के प्रति वे तन-मन से समर्पित रहे थे, वही किसी ब ो के टूटे खिलौने की तरह हर समय उनकी कल्पना में बिखरा रहता।"[17]

आई.पी.देसाई ने अपने अध्ययन में पाया कि "व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने के लिए नगर में ााता है, वहाँ से वापिस ग्राम में नहीं आता है। वह अपनी शिक्षा के अनुरूप व्यवस्था नगरों में ही प्राप्त कर सकता है इससे परिवार की आवास की संयुक्ति कम हो ाती है।"[18]

गाँव में प े-लिखे लोग यादातर शहर की ओर ाना पसंद करते हैं1 शहर ाने के बाद वहाँ की सुख-सुविधाएँ उसे वापस गाँव नहीं आने देती। खासकर नई पी ी के लोग इन सुविधाओं के आदि हो ाते हैं। परिणामस्वरूप वे लोग वापस गाँव नहीं आना ाहते। इस स्थिति का ि ात्रण हमें 'विस नि' कहानी से मिलता है। "दोनों ही भाइयों का ब ापन गाँव में बीता था और दोनों को गाँव की मिट्टी से लगाव भी था। लेकिन नयी पी ी के ब ों के लिए ैसे वह परदेस हो। सीमित साधनों के कारण दोनों परिवारों के लिए गाँव में लगातार आवागमन भी संभव न था।"[19] इस प्रकार गाँव की असुविधाओं के कारण लोग शहरों की ओर स्थानांतरित होने लगे।

इस संदर्भ में देवेंद्र कुमार ौबे लिखते हैं कि-"गाँव के लिए यह सब से बड़ी त्रासदी है, एक प्रकार से गाँव ि ास अनमोल हीरे को शहर इसलिए भे ाता

[17] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97
[18] संस्कृति के ाार अध्याय, रामधारीसिंह दिनकर-पृ.26
[19] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.151

है कि वह अपनी (गाँव) स्थिति में कुछ बदलाव ला सकेगा लेकिन शहर की लंबी गुफा उसे निगल देती है।"[20]

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं ो कि शहरी ि ंदगी छोड़कर गाँव के शांत वातावरण में रहना ाहते हैं ो शहरी भाग दौड़ से ऊब गए हैं। इस स्थिति को हम 'टूटन' कहानी में देख सकते हैं। "त्रिलो ान की वर्षों से साध थी कि वे नौकरी से मुक्त होकर अपना शेष ीवन गाँव में बिताएँ लेकिन पत्नी और ब ों को उनका निर्णय हास्यास्पद लगता। वे लोग त्रिलो ान की या ो ाना पर कभी-कभी विनोदपूर्ण ा ार्ा करते और ा ार्ा के अंत में त्रिलो ान को लगता ैसे वह उस समर में अकेले हो।"[21]

शहर में रहते हुए भी कुछ लोग अपने गाँव के प्रति लगाव के कारण वहाँ की समस्याओं को सुधारना ाहते हैं यह स्थिति हमें 'निर्णय' कहानी के 'श्रीधर' पात्र में मिलती है-"उसका एक सपना था कि ि ास गाँव-देहात की मिट्टी ने उसे ान्म दिया है उसे स ाने-सँवारने में कुछ अपना भी योगदान दे। वह उन समस्याओं की ाड़ तक ाना ाहता था, उनसे ू ाना ाहता था।"[22]

शहरीकरण से गाँव या पहाड़ के बू े लोग दुखी हैं। इसीलिए वे लोग युवकों को अपने गाँव का महत्व बताते हुए उन्हें वापस गाँव लाने का प्रयत्न करते हैं। यही प्रयत्न हमें 'टूटन' कहानी में मिलता है। लीलाधर त्रिलो ान से कहते हैं कि-"आदमी परदेस में कितना ही बड़ा बन ाय, कितना भी संपत्ति ोड़ ले, रहेगा परदेस ही। परदेस तो विमाता की गोद है। कितने भरे करे विमाता-विमाता ही रहेगी। अपना घर अपनी भूमि की बात ही और है। यही

---

[20] हंस, अप्रैल-1990
[21] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.91
[22] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.125

असल माँ है। स ा कहना, इतने साल तुम परदेस में रहे हो लेकिन ो शांति तुम्हें यहाँ मिलती है, वह क्या कभी क्षण भर के लिए भी वहाँ मिली?" [23]

अतः स्पष्ट होता है कि शहरी सुविधाओं को देखकर गाँव के लोग आकर्षित होकर शहर की ओर पलायन कर रहे हैं।

औद्योगिक सभ्यता अपने साथ पूं ीवादी व्यक्तिवाद को लेकर आयी ि सके प्रभाव से धीरे-धीरे संयुक्त परिवार की व्यवसथा का विघटन हुआ और मानवी संबंधों के क्रमशः आर्थिक लाभ पर आधारित होते ाने के कारण मनुष्य और मनुष्य के बी ा रागात्मकता का ह्रास हुआ। इस संदर्भ में डॉ.सुवास कुमार लिखते हैं कि-"पूँ ीवादी औद्योगीकरण ने अनेक स्तरों पर व्यक्ति और व्यक्ति तथा व्यक्ति और समा ा के पारस्परिक अलगाव को ब ाया है।"[24] औद्योगिक विकास के ालते परिवार भी टूट गये हैं। परिवार में आय-आधारित विभा ान हो गया और यह भी कि हर कोई अपने आपको विलग रखना ाहता था और इसी के ालते पारस्परिक अलगाव ब ा। 'किं करोमि ानार्दन' कहानी में पारिवारिक विघटन का कारण आय-आधारित विभा ान ही है। क्योंकि इस कहानी का शिवदत्त पैसा कमाता है वह अपने आपको विलग रखना ाहता है। गृहकलह में "शिवदत्त ने अपनी पत्नी के सम्मुख ही माँ-बाप को सुनाकर स्पष्ट शब्दों में कह दिया था, अपने पसीने की कमाई मैं किसे दूँ, कहाँ फेंकूँ, इस पर बहस करने का अधिकार किसी को नहीं। बड़ी बहू उसी दिन स्थिति को अ छी तरह सम ा गई थी। सास-श्वसुर को सुनाकर बात कह देने में उसे अधिक संको ा नहीं होता।"[25] इस प्रकार आय आधारित विभा ान के कारण संयुक्त परिवार में पारस्परिक अलगाव ब ने लगा।

---

[23] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.90

[24] आधुनिक हिंदी कविता, आत्मनिर्वासन और अकेलेपन का संदर्भ, डॉ.सुवास कुमार-पृ.4-5

[25] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.11

उद्योग के कारण घर के लड़के शहर में रहते हैं तो घर की बहुएँ अपने कमाऊ पतियों को देखकर अहंकार से ागड़ने लगती हैं। परिणामस्वरूप परिवार टूट ाता है। इस प्रकार परिवार टूट ाने का बुरा असर घर के वृद्धों पर पड़ता है। इसका ित्रण हमें 'परिक्रमा' कहानी में मिलता है। "रामी! िस दिन मैं मर ाऊँगा, उस दिन तुम पहले बँटवारा करना फिर मेरी अर्थी उठाना। पर ाब तक मैं िंदा हूँ, कभी ऐसी बात इस घर में नहीं उठेगी।" क्रोध और दुख के कारण उनका शरीर काँपने लगा था और आँखें भर आयी थीं।"[26]

परिवार टूटने का दुख घर की विधवाओं पर भी दिखाई देता है। क्योंकि उनको ीवन ीने का कोई सहारा नहीं है। परिणामस्वरूप निराश होने लगते हैं। "बहिन, दिल छोटा नहीं करते। दुख-सुख तो रात-दिन की तरह लगे ही रहते हैं। भगवान करे, भुवन ार पैसे कमाने के लायक हो ाय। मैं तु ो उसके साथ भे ा दूँगी। हरीश भी प ़-लिखकर आदमी बन ाएगा।"[27]

संयुक्तता की ागह वैयक्तिकता ने ले ली और आत्मोन्नति के परिवार का हर व्यक्ति शहर की ओर भागता लेकिन शहर में वह मात्र ीवन-निर्वाह कर सकता है, ीवन स्तर ऊँ ा उठा नहीं सकता। क्योंकि पूं ीवादी औद्योगीकरण केवल शोषण करना ानता है। वह समा ावादी उत्पादन-पद्धति की तरह मनुष्य की आवश्यकताओं से ुड़कर परि ालित नहीं होता।

वस्तुतः "गाँव की अर्थ व्यवस्था ाहाँ परिवार-सापेक्ष थी, वहाँ शहर की अर्थ व्यवस्था व्यक्ति-सापेक्ष हुई। परिवार और गाँव से नौकरीपेशा लोगों के अधिकतर बाहर रहने के कारण संयुक्त परिवार का ाँ ा बिगड़कर ऐकिक

---

[26] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.143
[27] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.143

परिवार में बदलने लगा।"[28] 'विस ित' कहानी का 'तारी' और 'मँ ाले' दोनों नौकरी पेशे के कारण शहर में अपने परिवार के साथ रहने लगे। लेकिन उनकी बड़ी भाभी ो बाल विधवा है, "उन दोनों में से किसी के साथ भी ाने को रा ी नहीं होगी, दोनों ने ही रस्मअदाई के तौर पर उनसे अपने साथ ालने का आग्रह किया था। इस बार भाभी ने अपना स्वतंत्र निर्णय लिया था। उसके आग्रह को सह ा भाव से सुनकर, पुरखों की देहारी पर ही अपनी आखिरी साँस छोड़ने की उन्होंने दुहाई दी तो और अधिक आग्रह करने का साहस तारी और मं ाले में से किसी का न हुआ।"[29] इस प्रकार नौकरी पेशे के कारण गाँव का संयुक्त परिवार शहर के एकल परिवार के रूप में बदलने लगा।

'संवादीन' कहानी में ताई के पारिवारिक विघटन का कारण शहर की नौकरी ही है। "ताई ने अपने ीवन में अ छे दिन भी देखे थे। पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर- ारक, गाय- ोर क्या नहीं था बड़े घर में। देखते ही देखते क्या से क्या हो गया। बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए। बेटियाँ अपने-अपने हाथ पीले कराकर अपनी गृहस्थी में रम गई।"[30] इस प्रकार ताई का संयुक्त परिवार शहर के उद्योग के कारण विघटित होकर ताई स्वयं अकेली गाँव में रहती है। अतः भारत के औद्योगीकरण में परिवार कुछ टूटता हुआ दिखाई देता है-नैतिकता, परंपरा, समा ा, उद्योग सभी को वह विकृत बना रहा है।

---

[28] आधुनिक हिंदी कविताःआत्मनिर्वासन और अकेलेपन का संदर्भ, डॉ.सुवास कुमार-पृ.16

[29] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.149

[30] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.37

बेरो ागारी

औद्योगीकरण से उत्पन्न एक और समस्या शिक्षित बेरो ागारी। आज़ादी से पहले अंग्रेज़ कुशासन के कारण भारत में कुटीर उद्योगों का सर्वनाश हुआ। आज़ादी के बाद भी इसी कारणवश हर ागह बेरो ागारी की विकट समस्या सामने आयी है। औद्योगीकरण केवल कुछ ही लोगों को रो ागार देने में सफल हुआ। इस का मुख्य कारण ानसंख्या में तीव्र गति से ब ोत्तरी, सरकारी यो ानाएँ, नेताओं की असमर्थता आदि। इन कारणों की व ाह से बीसवीं सदी में यह समस्या अधिक होने लगी। आ ाकल रो ागार पाना है तो रिश्वत देना पड़ता है ि ानके पास रुपये होते हैं, वे रो ागार पा लेते हैं, लेकिन ि ानके घर की स्थिति दयनीय हो वो इंसान क्या करे, कुछ लोग दयनीय परिस्थिति के कारण नौकरी छोड़ते हैं, तो कुछ लोग अपने आदर्शों के कारण रिश्वत देकर या सिफारिशों के बल पर नौकरी प्राप्त नहीं करना ाहते हैं, ऐसा ही रूप हमें 'कविप्रिया' कहानी में 'शेखर ोशी' ी बताने की कोशिश करते हैं, ि ासमें 'गिरीश' ो आदर्शवादी है, वह अपने उ ा आदर्शों को किसी भी परिस्थिति के सामने घुटने टेक कर तोड़ देने को विवश नहीं होता, बल्कि वह अपने आदर्श को ीवित रखने के लिए किसी भी परिस्थिति का सामना करने को तैयार रहता है। वह अपने आदर्श के लिए माँ बाप से विदा होकर ाल दिया। माँ के पूछने पर वह कहता है "मैं सिफारिश के बल पर किसी और के पेट पर लात नहीं मार सकता।"

"हाँ, माँ। मैं अनोखा ही हूँ। सिफारिश क्यों ली ाती है, बेकारी क्यों होती है, यह ानता हूँ इसी कारण अनोखा हूँ न। लोग सिफारिश लेकर नौकरी पा लेते हैं, तो मैं भी ऐसा ही करूँ?"[31]

[31] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.81

वह नौकरी का परित्याग करता है और अपने आदर्श की रक्षा करते हुए कवि बनता है।

इस प्रकार शेखर ोशी ने 1960 के समय की सामा ाक समस्या बेरो ागारी को एक दिशा प्रदान की।

बेरो ागारी की समस्या हमें 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी में भी देखने को मिलती हैं। लेकिन यहाँ की बेरो ागारी डिग्रीधारी बेरो ागारी है। बेरो ागारी से केवल 'मैं' नामक पात्र पीड़ित नहीं है। पूरा परिवार इस समस्या से पीड़ित है। "सुबह ााय पीने के बाद ही पिता ी ैसे याद दिला देते हैं, लाइब्रेरी से लौटते वक्त ारा मोती बाबू से मिल लेना, या और कोई ऐसी ही बात। लेकिन हर बात के साथ लाइब्रेरी ाने का संबंध ुड़ा रहता है। ानता हूँ कि मोती बाबू से मिलने की बात या ऐसी ही अन्य बातों का कोई महत्व नहीं। वास्तविक मंतव्य पिता ी की बातों का मेरा नियमित लाइब्रेरी ाने के संबंध में है। घर में अखबार नहीं आता, पड़ोस में बीनू मामा के घर 'एक्सप्रेस' आता है। समा ार प. लेने भर के लिए वह पर्याप्त है, लेकिन पिता ी को इतने भर से संतोष नहीं। पब्लिक लाइब्रेरी में 'टाइम्स' आता होगा, ारा ाकर देख लिया करो। उसमें 'वाण्टेड' के बहुत सारे कॉलम रहते हैं। न ाने कब उस अखबार को देखकर उन्होंने यह आदेश दिया था।"[32] इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि बेरो ागारी केवल व्यक्ति की समस्या न रह कर पूरे परिवार की समस्या है।

सन् 1985 के बाद औद्योगिक क्षेत्र में एक नया परिवर्तन ान्म लिया है। औद्योगीकरण की इस नयी व्यवस्था में पेशे का आधार ातिगत न रहकर व्यक्तिगत हो गया है। लेकिन पूर्व काल में अमुख ाति के लोग अमुख काम करते हैं ैसे नियम थे। अब समा ा का नया स्तरीकरण भी श्रम ही करेगा। इस

[32] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.24

विषय का स्पष्टीकरण हमें 'गलता लोहा' कहानी में मिलता है। "मोहन का यह हस्तक्षेप इतनी फुर्ती और आकस्मिक ंग से हुआ था कि धनराम को ना- ुक का मौका ही नहीं मिला। वह अवाक मोहन की ओर देखता रहा। उसे मोहन की कारीगरी पर उतना आश ार्य नहीं हुआ ि ातना पुरोहित खानदान के एक युवक का इस तरह के काम में, उसकी भट्टी पर बैठकर, हाथ डालने पर हुआ था। वह शंकित दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा।"[33] इस से यह स्पष्ट हो रहा है कि सन् 1985 के समा ा में ाति को प्रधानता न देकर श्रम को महत्व दिया ाता था।

यही बात हमें 'हलवाहा' कहानी में भी देखने को मिलती है। प्रा ाीन काल में उ ा ाति के लोग हल ालाना पाप मानते थे। इसका स्पष्टीकरण हमें कहानी की इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है-"भैय्या, कोई दूसरी ाात का आदमी होता तो खुद ही ोत-बो लेता, लेकिन हम लोगों के लिए तो इसका भी निषेध है, बिरादर लोग ाात-बाहर कर देंगे।"[34] लेकिन कहानी का ीवानंद ो एक उ ा ाात का आदमी है, वह ाति को विशेष महत्व न देकर व्यक्तिगत श्रम को महत्व देता है। इसीलिए हलवाहा न मिलने पर स्वयं हल ाला लेता है। इस विषय को बद्री प्रधान अपने शब्दों में कहते हैं-"कुल-घातक ि ाबुआ स्वयं हल ाला रहा था। फाल की टे ़ी-मे ़ी लकीरें उसके नौसिखिएपन की गवाही दे रही थीं।"[35] अतः स्पष्ट है कि सन् 1985 से औद्योगिक समा ा ाति को प्रमुखता न देकर श्रम को महत्व दिया है। इस सामा ाक परिवर्तन को शेखर ोशी ने अपनी कहानियाँ 'गलता लोहा' और 'हलवाहा' के द्वारा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

---

[33] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.80
[34] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.55
[35] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.58

सामाि ाक परिवर्तन के इस संदर्भ में अरुण प्रकाश लिखते हैं कि- "सभ्यता की दौड़ में तकनीक, पुराने पड़ गए विश्वासों और अवधारणाओं को पछाड़ता ालता है, वही ब ाता है ो समय के साथ होड़ ले सके। समा ा की बुनावट, परिवर्तन की प्रक्रिया और उसके आंतरिक नियमों के संधान में उनकी विशेष रु ि रही है। लेकिन उनका ोर सह ा परिवर्तन पर है।"[36]

स्वतंत्रता पूर्व से ही हमारे समा ा में ाति भेद विद्यमान था। हज़ारों वर्षों के काल- ाक्र से गु ारती हुई यह सामाि ाक व्यवस्था भारत में सन् 1960 के उस समा ा में भी रही है। उ ा ाति के लोग ैसे ब्राह्मण, निम्न ाति के शिल्पकारों को अछूत मानते थे और उनके स्पर्श को दोष। इस विषय को शेखर ोशी 'समर्पण' कहानी के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। "ि ानके स्पर्श-मात्र के दोष से मुक्त होने के लिए मालिक लोगों को 'शुद्धि-शुद्धि' कहकर ाल के छींटें डालने पड़ते थे, उन्हीं शिल्पकारों को इस बात का गर्व था कि ब्राह्मणों में सर्वश्रेष्ठ गोत्रवाले कुल का दास होने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त है।"[37] निम्न ाति के लोगों से उ ा ाति के लोग सभी काम करवाते थे लेकिन उनको अलग रखते थे, यहाँ तक कि ाय की दुकान में भी उनका गिलास अलग रखते थे। " ाय शेष हो ाने पर ब ुवा दोनों गिलास नल पर धो लाया और दुकानदार के आदेशानुसार उन्हें एक किनारे टिका दिया। वास्तव में कोने पर रखे हुए ये ार-छः गिलास उसकी ाति के लोगों के ही लिए थे, ो इसी प्रकार ग्राहकों द्वारा धोकर रख दिए ाते थे।"[38] इस से यह स्पष्ट होता है कि आज़ादी के बाद कई क्षेत्रों में प्रगति हुई, कई क्रांतियाँ हुई ैसे औद्योगीकरण, शहरीकरण

---

[36] आ ाकल, मा ि 1995-पृ.47

[37] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.39

[38] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.38

तकनीकीकरण, भूमंडलीकरण आदि मगर ाति भेद में कोई परिवर्तन नहीं आया।

हमारा समा ा अर्थ आधारित समा ा है। अर्थ के कारण हमारा समा ा तीन वर्गों में विभक्त हुआ है। परिणामस्वरूप इन वर्गों में लगातार संघर्ष होता रहता है। समा ा का उ ा वर्ग सर्वहारा वर्ग की दृष्टि में अत्या ाार-शोषण करता है। वह स्वयं शोषित वर्ग है। इसलिए पीड़ा उसे ही सहन करनी पड़ती है। 'अर्थ' की दीवार दोनों के बी ा खड़ी रहती है। ाो दोनों को एक दूसरे से विलग करती है। 'दा यु' में मदन और ागदीशबाबू का विरोध इसी प्रकार का है। यह सामा ाक और आर्थिक अंतर शेखर ाोशी की कहानियों में दर्शनीय है। एक रेस्त्रां में काम करनेवाला निम्नवर्गीय 'मदन' सभी के सामने ' ागदीशबाबू' को 'दा यु' (बड़ा भाई) बुलना अ छा नहीं लगा। अपना वर्ग बोध ाग ुकने के कारण वह मदन पर भड़क उठते हैं-"दा यु, ााय लाऊँ?"

" ााय नहीं, लेकिन दा यु-दा यु क्या ा िल्लाते रहते हो दिन-रात। किसी की प्रेस्टि ा का ख्याल भी नहीं है तुम्हें?"[39] इस संदर्भ में शेखर ाोशी स्वयं लिखते हैं कि-" ाीवन की परिस्थितियों ने छोटी उम्र में ही मु ो विभिन्न भौगोलिक और सामा ाक परिवेशों में ाीने के लिए विवश किया है। छोटी उम्र में ही मातृविहीन हो ाने के बाद पर्वतीय अं ाल के प्राकृतिक सौंदर्य से वनस्पतिविहीन रा ास्थान में विस्थापित कर दिये ाने का दुःखद अनुभव और अपने परि ित परिवेश से कट ाने की कष्टप्रद अनुभूतियों ने मेरी संवेदना की धार तेज़ कर दी। सम ा विकसित होने पर अपने नि ाी अनुभवों का सामा ाक परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया आंरभ होने के कारण ाब मैंने 1953-54 में 'दा यु' कहानी लिखी तो उसका नायक मेरा ही प्रतिरूप था ाो अपने परिवेश

[39] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ाोशी-पृ.38

से विस्थापित होकर अपरि ितों की भीड़ में किसी आत्मीय को खो ा रहा था, लेकिन सामा िक यथार्थ ने उसे अहसास करा दिया था कि आत्मीय संबंधों के मूल भी वर्गस्वार्थ होते हैं ो मानवीय संबंधों में दरार डाल देते हैं।"[40]

सन् 1950-60 के समा ा की एक और समस्या बाल-विवाह थी। छोटी-छोटी लड़कियों का विवाह वृद्धों से करवाते थे। ि ासका कारण लड़कियों की आर्थिक विषमता है। उस समय की इस समस्या को शेखर ोशी ने 'शुभो दीदी' कहानी के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस कहानी में 'शुभो' का विवाह बू े विशू बाबू से होता है ि ासके बाल सफेद हैं। छोटी उम्र होने के कारण 'शुभा' ब ो को ान्म देने के बाद मर ाती है। "सहसा शुभो दी ने धीमी आवाज़ में माँ को पुकारा। माँ दौड़कर उसके पास गयी। शुभो दी ने आँखें खोलकर धीमे-से-स्वर में न ाने क्या कहा, हम सम ा नहीं पाए। पर माँ ने नव ात शिशु को अपनी बाँहों में लेकर शुभो दी के आगे कर दिया। बड़ी व्यग्रता से शुभो दी ने शिशु के सिर पर हाथ फेरा। गहरे बालों को देखकर ैसे उसे अपार संतोष हुआ, उस क्षण उसकी आँखों में अनोखी ामक आ गई थी। सभी ने सुना, शुभो दी कह रही थी "संतू, सफेद नहीं, काले बाल। शुभो दी ने ये ही शब्द अंतिम बार कहे थे।

माँ उस दिन फूट-फूटकर रोई थी। उसकी लक्ष्मी दूसरी बार उससे विदा हो गई थी।"[41] अशिक्षा के कारण होनेवाली बाल्य-विवाह की समस्या को लेखक ने इस प्रकार स्पष्ट किया है।

यही समस्या हमें 'गोपुली बुबु' कहानी में भी देखने को मिलती है। उस समय छोटी-छोटी लड़कियों का विवाह बड़ों के साथ करवाते थे। ाब उन्हें विवाह का मतलब तक नहीं पता, परिणामस्वरूप पति के देहांत के बाद

---

[40] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.10

[41] ब ा का सपना, शेखर ोशी-पृ.77

आ ीवन बाल-विधवा के रूप में ीवन निर्वाह करते थे। बाल विवाह का ित्रण हमें 'गोपुली बुबु' कहानी में 'मैं' पात्र द्वारा प्रस्तुत है-" ागुली पहनने की उमर में ब्याह हो गया था। ाकमक पत्थरों से गुट्टी खेलते, पात-पतेल लाते, ोरों को ाराते, पू ाा-सा ा करते एक दिन साथियों ने कहा-मँगसिर में तेरा ब्याह होगा। रंग-बिरंगा घाघरा-ओ ़नी पहनने, हाथ-पाँवों में पहुँ ाी- ााँ ार खनकाने की मन में बड़ी हवस रही। दुल्हन बनने का मतलब क्या होता है, इसका तो ज्ञान था ही नहीं।

"एक दिन दमामा-रणसिंग ब ाते बारात आ पहुँ ाी। मैं दुल्हन बनी। पू ाा-पाठ हुआ। माँ-बाबा ने कन्यादान किया। पंडित ाी मंत्र प ़ रहे थे, गाँव पड़ोस की दादी- ाियाँ गीत गा रही थीं, पर नंदी के मारे मेरी आँखें बंद हुई ाती थीं। बौ यू ने मुख में पानी के छींटें दिए-इतनी ही याद है।"[42]

अंतिम दशक के ग्रामीण कथा-साहित्य में साहित्यकारों ने गाँव में ाकित्सा सुविधा के अभाव की समस्या को दर्शाया है। गाँव में अस्पताल न रहने के कारण गाँव के लोग परेशान हैं। यही समस्या हमें 'गोपुल बुबु' कहानी में दर्शनीय है। "अपने सब सुख-दुःख मु ासे कह देती थी, उस साल कहने लगी-अबकी नहीं ब ूंगी ननदी! यह मु ो ले ानेवाला ही आया है पेट में-स ाी रे! उसकी ही वाणी स ा हुई। इन डाँडो-टीलों वाले बं ार देहात में क्या हो सकता था, न दवा न डाक्टर! ओ माँ-ओ बबा करती ाती रही बे ाारी। मेरी कुंतुलि भी ऐसे ही छटपटाती गई। वैद्य ा की दवाई से क्या होता? काल आ गया होगा, ाती रही। देसावर में तो, कहते हैं, बड़े-बड़े अस्पताल होते हैं। सुना, मरण-बाट लगे बीमार को तरह-तरह की दवाईयों से डॉक्टर मौत के मुँह से निकाल लाते हैं-यहाँ यूँ ही हुआ। अब सुना है समेसर में एक अस्पताल

[42] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.59

खुल गया है डॉक्टर आ ाए, दवाइयाँ पहुँ ा ाएँ तब सम ो कि अस्पताल खुला है। हमारी तो कट गई, अब बाल-ब ो हैं वे छे दिन देख लेते यही हमारा संतोष था। अतः स्पष्ट है कि गाँव के लोग ि ाकित्सा के अभाव में परेशान थे। लेकिन वे लोग अपनी नई पी ़ी को इस परेशानी से दूर रखना ाहते हैं। इस प्रकार शेखर ोशी बीसवीं शती के आरंभिक दशकों की इस सामा ि ाक समस्या को सफलता पूर्वक प्रस्तुत करते हैं।

तकनीकीकरण

औद्योगिक क्रांति ने मानव को अनेक रूपों में प्रभावित किया। सुख-सुविधा की प्राप्ति के लिए मनुष्य ने यंत्र का आविष्कार किया था। ो समय के साथ तकनीकी में परिवर्तित हो गया। तकनीकी विकास में गुणात्मक वृद्धि ने मनुष्य को भी यांत्रिक बना दिया। 'औद्योगीकरण' ने मनुष्य के भीतर से मनुष्यता के भाव को लुप्त कर दिया है। आ ा का मानव अधिकाधिक स्वार्थसंकुल होता ा रहा है। सद्भाव, सदाशयता और सहयोग ैसे भाव केवल कोश के शब्द बन गए हैं या भाषणों के निरर्थक शब्द। व्यक्ति अपने को केंद्र में रखकर सभी ीज़ों को देखने लगा। तकनीकी के इस दौर में वह अपनी अलग पह ान रखना ाहता है। तकनीकीकरण ने मनुष्य को यांत्रिक बना दिया। औद्योगिक क्रांति और तकनीकी के साथ आये इस परिवर्तन को शेखर ोशी ने अपनी कहानी 'उस्ताद' के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस कहानी में उस्ताद अपनी पूरी विद्या शिष्य को नहीं बताना ाहते। मोटर इं ान का काम ाननेवाले उस्ताद 'वाल्व टाइमिंग' को नियंत्रित करने का बारीक हुनर शिष्य को बताना नहीं ाहते। कहानी में इस विषय का स्पष्टीकरण हमें लेखक के इन शब्दों से मिलता है-"उन्होंने क्रैंक शाफ्ट, पिस्टन, वाल और कैम शाफ्ट इत्यादि ब्लाक में फिट किये, परंतु मैं नहीं सम ा पाता कि वालटैमिंग कब बाँधा

ाएगा। सहसा उस्ताद ने मेरी ओर देखा और कृत्रिम स्नेहपूर्ण स्वर में बोले, बाबू। ाय-वाय पी ुके कि नहीं? ाओ पी आओ, एक आध गिलास हमारे लिए भी भि ावा देना।"[43]

गंगा प्रसाद विमल लिखते हैं कि-"तकनीक वास्तव में आधुनिकता की संस्कृति है। तकनीकी विकास का महत्वपूर्ण पक्ष सामा ाि क परिवर्तन में एक समृद्धिपरक और सार्थक भूमिका अदा करता है। वह एक प्रकार से परिवर्तन का ए ोंट है। समग्र संसार में तकनीकी विकास को इसलिए स्वीकारा गया है कि यह ान सामान्य से ीवन स्तर को ऊँ ा उठाने के लिए प्रयत्नशील यंत्रानुशासन है।"[44]

तेज़ी से पनप रही यांत्रिकता की विसंगत मूल्य स्थिति आधुनिकता की देन है ि ससे आम आदमी अत्यधिक प्रभावित हुआ है। ाहे वह किसी कारखाने का कामगार हो या किसी फर्म का म ादूर। यांत्रिकता की इस विसंगत मूल्य स्थिति के प्रभाववश पनपी अमानवीय व्यवस्था का सर्वाधिक शिकार यही आम आदमी हुआ है इनका सीधा साक्षात्कार उद्योगपतियों, मालिकों से नहीं होता इनके बी ा में होती है व्यवस्था। इसलिए निरंतर शोषित होते इन कामगारों का विरोध अमानवीय व्यवस्था और उसके व्यवस्थापकों के प्रति ही अधिक होता है। म ादूर और आम आदमी के मानवीय संघर्ष की सं ोतना शुरुआत शेखर ोशी की 'बदबू' कहानी से होती है। यांत्रिकता की भयावह स्थिति से उप ी अमानवीय व्यवस्था ने किस तरह मनुष्य को यंत्रवत् बना दिया है। इस संवेदना को 'बदबू' कहीन में देखा ा सकता है।

इस कहानी में कारखाने का कामगार दिन रात अमानवीय व्यवस्था और मशीनों की छत्र-छाया में कार्यरत कामगारों की ि ा ीविषा की विवशता के

---

[43] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.22

[44] आधुनिक साहित्य के संदर्भ में, गंगा प्रसाद विमल-पृ.23

ालते 'बदबू' का अभ्यस्त हो ाता है। आ ीविका के लिए संघर्षरत आम आदमी को इस व्यवस्था ने अपने अनुकूल ालने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। रो ी-रोटी का प्रश्न ही व्यक्ति को अमानवीय व्यवस्था की बदबू से सम ौता करने को विवश करता है। यंत्र सभ्यता की भयावह स्थिति ने आम आदमी की संवेदना को भी मृत प्राय कर दिया है। ि ा ीविषा के ाबरदस्त दबाव के ालते उसके पास अमानवीय व्यवस्था से सम ौता करने के अतिरिक्त कोई साधन नहीं है। कहानी में कामगारों की इस विवशता के ित्र को देखा ा सकता है- "नीली छतरी वाले का शुक्र करो कि यहाँ काम मिल गया। अ छे भले प़े-लिखे लोग धक्के खाते फिरते हैं।"[45] यही विवशता आम आदमी को स्वयं के शोषण, घुटन भरी नीरस ि ंदगी से सम ौता करने के लिए बाध्य करती है।

अतः औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकीकरण एक दूसरे से संबंधित है क्योंकि उद्योग क्रांति के कारण औद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई है ि ासमें यंत्रीकीकरण का महत्वपूर्ण स्थान है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया के साथ स्वभावतः शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है। इन तीनों के समग्र रूप को आधुनिकीकरण कहाँ ाता है।

<u>भूमंडलीकरण</u>

भूमंडलीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है ि ासका क्षेत्र समस्त भूमंडल है। अर्थात् इस प्रक्रिया के तहत स्वागत प्रतिबंध या सीमाएँ नहीं होगी। इसका यह भी अर्थ हुआ कि पूर्व में विभिन्न स्वतंत्र राष्ट्र के द्वारा अपनी प्रभुसत्ता के अधीन ो भौगोलिक सीमाएँ निर्धारित की गई थी, उन्हें भूमंडलीकरण ुनौती देता है। इस प्रकार भूमंडलीकरण एक ऐसी भौगोलिक प्रक्रिया है ो राष्ट्र-रा य की सीमाओं का अतिक्रमण करती है।

---

[45] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.46

भारत के संदर्भ में भूमंडलीकरण की शुरुआत सन् 1991 से मानी ा सकती है। यहाँ तक आते-आते भारत सरकार को लगने लगा था कि आर्थिक मामलों में हम कम ोर है और हमारे सामने अब कोई विकल्प नहीं है सिवाय आर्थिक उदारीकरण के, भूमंडलीकरण के, ूँकि भारत अब सोने की ि ाड़िया नहीं रह गया था, उसके सारे पंख 20 वीं सदी के पाँ ावें दशक तक नी ो ा ुके थे। अब उपनिवेशवाद तो भारत से निकल गया लेकिन पाश ात्य राष्ट्रों की उपनिवेशवादी मानसिकता ास की तस बनी रह गयी। अब उपनिवेशवाद भूमंडलीकरण के नये रूप में प्रकट हुआ। कहना न होगा कि यह नवउपनिवेशवादी दौर है।

भूमंडलीकरण के संदर्भ में गिरीश मिश्र लिखते हैं कि-"भूमंडलीकरण की डफली ब ाने वालों का दावा है कि उसके साथ ही संसार ने एक नए युग में प्रवेश किया है ाहाँ एक विश्व बा ार होगा ि ासका उदय स्थानीय क्षेत्रीय और राष्ट्रीय बा ारों के विलय के परिणामस्वरूप होगा।" आगे वे कहते हैं कि-"रा य की सार्वभौमिकता को बा ार की शक्तियाँ निगल ाएंगी। कहा ा रहा है कि लोग अधिक मानवीय, स्व-अनुशासित तथा समा ा स्व-विनियमित हो ाएगा, समा ा बहु ान हिताय-बहु ान सुखाय नहीं बल्कि सर्व ान हिताय-सर्व ान सुखाय का लक्ष्य प्राप्त कर लेगा।"[46]

भूमंडलीकरण को एक तरह 'पूं ीवाद का सर्वव्यापीकरण' कहा ा सकता है। पूं ीवादी एकाधिकार में शोषण साफ दिखाई पड़ता था। पूं ीपति के एकाधिकार की पोल खुलती थी और शोषित वर्ग को पता ाल ही ाता था कि उन्हें अभाव में रखकर मुनाफा खूब कमाया ा रहा है। लेकिन भूमंडलीकरण में शोषण रंग, रूप आकारहीन होता गया है ि ासका शोषण

[46] हंस, नवंबर 2001

होता है वे ही शोषक का पोषण करते हैं। उसके पक्ष में लड़ते हैं। इस स्थिति का ित्रण हमें 'बदबू' कहानी में मिलता है। कहानी का 'वह' नामक पात्र कारखाने के मालिकों के शोषण के खिलाफ संघर्ष करते हुए अपने घर में एक मीटिंग रखता है। उस मीटिंग में 'हरीराम' के अलावा कोई नहीं आता। हरीराम आफीसर लोगों को इस मीटिंग के बारे में सू ाना देने के लिए वहाँ आता है। कहानी की निम्न पंक्तियों से यह बात स्पष्ट होती है-

"घनश्याम की तो बीवी बीमार हो गई, लेकिन मोहन, राधे, हनीफ वगैरह किसी को तो आना ाहिए था।"

"शायद उनके ब ो बीमार हो गए हों, ुं ालाकर उसने उत्तर दे दिया।

हरीराम ने फिर बात दुहराई, इस बार स्वर में ाटुता की भरमार थी-

हम तो तुम्हारे पीछे हैं भाई। ैसे तुम कहोगे वैसा करेंगे। मैं तो ठीक टैम पर आ गया था, देख लो।

तुम ही ठीक टैम पर न आओगे तो ीफ साहब को रिपोर्ट कौन देगा।

हरीराम की ओर उपेक्षापूर्ण दृष्टि डालकर घृणा से उसने कहा और अपनी साइकिल उठाकर बाहर ाल दिया।"[47]

इस से स्पष्ट होता है कि शोषित वर्ग ही स्वयं शोषक वर्ग का पोषण करते हैं और उसके पक्ष में लड़ते हैं। इस स्थिति में तब तक परिवर्तन नहीं आता ाब तक म ादूरों का संगठन न होता।

इस संदर्भ में गिरीश मिश्र कहते हैं कि-"आधुनिकता या औद्योगिक पूं ीवाद के काल में श्रम की रा ानीतिक शक्ति का रहस्य था-उनका कारखानों में एक ुट होना तथा शक्तिशाली ट्रेड यूनियन और रा ानीति से ुड़े ाँ ों के ारिए एकसूत्रबद्ध किया ाना आ ा ये ं ो भूमंडलीकरण ने नष्ट कर दिए हैं

[47] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.137

या उन्हें कम ोर और प्रभावहीन बना दिया गया है। यही कारण है कि संगठित म ादूरों की ागह हम ानसमूह को पाते हैं ो लगते हैं, निराकार सर्वहारा का समूह है ो सामा िक धरातल पर ींटी की तरह सहयोग एवं निरंतर सहकारिता के आधार पर संपदा का उत्पादन करता है।"[48]

भूमंडलीकरण में पूं ीपतियों का शोषण रूप बदला है। पहले अधिकारपूर्ण श्रमिकों से काम करवाते थे। लेकिन अब वे लोग श्रम के महत्व को ान गए हैं तो अब ातुरता से काम करवाने लगे। शोषित वर्ग यह ानते हुए भी पूँ ीपतियों का साथ देने लगे। यह स्थिति हमें 'बो ा' कहानी से स्पष्ट होती है। इस कहानी का 'वह' नामक पात्र ो एक श्रमिक है। वह भीमसिंह और रामदत्त ी ैसे पूं ीपतियों के द्वारा शोषित हैं। "शाम ले वह कमर सीधी कर उठने की तैयारी करता तो भीमसिंह ातुर शिकारी की तरह ाल फेंकते- "ले यार! एक बीड़ी का दम लगा ले फिर ये दस-बारह पौधे रह गए हैं इन्हें भी निबटा देना इसी हाथ। उसे लगता, भीमसिंह उसकी रखवाली करने के प्रयास में खुद ही थक गए हैं। उसे उनकी ालाकी पर गुस्सा आता और साथ ही बु ुर्गी पर तरस भी और वह उदारपूर्वक कह देता, "कक्का, तुम ालो। मैं निपटकार आ ाऊँगा।"[49] अतः स्पष्ट है कि शोषित वर्ग स्वयं ही शोषकों का पालन करते हैं।

यही ालाकीपूर्ण शोषण कहानी का रामदत्त ी भी करता है- "रामदत्त ी के स्वर में कैसी या ना और दयनीयता का भाव होता। प र्ी लेकर लौटने पर वे मन की गहराइयों से उसे आशीषते, " ीते रहो बेटा, ारा

[48] भूमंडलीकरण और साम्यवाद की वापसी, गिरीश मिश्र, हंस, नवंबर-2001
[49] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.45

ये पल्ला भी उकाड़ दो, हाड़-तोड़ हवा है। लगता है ौबटिया में फिर बर्फ पड़ गई है।"[50]

भूमंडलीकरण के पहले आर्थिक समृद्धि का लाभ कमोबेश सभी वर्गों और समुदायों तथा देशों को मिलता था। आर्थिक समृद्धि उस समुद्री वार की तरह थी ि ासे छोटे-बड़े सभी ाहा ा ऊपर उठते थे। मगर अब वह स्थिति नहीं है। भूमंडलीकरण के आर्थिक लाभ मुख्य रूप से थोड़े ही देशों और लोगों को ही मिल पाते हैं। दुनिया के धना ्य लोग ाड़ विहीन हैं। अपनी पूं ाी की तरह ाहां ाहते हैं ाले ाते हैं। उनका किसी देश या स्थान विशेष से कोई लगाव नहीं है। इस तरह हमारा भूमंडलीकरण एक पक्षीय है ि ासमें 'विश्व पूं ाी' ही के हित पूरे रहे हैं। ाहिर है, देश की ानता के नहीं।

भूमंडलीकरण की व ाह से भारतीय संस्कृति तथा कलाओं में कई परिवर्तन आ ुके हैं। भारतीय समा ा गरीबी और अशिक्षा के कारण पश्ि ाम के प्रतिस्पर्धात्मक समा ा के मुकाबले खड़ा नहीं हो पा रहा है। आ ा अमेरिका अपनी रा ानीति और प्रगति के कारण सारी दुनिया को नियंत्रित कर रहा है। इस संदर्भ में भारत में पश्ि ाम की सारी कंपनियाँ आकर भारतीय कंपनियों को प्रतिस्पर्धात्मक ंग से हराने लगी हैं क्योंकि भारतीय कंपनियों में उ ा तकनीक और मानव संसाधन की कमी है। नये व्यापार और वाणि यों ने भारत के युवा को अपनी ओर आकर्षित करने लगे हैं।

भूमंडलीकरण के कारण भारत में तकनीकी विकास को प्रोत्साहन मिला है। लेकिन लघु-उद्योग लुप्तहोने की कगार पर है। मुक्त बा ाार व्यवस्था में विकसित देश अधिक मुनाफा कमाने लगे हैं। उनको भारत बहुत बड़ा बाज़ार

[50] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.45

महसूस होने लगा है। इसलिए वे भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने लगे हैं। लेकिन हमारा भारतीय समा ा पश्ि ामी संस्कृति की ओर आकर्षित होने लगा।

भूमंडलीकरण द्वारा भारतीय समा ा में संर ानात्मक बदलाव आ ुका है। पश्ि ाम की संस्कृति के आक्रमणकारी प्रभाव से भारतीय संस्कृति और सभ्यता बदल रही है। कम्प्यूटर, नये-व्यापार, वाणि य शास्त्र, सं ाार माध्यम और सांस्कृतिक रा ानीति के कारण भारतीय संस्कृति अति शीघ्र गति से अमेरिका की ओर ाल रही है। भारतीय विवाह संस्कृति भी अब पाश ात्य संस्कृति से प्रभावित हो रही है। संस्कृति का यह बदलाव हमें 'विडुवा' कहानी में मिलता है। "गाँव देहात के बरातियों की अपनी अनोखी शान होती है। बात-बात पर बिगड़ना, हर ीज़ में नुख्स निकालना, वक्त-बेवक्त किसी अनोखी ीज़ की फरमाइश कर देना, यह ैसे हर बाराती का विशेष अधिकार होता है। वे लोग ऐसी बारातों के आदी थे, ाहाँ बारात किसी बगी ो में टिका दी ाती और ारों ओर पेड़ों के नी ो बँसखटें पड़ी रहती। शर्बत- ाबैना, हुक्का-पानी, पान-सुपारी के दौर ालते ना ा-गाना होता। पर यह नाए ंग की बारात थी। एक बड़ी कोठी के स ो-स ाए कमरों में बारातियों को दो-दो, ार- ार की टोली में अलग-अलग टिकाया गया था।"[51] इस प्रकार भारतीय विवाह संस्कृति भी पाश ात्य सभ्यता से प्रभावित होने लगी।

पश्ि ाम के ीवन-क्रम, रहन-सहन, सो ा से भारतीय समा ा एक बार फिर ग्रस्त हो रहा है। भारतीय समा ा अब वेश-भूषा में भी पश्ि ाम का अनुकरण करने लगा है। वेश-भूषा में बदलाव का यह ित्रण हमें 'रंगरूट' कहानी में मिलता है। "नींबूवालों के छुटका प.ने के लिए दूर मारवाड़ में अपनी ननिहाल ाता है। वहाँ की वेश-भूषा से आकृष्ट होकर-"हमेशा का

[51] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.32

कमी ा-पै ाामा-फतूही पहननेवाला छुटका एक दिन पूरे गाँव में ठसके के साथ लंबी, मौलवियों की-सी शेरवानी और नगरा ूता पहनकर डोलता फिरा।"[52]

काल के इस प्रवाह में, भारत की संस्कृति भी बह रही है और भारत के संवेदनशील बुद्धि ाीवी इसका विरोध कर रहे हैं-साहित्य, संस्कृति, कला व नाट्य, सिनेमा के क्षेत्रों में एक बार फिर अपनेपन को ब ाये रखने का प्रयास ाल रहा है। संस्कृति में बदलाव का विरोध बुद्धि ाीवियों के द्वारा किया ा रहा है। इस प्रकार का विरोध हमें 'विडुवा' कहानी के ठाकुर पात्र द्वारा लेखक हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं-"रुपये-पैसे की बात नहीं भगवान। मु ो यह शहरी ाों ाले पसंद नहीं हैं। ाार भले आदमी बाराती हो ाएँ, अ छा बा ा-गा ा हो ाए। मौ ा-मस्ती के लिए थोड़ा ना ा-वा ा हो ाए, बिरादरी का भो ा-भात हो, बहिन-बेटियों, पर ा-पवनी को नेग-दस्तूरी दे दी ाए, यही शादी-ब्याह की शोभा होती है। ये नई-नई बातें हमारी सम ा में नहीं आती है।"[53]

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में सामने आई। लेकिन कहा ाता है कि यह प्रक्रिया ाब से पूँ ाीवाद का उदय हुआ तब से ाल रही है। कार्ल मार्क्स ने कम्युनिस्ट घोषणा पत्र में लिखा था कि-"पूँ ाीवाद ने एक विश्वबा ाार की स्थापना की है।"[54] भूमंडलीकरण पूँ ाीवाद के साथ ाुड़ गया है। इस दृष्टि से उसका आधुनिकीकरण से गहरा रिश्ता रहा है। इस भूमंडलीकरण और मुक्त बा ाार की अवधारणा के ब.ते प्रभाव का असर समकालीन ाीवन-पद्धति और मूल्यों पर भी दिखाई देने लगा है। "आ ा का वैश्वीकरण उस 'वसुधैवकुटुंबकम्' और 'अतिथि देवो भवः' से भिन्न है। इसमें व्यापार है, बाँटने की कला है, लाभ कमाने की मनोवृत्ति है। हमारे इस

---

[52] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.135
[53] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.31
[54] साहित्य कथन, डी.आर.नागरा ा-पृ.27

नये घर में रिश्तों के अर्थ बदल गये हैं, अपनापन उसी अनुपात में है, ि ास अनुपात में लाभ है। यूँ भी कह सकते हैं कि अपनापन कम उसका आडंबर यादा है।"[55]

भूमंडलीकरण के दौर में सामा िक मूल्यों का यह परिवर्तन हम 'नेक्लेस' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी में 'निम्माँ' मं ु को अपनत्व की भावना से देखती हैं ि ासके मूल में निम्माँ का आर्थिक लाभ है। कहानी की इन पंक्तियों से यह बात स्पष्ट नज़र आती है-"मं ु के लिए निम्माँ के दिल में गहरा प्यार है। बड़े गुड्डे की शादी में उसने दहे ा के साथ ाो ामकीला नेक्लेस दिया था उसके कारण वह निम्माँ के अधिक निकट आ गई थी।"[56] इस से स्पष्ट होता है कि भूमंडलीकरण के दौर में पैसों का बड़ा महत्व है। पैसों के आगे सारे आपसी संबंध विघटित होते दिखाई देते हैं।

भूमंडलीकरण की व ाह से देशों के बी ा की दूरियाँ कम हो गईं। परिणामस्वरूप सारे संसार में हर एक देश अपनी ाीज़ों को कई देशों में बे ाने लगा। इस प्रकार भूमंडलीकरण ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे ाीवन पर हावी कर दिया कि कोई भी वस्तु हाशिए पर नहीं रह ााती बल्कि इसके विपरीत वह ाीवन का हिस्सा बन ााती है।

<u>उपभोक्तावाद</u>

'उपभोग' हमेशा भोगने की आलस्यपूर्ण अथवा निष्क्रिय प्रक्रिया नहीं होती। पूँ ाीवादी दौर में 'उपभोग' की असंख्य वस्तुएँ मुहैया कर दी गयी हैं, ि ान्हें प्राप्त करने के लिए 'क्रय-शक्ति' होनी ााहिए। अतः पूँ ाीवादी दौर में आदमी यादा-से- यादा पैसा कमाना ााहता है। "बु र्वा औद्योगिक व्यवस्था में ऐसा 'उत्पादन-सिद्धांत' भी मिलता है, ि ासे केवल 'उत्पादन के लिए

[55] मीडिया और बा ारवाद, अशोक अग्रवाल-पृ.57

[56] ब ो का सपना, शेखर ाोशी-पृ.119

उत्पादन' कह सकते हैं ि ासके लिए 'काम, काम और अधिक काम' का नारा दिया गया था। अब यादा उत्पादन हुआ तो यादा उपभोग की बात भी की गई। उपभोग को आदमी की आवश्यकता से न ोड़कर 'उपभोग के लिए उपभोग' से ोड़ा ााने लगा। मसलन रोटी के ब ााय अगर नेल पालिश और लिपिस्टिक का उत्पादन ब ़े तो उसे उसी के उपभोग को प्रश्रय दो। उपभोग करने में अक्षम होने के बाव ाूद उपभोग में लिप्त रहने की इसी ललक और ल ाक को मार्क्स ने 'औद्योगिक हि ाड़ापन' कहा था।"[57]

आ ा बा ाार में विलासिता की तमाम तरह की अ ाीबो-गरीब ाीज़ों से अटपड़ी दुकानें दिखाई देती हैं और उन्हें खरीदनेवालों की भीड़ भी कम नहीं। ि ासके पास विलास वस्तुएँ नहीं हैं, वे किसी तरह उन्हें पा लेने की दौड़ में लगे हुए हैं और ि ानके पास ये ाीज़ें मौ ाूद हैं, वे इनसे कुछ अलग पाने की फिराक में रहते हैं। यही 'उपभोक्तावादी संस्कृति' है।

इंग्लैंड में 'औद्योगिक क्रांति' का आरंभ उपभोक्तावादी संस्कृति के लिए बहुत मायने रखता है क्योंकि औद्योगीकरण और मशीनीकरण के कारण उत्पादन को बृहदाकार रूप मिला। अब ाो विपुल उत्पादन है उसके लिए नये बा ाार की आवश्यकता महसूस होने लगी और अपने उत्पाद की खपत के लिए पहले नये-नये स्थानों पर ठेले लगाकर बिक्री आरंभ की गयी। इसी का विस्तृत रूप 'उपनिवेशवाद' में देखते हैं। 'उपनिवेशवादी व्यापारी' लंबे समय तक अपना उद्योग व्यवसाय ालाते हुए उस व्यापार को समा ा पर बरकरार रखने की यो ाना बनाने लगे। सभी उत्पाद ारूरी नहीं होते लेकिन उस उत्पाद को आवश्यक ाीज़ बनाने के लिए कम दाम में बे ाने या खूब विज्ञापन देकर लोगों

---

[57] कतार ःडॉ.सुवास कुमार, ानवरी/ ून 1990-पृ.18

में उस वस्तु के प्रति लालसा उत्पन्न करते हैं। एक प्रकार से यह मानसिक शोषण है।

'उपभोक्तावाद' में उत्पादों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया ाता है और 'उपभोक्ता' ाहता है-सस्ता, उत्पाद, बेहतर योग्य, रुपये का उ ित-मूल्य और आवश्यकतानुसार बदलाव, ाब वह उत्पाद 'उपभोक्ता' तक पहुँ ाता है तो उपभोक्ता के ीवन में ारूर कुछ-न-कुछ परिवर्तन आता है।

'उपभोक्तावाद' के उदय के संबंध में डॉ.सुवास कुमार लिखते हैं कि- "सही रूप में उपभोक्ता समा ा 1950 से 1960 के बी ा पूँ ीवादी देशों के सामूहिक उपभोग में तीव्र वृद्धि से बना मगर आर्थिक सामा ाि क, रा ानीतिक, सांस्कृतिक और सैद्धांतिक बहुत-सी ऐसी समस्याएँ खड़ी की ि ानका समाधान अब तक नहीं हो पाया।"[58]

'उपभोक्तावाद' का शिकार मध्यवर्ग है ो अपना व्यवहार तथा ीवन-शैली उ ातर बनाना ाहता है। महत्वाकांक्षा के कारण वह 'बड़ा आदमी' यानी बहुत से पैसों और सुविधाओं वाला आदमी दिखना ाहता है। इसी के कारण वह अनेक प्रकार के उपभोग की ीज़ों को खरीदता है। क्योंकि अब आदमी की कीमत और हैसियत को पैसों में आँका ाता है और सामान ारूरत को देखकर नहीं खरीदा ाता, क्रेता की क्रय-शक्ति के अनुपात में आता है।

मध्यवर्ग अब पहले सा 'मध्यम वर्ग' नहीं रह गया है। अब वह उपभोक्ता के रूप में आनंद के अनुभव को एक कर्तव्य मानता है। वह खुश रहना ाहता है। केवल खुश रहना ही नहीं खुश दिखना ाहता है और गतिशील। एक अर्थ में वह पैसा ही प्रसन्न ि ाह्न बन ाता है, ो उसे वस्तुओं

[58] कतार, डॉ.सुवास कुमार, ानवरी/ ून 1990-पृ.21

से मिलता है। यह उपभोग का 'आधीक्यीकरण' (मैक्सिमाइ ोशन) कहलाता है।

मनुष्य अपने अस्तित्व को अधिक-से-अधिक ाए, भोगे, ाह्नों के घनीभूत उपभोग में। अनंत ाह्न-संबंधों के बी ा रहकर ही यह 'आधिक्यीकरण' प्राप्त किया ा सकता है, ार आनंद का यही स्तर है।

'उपभोक्तावाद' के कारण समा ा के मध्यवर्ग में ो परिवर्तन आया है शेखर ोशी उसे 'डांगरी वाले' कहानी के नरेश पात्र के द्वारा हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। नरेश ो एक मध्यवर्गीय परिवार का सदस्य है उनका ध्यान हमेशा घर में रहन-सहन के स्तर को ऊँ ा उठाने पर रहता है। वह खुश गतिशल दिखना ाहता है। इसीलिए वह कई प्रकार के उपभोग की ीज़ों को खरीदता है ैसे 'डाइनिंग टेबुल'। कहानी की निम्न पंक्तियों से समा ा में व्याप्त उपभोग की मानसिकता स्पष्ट होती है-"आफिस के लिए रवाना होने के पहले सूट-बूट पहनकर ौके के बाहर दो कुर्सियों को आमने-सामने रखकर नाश्ता करते रो ा ही नरेश को 'डाइनिंग टेबुल' का अभाव खलता था। दोस्तों को कभी घर पर खाने का निमंत्रण देते हुए ि ा ाक होती थी और म ाबूरी में बैठक में ही छोटी टेबुल पर उनका आतिथ्य करना पड़ता था। ाम ामाती हुई टेबुल और खूबसूरत कुर्सियों को देखकर ब ो बिलक उठे थे। दयाल की बड़ी ब ी को अ ानक अपनी 'बर्थ डे' पर सहेलियों को बुलाने का ख्याल आ गया था।"[59] इससे स्पष्ट होता है कि 'उपभोक्ता संस्कृति' से केवल बड़े ो अपना ीवन स्थर ऊँ ा उठाना ाहते हैं वे ही नहीं बल्कि ब ो भी प्रभावित हैं।

परिवर्तन की प्रक्रिया पर शेखर ोशी स्वयं टिप्पणी करते हैं-"बरामदे में तख्त पर बैठे-बैठे खपरैल की छवान की ओर ताकते हुए सो ाने लगे,

[59] डाँगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.97

ीज़ें धीरे-धीरे कैसे बदल गई हैं। अ ानक होनेवाले बदलाव से उन्हें हमेशा डर लगा रहता है। ैसे किसी अनिष्ट की आशंका हो, लोगों की नज़र लग ाने का डर हो। पूरा घर पक्का सीमेंट का हो गया है। एक-एक वर्ष के अंतराल में ीज़ें बदलती गई हैं।"[60]

'उपभोक्तावाद' ने पूरे मध्यवर्ग को अधःपतित कर दिया है। इस दौर में यह कहना कि-"लोक में उपभोक्ता सामग्रियों की कमी हो सकती है वि ारों की नहीं।"[61] यह कथन भी खंडित हो ाता है। क्योंकि 'लोक' भी आ ा अपनी 'लोक-संस्कृति' छोड़े 'उपभोक्तावादी संस्कृति' से ुड़ने की ाह रखने लगा है। भला ऐसे में कौन है कि 'उपभोक्तावाद' से ब ाने का दवा कर सके क्योंकि आ ा हर घर में हर दरा ा में कोई-न-कोई उपभोक्ता-सामग्री पायी ाती है। अतएव 'उपभोक्तावाद' के विरोध का ामा पहनाकर शेर बनकर नहीं 'शेर की खाल में' रहने ैसा है। क्या मध्यवर्ग के अधःपतन में कोई शक है? वह ामाना और था ाब लोगों से नैतिकता की उम्मीद की ाती थी और वे खरे भी उतरते थे लेकिन 'अब उपभोक्तावाद' और 'कार' सेवा का ामाना है।"[62]

उपभोक्ता-सामग्रियों का उपभोग केवल शहरी ानता तक सीमित न रहा है। अब ग्रामीण लोग भी इस ाक्र में गिरफ्तार हो गये हैं। "पूँ ीवाद ने गाँव-समा ा उ ाड़े और शहरों में ग्रामीण ानों को श्रमिक बनाया था, 'उपभोक्तावाद' उन्हें उपभोक्ता बना रहा है। पूँ ीवाद का तर्क इसी तरह बदल रहा है। ो बात उन्नीसवीं सदी में 'उत्पादन' के क्षेत्र में हुई थी, अब 'उपभोग' के क्षेत्र में हो रही है। ानता को श्रमिक बनाकर पहले औद्योगिक क्रांति संपन्न की गई। अब उन्हें उपभोक्ता बनाकर उपभोक्ता क्रांति संपन्न की ा रही है।

---

[60] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.97

[61] शंभुनाथ, मड़ई 2002, देखिए-पृ.3

[62] अ ाय तिवारी, आलो ाना के सौ बरस-2, देखिए-पृ.312

यही उपभोग का समा ाीकरण है। दूसरे युद्ध से पहलेवाला अस्थायी उपभोक्ता, ाो 'उपभोग करने' अथवा 'न करने' के लिए स्वतंत्र था, अब नहीं ब ाा है।"[63]

यह 'उपभोक्तावाद' केवल शहरों तक न रह कर गाँव के भोले-भाले लोगों को भी प्रभावित कर रहा है। ग्रामीण लोगों में उपभोक्ता सामाग्रियों के प्रति लालसा तथा उन उपभोगों को भोगने की इ छा हमें 'विडुआ' कहानी में देखने को मिलती है। इस कहानी का 'दिग्वि ाय' अपने बेटे की शादी में गाँववालों को वीडियो का करिश्मा दिखाकर अपने परिवार का अलग महत्व दिखाना ाहता है। 'ननकी' भी उसका समर्थन करते हुए विडुवा के प्रति अपना उत्साह नहीं रोक पाती है। वह कहने लगती है कि-विडुवा भौ ाी, विडुवा। एकदम सनीमा का फिल्मवाली मशीन। भैया कहता है, ब ाा की बारात का फिल्म बनाएँगे। आ ाकल खूब बनता है शहर में। यादा ख र्ा भी नहीं। समधी के घर में कैसा खातिर-बात हुआ यह तुम भी यही बैठे देख लोगी। स ा भौ ाी, दादा को तुम कहोगी तो मान ाएँगे।"[64]

इस 'उपभोक्तावादी' संस्कृति के प्रति कुछ बुद्धि ाीवी अपना विरोधी स्वर उठाते हैं तो कुछ लोग अपने ब ाों की खुशी देख कर सहमत हो ाते हैं ैसे 'डांगरी वाले' कहानी का परमेश्वर। परमेश्वर का छोटा बेटा घर में रहन-सहन का स्तर ऊँ ाा उठाने के लिए डाइनिंग टेबुल लाता है तो परिवार के सभी लोग खुश हो ाते हैं तो उनकी खुशी देखकर परमेश्वर भी सहमत हो ाता है। "शाम को वर्कशाप से लौटकर आँगन में साइकिल टिकाते हुए परमेश्वर की नज़र डाइनिंग टेबुल पर पड़ी तो उन्हें लगा टेबुल की तरह दयाल की माँ का ोहरा भी खुशी से ामक रहा है। परमेश्वर ने अपनी

---

[63] तथा-पृ.132

[64] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.30

विवशता से मुस्करा कर ही इस बदलाव को स्वीकार किया था।"[65] इस प्रकार कुछ बुद्धि ाीवी उपभोग की वस्तुओं का समर्थन करते हैं।

लेकिन कुछ लोग ब ाों की खुशी के लिए सहमत होते हैं। मगर उन उपभोग की वस्तुओं को स्वीकार नहीं कर पाते। ैसे 'विडुवा' कहानी के बड़े ठाकुर कहानी की इन पंक्तियों से 'विडियो' ाो एक उपभोग की वस्तु है उसके प्रति विरोधी भाव स्पष्ट होता है। "बड़े ठाकुर धीरे-धीरे बे ैनी अनुभव करने लगे। उनका मन हुआ कि उठकर विडुवा बंद करा दें। लेकिन सब लोग ि ास तल्लीनता से उसे देख रहे थे, उसमें अपना ऐसा व्यवहार उन्हें संगत नहीं प्रतीत हुआ। वह ुप ाप तख्त से उठे और घर के अंदर ाल दिए।"[66]

यही विरोधी स्वर हमें 'व्यतीत' कहानी में भी देखने को मिलता है। इस कहानी का 'बाबू' उपभोग की वस्तु कूलर के विरोध में कहता है-"कूलर की हवा से शरीर ठंडा रहता है। कहीं धूप में निकल गया तो बीमार पड़ ाएगा। ये सब बनावटी ाीज़ें हैं। बड़ा नुकसान करती हैं।"[67]

'उपभोक्तावाद' में 'मीडिया' की प्रमुख भूमिका है। क्योंकि उत्पादक ाब कोई नई उपभोग की वस्तु का उत्पादन करता है तो उस वस्तु को उपभोक्ता आवश्यक ाीज़ मानने के लिए उत्पादक मीड़िया का सहारा लेता है। दूसरे शब्दों में ाब कोई उत्पाद अपनी खपत के लिए 'मीडिया' को आधार बनाकर 'उपभोक्ता वर्ग' तक अपनी महत्ता पहुँ ाता है, तो एक तरह से वह अनावश्यक होते हुए भी अत्यावश्यक बनता है।

रवींद्र कात्यायन ने 'उपभोक्तावाद' के विकास में मीडिया की भूमिका को स्पष्ट करते हुए आवेशपूर्ण शब्दों में लिखा है कि-"मीडिया का प्रभाव हमारे

---

[65] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.97
[66] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.36
[67] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.99

समा ा पर सबसे अधिक पिछले दो दशकों में पड़ा है। उसमें भी 1989-90 के आस पास देशी-विदेशी ैनलों के प्रसारण प्रारंभ होने से दसों दिशाओं में ीवन की गति बेतहाशा ब ़ी है। क्या शहर, क्या कस्बा, क्या गाँव? हर स्थान पर इन ैनलों का शिकं ाा कसा है। पिछले दस-पंद्रह वर्षों का समय विश्व-बा ाारीकरण, भूमंडलीकरण, बहुराष्ट्रीय कंपनियों की हमारे दैनंदिन ीवन में दखल, उपभोक्तावाद और बा ाार की गलाकाट प्रतिद्वंद्विता आदि का समय रहा है।"[68]

'भूमंडलीकरण' ने 'उपभोक्तावादी' संस्कृति को हमारे ीवन पर हावी कर दिया है। भूमंडलीकरण के ालते ाहां बा ाार का विकास हो रहा हे तो उसमें मीडिया का भी अपना हाथ है। यह तो ाहिर है कि मीडिया के बगैर आ ा बा ाार अपनी ागह बना ही नहीं सकता। क्योंकि मीडिया न सिर्फ घटनाओं के उपभोक्ताकरण पर केंद्रित है बल्कि वह ब ाार की हर वस्तु के उपभोक्ताकरण पर भी ोर देता है। सन् 1990-91 के करीब ग्लोबलाइ ोशन का आरंभ हुआ, सब कुछ का मार्केटाइ ोशन हो रहा है।

मीडिया द्वारा उपभोग की वस्तुओं की ाानकारी सब को आकर्षित करती है। यहाँ तक कि ब ों को भी। मीडिया का विज्ञापन ब ों को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है यह हमें 'शुभो दीदी' कहानी से पता ालता है। इस कहानी का 'सन्तू' ो एक छोटा ब ा है वह अपनी दीदी का म ाक करते हुए कहता है-"शुभो दी, तुम्हें बहुत ाल्दी ही बेटा मिलेगा, पर उसके सिर के बाल भी विशू बाबू की तरह ही सफेद होंगे।" लेकिन सन्तू "एक बार अखबार से एक विज्ञापन काट लाया, सफेद बाल काला, किसी तेल का विज्ञापन, और शुभा दी को विज्ञापन दिखाता हुआ बोला, शुभो दी, यह तेल मँगा लेना अपने बेटे के

[68] संस्कृति बनाम अपसंस्कृतीकरण, आनंद पाटील-पृ.35

लिए।"[69] इस से स्पष्ट होता है कि उत्पादक मीडिया के द्वारा उपभोग की वस्तु का ो विज्ञान देता है वह सभी को आकर्षित करता है तथा उपभोक्ता को उस वस्तु के प्रति विश्वास दिलाता है।

"'उपभोक्तावाद' को 'माया' के अर्थ में देखा ाय तो भारतीय अद्वैत-दर्शन से लेकर भक्तिकालीन साहित्य तक में माया के रूपों से दार्शनिक मुठभेड़ तो बार-बार मिलती है, लेकिन आ । उपभोक्तावाद का ो रूप नज़र आता है, उसे 'उपभोग' करनेवाली इंद्रियों के खेल का रूप मानकर 'माया' का कुछ विमर्श बनाया ा सकता है।"[70]

यह 'उपभोक्ता संस्कृति' आ । के पारिवारिक एवं सामाा िक ीवन के केंद्र में आ गयी है। परिणामस्वरूप व्यक्तिगत और सामाा िक ीवन-मूल्य, नैतिकता, ईमानदारी और आपसी रिश्ते कहीं कोने में सिमट रहे हैं या घिसी-पिटी पुरानी बातें लगने लगे हैं। इस स्थिति पर ा ा करना भी लोग पसंद नहीं करते।

आधुनिक काल के प्रारंभ में ही भारतीय समा । रा ानैतिक दासता का शिकार हो गया और अंग्रेज़ों ने इसकी आर्थिक संर ाना को बदलने के साथ-साथ शिक्षा संस्कृति तथा ीवन मूल्यों को भी बदल दिया। यही कारण है कि मूल्यह्रास की प्रक्रिया आधुनिक भारतीय समा । में बड़ी तेज़ी से शुरू हुई। विशेष रूप से सन् 1960 के बाद सामाा िक मूल्य बहुत तेज़ी से विघटित हुए। सन् 1970 के बाद तो यह प्रक्रिया और भी तेज़ हो गई क्योंकि इस काल में शक्तियों का नया ध्रुवीकरण हुआ तथा भारतीय समा । में रा ानैतिक हस्तक्षेप एकाएक बहुत ब ़ गया।

---

[69] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.76

[70] सुधीर प ौरी, ब्रेक के बाद-पृ.125

"स्वतंत्रता के पश ात् भारतीय समा ा में सामा ाि क ीवन मूल्यों के परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र हो गई। द्वितीय विश्वयुद्ध, विज्ञानबोध और आधुनिक शिक्षा पद्धति ने वै ाारिक क्रांति के दो महत्वपूर्ण रूप प्रस्तुत किए।एक-व्यक्ति के ीवन के संबंध में और दूसरा-समा ा के ीवन के संबंध में। दोनों के संयोग से ीवन मूल्यों की पूरी अवधारणा ही बदल गई।"[71]

आज़ादी के आस-पास ो बदलाव आने शुरू हुए उनकी परिणति ानता के हित और देश के भविष्य के पक्ष में नहीं हुई बल्कि इन्हें दरकिनार करते हुए अर्थतंत्र ालता गया। इस दौरान वैसी व्यक्तिगत उपलब्धियों का महत्व सिर्फ ब ़ गया, ि ानका संबंध मुनाफे अर्थात् सिर्फ पैसों से था। आ ा पैसा सब कुछ है, पैसा ताकत है। पैसा अपनी ताकत से आम आदमी को भी प्रभावित करता है। वह आदमी को ईमानदार से बेईमान बना देता है। इसी सामा ाि क बदलाव को 'शेखर ोशी' अपनी 'नौरंगी बीमार है' कहानी द्वारा हमारे सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। इस कहानी का नौरंगी ो एक ईमानदार आदमी है उसकी ईमानदारी पर सब को विश्वास है, यहाँ तक कि कारखाने के मालिक को भी। वह कहता है-"बहुत ईमानदार आदमी है साहब नौरंगी मिस्त्री। मैं आपको एक पुराना डेली आर्डर दिखाऊँगा। ार-पाँ ा साल पहले की बात है। तब महेंद्र सिंह साहब थे यहाँ। उन्होंने गलती से इन्हें ार सौ रुपया दे दिया था। ये वर्कशॉप में गए, एक-दो बार रुपया गिना, लगा कि कुछ गड़बड़ है। वापस कर गए तत्काल। कहाँ मिलते हैं ऐसे लोग, इस ामाने में। ीफ साहब खुद यहाँ आकर उन्हें शाबाशी और ईनाम दे गए थे। इनसे हाथ मिलाया था। क्यों, गलत तो नहीं कह रहा हूँ नौरंगी?" [72] इतने ईमानदार आदमी को पैसा बदल देता है। पैसों के लोभ में आकर नौरंगी पे-काउंटर से मिले अधिक पैसे दबा लेता है। बात

---

[71] नया प्रतीक, वीरेंद्र सिंह, अप्रैल 1977-पृ.76

[72] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.91

छिपाने के लिए लोगों की टीका-टिप्पणी से ब ाने के लिए बीमारी के बहाने छुट्टी ले लेता है। इस प्रकार अर्थतंत्र की व ाह से ीवन मूल्यों में बदलाव आ रहा है। एक मूल्य छोड़कर दूसरा मूल्य अपना रहे हैं।

यही ीवन मूल्यों में बदलाव हमें ' ी ह ूरिया' कहानी में भी देखने को मिलता है। इस कहानी का ापरासी हमेशा अफसर लोगों की खुशामदी और ापलूसी करता है। लेकिन अपने साथी की मृत्यु पर अफसर से तेज़ और तुर्शी से भरी बात कर बैठता है। " ी-ह ूरिया इस बार अपना आक्रोश नहीं संहाल पाया, खँखार कर बोला, अप ानकार आदमी हैं हु ूर, आप कुछ गलत थोड़े ही कहेंगे। भला किताबी कानून के आगे हम-मनई की ान की क्या औकता।"[73] इस प्रकार म ादूर बुरे मूल्य छोड़कर अ छे मूल्य अपनाते हैं।

पैसों में इतनी ताकत है कि आपसी रिश्तों को भी बदल देते हैं। 'परिक्रमा' कहानी का भुवन पायलट ऑफिसर के पद के लिए ुन लिये ाने पर भी उसकी माँ ोठी बहू को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक विनम्रता और आदर देते हैं। "घर का कारोबार देवरानी के हाथों सौंपकर ोठी बहू भुवन के साथ ाल दी। रामदत्त स्टेशन पर उन्हें लिवाने आया था। देवर के घर पहुँ ाकर ोठी बहू को लगा ैसे देवरानी को भुवन से कहीं यादा स्वयं उनकी प्रतीक्षा रही हो। अपनी इस देवरानी का ऐसा व्यवहार उनके लिए आश ार्य का कारण बन गया। वह बातें करती तो ैसे मुँह से फूल ारते। ार-पाँ ा दिन वहाँ रुककर भुवन कैलाश के पास ाने की तैयारियाँ करने लगा तो रामदत्त की बहू ने इस बात का बड़ा आग्रह किया कि भुवन नौकरी पर ाने से पूर्व माँ को उनके पास छोड़ ाये। कैलाश और छोटी बहु का व्यवहार भी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक अपनत्वपूर्ण था। ोठानी के सेवा-सत्कार में छोटी बहू दिल

[73] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.72

खोलकर ख र्ा कर रही थी।"[74] लेकिन उनका यह स्नेहपूर्ण व्यवहार यादा दिनों तक नहीं रहा क्योंकि उनको पता ालता है कि अब भुवन एक्सीडेंट की व ाह से अफसर नहीं बन पाया। "इसके बाद से फिर घरेलू कामका ा की बातों में ोठी से किसी ने कोई राय नहीं ली। कैलाश और छोटी बहू का आग्रह हमेशा उन्हें अपने साथ ले ााने का रहता था। परंतु इस बार ाब ोठी बहू ने वापस गाँव ााने की बात कही तो किसी ने उनकी बात पर आपत्ति नहीं की।"[75]

धार्मिक व्यक्ति अपने धर्म का पालन करना ीवन का बहुत बड़ा ीवन मूल्य मानता है। लेकिन वह भी अपने घर की सुख सुविधा के लिए एक मूल्य छोड़कर दूसरे मूल्य अपनाता है। यही ीवन मूल्यों में बदलाव 'किं करोमि ानार्दन' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी का बू.ा नित्यान यु धार्मिक भावना से "आँगन में सुखाने के लिए डाले गये धान में गाय-बछिया आकर मुँह मारने लगे, तो भी नित्यान यु उसे स्वयं नहीं हटाएँगे। वह तो सू ाना भर दे देंगे-ओरी कमला! देख गाय आयी है। सीधे गाय को हटा देने से संकल्प टूट ााएगा, परलोक बिगड़ ााएगा न।"[76] लेकिन इतना धार्मिक आदमी भी घर की सुख-सुविधा के लिए अपना ीवन मूल्य छोड़कर घर के सम्मुख सेब-वृक्षोंक के बगी ो की रक्षा करने के लिए तैयार हो ाता है। वह अपने घर की समस्या को दूर करने के लिए अपने ीवन मूल्य बदलता है।

अगर कोई व्यक्ति ीवन-मूल्य, नैतिकता आदि के लिए ीने की कोशिश करता है तो आ ा के समा ा में वह अ ानबी ौसा बन ाता है या फिर सहानुभूति का पात्र। यही स्थिति हमें 'मेंटल' कहानी में देखने को मिलती है। इस कहानी का 'वह' नामक पात्र एक सत्यवादी और ईमानदार आदमी है।

---

[74] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.145
[75] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.147
[76] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.38

"उसकी ईमानदारी और मेहनत का ही नती ा था कि उसकी सर्विस-बुक में कही कोई लाल निशान नहीं लगा था।"[77] अगर कारखाने का अफसर बी.ओ. साहब उस पर'टूलकिट' के औ ार ुराने का आरोप करता है ो व्यक्ति सत्य और ईमानदारी को अपना ीवन मूल्य सम ाता है वह इस आरोप से अपना मानसिक संतुलन खो कर पागल या सहानुभूति का पात्र बन ाता है।

व्यक्ति नवीन ीवन-मूल्यों को पह ानकर उन्हें अपनाकर ही वै ारिक दासता को दूर कर सकता है। कविपथ पुराने मूल्य भी प्रासंगिक हो सकते हैं और सारे के सारे नये मूल्य उपयोगी हो ऐसा नहीं होता। व्यक्ति को विवेक से काम लेते हुए उपयोगी ीवन मूल्यों को पह ानना और अपनाना ाहिए। यही नवीन ीवन मूल्यों को पह ान कर अपनाने की प्रक्रिया हम 'बिरादरी' कहानी में देख सकते हैं। वास्तव में बिरादरी शब्द परंपरा और ातीय पह ान के रूप में रू ़ हो गया है। नए सामा िक सो ा ने इस पुराने मूल्य को बदल दिया िसे हम कहानी के 'हरिप्रिया' के इन शब्दों में देख सकते हैं-"बिरादरी एक दिन की नहीं होती, हमारे तो असली बिरादरी अब वे ही हैं िनके साथ हमारा मरना- ीना लगा है, उन्हें छोटा कर परदेसी बिरादारों की फिकर करोगे तो ये भी अपने न रहेंगे और वे भी।"[78]

परिवर्तन की इस प्रक्रिया पर शेखर ोशी लिखते हैं कि-"देखते-देखते सब कुछ बदल गया था। एक ही बिरादरी के उस छोटे से गाँव में धीरे-धीरे पुरानी पी ़ी के बु ुर्गों में से एक के बाद एक सभी किसी पेड़ के पीले पत्तों की तरह समाप्त होते गये थे। नयी पी ़ी के लड़के प ़-लिखकर नौकरी और रो ागार के बहाने एक बार परदेस की ओर गये तो अपनी गृहस्थी और बाल-ब ों के साथ वहीं के होकर रह गये। प ़-लिखकर खेती-किसानी करने का

---

[77] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.32

[78] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.79

हौसला किसे होता और परिवार की ब ोतरी के साथ पहाड़ की खेती पर निर्वाह किसका होता? पूरे गाँव में अधिकांश घरों में यातो ताले पड़ गये थे या परदेस के माहवारी मनीआर्डर पर आश्रित विधवा ा ी-ताइयों की अकेली गृहस्थी रह गयी थी।[79]

4.2 शेखर ोशी की कहानियों में ि त्रित समा ा

4.2.1 सामा ि क स्थितियाँ

साहित्य का समा ा से गहरा संबंध होता है। कोई भी साहित्य समा ा से कटकर नहीं र ा ा सकता है। सामा ि क सरोकारों से ुड़कर र ा गया साहित्य ही उ ा साहित्य होता है। साहित्य में सामा ि क सरोकारों को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम कहानी है। कहानीकार सामा ि क प्राणी है और वह समा ा के सारे संबंधों को अपनी कहानी में वर्णित करता है। साहित्यकार पर परिवेश का बहुत बड़ा प्रभाव होता है। ि स परिवेश में वह पलता है उसी परिवेश के सामा ि क स्थितियाँ उसे लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। परिवेश से कटकर अगर कोई र ना करता है तो वह सफल कृति बन नहीं पाती। स्वयं शेखर ोशी इस बात पर विश्वास करते हुए कहते हैं-"मूलतः ये परिवेशगत स्थितियाँ ही हैं ो एक र नाकार को दूसरे र नाकार से भिन्न धरातल पर आंदोलित करती हैं।"[80]

किसी भी व्यक्ति की पह ान उसके व्यक्तित्व से होती है। ि सका बाह्य अर्थ केवल शारीरिक गठन से ही नहीं है। अपितु उसके संपूर्ण गुणों और विशिष्टताओं से भी है। मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवेश का बहुत बड़ा योगदान रहता है।

---

[79] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.75
[80] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.7

मानव के ान्म के बाद ही उसके व्यक्तित्व का क्रमिक विकास प्रारंभ हो ाता है। ो मृत्युपर्यंत होता ही रहता है। ान्म के बाद सबसे पहले एक शिशु माता-पिता परिवार के संपर्क में आता है। उन्हीं से वह प्रेरणा लेकर व्यक्तित्व के निर्माण की पहली सी ़ी पर कदम रखता है ो ब े विमाता के संपर्क में पालित-पोषित हैं, उनका व्यक्तित्व या तो कुठित हो ाता है या वे असामान्य हो ाते हैं। 'ि द्दी' कहानी का रा ेंद्र ब ापन में अपनी माँ के घर में एक ि द्दी और लाड़-प्यार में पालित-पोषित लड़का था किंतु उसकी माँ के देहांत के बाद वह विमाता के रौबीले व्यक्तित्व के सामने उभर नहीं पाया। परिणामस्वरूप दोहरे व्यक्तित्व का शिकार हो गया। वह हमेशा टूटा हुआ असंतुष्ट दिखाई देता। उनका व्यक्तित्व सामान्य दिखाई नहीं देता।

शेखर ोशी की दृष्टि हमेशा परिवर्तनों पर है। बाह्य परिवर्तनों से यादा आंतरिक परिवर्तन पर हैं। युवावस्था में लड़के-लड़कियों में अनेक परिवर्तन आते हैं। उस समय नारी-पुरुष के संबंधों के प्रति स ाग होकर प्रेम की ओर आकर्षित हो ाते हैं। उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन आता है। शेखर ोशी इसी आंतरिक परिवर्तन को 'प्रथम साक्षात्कार' कहानी के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। "वह पत्र तब ाया को अनोखी अनुभूति से भर गया था। तब पहली बार उसने गौर से अपने अंग-अंग को देखा था। आत्ममुग्ध-सी वह देर तक आईने में अपने को देखती ही रह गई थी। उस दिन अ ानक ही वह आत्मविश्वास से भर उठी थी। ीवन का प्रत्येक कार्य-व्यापार उसे रु ाकर लगने लगा था।"[81] इस प्रकार शेखर ोशी का स्वर अपने समकालीन साहित्यकारों से सर्वथा भिन्न है। इसका बड़ा कारण यह है कि शेखर ोशी ने उन मूल्यों के अपनी कहानियों में उठाया है, ो अन्य साहित्यकारों के लिए

[81] ब े का सपना, शेखर ोशी-पृ.129

पुराने पड़ ुके हैं। मनुष्य की छोटी-से-छोटी गतिविधियाँ और इसमें इर्द-गिर्द हो रही मामूली हल ाल शेखर ोशी के साहित्य में उभरती है।

4.2.1.1 आपसी संबंध

मनुष्य एक सामाि ाक प्राणी है। उसका विकास समा ा से ही होता है। समा ा में रहकर ही वह अपने वि ाारों का आदान-प्रदान करता है। समा ा से अलग होने पर उसका विश्वास नहीं होगा और वह कुंठित हो ाएगा। समा ा से कटकर वह संत्रास, दुख, कुंठा, अकेलापन, ग्लानि आदि का शिकार होता है। अगर कोई व्यक्ति उन्नति के मार्ग पर ब.ना ाहता है तो उसे समा ा में रहते हुए अन्य व्यक्तियों से संपर्क रखना पड़ता है। समा ा में तरह-तरह के लोग रहते हैं। आपसी संबंधों से ही वह मित्रता बनती है। मित्रता के द्वारा दूसरे व्यक्ति के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करता है।

मित्रता तथा परि ाय में पर्याप्त अंतर है। इस संदर्भ में रमेश ंद्र कुलश्रेष्ठ एवं विद्याराम शर्मा लिखते हैं कि-" ाब पहले-पहले किसी से मिलते हैं तो उससे हमारा कुछ परि ाय हो ाता है। ाब निरंतर उससे मिलना होता रहता है तो उसके साथ हमारा एक प्रकार का स्नेह बंधन ुड़ ाता है। तब इसे मित्रता कहने लगते हैं। साधारण परि ाय तो किसी मनुष्य के साथ थोड़ी देर तक बातें करने या मिलने से ही हो सकता है।"[82] इस प्रकार की मित्रता 'दा यु' कहानी के 'मदन' और ' ागदीशबाबू' के बी ा में है। पहाड़ से नी ो उतरकर एक होटल में काम करनेवाला मदन का परि ाय ागदीशबाबू से हो ाता है। ि ानका गाँव उसके गाँव से निकट ही है। दोनों का रि ाय मित्रता में बदल ाता है। मदन ागदीशबाबू में अपने भाई को देखने लगता है। लेकिन धीरे-धीरे छोटी हैसियत वाला यह पहाड़ी बालक भीड़ भरे होटल में बार-बार 'दा यु,

[82] आदर्श निबंध, रमेश ंद्रकुल श्रेष्ठ एवं विद्याराम शर्मा-पृ.141

दा यु' कहकर उसकी 'प्रेस्टि ।' को कम कर देता है। यही कारण है कि उसका मध्यवर्गीय संस्कार ागि उठता है और 'अहं' की ते । धारा के आगे उसका वह अपनापन विस्मृत हो ाता है। " ागदीश बाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रेस्टि ।' का अर्थ सम । सकेगा या नहीं, यह भी उन्हें ध्यान न रहा, पर मदन बिना सम ाए ही सब कुछ सम । गया था।"[83] इस से स्पष्ट होता है कि आपसी संबंधों में आर्थिक स्थिति में दरार डालती है। इस विषय को शेखर ोशी पूरी तरह कलात्मक ंग से प्रस्तुत करते हैं।

समा । में परिवार का एक विशेष स्थान है। परिवार एक विशेष सामा िक संस्थान है, ि सका स्वयं अपना एक पे ीदा ाँ ा है। इसमें रक्त संबंध, भौतिक, आर्थिक संबंध तथा बौद्धिक संबंध शामिल हैं। परिवार से ही आपसी संबंधों का आरंभ होता है। परिवार के संबंध में केल्ले और कोवाल ोन अपनी मान्यता स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि-"मनुष्य परिवार में बनता है, परिवार में ही उसके व्यक्तिगत गुणों तथा संबंधों, ैसे प्रेम, बंधुत्व एक दूसरे की देख-रेख, नैतिक ि म्मेदारी इत्यादि का भी निरूपण होता है।"[84]

पारिवारिक संबंधों में आदर्श और प्रेम की भावना होनी ाहिए। यही भावना परिवार के सभी सदस्यों को एकत्रित करती है। परिवार के आपसी संबंधों से ही पूर्णता प्राप्त होती है। समा । में रहते हुए हम अपने ैविक एवं बौद्धिक धरातल पर संबंधों का निर्माण कर सकते हैं। यह वह केंद्रीय संबंध है ाहाँ से अन्य संबंध उत्पन्न होते हैं। ीवन में सुख-समृद्धि संपन्नता एवं

---

[83] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.9

[84] ऐतिहासिक भौतिकवादः समा । के मार्क्सवादी सिद्धांत की रूपरेखा, व.केल्ले और म.कोवाल ोव-पृ.81

स्वाभाविकता इन दोनों के पारस्परिक सहयोग एवं सद्भाव पर आधारित है। ीवन के विकास का आधार यही संबंध है।

आ ा इन आपसी संबंधों में वह ऊष्मा नहीं ो पहले थी। महँगाई और स्वार्थ ने पारस्परिक रागद्वेष के कारण आपसी-संबंधों में फीकापन ला दिया है। आपसी संबंधों में अर्थ की ो दीवार दूरी बड़ा रही है उसको हम 'भूत' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी का सुधीर छुट्टियों में अपने रिश्तेदारों और गाँव को देखने की ललक से गाँव पहुँ ाता है तो उसके ा ा को अ छा नहीं लगता। क्योंकि उसे लगता है कि सुधीर ामीन और हवेली की ामा-पूँ ी लेने के लिए आया होगा। "प ीस-तीस मिनट की बात ीत में ही ा ा ने प्रकारांतर से अपना आशय स्पष्ट कर दिया था। सुधीर को ा ा की बातें अ छी नहीं लगी। वह कोई यो ाना बनाकर या उम्मीदें बाँधकर नहीं आया था। ब ापन से ि ास गाँव की मिट्टी में वह खेला था उसकी ललक और रमा की ि ाद उसे यहाँ खीं ा लाई थी। परंतु ा ा ि ास अंदा ा में असामियों से लगान न मिलने, खुद काश्त न कर पाने इत्यादि का विवरण देकर और हवेली के रखरखाव के खर्ो की शिकायतों द्वारा ो सफाई पेश कर रहे थे उसे सुनकर उसका मन खट्टा हो गया।"[85] शेखर ोशी के इस ि ात्रण से यह बात स्पष्ट होती है कि आपसी संबंधों में अर्थ की दीवार दूरियाँ ब.ा रही है।

यही अर्थ की दीवार बेटे और माता-पिता के बी ा भी दूरी ब.ाती है। 'किं करोमि ानार्दन' कहानी में इसे देख सकते हैं। इस कहानी का शिवदत्त अपनी कमाई पर अहंकार और स्वार्थ प्रकट करते हुए अपने माता-पिता से कहते हैं कि-"अपने पसीने की कमाई मैं किसे दूँ, कहाँ फेंकूँ। इस पर बहस करने का अधिकार किसी को नहीं है।"[86]

---

[85] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.95

[86] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.37

स्वार्थ की भावना और पारस्परिक रागद्वेष की भावना घर की बहुओं के आपसी संबंधों में दूरियाँ ब ा रही है। 'परिक्रमा' कहानी के दोनों सुहागिनों को अपने कमाऊ पतियों के कारण ही घर-संसार पर अहंकार है। इसी कारण से दोनों विधवाओं को कुछ भी कह देने के लिए तैयार हो ाते हैं। रामदत्त की बहू कहती है-"छोटी दुलहन, मुन्नी को दूध पिला दे तो। छोटी दाँतों के बी ा नि ाला होंठ दबाकर उत्तरदेती है-दीदी, दूध तो बहुत कम दिखाई दे रहा है। कोई दो दो पैरोंवाली बिल्ली तो नहीं पी गयी? और दोनो ंसुहागिनों के मुख पर रहस्य-भरी मुस्कान फैल ाती।"[87]

कभी-कभी परिवार के बाहरी लोगों से भी आपसी संबंध बन ाता है। इस तरह का आपसी संबंध हम 'शुभो दीदी' कहानी में देख सकते हैं। कहानी की 'माँ' नामक पात्र अपने पड़ासे के विशू बाबा की कम उम्रवाली पत्नी में अपनी खोई हुई लक्ष्मी (लड़की) को देखने लगती है। लेखक के इन वाक्यों से यह बात स्पष्ट होती है-"माँ का अपार स्नेह पाकर शुभा दी हमारे परिवार में घुल-मिल गयी। माँ कभी-कभी पिता ी से कहा करती, "अभी एक-दम ब ी है, बिलकुल पगली, कुछ भी नहीं सम ाती।"[88] ाब शुभो शिशु को ान्म देकर अंतिम साँस छोड़ती है तो "माँ उस दिन फूट-फूटकर रोई थी। उसकी लक्ष्मी दूसरी बार उससे विदा हो गई थी।"[89] अतः स्पष्ट है कि आपसी संबंध परिवार के सदस्यों के बी ा ही नहीं बल्कि बाहर के लोगों से भी बन सकते हैं।

निष्कर्षतः शेखर ोशी अपनी कहानियों के द्वारा अपसी संबंधों में बिखराव और पारिवारिक विघटन का कारण स्पष्ट रूप से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

---

[87] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.142
[88] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.75
[89] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.77

4.2.1.2 पीि़यों का अंतर

सामाि क विकास के परिप्रेक्ष्य में एक पी़ी के बाद दूसरी और उसके बाद तीसरी, इस प्रकार कई पीि़याँ आती हैं। और उन पीि़यों की मान्यताओं में भी अंतर ारूर दिखाई देता है। दो पीि़यों के पारस्परिक वैमनस्य को देखते हुए उनके ीवन मूल्यों के संघर्ष को भी देखना अनिवार्य है। शेखर ोशी अपनी कहानियों में इन दो पीि़यों के मनमुटाव को ि ात्रित करते हैं। पिता और पुत्र के बी ा की दूरी को 'आखिरी टुकड़ा' शीर्षक कहानी में ि ात्रित किया गया है। सूर ा को अपने पिता माँगुरू से कोई सद्भावना प्राप्त नहीं होती क्योंकि वह नौकरी से वंि ात है। माँगरू पुरखों की थाती उस ामीन के टुकड़े को ब ाने के लिए आ ीवन संघर्ष करता है तो उसका पुत्र सूर ा स्वयं अपने हाथों से " ामीन के उस खाली टुकड़े के किनारे-किनारे लोहे के खंभे गा़कर, उसने बाड़ लगा दी थी और भट्टी-निहाई और दो- ार फ्रेम ामाकर लोहारखाने की सीमा को वहाँ तक ब़ा लिया था।"[90] माँगरू ो कीमत उस ामीन को दिया है उतनी कीमत सूर ा ने नहीं दिया। सूर ा पिता के इस मत को सम ा नहीं पाया। इस मत वैभिन्य का कारण विरोधी वि ारधारा है। शेखर ोशी ने इस कहानी में पीि़यों के अंतर को स्पष्ट रूप से ि ात्रित किया है।

नई पी़ी और पुरानी पी़ी की मान्यताओं में अंतर है। आ ा की नई पी़ी आत्म निर्भरता और ाल्दबा ी के कारण पुरानी-पी़ी के मूल्यवान बातें सुनने के लिए तैयार नहीं है। 'आशीर्व ान' कहानी में इसका ि ात्रण हुआ है। श्यामलाल की सेवा-निवृत्ति के अवसर पर आयोि ात विदाई समारोह में म ादूर नेताओं का भाषण होते-होते छुट्टी का सायरन ब ा उठता है। श्यामलाल ने अपने समय की मुश्किलें और काम के प्रति निष्ठा की बातें शुरू

---

[90] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.65

की ही हैं कि म ादूर घर ाने के लिए बेताब हो उठते हैं। नई पी ़ी के लोग आशीर्व ान का इंत ार किए बगैर ही श्यामलाल की ायकार करते हुए ाले ाते हैं, रुँधे गले से श्यामलाल शून्य में देखते हुए सिर्फ सिर हिलाता रहता है। " ो सो ा था वह न कह पाने का उसे कोई मलाल नहीं रहा... क्या होगा कुछ कहकर भी? हमारा कुरुक्षेत्र या हमने लड़ा, इनका कुरुक्षेत्र ये लडेंगे। ीना है, तो लड़ना है... हॉल में बैठे हुए होनहार नई पी ़ी के कारीगरों की मोहनी सूरत उसकी आँखों के आगे तैर गई।"[91]

पुरानी पी ़ी को अपने गाँव और ामीन ायदाद के प्रति ितना लगाव रहता है उतना नई पी ़ी में नहीं रहता। 'व्यतीत' कहानी का रमेश गाँव ाने की बात सुनते ही उसके स्वर में ाल्लाहट भर गयी थी। "शहर में एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले में भेंट-मुलाकात करने की बात तो हर बार अगले महीने पर टल ाती है। फिर इतने वर्षों से छूटा हुआ घर है-टूट-फूट, मरम्मत-सफाई इतना लंबा परिवार लेकर ाना, नाते-रिश्तेदार, लेन-देन सभी कुछ है-सभी की इस लायक स्थिति हुई तो ाएँगे ही।"[92] बल्कि इसके विपरीत रमेश का पिता हमेशा गाँव की कल्पना करते हुए ोन के लिए उतावला होता रहता है।

पुरानी पी ़ी के लोग अपने य ामानों पर एहसास रखते थे इसीलिए समय पर बिना बताए काम पर आ ाते थे। लेकिन नई पी ़ी के लोग ाहाँ अधिक पैसा मिलता है वहीं काम करते हैं। इसका ित्रण 'हलवाहा' कहानी में किया गया है। इस कहानी का बद्री प्रधान पुरानी पी ़ी के एहसान के संबंध में कहते हैं कि-"अरे! वह बाप-दादों का ामाना था। हलवाहे, तेली, ोली, ब ़ई, लोहार सबको खाने-कमाने को ामीन दे रखी थी। लोग भले थे, एहसान मानते थे। हलवाहे बखत पर खेत ोत ाते, काम-का ा के मौके पर ोली अपना

---

[91] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.117

[92] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.98

फ ि सम ाकर बा ाा लेकर आता, ब ़ई-लोहार अपने-अपने बखत पर काम आते। आ ा तो सब भूमिधर हो गए हैं। कौन किसकी सुनता है, किसको मानता है।"[93] इस कहानी के द्वारा शेखर ोशी समा ा की नई पी ़ी में आए हुए महत्वपूर्ण परिवर्तन को रेखांकित करने का प्रयत्न करते हैं।

4.2.1.3 अकेलापन

बीसवीं सदी के पाँ ावें-छठे दशक से विश्व भर की मानसिकता में ाो सूक्ष्म परिवर्तन शुरू हुए, उसे शब्दों में पकड़ने का प्रयत्न प्रत्येक भाषा के साहित्यकारों ने अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार किया है। इस परिवर्तन के मूल में एक ओर दूसरे महायुद्ध के भयावह अनुभव थे, विज्ञान की प्रगति थी, बदलती अर्थव्यवस्था थी, ब ़ते शहर थे, भूमिगत संघर्ष था, नैतिक मूल्यों पर होनेवाले आघात थे, टूटते परिवार थे। इन सबके कारण अकेलेपन का अनुभव करनेवाले व्यक्तियों की संख्या दिन-ब-दिन ब ़ती ाा रही थी। औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण व्यक्ति औरों से कटकर ाीने के लिए अभिशप्त हो गया। परिणामस्वरूप उसे अकेलापन का बो ा ोना पड़ रहा है।

अकेलेपन के बारे में स्वयं शेखर ोशी लिखते हैं कि-"मनुष्य की भावनाएँ बड़ी वि ाित्र होती हैं। नि ान, एकांत स्थान में निस्संग होने पर भी कभी-कभी आदमी एकाकी अनुभव नहीं करता। लगता है, इस एकाकीपन में भी सब कुछ कितना निकट है, कितना अपना है परंतु इसके विपरीत कभी-कभी सैकड़ों नर-नारियों के बी ा ानरवमय वातावरण में रहकर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है, ाो कुछ है वह पराया है, कितना अपनत्वहीन। पर

[93] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.98

यह अकारण ही नहीं होता। इस एकाकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की ाड़ें होती हैं-विछोह या विरक्त की किसी कथा के मूल में।"[94]

ाब कोई व्यक्ति अपनी ागह छोड़कर दूसरी ागह बस ाता है, तब वह अपने आप को अ ानबी-सा महसूस करता है और खुद को अकेला ि ंदगी के साथ लड़ते हुए सो ाता है। इंसान ाब अकेला पड़ ाता है तो उसके मन में ीने की लालसा नहीं होती। उसके लिए ीना और मरना एक समान होता है। ऐसी बात ाब उसके मन में आती है तब से उसका अकेलापन ब ़ने लगता है। इस अकेलेपन का अंत तब होता है ाब उसे कोई अपना कहलाने वाला आदमी मिलता है। यही बात हमें 'दा यु' कहानी में देखने को मिलती है। इस कहानी का पहाड़ी बालक मदन शहर के एक होटल में काम करते हुए अपने आप को अकेला महसूस करता है तथा उसकी आँखें बराबर किसी ऐसे आदमी का तलाश करती रहती है, ि सि वह अपना तो कह सके, उसका यह अकेलापन तब दूर होता है ाब उसका परि ाय ागदीश बाबू से होता है ो खुद अकेलेपन से पीड़ित है। " ागदीशबाबू के ोहरे पर पुती हुई एकाकीपन की स्याही दूर हो गई और ाब उन्होंने मुस्कराकर मदन को बताया कि वे भी उसके निकटवर्ती गाँव के रहनेवाले हैं तो लगा ैसे प्रसन्नता के कारण अभी मदन के हाथ से 'ट्रे' गिर पड़ेगी। उसके मुँह से शब्द निकलना ाहकर भी न निकल सके। खोया-खोया-सा वह अपने अतीत को फिर लौट-लौटकर देखने का प्रयत्न कर रहा हो।"[95]

इस कहानी के अकेलेपन के संदर्भ में देवेंद्र कुमार ौबे लिखते हैं कि- "शेखर ोशी की इस कहनी की संवेदना को देखें तो एक बात स्पष्टतः उभरकर सामने आती है 'हिंदी कहानीःअलगाव का दर्शन' (The theme of

---

[94] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.7

[95] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.8

alienation in modern hindi short stories) में नयी कहानी में अलगाव-बोध को दर्शाते हुए गार्डन ाार्ल्स रोडरमल ने लिखा है कि-"नगर की पृष्ठभूमि में अकेलापन और अलगाव की विषय-वस्तु नयी कहानी में बार-बार आती है। खुद लेखकों की तरह उनके पात्र भी कहीं और से बड़े शहर में आये हैं। लेकिन ीवन में यह अलगाव का बोध केवल शहर के कारण ही आया है, बल्कि औद्योगिक समा ा, ब ़ती आर्थिक विषमता, अंधा-धुंध ब ़ने की प्रवृत्ति आदि कारणों से भी आया है। यह बोध आगे भी ालता रहता है।"[96]

पारिवारिक विघटन और कटु परिस्थितियों के कारण ाब व्यक्ति के विश्वास और आस्था के सारे सहारे छूट ाते हैं तब ीवन में अलगाव की स्थिति उत्पन्न होती है। यह स्थिति बड़ी भयानक होती है। मूल्यों की विसंगतियों में ाब व्यक्ति यह अनुभव करने लगता है कि उसके मूल्यों का समा ा में कोई आदर नहीं होता है-व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर पाता और उसे ीवन निरर्थक लगने लगता है तो ऐसी स्थिति में वह अलगाव की स्थिति में फंस ाता है और ीवन की वस्तुओं और विसंगतियों को ोलते- ोलते टूटकर अपने मूल्यों से, स्वयं से तथा दुनिया से अ ानबी हो ाता है। 'किं करोमि ानार्दन' के नित्यान यु पात्र में हम इस अलगाव और अ ानबीपन को देख सकते हैं। नित्यान यु की धार्मिक भावना को परिवार के किसी से आदर नहीं मिलता। अपने अस्तित्व की रक्षा न कर पाने के कारण वह अलगाव की स्थिति में फंस ाता है। "आत्मग्लानि के कारण नित्यान यु का मन तिलमिला उठा। इसी क्षण इस नश्वर शरीर का परित्याग कर देने की तीव्र इ छा मन में उठने लगी। भौतिक ागत की प्रत्येक वस्तु उनकी दृष्टि में

[96] हंस, रा ोंद्र यादव, अप्रैल-1990

आकर्षणहीन हो उठी।"[97] शेखर ोशी नित्यान यु पात्र के द्वारा परिवार के विघटन से उत्पन्न अलगाव और अ ानबीपन का सशक्त ित्रण किया है।

अ ानबीपन के मूल में असमर्थता और विवशता है। इसके संबंध में विद्वान 'सोमन' ने 'आन द मीनिंग आफ एलिएनेशन' नामक अपने एक लेख में लिखा है कि-"अ ानबीपन के मूल में असमर्थता व विवशता की भावना है िससे क्रमशः सामाि ाक ीवन की अर्थहीनता व आदर्शहीनता उ ागर होती है। और मूल्यगत खोखलेपन का अनुभव होता है। ो धीरे-धीरे सामाि ाक ीवन की उदासीनता और अलगाव में बदलकर मनुष्य के ीवन को एकाकीपन और अ ानबी की भावना से भर देता है। इस तरह सब मिलाकर ीवनगत असमर्थता, विवशता, अर्थहीनता, आदर्शहीनता, मूलगत खोखलापन, अलगाव, अकेलापन, परायापन और आत्मनिर्वासन की अनुभूति अ ानबीपन की भावना के मूल प्रेरक तत्व हैं।"[98]

आधुनिक समा ा की सबसे बड़ी समस्या अकेलापन है। डॉ.देवीशंकर अवस्थी के शब्दों में कहें तो-"आधुनिक मानव का अकेलापन ही इनकी त्रासदी और विडंबना है।"[99] शहरीकरण के कारण यादातर लोग अपने परिवेश से कट कर शहरों में विवशता से रहते हैं। लेकिन उनके भीतर ि ंदगी ीने में ही सार्थकता का अनुभव करते हैं। अपने ीवन की सार्थकता की खो ा में छटपटाने लगते हैं। यही छटपटाहट हम 'व्यतीत' कहानी में देखते हैं। इस कहानी का 'बाबू' अपने बेटे की नौकरी की व ाह से अपने परिवशे से कट कर शहर में रहने लगता है। लेकिन वह हमेशा अपने गाँव वापस ाने की कल्पना

[97] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.37
[98] आधुनिक हिंदी उपन्यास और अ ानबीपन, डॉ.विद्याशंकर राय-पृ.12
[99] ऐ लड़की, कृष्णा सोबती-पृ.28

करता रहता है और न ाने के कारण अपने आप को अकेला महसूस करने लगता है।

आधुनिक परिवेश में ीता हर मनुष्य, ाहे वह पुरुष हो या स्त्री सभी अकेलेपन की त्रासदी को ोल रहे हैं। महानगरीय ीवन ीती नारियाँ अकेलेपन के कारण रिक्तताबोध का अनुभव करने लगी हैं। विशेष रूप से शिक्षित, आत्मनिर्भर नारियाँ इस दशा को अधिक ोल रही हैं। नौकरी करते वक्त उनको एक क्षण भी विश्राम नहीं मिलता बल्कि रिटायरमेंट के बाद उनको अकेलेपन और रिक्तताबोध का आभास होने लगता है। 'रिक्त' कहानी की 'मीना' में हम इस स्थिति को देख सकते हैं। मीना काले ा में काम करते हुए बड़ी व्यस्तता का ीवन बिताती थी। लेकिन रिटायरमेंट के बाद वह रिक्तबोध का अनुभव करने लगती है-"अखबार के छितरे हुए पन्नों को तहाकर मे ा पर रखते हुए मीना को ैसे अपनी व्यस्तता के लिए एक सहारा मिल गया। अटपटे ंग से तहाये हुए अखबार के पन्नों को उसने करीने से मोड़कर क्रमवार लगाया और फिर उसी करीने से मे ा पर रख दिया।"[100]

'कोसी का घटवार' कहानी भी इस अकेलेपन और अलगाव के केंद्र में है। यह अकेलापन शहर की व्यस्तता के कारण नहीं है बल्कि ीवन में अपना कहलाने लायक कोई न रहने के कारण उत्पन्न अकेलापन है। इस कहानी के गुस्साई पात्र के कारण उत्पन्न अकेलापन है। इस कहानी के गुस्साई पात्र में अकेलापन देख सकते हैं। "कभी-कभी गुस्सई का यह अकेलापन काटने लगता है। सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, ि ादंगी-भर साथ देने के लिए ो अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है वही। ि ासे अपना कह सके ऐसे किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं।"[101] यह अकेलापन शब्द कहानी

---

[100] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.55

[101] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.61

में बार-बार आता है। पूरी कहानी गुस्साई के अकेलेपन को रेखांकित करती है।

इस कहानी के अकेलेपन के संदर्भ में विवेक सिंह लिखते हैं कि-" ाब हिंदी कविता और कहानी में पश्चिमी आधुनिकतावाद से लिया हुआ अकेलापन फैशन में था, शेखर जोशी ने निम्न श्रेणी के पात्र के अकेलेपन का मार्मिक वर्णन करके झूठ और सच के बीच का फर्क बतला दिया।"[102]

अकेलेपन की समस्या से केवल बड़े ही नहीं बल्कि बच्चे भी पीड़ित है। 'गिद्ध' कहानी का राजेंद्र विमाता के घर में रहते हुए अपने आप को अकेला महसूस करता है-" ांदर, सल्ली और नीपु की गिनती अब तक खत्म हो चुकी थी। अपनी-अपनी पसंद के खिलौने छाँटने में उन्होंने बीसियों बार एक दूसरे से अदला-बदली की, परंतु राजु को जो खिलौने एक बार दे दिए गए, उन्हीं को लेकर वह अपना किताबों की ताक पर रख आया।"[103] इससे स्पष्ट होता है कि राजेंद्र अलगाव और अकेलेपन की भावना के कारण अन्य बच्चों की तरह जिद्द नहीं करता।

इंसान अकेलापन व अलगाव उस वक्त महसूस करता है, ाब अपना कोई उन से दूर चला जाए, उनकी यादें हमारे साथ रह जाती हैं, इस बात को 'कविप्रिया' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी की शीला गिरीश से प्यार करती है पर गिरीश घर के कलह के कारण घर से दूर रहता है तो वह अकेलापन महसूस करने लगती है। शीला कहती है-"इस असह्य एकाकीपन की सीमा से उसी क्षण भाग जाने को मन होता है।"[104]

---

[102] कसौटी, शेखर जोशी-पृ.252
[103] बच्चे का सपना, शेखर जोशी-पृ.103
[104] बच्चे का सपना, शेखर जोशी-पृ.69

इस से स्पष्ट होता है कि अकेलापन गाँव या शहर में नहीं रहता है बल्कि मनुष्य के मन में होता है। क्योंकि हज़ारों व्यक्तियों के बी ा में रहकर भी कुछ लोग अकेला महसूस करते हैं तो कुछ लोग ानविहीन प्रदेश में रहते हुए भी अकेला महसूस नहीं करते।

अतः शेखर ोशी की कहानियों के सभी पात्र किसी-न-किसी रूप में अकेलेपन की पीड़ा भोगते हुए प्रतीत होते हैं। मुख्यतः 'मेरा पहाड़' संग्रह की कोई कहानी नहीं है ि ासका पात्र अकेलेपन से पीड़ित हो।

4.2.1.4 मृत्युबोध

वर्तमान समय में समा ा की एक और समस्या मृत्युबोध है। इस समस्या के कारण और मनःस्थिति के बारे में शेखर ोशी ने अनेक कहानियों में लिखा है ैसे 'मृत्यु', ' ी ह ुरिया', 'किं करोमि ानार्दन', 'विस नि' आदि।

मनुष्य के ीवन में ान्म और मरण दोनों महत्वपूर्ण हैं क्योंकि एक के बिना दूसरे का कोई अर्थ नहीं रहता। इसी प्रकार सुख और दुख का भी बड़ा महत्व है। अकेले सुख में ीवन विकृत हो ाएगा। अकेले दुख से भी ीवन असह्य और विकृत हो ायेगा। गीता में कहा गया है कि-"सुख और दुख, लाभ और हानि, ाय और परा ाय तीनों को समान सम ाना।"[105] गीता का यह बोध मनुष्य के लिए अत्यन्त हितकर और आवश्यक भी है।

आधुनिक समय में व्यक्ति निराशा, कुंठा, संत्रास, अकेलापन, विघटित ीवन शैली का ीवन ी रहा है। समा ा में यंत्रीकीकरण मानव को भी यंत्र बना दिया। परिणामस्वरूप मानव अपने आपको मृतप्राय मानने लगता है। विशेष रूप से महानगर के यांत्रिक ीवन में मानव की सारी संवेदनाएँ विघटित हो ाती हैं। उसे अनुभव होने लगता है कि वह किसी मुर्दा अथवा मृत माहौल

[105] परम सखा मृत्यु, काका साहब कलेलकर, भूमिका के पृ.सं.छह

में सांस ले रहे हों। सामा ि क सह संबंधों से कटे रहने के कारण असुरक्षा की एक ऐसी छटपटाहट दृष्टिगो ार होती है ो उसे ीने की परिस्थितियों में भी मृत्युबोध की अनुभूति को उत्पन्न करती है। इस स्थिति को हम 'किं करोमि ानार्दन' कहानी के नित्यान यु पात्र में देख सकते हैं। घर के अंतरंग कलह देखकर उसमें मृत्युबोध की अनुभूति उत्पन्न होती है। "आत्मग्लानि के कारण नित्यान यु का मन तिलमिला उठा। इसी क्षण इस नश्वर शरीर का परित्याग कर देने की तीव्र इ छा मन में उठने लगी। भौतिक ागत की प्रत्येक वस्तु उनकी दृष्टि में आकर्षणहीन हो उठी।"[106]

आधुनिक मनुष्य भी परलोक और नरक पर विश्वास करते हैं। मुख्यतः धार्मिक लोग। उनका मानना है कि अपने पाप-पुण्य के अनुसार मृत्यु के बाद परलोक या नरक मिलता है। मृत्यु के इसी डर के कारण पुण्य कार्य करने लगते हैं ैसे 'किंकरोमि ानार्दन' का नित्यान य। "आंगन में सुखाने के लिए डाले गये धान में गाय-बछिया आकर मुँह मारने लगे, तो भी नित्यान यु उसे स्वयं नहीं हटाएँगे। वह तो सू ाना-भर दे देंगे, ओरी कमला देख गाय आयी है। सीधे गाय को हटा देने से संकल्प टूट ाएगा, परलोक बिगड़ ाएगा न। सारी ि ंदगी परलोक ही बिगाड़ा किये, अब बु ापे में भी कुछ पुण्या नि न हुआ तो..."[107]

मृत्यु के डर से उत्पन्न यह दुख बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि "सुख ीवन रूपी महासागर पर तैरना सिखाता है, दुःख उस महासागर में डुबकी लगाकर अंदर से महान तत्व रूपी मोती लाने की कला और हिम्मत देता है।"[108] सुख मानव को ीवन का सही अर्थ नहीं सम ा सकता मगर दुख से

---

[106] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.37

[107] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.38

[108] परमा सखा मृत्यु, काका साहब कलेलकर, पृ.सं.भूमिका, छह

मानव स्वयं अपने ाीवन को सार्थक बनाने का प्रयत्न करता है। इस संदर्भ में काका कालेलकर ने कहा है कि "दुख सत्यं, सुख माया, दुख ान्तोः परं धनम्।"[109]

मृत्यु से सभी डरते हैं। मुख्यतः वृद्ध लोग। वृद्धों का यह डर हमें ‘ ाी-ह ारिया’ कहानी के ह ारिया पात्र में देखने को मिलता है। अपने साथी की मृत्यु से डर कर ह ुरिया मृत्यु के प्रसंग से दूर रहना ाहता है-"एक अज्ञात भय के कारण वह बार-बार मृत्यु की इस ा र्ा को अनसुनी कर देना ाहता था।"[110] यह डर केवल अपने प्राणों के लिए ही नहीं होता बल्कि उनकी मृत्यु से परिवार की दशा की कल्पना करके डरने लगते हैं-"मृत्यु की कल्पना से एकबारगी सिहर उठा ह ूरिया। केवल अपने ही प्राणों का मोह नहीं, बु ़ैती में ब्याह करने के कारण एक अभागिन और दो नन्हे-मुन्हे अनाथों का शोक भी ैसे उस सिहरन का कारण था।"[111] लेकिन ाीवन को कृतार्थ करने के लिए मरण आवश्यक है।

मृत्यु की बात सम ाते हुए काका कालेलकर ने कहा है कि-"प्राणियों के लिए ईश्वर की सबसे श्रेष्ठ देन था वरदान कोई हो, खुदा की अ छी-से-अ छी नियामक कोई हो, तो वह मरण ही है। अगर भगवान हम से मरण छीन लेगा तो उसके खिलाफ सत्याग्रह करके मैं आत्म-हत्या ही करूँगा।"[112]

मृत्यु से भी अधिक भयानक मृत्यु की प्रतीक्षा है। इस संबंध में ‘मृत्यु’ कहानी का पात्र अपना मत इस प्रकार प्रस्तुत करता है-"दर्दनाक होने न होने का दृष्टिकोण तो हम लोगों का है। मैं तो सो ाता हूँ, रोग-शय्या पर वर्षों पड़े रहने

---

[109] परमा सखा मृत्यु, काका साहब कलेलकर, पृ.सं.भूमिका, छह
[110] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.70
[111] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.70
[112] परम सखा मृत्यु, काका साहब कलेलकर, भूमिका पृ.4

के बाद मरने की अपेक्षा क्षण-भर के आवेग में ीवन का इस प्रकार अंत कहीं कम दर्दनाक होगा।"[113] उसीने आगे ालकर अ ानक होनेवाली मृत्यु पर अपना मत स्पष्ट करते हुए कहा है कि-"मृत्यु को ऐसा आकस्मिक आक्रमण नहीं करना ाहिए। मनुष्य की कितनी अधूरी आकांक्षाएँ होती हैं।"[114]

दूसरों की मृत्यु का ब ों पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है उसे हम मृत्यु कहानी के कौस्तुभ के वाक्यों से देख सकते हैं। "मैं तो कहता हूँ, ब ापन में एक ऐसी भी अवस्था आती है, ाब मृत्यु के साथ प्रमुख रूप से भय की भावना ही ुड़ी रहती है। मु ो अपने गाँव की एक बु ़िया बुआ की मौत की याद है।"[115] इससे स्पष्ट होता है कि मृत्यु के डर से ब ों से बू ़ों तक पीड़ित हैं।

शेखर ोशी अपनी कहानियों के अनेक पात्रों द्वारा इस मृत्युबोध की समस्या को स्पष्ट करते हैं ो इस आधुनिक समा ा की सबसे बड़ी समस्या है।

4.2.1.5 प्रेम

शेखर ोशी ने अपनी कुछ कहानियों में स्त्री-पुरुष के बी ा के रागात्मक आकर्षण अथवा प्रेम का ित्रण किया है। ैसे 'कोसी का घटवार', 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ', 'कविप्रिया' आदि।

इस दृष्टि से 'कोसी का घटवार' उनकी अविस्मरणीय पहली प्रेम कहानी है। इस कहानी का गुसाई और लछ्मा दोनों एक दूसरे से प्यार करते हैं लेकिन परिवार में अकेले होने और फौ ा की नौकरी के कारण ही उसे अपनी प्रेमिका लछमा को खोना पड़ा था। ाब उसने लछमा के बाप तक उससे शादी का प्रस्ताव पहुँ ाया था, तो उसने कहा था-"ि ासके आगे-पीछे भाई-बहिन नहीं,

---

[113] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.122
[114] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.122
[115] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.122

माई-बाप नहीं, परदेश में बंदूक की नोक पर ाान रखनेवाले को छोकरी कैसे दे दें हम?"[116] वर्षों बाद ाब वे मिलते हैं कि "कोसी की सूखी धार अ ाानक ाल-प्लावित होकर बहने लगती, तो भी लछमा को इतना आश ार्य नहीं होता, ि ातना अपने स्थान से केवल ाार कदम की दूरी पर गुसाई को इस रूप में देखने पर हुआ।"[117] इसके बाद लछमा के प्रसंग में सिर्फ यह कि उसके हाथ की रोटी खाते हुए ाब गुसाई ने उससे कहा कि "लोग ठीक ही कहते हैं, औरत के हाथ की बनी रोटी में स्वाद ही दूसरा होता है, तो 'लछमा' ने करुण दृष्टि से उसकी ओर देखा।"[118] इस से उन दोनों के बी ा का रागात्मक संबंध स्पष्ट हो रहा है।

किसी ने कहा कि-प्रेम त्यागना ानता है बलिदान नहीं यही बात इस कहानी के गुसाई पात्र में देख सकते हैं। लछमा शादी से पहले गंगनाय यु की कसम खाकर कहती है-" ैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूँगी। मगर वैसा न करने के कारण भगवान को क्रोध से ब ाने के लिए गुसाई कहता है-"कभी ाार पैसे ुड़ ाएँ, तो गंगनाथ का ागर लगाकर भूल- ूक की माफी माँग लेना। पूत-परिवारवालों को देवी-देवता के कोप से ब ा रहना ाहिए।"[119]

इस कहानी के संदर्भ में विवेक सिंह लिखते हैं कि-"शेखर ोशी की यह आंरभिक कहानियों में से है, लेकिन इस दृष्टि से बेमिसाल कि इस स्थल का वर्णन (वर्षों बाद ाब दोनों मिलते हैं) में कहीं कथाकार का हाथ नहीं कांपता और ि ात्र अतिशय साधे हुए रूप में अंकित होता है। गुसाई और लछमा के

[116] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.19
[117] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.23
[118] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.27
[119] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.28

बी ा अपनी परिस्थिति-संबंधी सू ानाओं का आदान-प्रदान होता है, पर प्रकट रूप में विगत प्रेम की कोई ा ार्ा नहीं होती।"[120]

आर्थिक स्थिति के कारण प्रेम में उत्पन्न परिस्थिति को 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी में वीरेंद्र से शैल प्यार करती है। इसके संबंध में वीरेंद्र कहता है कि-"कभी-कभी मामा के घर में उससे भेंट होने पर एक-दो औप ाारिक बातें होतीं। तब एकटक अपनी ओर उसे देखते हुए मु ो लगता कि ैसे वह और भी कुछ कहना ाहती हो।"[121] नौकरी की अपेक्षा के कारण शैल की माँ भी उन दोनों की शादी करवाना ाहती है लेकिन न मिलने की व ाह से शैल का इंगे ामेंट किसी और से हो ाता है। इस कहानी में शैल के अव्यक्त प्रेम से उत्पन्न दुख का ित्रण किया गया है और वीरेंद्र की आर्थिक तंगी।

इसी प्रकार का एक पक्षीय प्रेम हमें 'कविप्रिया' कहानी में भी देखने को मिलता है। इस कहानी की शीला, गिरीश से प्यार करती है। इसीलिए गिरीश की "नि ीव पुस्तक को हाथों में लेकर भी उसे लगा कि ैसे गिरीश की स ाीव देह का स्पर्श हो रहा हो।" "उसका गिरीश कवि है, यह सो ाकर उसे गर्व, आनंद और रोमां ा की अनुभूति होने लगी। धड़कते हृदय से उसने पुस्तक खोली। मस्तिष्क में एक वि ाार आया, कहीं कुछ लिख न दिया हो। और ल ाा से उसकी कनपटियाँ आरक्त हो गयीं।"[122] लेकिन गिरीश कहीं पर भी उसके बारे में नहीं लिखता। गिरीश की इस उपेक्षा के कारण वह रोने लगती है। "भावावेग में शीला की आँखें भर आयीं। कमरे की निस्तब्धता को ीरती हुई

---

[120] कसौटी, अंक-15-पृ.252

[121] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.82

[122] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.82

मौसी के पैरों की आवाज़ निकटतर होती गयी। इससे पहले कि मौसी कुछ पूछती, शीला ने ही आँखों पर आँ ाल रखकर धुएँ की शिकायत कर दी।"[123]

इस प्रकार शेखर ोशी किसी कहानी में असफल प्रेम का संवेदनात्मक ित्रण करते हैं तो कहीं एक पक्षीय प्रेम से उत्पन्न दुख और दर्द का सशक्त ित्रण भी करते हैं।

4.2.1.6 वृद्ध और विधवाओं की परिस्थिति

वृद्धावस्था शारीरिक परिवर्तन से संबंधित है। वे ाो भी कार्य करते हैं, वह बहुत कुछ पुरातन काल से ाली आ रही परंपराओं, रीति-रिवा ाों तथा व्यवहार के प्रतिमानों के अनुसार ही होता है। प्रा ाीन काल में घर के मुखिया यही वृद्ध लोग हुआ करते थे। लेकिन इस अर्थ आधारित समा ा में अब मुखिया वही होता है ाो पैसा कमाता है। इस कारण भारत में संयुक्त परिवार अब धीरे-धीरे एकल परिवारों में बदलते ाा रहे हैं।

वृद्धावस्था में लोग अपने परिवार के साथ सुखी ाीवन ाीना ाहते हैं। लेकिन बहुओं की ईर्ष्या और कलह के कारण ाी नहीं पाते। इस अवस्था में वे लोग गौरव और सम्मान के साथ ाीना ाहते हैं। किसी के उपेक्षा भाव को सह नहीं पाते। इस स्थिति का ित्रण हमें शेखर ोशी की 'किं करोमि ानार्दन' शीर्षक कहानी में देखने को मिलता है-"नित्यान यु के लिए और अधिक कुछ सुनना अंसभव हो गया। उन्हें लगा, ैसे उनका समस्त ाीवन व्यर्थ बीत गया हो। ाीवन के इस अंतिम ारण में भरे-पूरे, सुनियंत्रित, सुखद पारिवारिक ाीवन का स्वप्न ैसे आ ा भंग हो गया हो। उनकी कल्पना मिथ्या थी। आ ा

[123] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.82

प्रत्यक्ष रूप में उनके सम्मुख ो सत्य खड़ा था, वह था घर के अंतरंग का कोलाहल, बहुओं की ईर्ष्या, वृद्ध के प्रति परिवार का उपेक्षा भाव।"[124]

परिवार के वृद्ध लोग अपनी संतान को आँखों के सामने देखना ाहते हैं। पारिवारिक विघटन और बँटवारा ैसी बातों को वे लोग सह नहीं पाते। 'परिक्रमा' कहानी का हरिदत्त अपने ब ों के मुँह से बँटवारे की बात सुन कर कहने लगता है कि-"रामी! ि स दिन मैं मर ाऊँगा, उस दिन तुम पहले बँटवारा करना फिर मेरी अर्थी उठाना। पर ाब तक मैं ि ंदा हूँ, कभी ऐसी बात इस घर में नहीं उठेगी। क्रोध और दुख के कारण उनका शरीर काँपने लगा था और आँखें भर आयी थीं।"[125] इससे स्पष्ट होता है कि वृद्ध लोग संयुक्त परिवार का ही समर्थन करते हैं।

वृद्धावस्था में आयु-वृद्धि के साथ-साथ ो शारीरिक, सामा ाक ओर सांवेगिक परिवर्तन उपस्थित होते हैं, उस कारण परिवार तथा पास-पड़ोस के लोगों से समायो न करने की आवश्यकता होती है। वे लोग ैसे अपने परिवार से प्यार करते हैं उसी प्रकार अपने गाँव वालों और पड़ोसियों को भी देखने की इ छा रखते हैं। इसी इ छा के कारण 'टूटन' कहानी का त्रिलो न कहता है कि-"तुमने अ छा किया इस बार ाल्दी लौट आये। ऐसे ही सब लोग दो-दो, ार- ार महीनों में घर का एक ाक्कर लगा लें तो गाँव में रौनक बनी रहे। अब हम लोगों का क्या ठिकाना। आ ा हैं, कल की राम ाने। आखिरी बिदाई सम ो। सब से भेंट-घाट हो ाए तो मन में कसक तो नहीं रहेगी।"[126]

वृद्धावस्था में लोगों में अनेक परिवर्तन आते हैं। हर बात और विषय पर स्वयं निर्णय लेने वाला व्यक्ति भी वृद्धावस्था में दूसरों के निर्णय पर निर्भर

---

[124] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.38
[125] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.143
[126] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.89

करने लगता है। इस स्थिति को हम 'व्यतीत' कहानी के बाबू पात्र में देख सते हैं-"अभी तो खाना खाया था.... खैर, तुम्हारी इ छा।"[127]

इस अवस्था में वे लोग अपने ब ों के साथ समय बिताना ाहते हैं। ऐसा न होने के कारण अपने आप को अकेला सम ाने लगते हैं। 'व्यतीत' कहानी का बाबू अपने बेटे के उपेक्षा भाव से ग्रस्त है-"पहले रमेश रो ा दो-ार मिनट बाबू के निकट बैठकर बात ीत करता था। काम-का ा के बारे में मशविरा लेता था। दफ्तर की, पड़ोसियों की, या रिश्तेदारों की किसी बात को लेकर बातों का क्रम ालता और फिर अक्सर ब ों के भविष्य की, गाँव की, ामीन- ायदाद की बातें होतीं।"[128] लेकिन अब समय न मिलने की व ाह से ठीक से अपने पिता से बात नहीं कर पाता। परिणाम स्वरूप बाबू कटा-कटा-सा रहने लगता है। शेखर ोशी की इस कहानी में वृद्धों के प्रति उपेक्षा भाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

वृद्धावस्था में लोग अपने समय की परंपराओं और रीति-रिवा ों का पालन नई पी ़ी के लोगों के साथ करवाना ाहते हैं। अतः स्वाभाविक ही है कि ऐसे समा ा में युवा पीि ़याँ प्रायः विद्रोह करती हैं अथवा द्वेष से पीड़ित रहती हैं। युवा पी ़ी इस आधुनिक समा ा में आधुनिक तरीके से रीति-रिवा ों का पालन करना ाहती है। इस विषय पर दोनों पीि ़यों में संघर्ष होने पर भी वृद्ध लोग ब ों के आनंद के लिए आधुनिक पद्धतियों का पालन करने के लिए तैयार हो ाते हैं। लेकिन उनका अंतर्मन इन आधुनिक पद्धतियों को स्वीकार नहीं कर पाता। वृद्ध लोगों की यह उल ान हम 'विडुवा' कहानी के बड़े ठाकुर में देख सकते हैं। "बड़े ठाकुर धीरे-धीरे बे ैनी अनुभव करने लगा। उनका मन हुआ कि उठकर विडुवा बंद करा दें। लेकिन सब लोग ि ास तल्लीनता से उसे

---

[127] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97
[128] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97

देख रहे थे, उसमें अपना ऐसा व्यवहार उन्हें संगत नहीं प्रतीत हुआ। वह ुप ाप तख्त से उठे और घर के अंदर ाल दिए।"[129]

इस प्रकार शेखर ोशी ने अपनी कहानियों के द्वारा वृद्ध लोगों के प्रति उपेक्षा भाव और उनके दुख, दर्द और अंतःसंघर्ष को सफलता पूर्वक प्रस्तुत किया है। इस के साथ-साथ उन्होंने विधवाओं की दयनीय स्थिति का भी वर्णन अपनी अनेक कहानियों में किया है। ैसे विस नि, कथा-व्यथा, संवादहीन, गोपुली बुबु, सिनारियो, कोसी का घटवार, परिक्रमा आदि।

हमारे देश में विधवाओं की स्थिति बहुत दयनीय है। उन्हें अशुभ माना ाता है। परिवार के सदस्यों से उन्हें किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती। परिणामस्वरूप विधवा दुःखों के बो ा को ोती हुई ीवन यापन करने को विवश है। इस स्थिति का ित्रण हमें 'कोसी का घटवार' कहानी की लछमा के शब्दों में मिलता है। "ि ासका भगवान नहीं होता, उसका कोई नहीं होता। ोठ-ोठानी से किसी तरह पिण्ड छुड़ाकर यहाँ माँ की बीमारी में आयी थी, वह भी मु ो छोड़कर ाली गयी। एक अभागा मु ो रोने को रह गया है, उसी के लिए ीना पड़ रहा है। नहीं तो पेट पर पत्थर बाँधकर कहीं डूब मरती, ं ाल कटता।"[130]

औद्योगीकरण की व ाह से सभी लोग शहर की राह देखते हैं तो केवल विधवाएँ गाँव में रह ाती हैं। बाल विधवा की मनःस्थिति का ित्रण हमें 'विस नि' कहानी के भाभी में देखने को मिलता है। वह "पुरखों की देहरी पर ही अपनी आखिरी साँस छोड़ने की उन्होंने दुहाई दी तो और अधिक आग्रह करने का साहस तारी और मँ ाले में से किसी का न हुआ।"[131]

---

[129] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.36
[130] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.68
[131] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.68

विधवा के लिए कोई सहारा नहीं देता। लेकिन दो विधवाओं के लिए एक दूसरे का सहारा मिलता है। "सरुली बुआ, ोा स्वयं भी विधवा थी और वर्षों से मायके में अपने भाइयों की ामीन- ायदाद की देख-रेख करते हुए िंदगी काट रही थी, भाभी के सुख-दुःख की साथिन थीं। सुख तो भला दोनों की िंदगी में क्या था लेकिन दुःख-तकलीफ में दोनों को एक-दूसरे का सहारा रहता था। पात-पतेल से लेकर खेती-पाती, पू ाा-पाठ में दोनों दो देह एक प्राण होकर रहती थीं।"[132] शेखर ोशी ने अपनी कहानी में इस ित्रण के द्वारा विधवाओं की दयनीय स्थिति का स ाीव और सशक्त ित्रण किया है।

इसी प्रकार का सहयोग हमें 'परिक्रमा' कहानी में भी देखने को मिलता है। शेखर ोशी के इन शब्दों से यह बात स्पष्ट होती है कि-"अपना सामान सहे ाते हुए, ोठी को हरीश की माँ (विधवा) से साथ ालने की तैयारी करने के लिए नहीं कहना पड़ा। वह स्वयं ैसे ानती हो कि उन दोनों की मं िल एक ही है।"[133]

नौकरी की व ाह से लड़के शहर के हो ाते हैं तो शादी करके लड़कियाँ अपने ससुराल की हो ाती हैं। गाँव में केवल अभावग्रस्त विधवा रह ाती है। 'सिनारियो' और 'संवादहीन' कहानियों में इस प्रकार की असहाय महिलाओं का ित्रण है। संपन्न मध्यवर्ग की ताई परिवार के पलायन के कारण 'संवादहीन' होने की कगार पर हैं तो सिनारियो कहानी की आमा आ ान्म अभाव ग्रस्त और दुखों के बो ा को ोती हुई ीवन यापन करने को विवश हैं।

विधवा का साथ केवल अकेलापन देता है। अपने इस अकेलेपन के कारण ीवन निरर्थक लगने लगता है। एक-एक दिन बहुत कठिनाई से बिताना पड़ता है। विधवा की इस स्थिति का ित्रण 'कथा-व्यथा' कहानी में शेखर

---

[132] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.151

[133] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.147

ोशी इस प्रकार करते हैं-" ीवंती ने ाल्दी- ाल्दी सब काम निबटाया। अकेले पेट के लिए खाना बनाने में ही कितना आलस्य हो आता है। सप्ताह में कई दिन वह भूखी ही रह ाती है। आ ा भी उसका मन ूल्हा ालाने को नहीं हुआ।"[134] इस से यह बात स्पष्ट है कि विधवा ीवन अकेलेपन की व ाह से अरुिकर लगता है। विधवा को किसी ीज़ के प्रति रुि ा नहीं रहती। यहाँ तक कि खान-पान पर भी।

4.2.1.7 पर्वतीय ीवन

शेखर ोशी ो एक पहाड़ी लेखक हैं उन्होंने अपनी कहानियों में पहाड़ी प्रांत में ीनेवाले लोगों के हर दुख और दर्द को सह ा रूप से प्रस्तुत किया है। अपने पहले कहानी संग्रह 'मेरा पहाड़' (1958) की कहानियों में पहाड़ से विस्थापित होते हुए भी उसके प्रति लगाव या ुड़ाव को कम नहीं किया है।

पर्वतीय भू भाग मैदानी भाग से भिन्न है। पर्वतीय क्षेत्र पहाड़ों से और वहाँ के प्रकृति सौंदर्य से मन को मोहित करता है। शेखर ोशी अल्मोड़ा पहाड़ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन इस प्रकार करते हैं-"आसमान साफ था। अस्त होते हुए सूर्य का आलोक किन्हीं अदृश्य दिशाओं से आकर उस संपूर्ण हिम-विस्तार को सिंदूरी आभा बैंगनी रंग में परिवर्तित होने लगी और पर्वत श्रृंखला की सलवटें गहरी श्यामल रेखाओं में अपनी पह ान बनाने लगी थी।"[135]

इस प्राकृतिक सौंदर्य और ठंड के कारण गर्मियों में पहाड़ की यात्रा करनेवाले लोगों की संख्या भी अधिक होती है। इससे पहाड़ की रौनक ब ़ ाती है। 'छोटे शहर के बड़े लोग' शीर्षक कहानी में लेखक इस स्थिति का

---

[134] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.103
[135] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.129

ित्रण करते हुए लिखते हैं कि-"गर्मियों के मौसम की बात भिन्न है ाब पूरा कस्बा सैलानियों की रंगीनी से खिल उठता है और वे लोग सुबह से लेकर देर रात तक बा ाार, सड़कों व होटलों के छे ाों पर ाहकते-फुदकते रहते हैं। तरह-तरह की कारों, वैनों और गाड़ियों की ि ाल्ल-पों से कस्बा गूँ ाता रहता है। सैलानियों की पोशाक, उनका केश-विन्यास, उनकी ाल- ाल लोगों की उत्सुकता और ा ार्ा का विषय बनी रहती है। शराब, ुआ और रोमांस के कारण आये दिन एक नया शगूफा खिलता है और सी ान खत्म हो ाने पर कस्बे के लोग वर्ष-भर फिर इन घटनाओं की ुगाली करते रहते हैं।"[136]

सर्दियों में यहाँ के लोगों का ीवन दयनीय होता है क्योंकि सर्दियों में पहाड़ी प्रांत में बर्फ पड़ता है। इस बर्फ और ठंड से ब ाने के लिए अधिकांश स्थानीय लोग भी मैदानी क्षेत्रों में ाले ाते हैं तो कस्बे का सूनापन और भी ब. ाता है। कुछ लोग रह भी ाते हैं तो उन्हें ीवन निर्वाह करना कठिन हो ाता है। वे लोग बहुत कठिनाई से छोटे-छोटे काम करते हैं ैसे सड़कों पर बर्फ हठाना आदि। ीवनोपा नि के लिए पहाड़ी लोग नी ो उतरकर शहरों में तरह-तरह के काम करते हैं ैसे होटल की बेयरागिरी से लेकर घरेलू नौकरी तक। इस संदर्भ में शेखर ोशी कहते हैं कि-"प्रकृति का सौंदर्य निरर्थक हो ाता है ाब वहाँ आपके लिए कोई ैविक आधार न हो।"[137]

परिस्थिति वश पहाड़ से विस्थापित होने पर भी पहाड़ियों के मन में अपने पहाड़ के प्रति लगाव कम नहीं होता। 'निर्णय' कहानी का श्रीधर अपने पहाड़ी परिवेश से दूर होने पर भी "अपने छूटे हुए गाँव से मन-ही-मन वह ीवन-भर ुड़ा रहा था लेकिन परिस्थितियाँ उसे परदेस में रहने को म ाबूर

---

[136] शेखर ोशी से उमा गस्थाल की बात ीत, ानवरी-मा र्ा 2006 , पृ.21
[137] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.123

किये हुए थीं।"[138] लेखक के इन शब्दों से पहाड़ के प्रति पहाड़ियों का लगाव स्पष्ट हो रहा है।

इसी प्रकार का लगाव हमें 'व्यतीत' कहानी के बाबू पात्र में देखने को मिलता है। शशि के माध्यम से बाबू ी की मनःस्थिति का ित्रण देखिए-"गाँव की ामीन- ायदाद की बातें होती यहीं उनका प्रिय विषय था। ीवन के पिछले साठ-बासठ वर्षों तक गाँव में िस घर संसार के प्रति वे तन मन से समर्पित रहे थे वही अब किसी ब ो के टूटे खिलौने की तरह हर समय उनकी कल्पना में बिखरा रहता।"[139] पहाड़ियों के लगाव के संदर्भ में डॉ.विक्रम सिंह लिखते हैं कि-"कुमाँऊनी ग्रामीण परिवेश के अधिकांश व्यक्ति आपको शहरों में मिल ायेंगे िन्हें परिस्थितियों वश पहाड़ से विस्थापित होना पड़ा है। उनसे बात ीत करके देखिए आपको मानना पड़ेगा कि विस्थापन से पहाड़ या ग्रामीण परिवेश के प्रति उनका लगाव, दायित्व कम नहीं हुआ है। अपनी अस्मिता और ाड़ों को स्वीकार करने में उन्हें गर्व महसूस होता है, पहाड़ की याद दिल और दिमाग की गहराइयों में स्पंदित होती रहती है।"[140]

पहाड़ी गाँव का नाम सुनकर पहाड़ी लोग िस प्रकार स्पंदित होते हैं और उनके मन के आनंद को हम 'दा यु' कहानी में देख सकते हैं-"उन्होंने मुस्कुराकर मदन को बताया कि वे भी निकटवर्ती गाँव (पहाड़ी गाँव) के रहनेवाले हैं तो लगा ैसे प्रसन्नता के कारण अभी मदन के हाथ से 'ट्रे' गिर पड़ेगी। उसके मुँह से शब्द निकलना ाहकर भी न निकल सके।"[141] इससे

---

[138] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97
[139] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.97
[140] अनुसंधान, अप्रैल, 2011-पृ.41
[141] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.11

स्पष्ट होता है कि पहाड़ी लोगों में विस्थापन के बाद भी पहाड़ के प्रति लगाव कम नहीं होता और पहाड़ की याद मन को आनंदित करती है।

पहाड़ के कुछ लोग नौकरी के लिए विस्थापित होते हैं तो कुछ लोग उ ा शिक्षा की प्राप्ति के लिए पहाड़ी गाँव से विस्थापित होते हैं क्योंकि वर्षा के दिनों में नदी का पानी ब. ाता है, िससे एक गाँव से दूसरे गाँव ाना असंभव हो ाता है। इस स्थिति का ित्रण हम 'गलता लोहा' कहानी में देख सकते हैं-"मोहन कुछ घसियारों के साथ नदी पार कर घर आ रहा था तो पहाड़ी के दूसरी ओर भारी वर्षा होने के कारण अ ानक नदी का पानी ब. गया। पहले नदी की धारा में ाड़- ंखाड़ और पात-पतेल आने शुरू हुए तो अनुभवी घसियारों ने तेज़ी से पानी को काटकर आगे ब.ने की कोशिश की लेकिन किनारे पहुँ ाते-न-पहुँ ाते मटमैले पानी का रेला उन तक आ ही पहुँ ा।"[142]

इस प्रकार के विस्थापन के कारण पहाड़ी गाँवों में केवल वृद्ध और विधवा लोग रह ाते हैं। इस स्थिति का कारण बताते हुए लेखक 'बिरादरी' कहानी में लिखते हैं कि-"प.-लिखकर खेती-किसानी करने का हौसला किसे होता और परिवार की ब.ोत्तरी के साथ पहाड़ की खेती पर निर्वाह किसका होता? पूरे गाँव में अधिकांश घरों में या तो ताले पड़ गये थे या परदेस के माहवारी मनीआर्डर पर आश्रित विधवा ा ी-ताइयों की अकेली गृहस्थी रह गयी थी।"[143]

शेखर ोशी का लगाव ितना प्रकृति से है उतना ही लगाव वहाँ के अभावग्रस्त ीवन से भी। उन्होंने अपनी कहानियों में प्रकृति का कहीं भी अतिक्रमण नहीं किया है। प्रकृति भी वहाँ उस ंदगी की असली स्थिरता को

---

[142] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.84

[143] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.75

दर्शाने तथा वाहँ के निवासियों की यथार्थ स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त हुई है। 'बो ा' कहानी के प्राकृतिक परिवेश में इसे देखा ाा सकता है। "दुकानों के सामने तीन खंभों के त्रिकोण पर टिके हुए तरा ू का एक पलड़ा ध्यान मग्न बगुले की टाँग की तरह ऊपर उठा हुआ था ाारों ओर एक अलस स्थिरता थी। पांगर की डाल पर बैठा हुआ एक कौआ रह-रहकर कांव-कांव कर उठता।"[144] इस प्राकृतिक परिवेश से वहाँ के ीवन की ठहरी हुई िंदगी और वहाँ के निर्धन व्यक्तियों की िंदगी की अलस स्थिति की ओर लेखक संकेत करता है।

लेखक का यह ुकाव हमें 'सिनारियो' कहानी में भी देखने को मिलता है। कहानी की केंद्रीय ारित्र आमा की कठिन अभावग्रस्त िंदगी किंतु, ीने का उद्गम साहस को देखते रवि का ुकाव प्राकृतिक सौंदर्य से अधिक वहाँ के संघर्षमय ीवन के प्रति हो ाता है। इसी ुकाव के कारण उसे अंततः यह आभास हो ही ाता है-"काश इस रंगत को अपने कैमरे में कैद कर पाता।"[145] अतः स्पष्ट है कि लेखक ने इस कहानी के रवि पात्र के द्वारा प्राकृतिक सौंदर्य से भी अधिक उस परिवेश की िंदगी के यथार्थ धरातल को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

इस प्रकार के विस्थापन के कारण अकेलेपन से ू ाते हुए अभावग्रस्त महिलाओं की दयनीय स्थिति का ित्रण भी हमें 'संवादहीन' कहानी में देखने को मिलता है। इस कहानी की ताई संपन्न मध्यवर्ग की होने पर भी परिवार के पलायन के कारण 'संवादहीन' होने की कगार पर हैं। लेखक के इन शब्दों से ताई का अकेलापन स्पष्ट होता है। "भला हो गनपत का िसने ताई के सूनेपन को सहारा दे दिया था, वह न ाने कहाँ से एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता ले आया

---

[144] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.115

[145] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.133

था।"[146] लेखक के इन वाक्यों से यह स्पष्ट होता है कि ताई अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए पहाड़ी तोते को पालती है। इस कहानी में विस्थापन से उत्पन्न अभावग्रस्त महिला की दयनीय स्थिति स्पष्ट हो रही है।

विस्थापन के बाद पहाड़ी लोग अपने छूटे मित्रों को मिलना ाहते हैं। इसी इ छा के कारण 'स्वप्न देश का उदास शाम' शीर्षक कहीन का देबिया कहने लगता है कि-"शाम को इधर आ ाया कीि ाए, भला लगता है, दो घड़ी बातों में ही कट ाती है। आप ैसे लोगों के दर्शन हो गये बड़ा सौभाग्य ...।" [147]

पहाड़ी लोग ात, बिरादरी पर विश्वास करते हैं। इसी विश्वास के कारण उनमें एक प्रकार के अपनत्व की भावना पैदा होती है। इस बिरादरीपन को हम 'समर्पण' कहानी में देख सकते हैं। इस कहानी के ब ुवा पात्र में बिरादरीपन को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। "आ ा तक केवल धर्मपरायण मालिक लोगों को ही ऐसी क्रियाएँ करते हुए उसने देखा था। अपनी ात-बिरादरी के ही एक व्यक्ति को इस प्रकार की क्रिया करते देखकर उसे आश ार्य के साथ-साथ गर्व और प्रसन्नता भी हुई।"[148]

इसी बिरादरीपन के कारण वे लोग एक दूसरे की सहायता करते हैं। परिणामस्वरूप उनका रिश्ता और भी म ाबूत होता है। इस स्थिति का ित्रण हम 'गलता लोहा' कहानी में देख सकते हैं। बिरादरी के एक संपन्न परिवार का युवक रमेश, वंशीधर के बेटे मोहन की प ाई के संबंध में सहायता करता है तो "वंशीधर को ैसे रमेश के रूप में साक्षात भगवान मिल गये हो। उनकी आँखों में पानी छलछलाने लगा। भरे गले से वह केवल इतनी ही कह पाये कि

---

[146] नौरंगी बीमार है, शेखर ोशी-पृ.45
[147] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.160
[148] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.45

बिरादरी का यही सहारा होता है।"[149] वंशीधर की इन बातों से अपनी बिरादरी के प्रति संतुष्ट की भावना स्पष्ट हो रही है।

पहाड़ियों का मानना है कि ितना अधिक अपने बिरादरी के लोग अपने काम-का ों में शामिल होते हैं। उतनी ही अधिक उनकी इ ात ब.ती है। 'बिरादरी' कहानी का ीवन भी इस विषय पर विश्वास करते हुए कहता है कि- "पिछले वर्षों में, अपनी कम ोर आर्थिक स्थिति और दूरी के बाव ूद भी वह परदेस में बिरादरी के परिवारों में होनेवाले काम-का ा में यथा-संभव शामिल होता रहा था और उसे उम्मीद थी कि उसके काम-का ा में भी बिरादरी के लोग शामिल होकर उसकी इ ात रख देंगे।"[150]

अपनी बिरादरी के लोगों के बी ा में कोई दूसरी बिरादरी के लोगों का आना उन्हें पसंद नहीं आता। इस विषय को हम 'विस ंि' कहानी में देख सते हैं-"पुरखों की धरोहर को आनगाँव के, बिरादरी-बाहर आदमी के हाथ बे ा देने का कलंक उन दोनों भाइयों ने अपने माथे पर लगा लिया था। उनके इस अनोखे निर्णय की बिरादरी में सबने निंदा की थी, हालांकि एक-दो बु ुर्गों को छोड़कर और सबने तटस्थता का रुख अपना लिया।"[151]

कुछ बिरादरी ने लोगों के लिए कुछ काम करना मना है ैसे हल ालाना आदि। उनके इस नियति के विरुद्ध करने से बिरादरी के लोग उन्हें ाति से बाहर कर देते हैं। 'हलवाहा' कहानी के बद्री प्रधान (पात्र) के द्वारा इस स्थिति का ित्रण इस प्रकार किया गया है।

---

[149] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.84
[150] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.76
[151] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.150

"भैय्या, कोई दूसरी ाात का आदमी होता तो खुद ही ोत-बो लेता, लेकिन हम लोगों के लिए तो इसका भी निषेध है, बिरादर लोग ाात-बाहर कर देंगे।"[152]

पहाड़ियों में अंधविश्वास भी अधिक है। वे लोग देवी-देवताओं, बाबा लोग और हुणियों पर विश्वाास करते हैं। 'आदमी का डर' नामक कहानी में हुणियों के प्रति पहाड़ियों का विश्वास स्पष्ट होता है-"वे गृहणियाँ िन्हें अपनी पाक कला पर नाज़ रहता था, वे गुड्.ी दादियाँ ो पालने के ब ों से लेकर नवेली बहुओं की बीमारियों तक का अ ूक इला ा ानती थीं। वर्ष भर उनकी उत्सुक प्रतीक्षा करती रहतीं क्योंकि उन छोटी-छोटी थैलियों में उनकी ारूरत की सभी दुर्लभ वस्तुएँ उपलब्ध रहती थीं।"[153] कहानी में 'मैं' नामक पात्र के इन शब्दों से उस पहाड़ी इलाके के लोगों मे व्याप्त अंधविश्वास स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहे हैं।

स्पष्ट है कि शेखर ोशी का लगाव प्रकृति से भी अधिक रूि.यों में ाकड़े हुए असहाय, बेसहारा, निर्धन व्यक्तियों से है। ऐसा नहीं कि वे केवल उनकी िंदगी की ाहालत को ही रूपायित करते हैं बल्कि उस परिवेश के साथ-साथ उनकी िंदगी के विविध पक्षों को बिना किसी लाग लपेट के ित्रित करते हैं।

'बो ा' कहानी में पहाड़ी प्रांत के निर्धन, बेसहारा लोगों का प्रतिनिधित्व कहानी का नायक करता है िनका श्रम का निरंतर शोषण होता रहता है, ाहे वे शोषक शहर के शैलानी हो या गाँव के ही अपने बिरादर प्रधान थी। सभी समान रूप से उसका शोषण करते हैं। पेशे से घोड़िया इस नायक का अंततः यात्रियों के सामान का बो ा न उठाने का प्रतीकात्मक रूप में एक ओर अपने

---

[152] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.55

[153] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.112

शोषकों को श्रम का महत्व सम ाने के प्रयत्न में होता है, वहीं दूसरी ओर स्वयं द्वारा किये गये श्रम के शोषण के कारण उत्पन्न प्रतिशोध के बो ा को हल्का करने की भावना छिपी है तभी तो शोषक शैलानियों को सामान से लदे, हाँफते-लु .कते देखकर लंबे समय बाद उसे यह प्रतिशोध हल्का महसूस होता है।

इस प्रकार शेखर ोशी ने पर्वतीय समा ा में ीवन व्यतीत करनेवाले निर्धन, बेसहारा लोगों के हर दुख-दर्द और विश्वाास को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। यह लेखक की परिवेश के ामीनी अनुभवों से उप ी न ारिया है यही वह मूल संवेदना है ो प्राकृतिक सुंदरता से भी अधिक उस परिवेश की ि ांदगी के यथार्थ धरातल के भूले-बिसरे ि ात्रों को उकेरती है। इस संदर्भ में शेखर ोशी स्वयं कहते हैं कि-"पर्वतीय प्रदेश के प्रति अपनी नि ी आत्मीयता तथा उर्वर कल्पना वाले लेखकों द्वारा पर्वतीय नारी के अयथार्थ और वीभत्स ि ात्रण ने इस दिशा की कहानियों को लिखने की प्रेरणा दी है। आश ार्य है कि आर्थिक दैन्य के अभिशाप में पले हुए कुछ पर्वतीय कथाकारों को भी इस कुत्सित प्र ाार में सहायक होने की अपेक्षा उस ीवन की अन्य कोई समस्या नहीं दिखलाई दी।"[154]

समय के साथ समा ा में अनेक परिवर्तन होने पर भी मानव मन में गाँव के प्रति लगाव कम नहीं होता। "परिवर्तित सामाि ाक परिस्थितियों में औद्योगिक संस्थानों की ो भूमिका रहेगी वह आ ा के बिखरते ग्रामीण ीवन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। लेकिन आ ा भी सम-सामयिक कथाकारों एवं कथा साहित्य के आलो ाकों का ग्राम-कथा के

---

[154] कोसी का घटवार, शेखर ोशी, पूर्व कथन से

प्रति ाो आग्रह है उसको अंश मात्र भी औद्योगिक ाीवन के प्रति नहीं दिखाई देता।"[155]

4.2.2 आर्थिक स्थितियाँ

शेखर ाोशी ने अपनी कहानियों में मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्गीय समा ा की आर्थिक स्थितियों का ि ात्रण किया है।

4.2.2.1 मध्यवर्ग

आर्थिक दृष्टि से समा ा तीन वर्गों में विभाि ात हुआ है। उन तीन वर्गों में महत्वपूर्ण वर्ग मध्यवर्ग है। इस वर्ग का उदय अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली के द्वारा हुआ है। समा ा के अधिक लोग इसी वर्ग के अंतर्गत आते हैं। 'डिक्शनरी ऑफ सोशियाल ाी' में मध्यवर्ग की परिभाषा इस प्रकार दी गई। "मध्यवर्ग आ ा ानसंख्या के उस विभिन्न भाग को सूि ात करनेवाला पारिभाषिक शब्द है ि ासमें मुख्यतः छोटे-छोटे व्यापारी और उद्योगपति, व्यवसायिक एवं दूसरे सामान्य आय वाले बौद्धिक कार्यकर्ता, कुशल शिल्पी, समृद्ध किसान, सफेद पोश कर्मिष्ट वर्ग तथा बड़े-बड़े व्यापार केंद्रों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के वेतन भोगी सेवक आते हैं। उनमें बहुत कम सामान्य आर्थिक हित है, ाो कुछ समानता है वह उनके शैक्षिक, स्तर ाीवन स्तर और पारिवारिक ाीवन के आदर्शों एवं उनके लोका ाार तथा मनोविनोदात्म हित हैं।"[156]

मध्यवर्गीय समा ा की अनेक विशेषताएँ हैं ैसे आर्थिक विषमता, महत्वाकांक्षा और टूटन। मध्यवर्ग के लोग अपनी महत्वाकांक्षा के कारण उ ा वर्ग में पहुँ ाने के लिए लालायित तो रहते हैं किंतु श्रमिक वर्ग में ाीने के लिए विवश हो ाते हैं। यह वर्ग निरंतर ाोड़-तोड़ संत्रास एवं घुटन में ाीवन

---

[155] कोसी का घटवार, शेखर ाोशी, पूर्व कथन से
[156] डिक्शनरी ऑफ सोशियॉलो ाी, सं.हेनरी पी फेयरथाइल्ड-पृ.193

व्यतीत करता है। उसकी महत्वाकांक्षाएँ कम नहीं होती। इसी मध्यवर्ग की सामा ाक स्थितियों को शेखर ोशी अपनी अनेक कहानियों में ि त्रित करते हैं। ैसे डांगरीवाले, प्रश्नवा ाक आकृतियाँ, नेक्लेस, सहयात्री, भूत आदि।

'डांगरीवाले' कहानी का परमेश्वर ो एक मध्यवर्गीय व्यक्ति हैं। आर्थिक विषमता के कारण "एक-एक सामान के लिए दस दुकानों में भाव-पूछते और ाहाँ सस्ता मिलता वहीं से खरीदते थे। व्यसन के नाम पर खैनी के अलावा उन्हें कोई शौक नहीं था। कपड़ों की ब ात के लिए मोटे- ोटे वस्त्रों के ऊपर ड्यूटी पर ाते हुए डांगरी डाल लेते ो उनके अनुसार सरकारी वर्दी थी। ैसे पुलिस की होती है, मिलिट्री के सिपाही की होती है, ि ससे उसकी पह ान बनती है। लेकिन वास्तव में यह किफायतसारी का ही एक बहाना था।"[157] शेखर ोशी परमेश्वर पात्र के द्वारा आर्थिक विषम स्थिति का ि त्रण करते हैं तो उसी कहानी के नरेश पात्र में महत्वाकांक्षा को दर्शाते हैं। नरेश ो परमेश्वर का इं ानीयर बेटा है वह अपने इस महत्वाकांक्षा के कारण घर में अनेक विलासी ीज़ें लाता है ैसे डाइनिंग टेबुल।

मध्यवर्गीय महत्वाकांक्षा के कारण लोग अपने आप को उ ा वर्ग में सम्मिलित करने के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं। लेखक ने 'भूत' कहानी में इस प्रयत्न का विश्लेषण किया है। "एक समान बने हुए उन क्वार्टरों में अपनी विशिष्टता दिखाने के लिए किसी ने यदि मेहंदी की बाड़ लगा ली थी तो किसी ने ारदीवार खीं ाकर छोटा-मोटा फाटक लगा लिया था। दरवा ों के ऊपर या सामने वाली खिड़की की आड़ी सलाखों के ऊपर अपनी नाम पट्टी लगाने का सिलसिला शुरू हुआ तो कुछ ही दिनों में एक दूसरे से होड़ लेती हुई विभिन्न

[157] डांगरी वाले, शेखर ोशी-पृ.98

आकार-प्रकार और लिखावट वाली नाम पट्टियाँ क्वार्टरों के बाहर दिखाई देने लगी।"[158]

मध्यवर्गीय परिवारों में लेन-देन, उधार-बदले का ो रिवा ा ालता रहता है, उससे उत्पन्न दुख और निराशा का ित्रण 'नेक्लेस' कहानी में किया गया है। इस कहानी में दुल्हन को पहनाने के लिए उधार में नेक्लेस देते हैं। ो अन्य आभूषणों की अपेक्षा दुल्हन को अधिक आकर्षित करता है। ाब उसे पता ालता है कि वह सामान्य-सा नेक्लेस भी उनका अपना नहीं है तो वह टूट ाती है और दुख के कारण रोने लगती है।

मध्यवर्गीय महत्वाकांक्षा के कारण कुछ लोग निम्न वर्ग के लोगों का विरोध करते हुए उ ा वर्ग का समर्थन करते हैं। इस मध्यवर्गीय मनःस्थिति का ित्रण शेखर ोशी 'सहयात्री' नामक कहानी में सफलतापूर्वक प्रस्तुत करते हैं।

इस कहानी का अग्रवाल ी ो एक मध्यवर्गीय व्यक्ति है, वे रेल में किसी को बैठने के लिए ागह भी नहीं देते। लेकिन एक नवयुवक को उ ावर्गीय व्यक्ति सम ा कर अपनी सीट उसे देकर स्वयं ट्रंक के ऊपर बैठ ाता है। इस प्रकार शेखर ोशी ने मध्यवर्ग की महत्वाकांक्षा को अपनी कहानियों में कुशलता पूर्वक ित्रित किया है।

उपभोग की वस्तुओं के प्रति इस वर्ग के लोगों में विशेष आकर्षण रहता है। उनके लिए 'कार' ैसे विलासी ीज़ें एक स्वप्न हैं। अपनी आर्थिक विषमता के कारण यह स्वप्न पूरा नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप ि ान के पास कार होती है उनके प्रति आदर की भावना व्यक्त करते हैं। 'पुराना घर' कहानी के इस ित्रण द्वारा यह बात स्पष्ट होती है-"वह आदमी या तो स्वभावतः बहुत

[158] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.93

विनर्म रहा होगा अथवा उस नए मॉडल की ाम ामाती आधुनिक कार से प्रभावित होकर अधिक से अधिक सहायता कर सकने की इ छा से उसने पूछा- आप किसका मकान खो ा रहे हैं।"[159]

मध्यवर्ग के लोगों में उ ा वर्ग और निम्न वर्ग की तुलना में ईर्ष्या, द्वेष अधिक होते हैं। 'साथ के लोग' कहानी में एक यात्री इनाम में बारह रुपये के लिए ूता पाता है तो "बहुत देर तक लोगों की बात ीत उसी ूते पर केंद्रित होकर रह गयी। कई ऐसे लोग, ो अब तक ुप थे, अ ानक विशेषज्ञों की तरह ूते के संबंध में अपनी राय देने लगे और हर एक ने उस ूते को उलट-पुलटकर, मोड़-तोड़कर देखा ही नहीं बल्कि, अपनी राय भी दे दी-

"ठगे गये, बाबू साहब।

एकदम गत्ता भरा है ी।

ाहाँ एक बार भीगा, यह भी 'मेहरबान' कहने लगेगा।

किसी ने ुटकी ली-लेकिन खूब इनाम बाँट गया भाई।"[160]

कहानी की इन पंक्तियों द्वारा मध्यवर्ग में व्याप्त ईर्ष्या, द्वेष की भावना स्पष्ट रूप से सामने आती है।

4.2.2.2 निम्न मध्यवर्ग

निम्न मध्यवर्ग, मध्यवर्ग का ही एक हिस्सा है। आर्थिक स्थिति के आधार पर मध्यवर्ग को तीन भागों में विभक्त किया गया है (1) उ ा मध्यवर्ग, (2) मध्य मध्य वर्ग और (3) निम्न मध्यवर्ग। इस वर्ग के अंतर्गत निर्धन, नौकरी, पेशा करते हुए खाते-पीते छोटे उद्योगपति, व्यापारी आदि आते हैं। इला ंद्र ोशी ने निम्न मध्यवर्ग पर अपने वि ार व्यक्त करते हुए लिखा है कि-

---

[159] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.150

[160] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.17

"वास्तव में शोषकों के अत्या ाारों से यह वर्ग निम्नतम वर्ग से कुछ कम पीड़ित नहीं है। पर निम्न वर्ग से उसमें यह अंतर है कि वह बहुत अधिक अनुभूतिशील और साथ ही बुद्धिवादी है। इसलिए क्रांति के मूल बी ा केवल इसी वर्ग में पनप सकते हैं।"[161]

निम्न मध्यवर्ग की बहुत बड़ी समस्या आर्थिक विषमता है। आत्म सम्मान के कारण इस वर्ग के लोग किसी से सहायता नहीं लेना ाहते। आर्थिक विषमता दोस्तों के बी ा दूरी भी ब.ाती है। 'प्रश्नवा ाक आकृतियाँ' कहानी का वीरेंद्र आर्थिक विषमता के कारण अपने दोस्तों से दूर रहना ाहता है। वीरेंद्र के शब्दों में "वह ाानता हो कि साथियों के बी ा मैंने इन दिनों ाो डॉक्टर के आदेश पर सिगरेट और कॉफी छोड़ देने का बहाना बनाया है, वह मात्र मेरी विवशता है। हर बार दूसरों के दम पर शौक पूरा करने में ि ा ाक होती है।"[162] अतः स्पष्ट है कि वीरेंद्र को ाय, सिगरेट खरीदने की आर्थिक शक्ति भी नहीं। अपनी इस स्थिति के कारण वह शैल से विवाह भी नहीं कर पाता। इस कहानी में शेखर ोशी ने निम्न मध्यवर्ग के व्यक्ति की मनोदशा, आर्थिक विषमता और अंतर्द्वंद्व का सशक्त ि ात्रण किया है।

नौकरी पर आधारित निम्नमध्यवर्गीय लोग अपेन परिवार की ारूरत मंद ाीज़ें और उनकी छोटी-से-छोटी इ छाओं की पूर्ति के लिए महीने भर की तनख्वाह के लिए इंत ाार करते हैं। पैसों की ब ात के लिए ाहाँ कम भाव में मिलता है वहीं से खरीदते हैं। निम्न मध्यवर्ग की यह स्थिति 'ब ो का सपना' शीर्षक कहानी में सफलतापूर्वक ि ात्रित किया गया है। इस कहानी का 'मैं' नामक पात्र अपनी बेटी की इ छा पूर्ति के बारे में कहता है कि-"मैं उसके मासूम ोहरे पर सुखद आश र्य की ामक देखना ाहता था। बहुत दिनों से सँ ोई

---

[161] निर्वासित, इला ंद्र ोशी-पृ.37

[162] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.26

हुई एक इ छा की पूर्ति, एक लगभग असामान्य सी वस्तु की प्राप्ति का संतोष। हाँ, मेरी ैसी स्थिति में उसके लिए यह मामूली ीज़ भी लगभग असामान्य ही थी।"[163] कहानी के इन वाक्यों से निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति स्पष्ट हो रही है।

नौकरी पर आधारित इस वर्ग के लोगों को महीने का अंतिम सप्ताह ालाना बहुत मुश्किल है। इस विषम परिस्थिति को ब ों से दूर रखने के लिए माता-पिता को कुछ ाल ालाना ही पड़ता है। 'डरे हुए' शीर्षक कहानी में इस स्थिति का ित्रण हुआ है। "वह आ रहा है। उसके सामने कुछ न कहना। दो ही दिन की तो बात है। मैं किसी तरह बहला लूँगी। िंता करने के लिए हम दोनों ही बहुत हैं। उस पर न ाने कैसा असर पड़े।"[164] ब ों को इस स्थिति से अन ान रखने के प्रयत्न में माता-पिता डरने लगते हैं।

शोषकों के अत्या ारों से यह वर्ग कुछ कम पीड़ित नहीं है। उ ा वर्ग के किसान निम्न मध्यवर्ग के छोटे किसानों की भूमि को अपनाने के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं। उनके पीट-पीछे अनेक षडयंत्र र ाते हैं। ताकि निम्न मध्यवर्ग के किसान को अपनी ामीन बे ानी पड़े। लेकिन निम्न मध्यवर्ग का किसान ो ामीन को अपनी माँ सम ाता है आर्थिक स्थिति के कारण स्वयं हल ालाने के लिए तैयार हो ाता है ो अपनी ाति के नियमों के विरुद्ध है। 'हलवाहा' कहानी का ीवानंद ो एक निम्न मध्यवर्ग का किसान है उससे ामीन हड़पने के लिए उ ा वर्ग का बद्री प्रधान, ीवानंद की आर्थिक स्थिति याद दिलाते हुए कहता है-" अब तुम ही बताओ, कहने को पिरमुँवा और ामनिया का परिवार हमारी हलवाही करता है। पर इनके भरोसे मेरी खेती ालेगी? िस दिन सड़क के ठेकेदार ने काम नहीं दिया उस दिन इन्हें हल-बैल की सुध आ ाती है, वरना

---

[163] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.9

[164] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.52

खेत बं ार पड़ा हो, बेहन उ ाड़ रहा हो, इन्हें कोई काम नहीं। ठेकेदार और ओवरसीयर की तरह अंधाधुंध पैसा हमारे पास तो है नहीं, न हम उतनी म ूरी देंगे और न ये अपने बाप-दादों की तरह एहसान मानकर आएँगे।"[165]

निम्न मध्यवर्ग का उ ावर्ग द्वारा शोषण हमें 'बो ा' कहानी में भी मिलता है। यह कहानी एक तरुण कुली की आर्थिक विसंगतियों की ओर संकेत करते हुए, विषम परिस्थितियों में भी उसके सामा िक और नैतिक बोध को उभारती है। यह वहाँ के तरुण की सबसे बड़ी त्रासदी है कि "होश संभालने के बाद से ही उसे कभी प्रधान की ोर-बकरियों को ाराने की ि म्मेवारी सौंप दी ाती तो कभी खेतों में हाथ बँटाने के लिए बुला लिया ाता।"[166] सही-गलत मार्ग अख्तियार कर उन्हें काम पर बनाये रखा ाता। "ले यार, एक बीड़ी दम लगा ले, फिर ये दस-बारह पौधे रह गये हैं, इन्हें भी निबटा देना इसी हाथ।"[167] पर ऐसे नहीं है कि पहाड़ के तरुण इस बात को सम ाते नहीं हैं, बल्कि सब कुछ ाानते और सम ाते हुए भी वे सहने के लिए विश हैं। अतः इस वर्ग के लोग अनुभूतिशील और बुद्धिवादी होने के कारण सब कुछ सहने के लिए तैयार हो ाते हैं।

यहीं निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक विषम स्थिति का ि त्रण हमें 'सिनारियो' कहानी में भी देखने को मिलता है। इस कहीन में पहाड़ी महिला आँमा के लिए मा ासि का ख र्ा का भार भी उसे महँगा पड़ता था। शेखर ोशी इस स्थिति का ि त्रण करते हुए लिखते हैं-"ऐसा बुरा वक्त आ गया है, अब बाँ ा की लड़कियाँ नहीं मिल पातीं और ाीड़ के कोयलों की दबी आग सुबह तक ुल्हे में नहीं रहती। स्पष्ट था कि मा ासि का ख र्ा का भार उनके लिए महँगा पड़ता

[165] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.52
[166] ब ो का सपना, शेखर ोशी-पृ.52
[167] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.52

था।"[168] इस कहानी के संदर्भ में डॉ.विक्रम सिंह लिखते हैं कि-"कहानी की केंद्रीय ारित्र आमा की कठिन अभावग्रस्त ि ांदगी किंतु, ीने का उद्गम साहस को देखते देखते रवि का ुकाव प्राकृतिक सौंदर्य से अधिक वहाँ के संघर्षमय ीवन के प्रति हो ाता है, इसी ुकाव के कारण उसे अंततः यह आभास हो ही ाता है-"काश! इस रंगत को अपने कैमरे में कैद कर पाता।" यह लेखक का परिवेश के ामीनी अनुभवों से उप ा न ारिया है। यही वह मूल संवेदना ळै ो प्राकृतिक सुंदरता से भी अधिक उस परिवेश की ि ांदगी के यथार्थ धरातल के भूले-बिसरे ि ात्रों को उकेरता है।"[169] अतः स्पष्ट है कि प्राकृतिक सौंदर्य से भी अधिक वहाँ की आर्थिक स्थिति मनुष्य को अधिक आकर्षित करती है। स्वयं शेखर ोशी कहते हैं -"प्रकृति का सौंदर्य तब निरर्थक हो ाता है ाब वहाँ आपके लिए कोई ौविक आधार न हो।"[170]

4.3 धार्मिक स्थितियाँ

हमारा समा ा प्रा ाीन काल से ही धार्मिकता से प्रेरित रहा है क्योंकि यह माना गया है कि धर्म के बिना मनुष्य मह ा पशु है। आहार, निद्रा, मैथुन व भय आदि विशेषताएँ मनुष्य और पशु के समान हैं। किंतु धर्म के पालन से मनुष्य पशु से उ ातर प्राणी बन ाता है। यह धार्मिकता ही है ो उ ातर मूल्यों के सं ाय में सहायक होती है। लेकिन आ ा इसके विपरीत धर्म के नाम पर रू ि याँ, रीति-रिवाज़, अंधविश्वाास आदि का सं ाय हो रहा है। भारत ने प्रा ाीन काल से ही हिंदु धर्म को अपनाया है। मूर्ति पू ाा, कर्म-कांड, पिंड दान पर विश्वास रखते हैं। ग्रामीण प्रांत के लोग इन धार्मिक कर्मों पर अधिक विश्वास रखते हैं। उनका विश्वास था कि देवी-देवताओं के क्रोध से ब ाने के

---

[168] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.132

[169] अनुसंधान, अप्रैल 2011-पृ.41

[170] शेखर ोशी से उमा गस्थाल की बात ीत, ानवरी-मा ि 2006-पृ.21

लिए नारियल ा.ाना है। अगर कोई बात विश्वसनीय बनानी है तो लोग देवताओं के कसम ले कर कहते हैं। 'कोसी का घटवार' कहानी में लछमा गंगनाथ यु (देवता) की कसम लेकर गुस्साई से विवाह करने का वादा करती है। लेकिन उसका विवाह किसी और से हो ाता है तो गुस्साई कहता है कि "कभी ाार पैसे ुड़ ाएँ, तो गंगानाथ का ागर लगाकर भूल- ूक की माफी माँग लेना। पूत-परिवारवालों को देवी-देवता के कोप से ब ाा रहना ाहिए।"[171] इस से स्पष्ट होता है कि भारत देश के लोगों के ीवन में पग-पग पर धर्म का प्रभाव रहा है।

हिंदू धर्म की एक और मान्यता यह है कि मृत्यु के बाद अपने वंश के लोगों से पिंडदान करने से उस मृत व्यक्ति की आत्मा को शांति मिलती है। यह धार्मिक रू. हमें 'विस नि' कहानी में देखने को मिलता है। 'तारी' अपनी भाभी की मृत्यु के बाद पिंडदान करता है-"नदी किनारे एक पत्थर पर घुटनों-घुटनों तक धोती लपेटै, नंगे बदन, कंधे पर अपसव्य यज्ञोपवीत डाले हुए बैठा तारी यांत्रिक ंग से पुराहित ी के आदेशानुसार अंतिम पिंडदान देते-देते सिसकियाँ भरने लगा।"[172]

यही मान्यताएँ और रू.यों का हस्तांतरण एक पी. से दूसरी पी.ी तक होने लगा। डॉ.वि ायलक्ष्मी का कथन है-"परंपरा एक ऐसी सामा ाक विधा है ि ासमें सांस्कृतिक तत्व एक पी.ी से दूसरी पी.ी को विरासत के रूप में अबाधगति से प्राप्त होती रहती है अथवा अभौतिक संस्कृति उस सीमा तक परिवर्तित होती रहती है उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे और फिर एक संस्था के रूप में विकसित होती है, ाहाँ एक वर्ग विशेष के आ ाार-वि ाार, ज्ञान एवं वि ाार

[171] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.28
[172] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.66

अनवरत रूप से प्रत्येक आनेवाली पी ी तक पहुँ ाते रहते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन परंपराएँ कहलाती हैं।"[173]

मानव ीवन में ाब अपनी बदली हुई परिस्थितियों के अनुसार परंपराएँ, विश्वास नहीं बदलती है और मनुष्य लकीर का फकीर बना रहता है तो उसका वही विश्वास अंधविश्वास, रू ियों और रीति रिवा ा की संज्ञा से अभिहित किया ाता है। ग्रामीणों में इस प्रवृत्ति का अत्यधिक बोल-बाला रहता है। यही कारण है कि अपनी रू ि वादिता और रीति-रिवाज़ के कारण सदैव ही समस्याओं से घिरे रहते हैं। ऐसी ही रू ि वादिता व अंधविश्वास का ि त्रण 'समर्पण' कहानी में मिलता है। प्रा ीन काल से ही ग्रामीण लोगों में भूत-प्रेतों के प्रति विश्वास है। यही अंधविश्वास हमें इस कहानी में भी मिलता है। उनका मानना है कि कैलखूर के नाले पर प्रेत हैं और उससे ब ाने के लिए लोहे का उपयोग करना है क्योंकि लोहे से प्रेत डरता है। ग्रामीणों के अंधविश्वास को निम्न वाक्यों में देखा ा सकता है-"इस सफेद घोड़े की पीठ पर कैलखूर ने नाले से बैठ गया ी। साला यह घोड़ा भी डर गया। न आँ की, न बाँ की, बस, धीमा पड़ गया। छिनारी पर आकर लालू की पीठ कर बैठे-बैठे मुड़कर देखा, कहीं पता ही नहीं इसका। मैंने सो ा, खड्ड में गिर गया होगा। लौटकर गया। मरा-मरा-सा आ रहा था। अयाल पकड़कर खीं ा, तभी धम् से इसकी पीठ से कूद पानी में घुस गया स्साला। कल इसकी ारों नालें ठुकानी हैं। लोहे से अलबत्ता डरता है।"

"कौन, क्या कुछ पूछने की आवश्यकता नहीं। लोग ानते हैं, कैलखूर के प्रेत की बात कह रहा होगा। बरसों पहले एक नेपाली डोट्याल लकड़ी के ि रान के समय वहाँ दबकर मर गया था।"[174]

---

[173] स्वतंत्र्योत्तर हिंदी नाटक समस्या और समाधान, डॉ.निदेश ंद्र वर्मा-पृ.1

[174] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.42

ग्रामीण लोग देवी-देवताओं पर अधिक विश्वास रखते हैं। अपने दोषों के परिहार के लिए और देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए लोग व्रत, उपवास रखते हैं, उन का मानना यह है कि नवरात्री में नौ दिन उपवास के साथ पू ाा करने से देवी का साक्षात्कार होता है। इसी का ित्रण हमें 'समर्पण' कहानी में मिलता है-किसरुआ के मालिक गौरीदत्त ने नवरात्रि में नौ दिन देवीस्थान में ाण्डीपाठ किया था, निराहार रहकर, और दसवें दिन साक्षात् देवी आकर कहले लगी-"गौरीदत्त! ाो माँगना है, माँग ले। और मालिक गोरीदत्त ाी ने कहा-गौरिया को अकेले अपने पेट के लिए कुछ नहीं ाहिए माता। पर मेरा मन कह रहा है, इस साल अकाल पड़ेगा। तुमसे यही विनती है, दीवान खानदान के गोठ की गाय, भकार का अन्न और गोद की संतान, किसी का अनिष्ट न हो। दीवानों के पूत-परिवार, दास- ाकर किसी का अनिष्ट नहीं होगा गौरी। कहकर देवी अंतर्धान हो गयी।"[175] इस ित्रण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ग्रामीण लोग देवी-देवताओं पर अधिक विश्वास करते हैं।

बु ापे में इन रू ियों और अंधविश्वासों का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। वृद्ध अवस्था में सभी पुण्य कार्य करना ाहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि पुण्य कार्यों से ही स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं। नरक से डरने लगते हैं। परिणामस्वरूप पुण्या नि में लगे रहते हैं। यही धार्मिक मान्यताएँ हमें 'किं करोमि ानार्दन' शीर्षक कहानी में 'नित्यान यु' पात्र में मिलती हैं-"आंगन में सुखाने के एिल डाले गये धान में गाय-बछिया आकर मुँह मारने लगे, तो भी नित्यान यू उसे स्वयं नहीं हटाएँगे। वह तो सू ाना-भर दे देंगे।

हिंदू धर्म के लोग सत्यनारायण व्रत का बड़ा महत्व रखते हैं क्योंकि उनका मानना यह है कि व्रत करने से सारे दुःख दर्द दूर हो ाएँगे। यही

[175] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.43

धार्मिक भावना हमें 'कथा-व्यथा' कहानी के ीवंती पात्र में मिलती है। ीवंत अपनी बेटी के सुखी ीवन के लिए एक कथा कराने की सो ाती है। परंतु अर्थाभाव के कारण ऐसा नहीं हो पाता है। वह अपनी ामा-पूँ ी दान कर देती है। भगवान की कथा सुनते-सुनते सो ाने लगती है-"भगवान उसे भी स्वप्न में दर्शन देकर कहेंगे, ीवंती! अब तेरे ीवन में रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय मिट गये हैं। तेरी भगवती को मैं पुत्ररत्न दूँगा, तेरे ामाई को देश में रो ागार मिल गया है। दा ी के पास गिरवी पड़े अपने खेत तू इस वर्ष छुड़ा लेगी। तेरे गोठ में दो बैल बँध ाएँगे।"[176] इस से भारतीय महिलाओं का अंधविश्वास स्पष्ट हो रहा है। इस संदर्भ में देवेंद्र कुमार ौबे लिखते हैं कि-"आखिर वे कौन-सी स्थितियाँ हैं, िसके कारण आम भारतीय महिलाएँ अंधविश्वास और रू ि वाद का शिकार होती हैं।"[177]

गाँव में फैला हुआ और एक अंधविश्वास किसी पर माँ का सवार होना है। अगर कोई व्यक्ति अ ानक वि ि त्र व्यवहार करने लगता है तो लोग यह सम ा बैठेंगे कि उस व्यक्ति पर देवी माँ आ गयी हैं। अशिक्षा के कारण उस पागल व्यक्ति को पू ाने लगते हैं। यही स्थिति हमें 'गोपुली बुबु' कहानी में दर्शनीय है।

"तब कुछ अकल नहीं थी भाऊ! लोग कहते थे इसके आदमी पर देवता लगा है। मैं सो ाती देवता तो अ छे ही हुए। वे कभी-कभी बंदर की तरह छलाँग लगाते, कभी वैसे ही ि ि ायाते। ाब थोड़ी अकल आई तब मैंने ाना कि मु ो पागल की पूँछ से बाँध दिया है।"[178]

---

[176] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.111

[177] हंस, अप्रैल 1990

[178] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.60

गाँव के लोगों में और एक अंधविश्वास यह है कि प्रातःकाल में कौए का कांव-कांव करना शुभ माना ाता है लेकिन अलस दुपहरी में इस पक्षी का रह-रहकर कांव-कांव करना अशुभ माना गया है। इसी कारण 'बो ा' कहानी का नायक उसे भद्दी सी गाली देते हुए भगा देता है क्योंकि विपत्तियों के बो ा से वह पहले ही दबा हुआ है। यह अशुभ संकेत उसके ीवन में और विपत्तियाँ ला सकता है िासमें उसका और उस परिवेश में ीवन व्यतीत करनेवाले निवासियों में दृ. विश्वास है। उस प्रांत में यह लोककथा और किंवदन्ति बन गयी है। कहानी में यह बात निम्न पंक्तियों से स्पष्ट होती है-"पांगर की डाल पर बैठा हुआ एक कौआ रह-रहकर काँव-काँव कर उठता। उसने हाथ ब.ाकर एक कंकर उठाया और एक भद्दी-सी गाली देकर उसे पत्तों के बी ा यों ही फेंक दिया।"[179]

आधुनिकता के प्रभाव से ाहाँ शहर आगे की ओर ब. रहे हैं, वहीं यह गाँव रू.ियों की ापेट में आकर अपनी बरबादी के ि ाम्मेदार खुद बन रहे हैं। गाँव में फैला एक और अंधविश्वास बाबा लोगों पर विश्वास। बाबा को गाँव वाले भगवान सम ाते हैं। गाँव वालों को बाबा के प्रति विश्वास हमें 'रंगरुट' कहानी के इन पंक्तियों द्वारा स्पष्ट होता है-"गाँव में रोग-व्याधि फैल ाए, सूखा पड़े या वर्षा-वाले की तबाही हो, लोग फूल-पाती, भेंट- ा.वा या मुर्गा-नारियल लेकर ााऊ बाबा के साथ पहुँ ा ाते। अपने पुरुषार्थ से ब.कर न-किसी पुण्यात्मका को ााऊ रहता था और तभी रात में किसी-न-किसी पुण्यात्मा को ााऊ बाबा सपने में दर्शन दे ाते और उस संकट का निदान बता ाते। ााऊ बाबा के ऐसे विश्वासपात्रों में गाँव के दो-तीन प्रमुख और समृद्ध परिवारों के लोग ही अक्सर हुआ करते थे।"[180]

---

[179] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.44

[180] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.137

अशिक्षा के कारण गाँववाले डॉक्टर से ब. कर बाबा पर विश्वास करते हैं। यह हमें कहानी के 'मोतीराम' से पता ालता है। वह कहता है-"मैंने वैद्य ाी को विदा कर दिया और रात-भर ाऊ बाबा का नाम लेकर बूँद-बूँद तुलसी का का.ा मथुरा के मुँह में डालता रहा। भोर की वेला मु ो ापकी लगी तो देखता क्या हूँ कि बाबा अपने हाथ से उसे पंखा ाल रहे हैं। यकीन मानो भैया, सुबह हमारा मथुरा भला- ांगा हो गया था।"[181]

19 वीं शती के उत्तरार्द्ध और 20 वीं शती के पूर्वार्द्ध में सामाि ाक व रा ानीतिक ोतना के साथ-साथ भारतीय धार्मिक ोतना में भी परिवर्तन हुए। पहले ाहाँ व्यक्ति की ीवन दृष्टि का निर्माण धर्म शास्त्र, परंपरागत वि ाार तथा सामाि ाक रू.ियों द्वारा होता था, वहीं आधुनिक वैज्ञानिक-भौतिकवादी युग में व्यक्ति का दृष्टिकोण निरंतर गतिशील सामाि ाक, आर्थिक, धार्मिक तथा रा ानैतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है। शिक्षा के प्रसार के कारण भारत में शिक्षित वर्ग का विकास हुआ ो धर्म के वास्तविक रूप सम ाने लगा था। धर्म के नाम पर ो रू.ियाँ, अंधविश्वास समा ा में पनप रहे हैं, 20 वीं शती में धीरे-धीरे उनका ह्रास हुआ। अब धर्म का अर्थ संप्रदाय और ाति से ऊपर उठकर संपूर्ण मानव धर्म के रूप में बदल गया है। समा ा में आए हुए इस परिवर्तन से साहित्यकार अछूते नहीं हैं। इसीलिए शेखर ोशी इस सामाि ाक परिवर्तन को 'रंगरूट' कहानी के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

'रंगरुट' कहानी में 'मैं' नामक पात्र की माँ बाबा पर विश्वास करते हुए उसे ाऊ बाबा के थान पर नारियल और लाल ीर ा.ाने को कहती है। लेकिन 'मैं' नामक पात्र अपनी शिक्षा के कारण बाबा पर विश्वास नहीं करता है और स्वयं की सत्ता पर बल देता है। यह उनकी बातों में देखा ा सकता है-

[181] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.138

"मैंने हर प्रकार माँ को सम ाने का प्रयत्न किया कि आ ाकल का गणित और विज्ञान ाऊ बाबा के कोर्स के बाहर की ीज़ है। इसे विद्यार्थी अपने लगन और परिश्रम से ही ीत सकता है।"[182] अंत में उसने तय कर लिया-"मु ो ाऊ बाबा या उस प्रकार की किसी भी सत्ता को स्वीकार नहीं करना है।"[183] समा ा में आ ा हुए इस परिवर्तन का कारण शिक्षा है। एक शिक्षित व्यक्ति ही धर्म के नाम पर होनेवाले रू ियों का विरोध कर सकता है।

20 वीं शती में धर्म के परिमा ान की नई शुरुआत हुई। विश्वबंधुत्व की भावना का विकास हुआ। हिंदू-मुस्लिम धर्मों के बी ा भाई ारे की भावना उत्पन्न हुई। 20 वीं शती में आए हुए इस सामा ाक परिवर्तन को शेखर ोशी ने अपनी कहानी 'छोटे शहर के बड़े लोग' द्वारा प्रस्तुत किया है। " ाहाँ ईद और मुहर्रम के अवसर पर दूसरे संप्रदाय के लोग उनके त्योहार-पर्व में शामिल होते वहाँ वे भी होली-दीवाली और रामलीला में समान रूप से अपनी भागीदारी का निर्वाह करते। हा ी ी स्वयं रामलीला कमेटी के सम्मान्य सदस्य थे और उनका बेटा समद हर साल रामलीला में तबले की संगत करता था।"[184]

20 वीं शती के समा ा में आई हुई विश्व बंधुत्व की भावना बाकी सभी परिवर्तनों से महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं। इस संक्रमणकालीन धार्मिक परिवेश से साहित्य भी अप्रभावित न रहा। विभिन्न र ानाकारों ने अपने समकालीन धार्मिक परिवेश को अपनी र ानाओं में विभिन्न रूपों में अभिव्यक्ति किया है।

अतः शेखर ोशी ने ग्रामीण लोगों में व्याप्त रू ियों रीति रिवाज़, अंधविश्वासों का परि ाय देते हुए समय के साथ इन अंधविश्वासों में आए हुए परिवर्तनों को स्पष्ट किया है।

---

[182] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.139
[183] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.140
[184] मेरा पहाड़, शेखर ोशी-पृ.34

पं ाम अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों में वर्ग संघर्ष

5.1 वर्ग

5.2 वर्ग की शाब्दिक व्युत्पत्ति

5.3 समा ा शास्त्रीय वर्ग विभा ान

5.3.1 उ ा वर्ग

5.3.2 मध्य वर्ग

5.3.3 निम्न वर्ग

5.4 वर्ग संघर्ष

5.5 शेखर ोशी की कहानियों में वर्ग संघर्ष

पं ाम अध्याय

शेखर ोशी की कहानियों में वर्ग संघर्ष

5.1 वर्ग

मानव एक सामा िक प्राणी है। "मनुष्य समा ा को नहीं बनाता बल्कि मनुष्य समा ा में पैदा होता है और उसी में पलता है।"[1] अतः स्पष्ट है कि ान्म से ही मनुष्य सामा िक परिस्थितियों में ाल दिया ाता है। प्रा ीन या प्रारंभिक काल में मनुष्य अपने ारों ओर की परिस्थितियों और प्राणियों से ीतने के लिए उसे सामा िक होना पड़ा। वैसे मनुष्य शब्द का अर्थ ही सामा िक मनुष्य है, उसी रूप में उसे उसकी सृष्टि के आदिकाल से पाते हैं। इस बात को न सम ा कर कुछ लोग सवाल उठाते हैं कि "मनुष्य पहले है या समा ा।" ऐतिहासिक दृष्टि से देखा ाए तो "समा ा ही पहला है। क्योंकि यदि मनुष्य सामा िक न होता तो वह होता ही नहीं। अपनी सामा िकता के कारण मनुष्य अपने ारों ओर के शक्तिशाली एवं विषैले प्राणियों से लड़ कर मानव ाति को कायम रखा है। मानव ाति का यह विकसित समा ा हमेशा वर्गों में विभा ित रहा है। अब तक का लिखित इतिहास इस बात का साक्षी है।

'वर्ग' उस विशेष समुदाय को कहते हैं, िनमें स्वार्थ एक हो, उत्पादन कार्य में िनकी एक समान स्थिति हो, और िनके आर्थिक उन्नति के स्रोत एक हों। वास्तव में इस 'वर्ग' विभा ान का मूल कारण आर्थिक स्थिति है। हमारा

[1] ऐतिहासिक भौतिकवादः मनमथनाथ गुप्त-पृ.35

सभ्य समा ा इसी आर्थिक स्थिति एवं कर्म के आधार पर विभाि ात हुआ था। कुछ व्यक्तियों को एकत्र करके उस समूह को हम 'वर्ग' नहीं कह सकते बल्कि उस समूह में कुछ सामान्य गुण और व्यवहार के कुछ सामान्य तरीके होने से उस समूह को हम 'वर्ग' कह सकते हैं।

इस प्रकार हमारा समा ा वर्गों में विभाि ात होने से दो भिन्न वर्गों के बी ा संघर्ष होने लगा। इसका मूल कारण हर वर्ग अपने अस्तित्व को कायम रखना ाहता है। इसी वर्ग संघर्ष को आधार बनाकर कार्ल-मार्क्स और एंगेल्स सन् 1848 में 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' का प्रतिपादन किया है। इस सिद्धांत ने संसार को इतना प्रभावित किया कि शायद किसी और ने अब तक नहीं किया है। मार्क्स और एंगेल्स ने लिखा है-"अब तक अस्तित्व में आनेवाले संपूर्ण समा ा का लिखित इतिहास 'वर्ग' तथा संघर्ष का इतिहास है।"[2]

5.2 वर्ग की शाब्दिक व्युत्पत्ति

वर्ग अंग्रेज़ी शब्द क्लास (Class) का पर्यायवा ाी है। उसकी व्युत्पत्ति लैटिन शब्द क्लासिस से हुई है। वर्ग का अर्थ होता है 'श्रेणी' या 'दल'। Oxford Dictionary में वर्ग का अर्थ इस प्रकार है-Class means "A system that divides members of a society in to sets based on perceived social or economic status."[3] इसका अर्थ "समान सामाि ाक या आर्थिक स्तर वालों का समूह है।"[4] न्याय शास्त्र के अनुसार 'नौ' या 'सात' संख्या वाले पदार्थों के विभा ान को वर्ग कहते हैं। आकार-प्रकार से भिन्न-भिन्न किंतु एक सामान्य धर्म को रखनेवालों का समूह वर्ग ही कहलाता है। ैसे म ादूर-वर्ग, नारी-वर्ग, किसान-वर्ग, मनुष्य-वर्ग, दलित-वर्ग, साधु-वर्ग

[2] कम्युनिस्ट घोषणा पत्र-1955 (मास्को)-पृ.51
[3] Oxford Dictionary-p.263
[4] आक्स्फर्ड अंग्रेज़ी हिंदी शब्द कोश-पृ.128

आदि। हिंदी बृहद कोश के अनुसार-"'वर्ग' स्व ातीय या समान धर्मियों का समूह, दल एक स्थान से उ ारित होनेवाले वर्णों का समूह, ग्रंथ का विभा ान, अध्याय, समान अंकों का धात, वह समकोण ातुर्भु ा ि ासकी लंबाई, ौड़ाई बराबर हो, शक्ति, क्षेत्र, अर्थ, धर्म आदि।"[5]

समा ा के हर मनुष्य को अपनी आर्थिक स्थिति एवं रहन-सहन तथा कर्म के अनुरूप मनुष्य को किसी-न-किसी 'वर्ग' के नाम से संबोधित करते हैं। उदाहरण के लिए ि ानके पास यादा धन होता है उन्हें ामींदार या पूँ ीपति वर्ग कहते हैं और ो लोग श्रम करते हैं उन्हें श्रमिक वर्ग कहते हैं।

वर्ग के संबंध में अनेक विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किए हैं। ार्मन दार्शनिक कार्ल-मार्क्स के अनुसार समा ा के विकास का इतिहास वर्ग-संघर्ष के विकास का इतिहास है। उनके अनुसार प्रत्येक युग में मुख्यतः दो ही वर्ग रहे हैं। समा ा के एक छोर पर उन व्यक्तियों का समूह रहता आया है, ो उत्पादन व्यवस्था के स्वामी होते हैं और ि ान्हें शोषक वर्ग कहते हैं। दूसरे छोर पर उन व्यक्तियों का समूह रहता आया है, ो अपने श्रम के आधार पर उत्पादन तो करता है, किंतु उसका नाममात्र भी हिस्सा नहीं पाता, उन्हें 'शोषित' वर्ग कहते हैं। उपर्युक्त दोनों स्थितियों के बी ा में ीवन यापन करनेवाले व्यक्तियों के समूह को स्वभावतः मध्यवर्ग नाम से अभिहित किया गया है।"[6]

लेनिन के अनुसार-"वर्ग व्यक्तियों के बड़े-बड़े दल होते हैं। ये दल एक दूसरे से भिन्न होते हैं ि ासकी भिन्नता का आधार व्यक्ति की सामा िक उत्पादन पद्धति है। इस अंतर को उत्पादन के साधनों से इंगित कर सकते हैं।

---

[5] हिंदी बृहद कांश-पृ.219

[6] हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्ग, बीना श्रीवास्तव-पृ.152

यह अंतर कुछ तो श्रम ीवियों के संगठन कार्यों पर आधारित होता है और कुछ धन के अंतर्गत करने के उपायों से भी ज्ञात किया ा सकता है।"[7]

डेवीस किंग्सले का मत है-" ाब कभी हम ातियों एवं वर्गों के विषय में तथा सामा िक संस्करण के संबंध में सामान्य रूप से सो ाते हैं तो हमारे मन में वैसे समूह रहते हैं ि न्हें समा ा में विभिन्न मात्रा में सम्मान प्राप्त होता है।"[8] 'मैकावर' तथा 'पै ा' ैसे विद्वानों ने वर्ग की परिभाषा इस प्रकार की है-"किसी वर्ग का अर्थ ऐसी श्रेणी अथवा प्रकार से है, ि सके अंतर्गत व्यक्ति अथवा व्यक्ति समूह आते हैं।"[9] अतः इस से स्पष्ट होता है कि वर्ग का निर्माण समा ा के व्यक्ति समूह से बनता है।

कुछ विद्वान 'वर्ग' का संबंध आर्थिक स्थिति से ोड़कर देखते हैं और उसी पर विश्वास करते हुए वर्ग को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है। "वर्ग वह है ि से समा ा ने एक विशेष स्थान दिया है। यह स्थान व्यक्तियों की सामा िक प्रतिष्ठा के आधार पर होता है। यह सामा िक प्रतिष्ठा रहन-सहन, आ ार-व्यवहार तथा सामा िक सुविधाओं के आधार पर दी ाती है।"[10] इसी प्रकार आर्थिक स्थिति के आधार पर प्रसिद्ध ि ंतक बखारिन ने वर्ग की परिभाषा इस प्रकार दी है-"ऐसे लोगों का एक समूह ो उत्पादन में और इस कारण वितरण में एक ही तरह से अवस्थित है। दूसरे शब्दों में ि नमें आम हित (वर्ग हित) एक है, वह वर्ग कहलाता है।"[11]

प्रसिद्ध विद्वान हेनरी ए.यस के अनुसार-"एक सामा िक वर्ग मनुष्यों का ऐसा समुदाय है, ो अपने कतिपय ऐसे सामान्य गुणों और व्यवहार के

---

[7] फंडमेंटल आफ मार्क्सि मःलेनिनि म मैन्युल-पृ.150
[8] ह्यूमन सोसाइटी (Human society), डेवीस किंग्स्ले-पृ.364
[9] सोसाइटी आर.एम.मैकाइवर, सी.ए ा.पे ा-पृ.348
[10] भारतीय सामा िक संर ना तथा संस्कृति-शंभू रत्न त्रिपाठी-पृ.102
[11] ऐतिहासिक भौतिकवाद, मनमथनाथ गुप्त-पृ.68

कतिपय सामान्य तरीकों के विषय में स ोत रहता है, ाो उन व्यक्तियों को दूसरे विभिन्न गुणों तथा व्यवहार वाले सामा िक वर्गों के सदस्यों से पृथक करते हैं। किसी सामा िक वर्ग विशेष का सदस्य बनने के हेतु एक व्यक्ति के लिए यह अनिवार्य है कि वह स्वयं को उस रूप में अनुभव करें एवं दूसरों द्वारा भी वह इस रूप में अनुभव किया ाए।"[12]

डॉ.संपूर्णानंद के अनुसार 'वर्ग' शब्द समा ावादी दृष्टिकोण से एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त किया ाता है। ि ान समूह के व्यक्तियों के आर्थिक हित एक से होते हैं। उन को वर्ग कहते हैं। ैसे ामींदारों का वर्ग, मज़दूरों का वर्ग, मिल मालिकों का वर्ग इत्यादि।

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों ने वर्ग की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। इन परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि कुछ व्यक्तियों के समूह को हम वर्ग नहीं कह सकते। उस समूह को वर्ग कहने के लिए उन व्यक्तियों में कुछ सामान्य गुण और व्यवहार के कुछ सामान्य तरीके होने ाहिए। उदाहरण के लिए यदि ामिंदारी वर्ग को लें, तो उस वर्ग के सदस्यों में वैयक्तिक भेदों के होते हुए भी कुछ सामान्य गुण होने ाहिए। ैसे ामींदारों के पास यादा ामीन, धन, नौकर होना उस वर्ग की कुछ विशेषताएँ हैं ि ानसे उस वर्ग को दूसरे वर्ग से अलग कर सकते हैं।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि समा ा में वर्ग असमानता के कारण बनते हैं तथा एक वर्ग के सदस्यों के विशिष्ट एवं सामान्य गुणों के कारण ही समा ा में उनका एक अलग रूप दिखाई देता है।

---

[12] हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग, हेमरा ा निर्मम-पृ.13-14

5.3 समा ा शास्त्रीय वर्ग विभा ान

समा ा में कई प्रकार के लोग रहते हैं ि ानका ाति, धर्म, आ ाार-व्यवहार अलग हैं। हमारा यह सभ्य समा ा कई वर्गों में विभक्त हुआ है। प्रा ाीन काल में वर्गों का विभा ान करनेवाले काम एवं ाति के आधार पर होता था। मगर इस आधुनिक समा ा में वर्गों का विभा ान आर्थिक स्थिति के आधार पर हुआ है। इस प्रकार हमारे समा ा में तीन वर्ग पाये ाते हैं। उ ा वर्ग, मध्य वर्ग, निम्न वर्ग। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि वर्ग का विभा ान प्रतिष्ठा के आधार पर होता है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा धन, ाति, कुल, शिक्षा आदि पर निर्भर रहती है।

वस्तुतः हमारा समा ा आर्थिक दृष्टि से तीन वर्गों में विभाि ात हुआ है। उ ा वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग। वास्तव में समा ा पर इस आर्थिक व्यवस्था का प्रभाव फ्रांस की रा य-क्रांति, इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति और रूस की समा ावादी क्रांति से पड़ा है। "उ ा वर्ग को शोषक एवं पूं ाीपति वर्ग भी कहते हैं। और निम्न वर्ग को शोषित एवं श्रमिक वर्ग कहते हैं।

कार्ल मार्क्स के अनुसार सामंतवादी युग के बाद पूं ाीवादी युग का आरंभ हुआ है। इस युग में पूँ ाीपति पूँ ाी लगाकर अधिक मुनाफा कमाता था। मगर उत्पादन कार्य में प्रत्यक्ष भाग नहीं लेता पर उस पर पूरा अधिकार रखता है। इस युग में दूसरा वर्ग वह है ाो उत्पादन कार्य में प्रत्यक्ष भाग लेता है पर उस पर अधिकार नहीं रखता। इस वर्ग को हम श्रमिक वर्ग कहते हैं। पूं ाीवाद में पूँ ाीपति कृषि में अधिकांश लोगों को श्रमिक बना देता है। इसीलिए इस युग के अंत में केवल दो 'वर्ग' ही रह ाएंगे। वे हैं बू ुर्आ और श्रमिक वर्ग। इन दो वर्गों के बी ा में और एक वर्ग है ि ासे पेटी (छोटा) बु ुर्आ कहते हैं।

लेकिन मार्क्स, एंगेल्स इस वर्ग के अस्तित्व को नहीं मानते। उनके अनुसार समा ा केवल दो वर्गों में विभा ित है-

1) बू ुआ

2) श्रमिक

कुछ विद्वानों ने समा ा को 'छः' वर्गों में विभा ित किया है। अमेरीका में इन्हीं छः वर्गों पर विश्वास रखते हैं-

1) उ ा उ ा वर्ग

2) निम्न उ ा वर्ग

3) उ ा मध्य वर्ग

4) निम्न मध्य वर्ग

5) उ ा निम्न वर्ग

6) निम्न निम्न वर्ग

हमारा वर्तमान समा ा मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभक्त हुआ है-

1) उ ा वर्ग

2) मध्य वर्ग

3) निम्न वर्ग

5.3.1 उ ा वर्ग

उ ा वर्ग के अंतर्गत वे लोग आते हैं ि ानके पास अधिक धन है या संपत्ति है। पूं ीपति, ामींदार, मिलों के मालिक, उद्योगपति, कारखानों के मालिक आदि इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं। अधिक धन होने के कारण इस वर्ग के लोग कारखाना, मिल या कृषि आरंभ करके अधिक से अधिक लोगों को श्रमिक और म ादूर बना दिया। ये उत्पादन कार्य में प्रत्यक्ष भाग न लेने पर भी उस पर पूरा अधिक रखते हैं। उससे उत्पन्न संपत्ति में अधिक भाग ले कर

श्रमिक और म ादूर वर्ग का शोषण करता है। इसीलिए इस वर्ग को शोषक वर्ग भी कहा ाता है।

वास्तव में इस वर्ग का ान्म ब्रिटिश शासन काल के बाद भारतीय समा ा के व्यापारी वर्ग, ामींदार, पूँ ीपति तथा पेशेवर वर्ग के पास यादा धन होने के कारण हुआ था। वे लोग इस धन से मिल, कारखाना आदि खोल कर लोगों से कम वेतन में काम करवाकर और भी धनवान होने लगे। इस प्रकार उ ा वर्ग के लोग समा ा में आर्थिक दृष्टि से अपना एक अलग अस्तित्व बनाये रखे हैं।

अपने इस अस्तित्व को कायम रखने के लिए उ ा-वर्ग के लोग मध्य और निम्न वर्ग के लोगों पर और भी शोषण करने लगे।

हेमरा ा निर्भय ने उ ा वर्ग को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है-"उ ा वर्ग में ऐसे पूं ीपति आते हैं, ि ानमें सामाि ाक उत्पादन के साधनों और स्रोतों पर संपूर्ण नियंत्रण हो। ि ान्होंने अपनी पूं ी की वृद्धि के लिए कारखानों में असंख्य श्रमिकों को नियुक्त किया हुआ है।"[13]

प्रेम ांद ने 'महा ानी सभ्यता' लेख में उ ा वर्ग की विशेषताओं, कमियों आदि का विवे ान किया है-"धन लोभ ने मानव भावों को पूर्ण रूप से अपने अधीन कर लिया। कुलीनता और शराफत, गुण और कमाल की कसौटी पैसा और पैसा है। ि ासके पास पैसा है वह देवता स्वरूप है ि ासका अंतःकरण ाहे कितना ही काला क्यों न हो। साहित्य-संगीत और कला सभी धन की देहली ा पर माथा टेकने वालों में हैं। यह हवा इतनी ाहरीली हो गई है कि इसमें ीवित रहना कठिन होता ा रहा है। डॉक्टर और हकीम है कि वह बिना लंबी फीस लिए बात नहीं करता, वकील और बैरिस्टर है कि वह मिनटों को अशर्फियों से

[13] सोशियल बँग्राउड और इंडियन ारनलि ाम-ए आर देसाई, हेमरा ा निर्भय-पृ.21

तोलते हैं। गुण और योग्यता की सफलता उसके आर्थिक मूल्यों के हिसाब से मानी ाा रही है।"[14]

5.3.2 मध्य वर्ग

उ ा वर्ग और निम्न वर्ग के बी ा में ाो एक महत्वपूर्ण वर्ग है उसी को हम मध्य वर्ग कहते हैं। कार्ल मार्क्स इस मध्यवर्ग के अस्तित्व को नहीं मानते हैं। उनके अनुसार समा ा में केवल दो वर्ग हैं। वे हैं-बू ुर्आ और श्रमिक वर्ग। उन्होंने इस मध्यवर्ग को पेटी बू ुर्आ कहा है। उनका मानना है कि यह मध्यवर्ग (पेटी बू ुर्आ) धीरे-धीरे उ ा वर्ग में मिल ााएगा मगर ऐसा नहीं हुआ बल्कि इसकी अपनी स्वतंत्र सत्ता बन गई।

वास्तव में इस मध्यवर्ग का उदय अंग्रेज़ी शासन काल से हुआ था। क्योंकि उनके द्वारा ालाई गई शिक्षा प्रणाली के द्वारा अनेक निम्न वर्ग के लोग मध्यवर्ग में रूपांतरित हो गये। इसीलिए इस वर्ग को शिक्षित मध्यवर्ग भी कहा गया है।

मध्यवर्ग को परिभाषित करने के लिए विद्वानों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मार्क्स के अनुसार समा ा के विकास का इतिहास वर्ग संघर्ष के विकास का इतिहास है। उनके अनुसार प्रत्येक संघर्षशील युग में प्रमुखतः दो ही वर्ग रहे, समा ा के एक छोर पर उन व्यक्तियों का समूह रहता आया है ाो उत्पादन व्यवस्था के स्वामी होते हैं ि ान्हें शोषक वर्ग कहते हैं तथा दूसरे छोर पर उन व्यक्तियों का समूह रहता आया है ाो अपने श्रम के आधार पर उत्पादन तो करता है किंतु उसका नाम मात्र भी हिस्सा नहीं पाता, उन्हें शोषित

[14] प्रेम ंद र ाना संकलन, सं.निर्मल वर्मा और कमल किशोर गायनका-पृ.793

वर्ग कहते हैं। इन दोनों स्थितियों के बी ा में ाीवन-यापन करने वाले व्यक्तियों के समूह को संभवतः 'मध्यवर्ग' नाम से अभिहित किया ााता है।[15]

मध्यवर्ग की स्थिति दो छोरों के बी ा की स्थिति है। सामंतवादी युग में व्यापारी समुदाय, शासकीय विभाग, शिक्षक, सैनिक समूह, पंडित आदि इस मध्यवर्ग के अंतर्गत आते हैं। "पूं ाीवादी युग में एक छोर पर औद्योगिक यंत्र और प्राकृतिक साधनों के स्वामी पूँ ाीपति हैं और दूसरे छोर पर म ादूरों का वर्ग है, ाो उ ा वर्ग को अपना श्रम विक्रय करने के लिए बाध्य है। इस पूं ाीवादी युग में 'मध्यवर्ग' के दो प्रमुख समुदाय दिखाई पड़ते हैं-एक तो वह समुदाय है ि ासमें व्यक्ति उत्पादन यंत्रों के प्रयोग में विशेष निपुण है और उसकी निपुणता का फायदा पूं ाीपति अधिक से अधिक उठाता है, इस श्रेणी में मैकेनिक-इं ाीनियर आदि आते हैं। दूसरे समुदाय का संबंध उन लोगों से है ि ानका ज्ञान समा ा के लिए है ैसे डॉक्टर, शिक्षक, वकील, साहित्यकार आदि।"[16] मध्यवर्ग के इस दूसरे समुदाय को ही शिक्षित मध्य वर्ग कहते हैं। क्योंकि इस वर्ग के लोग शिक्षा के माध्यम से ही इस वर्ग में आ पहुँ ो। इस शिक्षा के मूल में बुद्धि है। इसीलिए इस वर्ग को बुद्धि ाीवी वर्ग भी कहा गया है।

इस मध्यवर्ग को धीरेंद्र वर्मा ने निम्न प्रकार से परिभाषित किया है- "पूँ ाीपति आर्थिक व्यवस्था ने समा ा को इतना ाटिल बना दिया है कि वह मध्यवर्ग की भी आवश्यकता हुई ाो इस ाटिल व्यवस्था के संघटन सूत्र को संभाल सके। इस वर्ग में नौकरी पेशा, शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेषतः बुद्धिप्रधान वर्ग माना गया है और सामाि ाक क्रांति

[15] हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय ोतनाःबीना श्रीवास्तव-पृ.19

[16] हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय ोतनाःबीना श्रीवास्तव-पृ.14-15

के प्रायः समस्त वि ाारों का सघत मध्य वर्ग में होता है।"[17] अतः इस से यह स्पष्ट होता है कि मध्यवर्ग शिक्षित एवं बुद्धि ाीवी वर्ग होने के कारण सामा िाक संघटन और समतुल्यता के लिए इस वर्ग की आवश्यकता समा ा में है।

"समकालीन भारतीय समा ा" पुस्तक में मध्वर्ग की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-"वर्तमान समा ा में निम्न श्रम ाीवि तथा निरे वेतन भोगी और उ ा धनी ामींदार, ताल्लुकेदार तथा व्यापारी वर्गों के अतिरिक्त एक नवीन मध्यम वर्ग का उदय हो गया है ि ासमें अधिकांशतः नवोदित उद्योगपति, कारीगर, दस्तकार तथा विज्ञानी, ि ांतक तथा बुद्धि ाीवी लोग हैं।"[18]

आधुनिक भारतीय समा ा में मध्यवर्गीय सदस्यों की ा ाि करते हुए प्रसिद्ध समा ा शास्त्री ा.डी.ए ा.कोल ने लिखा है कि-"आधुनिक प्रमुख व्यवसाय के 'सदस्य' तथा वकील, ि ाकित्सक, प्रोफेसर, लेक ारर, इं ाीनियर, लेखक, संपादक, उत्पादन के सरकारी कारखानों, मिलों, व्यापारी आदि संस्थाओं के प्रबंधक, कार्यालय अधीक्षक, बैंक कर्म ाारी। रा ानीतिक दलों, ट्रेड यूनियनों, साहित्यिक समा ा सेवक आदि। अधिकांश शिक्षित दुकानदार, छोटे उद्योगपति, ठेकेदार, ाीवन-बीमा के ए ोंट, वकीलों के मुंशी, डॉक्टरों के कम्पाउंडर, नर्स, वैद्य, हकीम पटवारी आदि।"[19]

'डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉ ाी' में मध्यवर्ग की परिभाषा इस प्रकार दी गई-"मध्यवर्ग आ ा ानसंख्या के उस विभिन्न भाग को सू ाित करनेवाला पारिभाषिक शब्द है ि ासमें मुख्यतया छोटे-छोटे व्यापारी और उद्योगपति, व्यावसायिक एवं दूसरे सामान्य आय वाले बौद्धिक कार्यकर्ता, कुशल शिल्पी, समृद्ध किसान, सफेद पोश कर्मिष्ट वर्ग तथा बड़े-बड़े व्यापार केंद्रो, औद्योगिक

---

[17] हिंदी साहित्य कोश, सं.धीरेंद्र वर्मा-पृ.564

[18] समकालीन भारतीय समा ा, वी.पी.सिंह, आर.पी.पांडेय-पृ.49

[19] हिंदी उपन्यास का विकास और मध्य वर्ग, बीना श्रीवास्तव-पृ.16

प्रतिष्ठानों के वेतन भोगी सेवक आते हैं। उनमें बहुत कम सामान्य आर्थिक हित है, ाो कुछ समानता है वह उनके शैक्षिक स्तर ाीवन स्तर और पारिवारिक ाीवन के आदर्शों एवं उनके लोका ाार तथा मनोविनोदात्म हित हैं।"[20]

हिंदी के विद्वान आलो ाक डॉ.इंद्रनाथ मदान मध्यवर्ग के संबंध में लिखते हैं-"मध्यवर्ग सामंती वर्ग में व्यापारी और क्लर्कों के वर्ग हैं, ाो पूं ाीवाद के उत्थान के साथ धनी और सत्ताधारी हो गया। यह मूल रूप से मध्यवर्ग इसलिए कहा गया क्योंकि यह सामंती समा ा में उ ा वर्ग और निम्न वर्ग के बी ा में उठा। निम्न वर्ग और अभि ाात मध्यवर्ग के बी ा एक नया वर्ग उठ खड़ा हुआ है, वह वर्ग है वकील, डॉक्टर और प्रोफेसरों तथा अ छे पदों पर नियुक्त सरकारी अफसरों का।"[21]

डॉ.प्रतापनारायण टंडन मध्यवर्ग की विशिष्टता पर ा ार्ा करते हुए लिखते हैं कि-"मध्यवर्ग के विशिष्ट िाह्न धन और संपत्ति हैं और विशेष कर उनका एकत्र करना संग्रह करना और उपयोग करना मध्यवर्ग की प्रमुख पह ाान है।"[22] अतः यह स्पष्ट है कि सामाि ाक वर्गीकरण के मूल में धन और संपत्ति है। प्रा ाीन काल में ाति और वृर्त्ति के आधार पर वर्गीकरण होता था। लेकिन आधुनिक समा ा के वर्गीकरण के मूल में धन है। इसीलिए सभी लोग धन के महत्व पर विश्वास करते हैं।

मध्यवर्ग के अंतर्गत बहुत सारे लोग आते हैं। इसके स्पष्टीकरण के लिए हम मध्यवर्ग को दो श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं। प्रथम श्रेणी के

---

[20] डिक्शनरी ऑफ सोशियॉलो ाी, सं.हेनरी पी फेयर ाइल्ड-पृ.193
[21] प्रेम ंदः एक विवे ानः डॉ.इंद्रनाथ मदान-पृ.170-संस्करण 1968
[22] हिंदी उपन्यासों में वर्ग भावना, प्रतापनारायण टंडन-पृ.127

अंतर्गत छोटे व्यापारी, समृद्ध किसान, छोटे उद्योगपति, टेक्नीशियन, उ ा वेतन पानेवाले कार्यकर्ता ैसे-प्रबंधक, निरीक्षक आदि आते हैं।

द्वितीय श्रेणी में वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर, शिक्षक, लेखक, पत्रकार आदि आते हैं।

मध्यवर्ग में शिक्षित और अक्षित लोगों की संख्या होने के कारण इस वर्ग की अलग स्वतंत्र सत्ता बन गई है। मगर इस वर्ग के मूल में धन है। मध्यवर्ग को आर्थिक आधार पर तीन भागों में विभाि ात किया ाा सकता है।

1) उ ा-मध्यवर्ग

2) मध्य-मध्यवर्ग

3) निम्न-मध्यवर्ग

(1) उ ा मध्यवर्गः- इसमें अधिक धनराशि वाले सामंत, पूं ीपति उ ा मध्यवर्ग में रखे ाते हैं। इस वर्ग के लोग उ ा वर्ग के निकट में हैं।

(2) मध्य मध्यवर्गः- इसमें यादा वेतन पानेवाले नौकरी पेशा बड़े-बड़े वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर आदि आते हैं।

(3) निम्न मध्यवर्गः- इस वर्ग के अंतर्गत निर्धन, नौकरी पेशा करते हुए खाते-पीते छोटे उद्योगपति, व्यापारी आदि आते हैं। इला ंद्र ोशी ने निम्नमध्यवर्ग पर अपने वि ाार प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि- "वास्तव में शोषकों के अत्या ाारों से यह वर्ग निम्नतम वर्ग से कुछ कम पीड़ित नहीं है। पर निम्न वर्ग से उसमें यह अंतर है कि वह बहुत अधिक अनुभूतिशील और साथ ही बुद्धिवादी है। इसलिए क्रांति के मूल बी ा केवल इसी वर्ग में पनप सकते हैं।"[23]

[23] निर्वासित उपन्यास, इला ंद्र ोशी-पृ.37

मध्यवर्ग की संख्या उ ा वर्ग और निम्न वर्ग की संख्या की तुलना में अधिक है। इस वर्ग के अंतर्गत कई ाति, श्रेणी, समुदाय के लोग आते हैं। इस वर्ग का उदय मुख्यतः अंग्रेज़ी शिक्षा से होने के कारण मनोवैज्ञानिक, सामा ाक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी स्तरों पर दूसरे वर्गों से भिन्न हैं। इस वर्ग के लोग अपनी शिक्षा के बल पर उ ा वर्ग में सम्मिलित होने का प्रयत्न करते हैं मगर आर्थिक समस्याओं से उसे ू ाना पड़ता है। समा ा में इसकी एक स्वतंत्र सत्ता है ाब तक समा ा में उ ा वर्ग और निम्न वर्ग रहेगा तब तक मध्यवर्ग का भी अस्तित्व रहेगा।

5.3.3 निम्न वर्ग

पूं ीवाद के कारण उ ा वर्ग के द्वारा निम्नवर्ग का शोषण हमेशा से ाला आ रहा है। इसीलिए कार्ल मार्क्स ने इसे शोषित या सर्वहारा वर्ग कहा है।

वास्तव में इस वर्ग का उदय पूं ीवाद के कारण हुआ था। इनके ीविकोपा ान के लिए कोई निश्ि ात साधन नहीं होते। इस वर्ग के अंतर्गत कुली, कारखानों के म ादूर आदि आते हैं।

उ ा वर्ग के लोग उत्पादन कार्य में निम्न वर्ग के लोगों के श्रम का फायदा उठाता है लेकिन कम मूल्य देता है। इस प्रकार उ ा वर्ग का निम्न वर्ग पर शोषण प्रा ीन काल से ाला आ रहा है। इस वर्ग के लोगों का "सारा ीवन उ ा तथा कुछ हद तक मध्यवर्ग की सेवा में व्यतीत होता है।"[24]

निम्न वर्ग की इस दयनीय परिस्थिति पर डॉ.बी.आर.अंबेडकर ने लिखा है-"तुम्हारे यह गरीब ोहरे और करुणामय वाणी देखकर और सुनकर मेरा

[24] हिंदी उपन्यासों में वर्ग भावना-प्रतापनारायण टंडन-पृ.127

हृदय फटा ा रहा है। 'सदियों से शोषित हो' कर्म तुम्हारी धारणा है, इस प्रकार कहने वाले आप लोग माँ के गर्भ में ही क्यों न मरे?"[25]

अतः इस वर्ग के लोग ितना भी काम करने पर भी रो ी रोटी के अलावा आगे नहीं ब ़ पाते। कभी-कभी काम न मिलने पर भूखो मरने के लिए भी विवश हैं।

निम्न वर्ग के दो भेद किये ाते हैं-(1) उ ा निम्न वर्ग, (2) निम्न निम्न वर्ग।

(1) उ ा निम्न वर्गः- इस वर्ग के लोगों के पास रो ी-रोटी के लिए कोई निश्ि ात साधन या काम होता है। कारखानों और मिलो में काम करनेवाले, कुली तथा दैनिक म ादूरी पानेवाले श्रमिक आदि आते हैं।

(2) निम्न निम्न वर्गः- इस वर्ग के लोगों के पास कोई निश्ि ात साधन नहीं होता। काम मिलने पर खाते हैं और न मिलने पर भूखा रहना पड़ता है। इस वर्ग की दयनीय परिस्थिति है।

5.4 वर्ग संघर्ष

संघर्ष का अर्थ है कि ीज़ों का आपस में रगड़ खाना, टक्कर, स्पर्धा, भिडंत, दौड़, द्वेष। हिंदी भाषा कोष में संघर्ष शब्द को इस प्रकार व्याख्यायित किया गया है-संघर्ष "एक ीज़ का दूसरे ीज़ से टकराना, रगड़ खाना, संघर्षण, दो परस्पर विरोधी व्यक्तियों या दलों में स्वार्थ के विरोध के कारण होनेवाली प्रतियोगिता या स्पर्धा।

आदिम साम्यवाद के अलावा हमारा हर समा ा वर्ग-विभाि ात समा ा था। इस वर्ग-विभा ान के मूल में आर्थिक स्थिति है। आर्थिक स्थिति के आधार

[25] भारत भाग्य विधाता, बी.आर.अंबेडकर, तात्याराव कांबले-पृ.34

पर वर्गों का विभा ान हुआ है। हमारा सभ्य समा ा मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभक्त हुआ था। वे हैं-उ ा वर्ग, मध्यवर्ग और निम्न वर्ग।

कार्ल मार्क्स के अनुसार समा ा में केवल दो ही वर्ग होंगे। वे हैं-उ ा और निम्न वर्ग ि ासे हम शोषक और शोषित वर्ग भी कहते हैं।

वास्तव में वर्गों का उदय पेशे अथवा कार्यों के आधार पर हुआ है। वर्गों का वर्गीकरण तार्किक अधिक है और समा ा शास्त्रीय कम। वर्ण प्रायः वर्गों की ही सामा ाक संज्ञा है।

"सामा ाक परिस्थितियाँ ही समा ा में विभिन्न श्रेणियों और उनके संघर्षों के स्वरूप को निर्धारित करती हैं। अतः इतिहास की व्याख्या के लिए आर्थिक परिस्थितियों पर आधारित श्रेणी-संघर्ष की व्याख्या भी आवश्यक हो ाती है।"[26]

पूं ाीवादी व्यवस्था में उ ा वर्ग उत्पादन कार्य में निम्न वर्ग का शोषण करने लगा। इसीलिए उ ा वर्ग को शोषक वर्ग और निम्नवर्ग को शोषित वर्ग कहते हैं। इस शोषण के मूल में निम्नवर्ग या सर्वहारा वर्ग की निर्दयता है। "आधुनिक पूं ाीवादी युग में सर्वहारा वर्ग विषय की ओर ब ़ रहा है। अब ये वर्ग शोषण से अवगत हो रहा है। पूं ाीवादी वर्ग को सर्वहारा वर्ग ाड़ से उखाड़ना ाहता है। मगर यह तभी संभव होगा ाब शोषितों में वर्ग ेतना की भावना का उदय हो। इस संदर्भ में डॉ.रामविलास शर्मा लिखते हैं कि-"मनुष्यों की ेतना उनकी सत्ता निश्ि ात नहीं करती वरन् इसके विपरीत उसकी सामा ाक सत्ता उनकी ेतना को निश्ि ात करती है।"[27] अतः स्पष्ट है कि शोषितों को शोषकों के विपरीत एक होना उनकी ेतना को निश्ि ात करती है।

---

[26] हिंदी काव्य में मार्क्सवाद ेतना, ानेश्वर वर्मा-पृ.84

[27] मानव सभ्यता का विकास, डॉ.रामविलास शर्मा-पृ.144

वर्ग ोतना एक ऐसा भाव है ो समान सामा िक स्थिति का भोग करनेवाले समू ो समूह को एकीभूत करता है।

शोषित या सर्वहारा वर्ग की इस वर्ग ोतना के कारण वर्ग संघर्ष का उदय होता है। वर्ग संघर्ष हमेशा दो भिन्न आर्थिक स्थिति रखनेवालों के बी ा में होता है। शोषित वर्ग अपनी स्थिति में सुधार ाहता है और इसी सुधार के लिए उसे उ ावर्ग या शोषक वर्ग से संघर्ष करना पड़ता है। साथ ही साथ शोषक वर्ग अपनी स्थिति को कायम रखने के लिए और शोषितों का और शोषण करने के लिए वह शोषित वर्ग से संघर्ष करता है। इस प्रकार संघर्ष की यह प्रक्रिया प्रा ीन काल से ाली आ रही है।

यह संघर्ष तब तक ालेगा ाब तक समा ा में वर्ग होंगे। मार्क्स ने वर्ग विहीन समा ा की कल्पना की है। "अतः मार्क्सवाद सामा िक विकास के लिए वर्गहीन समा ा की स्थाना को एक अनिवार्य आवश्यकता सम ाता है। इस प्रसंग में यह भी ध्यान में रखने योग्य है कि मार्क्सवाद वर्गहीन समा ा का समर्थक होते हुए भी वर्ग संघर्ष के वास्तविक स्वरूप पर किसी प्रकार का परदा डालना उि ात नहीं सम ाता है और न वर्ग संघर्ष को हटाने के लिए पूं ीपतियां से किसी प्रकार का सम ौता ही करना ाहता है। इसके विपरीत वह वर्गहीन समा ा की स्थापना के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वर्ग ोतना का अधिकाधिक प्रसार करके संघर्ष द्वारा उसके अंतिम परिणाम तक ले ाना ाहता है।"[28]

संघर्ष एक गतिशील प्रक्रिया है। इससे विकास होता है। वर्ग संघर्ष से समा ा में विकसित व्यवस्था का ान्म होता है। वर्ग संघर्ष के परिणाम स्वरूप बननेवाली हर नयी व्यवस्था अपने पहले की अवस्था से निश्ि ात ही बेहतर होती है। लेकिन इस नयी व्यवस्था में भी विसंगतियाँ पैदा हो ाती हैं और

[28] प्राब्लेम आफ लेनिनि ाम, ो.स्टालिन-पृ.415

पुनः संघर्ष का ान्म होता है। इस प्रकार वर्ग संघर्ष एक गतिशील प्रक्रिया है। मार्क्सवाद में वर्ग-संघर्ष के सिद्धांत का बड़ा महत्व है क्योंकि यही सामा ाक परिवर्तन के ाक्र को गतिशील बनाता है और समा ा की निश्ि ात श्रेणी के लोगों के भीतर वर्ग- ोतना उत्पन्न की ाती है। ऐसी वर्ग- ोतना से मनुष्य ही क्रांतिकारी बनते हैं और संघर्ष के द्वारा शोषक वर्ग को नाश करके सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित करते हैं।

"प्रत्येक सामा ाक क्रांति ने ाहाँ एक वर्ग-संघर्ष का समाधान किया है वहाँ उसने दूसरे वर्ग को और दूसरे प्रकार के वर्ग-संघर्ष को ान्म भी दिया है। दास-व्यवस्था से लेकर पूं ीवादी व्यवस्था तक यही क्रम ालता रहा है।"[29]

शोषक और शोषित वर्गों के बी ा का यह संघर्ष बहुत लंबे समय तक ालनेवाला है। लेकिन इस युद्ध में शोषित वर्ग ही वि ायी होता है क्योंकि उनकी संख्या शोषक वर्ग से अधिक है और उत्पादन कार्य में यही वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्ग संघर्ष के इस युद्ध में म ादूर वर्ग ही वि ायी है। इसीलिए कार्ल मार्क्स दुनिया के म ादूरों को एक होने के लिए बुलावा देता है। इस संदर्भ में डॉ.शिवकुमार मिश्र ने लिखा है कि "ऐतिहासिक भौतिकवाद हमें यह बतलाता है कि इतिहास के नियामक और निर्माता महापुरुष नहीं, आम मेहनतकश ानता होती है। सामा ाक ीवन के और इतिहास के विकास में निर्णायक भूमिका इसी ान सामान्य की होती है।"[30] इस प्रकार वर्ग संघर्ष के इस युद्ध के वि ोता म ादूर वर्ग ही इतिहास के नियामक और निर्माता है। यह बात उपरोक्त विवे ान से स्पष्ट होती है।

पूं ीवाद में म ादूर वर्ग परिवर्तन का नेतृत्व करता है। यही वह वर्ग है ो अपने स्वार्थों की सीमा को लाँघकर समय की पुकार को सुन, शोषकों के

---

[29] हिंदी काव्य में मार्क्सवाद ोतना, ानेश्वर वर्मा-पृ.86

[30] ऐतिहासिक भौतिकवाद, मनमथनाथ गुप्त-पृ.35

विरुद्ध संघर्ष में निर्णायक भूमिका निभाता है। विश्व में ितनी भी क्रांतियाँ हुई हैं, उनमें म ादूर वर्ग हमेशा सबसे आगे रहा है।

5.5 शेखर ोशी की कहानियों में वर्ग संघर्ष

शेखर ोशी 'नई कहानी' के ाित कहानीकारों में से एक हैं। 'नई कहानी' के अधिकांश कहानीकारों की तरह शेखर ोशी ने 54-56 के आसपास लिखना-शुरू किया था। 'नई कहानी' के दौर के कहानीकार आज़ादी के उपरांत की स्थिति से असंतुष्ट हैं। इसीलिए उनकी कहानियों में कुंठा, हताशा, संत्रास, एकाकीपन तथा सेक्स आदि विषय प्रमुख रूप से ित्रित है। और पूरी प्रामाणिकता तथा संवेदनशीलता के साथ नई कहानी को स्थापित कर पाने में सफल भी हुए, मगर उस समय भी कुछ कहानीकार दबे-पिछड़े, संघर्षरत लोगों की ीवन स्थितियों के यथार्थ-ि ात्रण को अपनी कहानियों का विषय बनाया। इस परंपरा के कहानीकारों में भैरव प्रसाद गुप्त, अमरकांत, मार्कण्डेय, शेखर ोशी आदि आते हैं।

शेखर ोशी के सृ ानशील ीवन का बड़ा हिस्सा कारखानों में बीता है। इसीलिए उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर 'डांगरी वाले' कहानी संग्रह की कहानियों में कारखानों में होनेवाले वर्ग संघर्ष का स ीव ित्रण किया है। "अपने आसन्न अनुभव से ारा भी हटना उन्हें गवारा नहीं है। नई कहानी आंदोलन में अनुभव की प्रामाणिकता पर बल होता भी था। यदि आसन्न अनुभव में समा ा के वर्गों की तीव्र टकराहट नहीं हैं तो उनकी र ाना में भी वह टकराहट नहीं दिखेगी।"[31] उन्होंने अपनी कहानियों को मध्यवर्ग को केंद्र में रखकर लिखा है।

---

[31] ाटिल सादगी का कथा संसार, आ ाकल, मा ि 1995-पृ.45

शेखर ोशी अपने ीवन में ो पहली साहित्यिक कृति प ी थी वह थी सुमित्रानंदन पंत की पतली सी काव्य पुस्तक उ छ्वास। उन्हें इस में मार्क्सवादी प्रगतिवादी उ छ्वास नहीं दिखता। लेकिन स ी वर्गीय दृष्टि सर्वत्र दिखती है। इसीलिए उन्होंने अपने अि ति ज्ञान और अनुभव के आधार पर समा ा में होनेवाले वर्ग संघर्ष का यथार्थ ि त्रण अपनी कहानियों में किया है।

उन्होंने इस सामाि ाक यथार्थ और अनुभव के महत्व पर बल देते हुए 'डांगरीवाले' कहानी संग्रह की भूमिका में लिखा है कि-"र ानात्मक लेखन एक सापेक्ष प्रक्रिया है। मनुष्य के मानसिक संस्कार, विभिन्न सामाि ाक स्थितियों का दबाव, व्यक्तिमन का अहं, नि ी अस्तित्व की पह ान का आग्रह, राग-विराग, भावनात्मक संवेग, संवेदना क्षमता और नि ी अनुभवों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देख पाने की दृष्टि कई ऐसे कारक हैं ो मिलकर संवेदना को र ाना तक पहुँ ाने में सहायक होते हैं। या उसका कारण बनते हैं। मूलतः ये परिवेशगत स्थितियाँ ही हैं ो एक र ानाकार को दूसरे र ानाकार से भिन्न धरातल पर आंदोलित करती हैं।"[32] अतः इससे स्पष्ट होता है कि शेखर ोशी अपने अनुभव के आधार पर समा ा में होनेवाले वर्ग संघर्ष का ि त्रण किया है। इनकी कई कहानियों में ैसे-"दा यु, आखरी टुकड़ा, गलता लोहा, डांगरीवाले, आशीर्व ान, सीि ियाँ, हलवाहा, बो ा, बंद दरवा ो, खुली खिड़कियाँ, समर्पण आदि में वर्ग संघर्ष का ि त्रण हुआ है।

संघर्ष हमेशा दो भिन्न आर्थिक स्थिति के वर्गों के बी ा में ही उत्पन्न होता है। ाहे वह संघर्ष ातिपरक हो, धर्मपरक या वृत्तिपरक, सामंत-किसान संघर्ष। शेखर ोशी इस युगीन समस्याओं को अपनी र ाना-प्रक्रिया में प्रमुख स्थान दिया है।

---

[32] डांगरीवाले, शेखर ोशी, आधार प्रकाशन-पृ.7

'दा यु' संभवतः शेखर ोशी की पहली कहानी। ि ासका प्रकाशन सन् 1953 ई. में हुआ था। इस कहानी को शेखर ोशी ने 'पर्वतीय ानपद' पत्रिका के लिए लिखा था। ो बाद में 'संकेत' में प्रकाशित होकर ा ार्ा के केंद्र में आयी। इस कहानी में वर्ग-संघर्ष सर्वत्र दिखाई देता है। मुख्य रूप से कहीन के मदन नामक पात्र में यह संघर्ष तीव्र रूप से दिखाई देता है। कहानी में एक छोटा-सा केफे है ि ासमें अल्मोडा का मदन नामक एक लड़का काम करता है। एक दिन ागदीश बाबू नामक एक स ान वहाँ आते हैं। दूसरे देश से आए हैं, अकेले हैं इसीलिए केफे के छोकरे से बातें करने लगते हैं। वो भी उस लड़के के गाँव के पास के रहनेवाले हैं। दो- ाार दिन में उन दोनों के बी ा की अ ानबीपन की खाई दूर हो ाती है और मदन, ागदीशबाबू को दा यु कहने लगता है।

लेकिन कुछ दिनों के बाद ागदीशबाबू का एकाकीपन दूर हो ाता है। अब उन्हें बार-बार दा यु कहलाना अ छा नहीं लगता इसलिए वह मदन को एक दिन डांट देते हैं-"यह दा यु, दा यु क्या ि ाल्लाते रहते हो रात दिन। किसी की प्रैसटि ा का ख्याल भी नहीं तुम्हें।"[33] क्योंकि अब ागदीशबाबू के मध्यवर्गीय संस्कार ाग उठा है। मदन कैफे में काम करनेवाला निम्नवर्गीय लड़का है। सभी के सामने दा यु कहना ागदीशबाबू को पसंद नही ंहै। इसीलिए वह डांटता है। मदन घुटनों में सर रखकर कोठरी में सिसकियाँ भर-भर कर रोता रहा। इस प्रकार मदन को छोटी उम्र में ही दो वर्गों के बी ा का अंतर उसके बाल मन को कुंद कर डाला।

यही मध्यवर्गीय संस्कार हमें 'डांगरीवाले' कहानी में भी मिलता है। 'डांगरीवाले' एक ऐसे कारखानिया म ादूर के परिवार की कहानी है ो धीरे-

[33] डांगरीवाले, शेखर ोशी, आधार प्रकाशन-पृ.98

धीरे निम्न मध्यवर्ग से आधुनिकता और समृद्धि की ओर ब ़ रहा है। इस कहानी में म ादूर परमेश्वर और इं ीनियर नरेश के माध्यम से वर्गीय संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। परमेश्वर एक निम्नमध्यवर्गीय म ादूर है ो अपने इस मध्यवर्गीय ेतना के कारण हर छोटी सी ीज़ को बहुत सावधानी से संभालकर रखता है। हमें यह बात कहानी की इन पंक्तियों से स्पष्ट होती है। "उनकी साइकिल के कैरियर में हमेशा दो अतिरिक्त ोले रहते िनमें शाम को लौटते हुए वह मंडी से सस्ती सब ी और सदर बा ार से दाल-मसाले, तेल-साबुन तथा घरेलू ारूरत की अन्य वस्तुएँ खरीद लाते। एक-एक सामान के लिए दस दुकानों में भाव पूछते और ाहाँ सस्ता मिलता वहीं से खरीदते थे। व्यसन के नाम पर खैनी के अलावा उन्हें कोई शौक नहीं था। कपड़ों की ब ात के लिए मोटे-मोटे वस्त्रों के ऊपर ड्यूटी पर ाते हुए डांगरी डाल लेते ो उनके अनुसार सरकारी वर्दी थी। ैसे पुलिस की होती है, मिलिट्री के सिपाही की होती है, िससे उसकी पह ान बनती है। लेकिन वास्तव में यह किफायतसारी का ही एक बहाना था।"[34] अतः इससे स्पष्ट होता है कि परमेश्वर अपने इस मध्यवर्ग की रक्षा के लिए निम्न और उ ा वर्ग से संघर्ष करता है।

इसके विपरीत में परमेश्वर का इं ानीयर बेटा नरेश अपने इस मध्यवर्गीय परिवार को उ ा वर्ग में सम्मिलित करने में उत्सुक है। इसके मूल में नरेश की मध्यवर्गीय ेतना है िसका विकास प ़ाई और इं ीनियर पेशे की व ाह से हुई है। इसी क्रम में वह डाइनिंग टेबुल खरीदता है िससे घर की मर्यादा ब ़े और उसकी शादी की दावत भी आधुनिक ंग से करवाता है िससे कि अपने अफसर लोगों को भी वह निःसंको ा बुला सके। इस प्रकार हम

[34] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.98

इं ीनियर नरेश के पात्र में निम्न मध्यवर्ग से उ ा वर्ग में सम्मिलित होने का संघर्ष पाते हैं। इसी को हम मध्यवर्गीय संघर्ष कहते हैं। वास्तव में मध्यवर्ग अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण समा ा के उ ावर्ग के समकक्ष पहुँ ाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यही मध्यवर्गीय संस्कार कहानी के नरेश पात्र में देखने को मिलते हैं।

'हलवाहा' कहानी किसान संघर्ष की कहानी है। ीवानंद उ ा ाति का होते हुए भी कम ामीन वाला किसान है। उसकी ामीन को उस गाँव के सामंत बद्री प्रधान अपनी ामीन में मिला लेना ाहता है। इसके लिए वह षडयंत्र भी र ाता है। इसके लिए वह उनकी संवेदनाओं को भी उभारने से बा ा नहीं आता- " ाब से तुम्हारे पिता गु ारे हैं, अब गाँव में किसी से बोलने-बतियाने का मन नहीं करता। देह में ताकत होती और तुम्हारी तरह ाार अ छर प.ा होता तो इस खेती-बाड़ी की माया छोड़कर परदेश में कहीं रो ागार खो ा लेता। मिट्टी के साथ ि ांदगी मिट्टी हो गई। रात दिन हाय-हाय करो, फिर भी पूरा नहीं पड़ता।"[35] इस प्रकार सामंत वर्ग का बद्री प्रधान किसान वर्ग के ीवानंद को ामीन बे ा कर म ादूर बनने का उपदेश परोक्ष रूप से देता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामंत वर्ग किसान वर्ग को ामीन बे ाने को ला ाार करके उनको किसान से म ादूर बनाने का प्रयत्न करते हैं और किसान वर्ग ामीन को ब ाने के लिए संघर्ष करता है। ो हमें ीवानंद पात्र में देखने को मिलता है। इस कहानी के माध्यम से सामंती वर्ग और किसान वर्ग के बी ा का वर्ग संघर्ष सामने आता है।

इस वर्ग संघर्ष में ीवानंद उ ा ाति का होते हुए भी अंत में अपने बिरादरी के विरुद्ध हल ालाता है। इस प्रकार उसे ाति संघर्ष भी करना पड़ता

[35] शेखर ोशी, प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.52

है। ीवानंद को हल ालाते हुए देख कर बद्री प्रधान क्रोध, घृणा तथा ग्लानि के कारण कहता है-"कुल-घातक ि ाबुआ स्वयं हल ाला रहा था। फाल की टे.ी-मे.ी लकीरें उसके नौसिखिएपन की गवाही दे रही थीं।"[36] इस प्रकार ीवानंद एक मो ेर्ं पर दो तरफा युद्ध करता है।

यहीं ातिपरक संघर्ष 'गलता लोहा' कहानी में भी दिखाई देता है। गरीब ब्राह्मण ंद्रदत्त का बेटा मोहन और लुहार धनराम दोनों मित्र थे। उनका मास्टर त्रिलोकसिंह मोहन की सवर्ण मेधा पर विश्वास करते हैं कि ब्राह्मण का बेटा है तो प.ं ही ाएगा। और साथ में लुहार धनराम को डाँटते हैं "तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे। विद्या का ताप कहाँ लगेा इसमें?"[37] इस प्रकार मास्टर अपने छात्रों में ातिगत भेद भाव दिखाते हैं और इसके परिणाम से छात्रों में वर्ग संघर्ष की भावना उत्पन्न होती है। लेकिन मोहन के प्रति उनका थोड़ी-बहुत ईर्ष्या रहने पर भी प्रारंभ से उसके प्रति स्नेह और आदर का भाव रखता था। इसका कारण यह है कि धनराम के मन में ब ापन से ही ातिगत हीनता का भाव है। इस से यह स्पष्ट होता है कि समा ा में फैली हुई ाति व्यवस्था के कारण सहपाठियों को भी आपस में संघर्ष करना पड़ता है।

यह संघर्ष दो भिन्न ातियों तक सीमित न रहकर आर्थिक स्थित के आधार पर एक ही ाति में भी दिखाई देता है। मोहन के बिरादरी का ही आर्थिक रूप से संपन्न रमेश मोहन को अपना भाई बतलाना अपने सम्मान के विरुद्ध सम ाता है मोहन को एक नौकर के रूप में ही देखता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्थिक स्थिति अपने बिरादरी के लोगों को भी अपना नहीं रहने देती।

---

[36] शेखर ोशी, प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.58

[37] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.76

इस कहानी में दो भिन्न ाातियों के बी ा में होनेवाले संघर्ष को लेखक ने कलात्मक ंग से प्रस्तुत किया है। "सामान्य तौर से ब्राह्मण टोले के लोगों को शिल्पकार टोले में उठना-बैठना नहीं होता था। किसी कामका ा के सिलसिले में यदि शिल्पकार टोले में आना ही पड़ा तो खड़े-खड़े बात ीत निपटा ली ाती थी। ब्राह्मण टोले के लोगों को बैठने के लिए कहना भी उकनी मर्यादा के विरुद्ध सम ा ाता था।"[38]

प्रस्तुत कहानी में ध्यान देनेवाली और एक बात यह है कि आर्थिक स्थिति के कारण ाातिगत पेशा में भी परिवर्तन आता है। अंत में मोहन पुरोहित खानदान का होते हुए भी पारंपरिक कर्म-कांड छोड़कर शहर में वेल्डिंग का काम सीखता है और गाँव आकर ाब अपने लुहार मित्र के हाथ से लोहे को लेकर उसे ठोक-पीटकर सुघड़ रूप दे देता है, तो उसके लुहार मित्र को आश ार्य इस बात पर होता है कि एक पुरोहित खानदान का युवक भी इस तरह का काम कर सकता है। इस कहीन में ाातिपरक संघर्ष, वृत्तिपरक संघर्ष, आर्थिक संघर्ष तीनों एक साथ देखने को मिलते हैं।

'समर्पण' कहानी दो भिन्न ाातियों के बी ा के संघर्ष को खोलकर सामने रखती है। कहानी में यह संघर्ष शिल्पकार वर्ग और ब्राह्मण वर्ग के बी ा में होता है। शिल्पकार अपने निम्नमध्यवर्गीय ीवन में थोपे हुए संस्कार की व ाह से अपनी ाति को उ ा वर्ग में गिनने लगते हैं। इसके मूल में सेवक ी का उपदेश है ि ससे सभी शिल्पकार, हलवाहे, लुहार यज्ञोपवीत धारण कर लेते हैं। उनका मानना है कि यज्ञोपवीत धारण करने से अछूत लोग भी उ ा वर्ग के अंतर्गत आ ाएँगे। "लेकिन सो ाने वाली बात यह है कि सदियों पूर्व ऋषि-मुनियों और आदि पुरुष मनु ने ो वर्ण-व्यवस्था बनायी थी, तो क्या वह एक

[38] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.79

ाटके में क्षणिक और कम ोर परिवर्तन से नष्ट हो ाायेगी? ाहिर है, नहीं। क्योंकि कोई भी बदलाव, ाब तक यहाँ के निम्नवर्गीय ाीवन को कोई ठोस आधार नहीं दे पाता है, तब तक भारतीय समा ा में आधारभूत परिवर्तन लाना मुश्किल है। नहीं तो खुद निम्नमध्यवर्गीय समा ा बदलाव के इस व्यामोह से मुक्ति पा लेगा।"[39] इस कहानी के अंत में भी यही होता है।

कहानी में निम्नवर्गीय लोगों का कई ागहों में उ ा वर्ग से संघर्ष होता है। यहाँ तक कि ााय की दुकान पर भी। दुकान में निम्नवर्गीय लोगों के लिए ाार-छः गिलास या प्याले अलग से रखते हैं ि ासकी सफाई ग्राहकों के द्वारा ही की ाती है। इससे गाँव में फैली हुई वर्गीय भेद भावना का स्वरूप स्पष्ट हो ाता है। वर्गीय भेद भावना से ही वर्ग-सघर्ष का ान्म होता है।

प्रस्तुत कहानी के अंत में इस संघर्ष में निम्न वर्ग हार ही ाता है। ि ासका स्पष्टीकरण हमें कहानी के धनियाँ पात्र से मिलता है। इस हार के मूल में निम्नमध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति है। ि ाससे तंग आकर निम्नमध्यवर्ग अपनी हार कबूल लेता है। यहीं पर कहानी का अंत होता है। "वैद्य ाी की दुकान से निराश बाहर निकल, धनियाँ ने पूरा ोर लगा, छः पल्ले का मोटा ानेऊ तोड़कर सड़क के एक ओर फेंक दिाय। यज्ञोपवीत धारण करते समय सेवक ाी ने एक गोपन मंत्र दिया था-'ओम् भ भुः...' लेकिन यज्ञोपवीत उतारते समय धनियाँ ने ब ाुवा को मन-ही-मन एक गाली दे डाली...।"[40] इस प्रकार निम्न मध्य वर्ग उ ा वर्ग के समकक्ष पहुँ ाने के प्रयत्न में परा ाित हो ाता है। लेखक ने इस बात की ओर ारूर संकेत किया है कि-" ाब देश और समा ा पूर्णतया कर्म प्रधान हो ाायेगी तो अपने आप यह ातिभेद मिट ाायेगा,

[39] हंस, अप्रैल 1990, मेरा पहाड के बहाने-देवेंद्र कुमार ौबे-पृ.87
[40] हंस, अप्रैल 1990, मेरा पहाड के बहाने-देवेंद्र कुमार ौबे-पृ.89

लेकिन इसके लिए किसी-न-किसी को तो पहल करनी ही पड़ेगी।"[41] यहीं बात 'गलता लोहा' कहानी के अंत में और 'हलवाहा' कहीन के अंत में भी दिखाई देती है।

'गलता लोहा' कहानी में मोहन उ ा वर्ग का होते हुए भी अंत में "मोहन कुछ देर तक उसे काम करते हुए देखता रहा, फिर ैसे अपना संको ा त्यागकर उसने दूसरी पकड़ से लोहे के स्थिर कर लिया और धनराम के हाथ से हथौड़ा लेकर, नपी-तुली ोट मारते, अभ्यस्त हाथों से धौंकनी फूँककर लोहे को दुबारा भट्टी में गर्म करते और फिर निहाई पर रखकर उसे ठोकते-पीटते सुघड गोले के रूप में दे डाला।"[42]

इन दोनों कहानियों में लेखक की कल्पना साकार हो गयी। क्योंकि यहाँ समा ा कर्म प्रधान हो गया है ि ासे ाातिभेद मिट ाायेगा। समर्पण कहानी में ाहाँ ाातिपरक संघर्ष में निम्न मध्यवर्ग हार गया वहीं 'गलता लोहा' तथा 'हलवाहा' कहानियों में निम्नमध्यवर्ग को वि ाय प्राप्त हो गयी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ाब समा ा कर्म पर ोर देता है तो ाातिगत भेदभाव अपने आप मिट ाएँगे ि ासे समा ा का विकास होता है। यही विकास वर्ग संघर्ष के मूल में है ि ासे समा ा प्रगतिशील बनता है।

स्वतंत्रता पूर्व अंग्रेज़ों के आक्रमण से कृषि भूमि धीरे-धीरे कारखानों के रूप में बदलती ाा रही थी, ामीन के इस बदलते रूप को लेकर किसानों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ संघर्ष किया है ि ासमें हम किसान संघर्ष या कृषक संघर्ष कहते हैं। यहीं किसान संघर्ष स्वतंत्रता के बाद भी कारखानों के मालिकों के खिलाफ करना पड़ा। इस प्रकार दो पीि यों के लोगों को ामीन की रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए हम 'आखिरी टुकड़ा' शीर्षक कहानी में देख सकते हैं।

---

[41] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.44

[42] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.80

'आखरी टुकड़ा' कहानी किसान संघर्ष की कहानी है। अंग्रेज़ों के भू-आक्रमण से मंगरू किसान से मज़दूर बन ाता है। लेकिन उसे इस बात की खुशी हे कि उससे हड़प ली गयी ामीन सीमेंट और ईंट पत्थरों से बाँ ा होने से ब ा गयी थी। मंगरू को अब भी याद है कि ामीन के इस टुकड़े को ब ाने के लिए उसका बाप कितना तड़पते थे। मंगरू का बाप नींद में भी इस तरह कराहते हुए उन्होंने देखा था-"पुरखों की थाली है, मालिक। इसका सौदा मत करो।"[43] मंगरू खुद इस ामीन को ब ाने के लिए पुलिस से संघर्ष किया उन्होंने पहली बार पुलिस-थाना, हथकड़ी-बेड़ी देखी थी।

गाँव की इस ामीन को ब ाने के लिए दो पी ़ी के लोग अर्थात् मंगरू और उनके पिता तत्पर थे। वह स्वयं अपने बेटे सूर ा से कहता है-"और कोई कभी करे, न करे, तू उस धरती को अपने हाथों से बाँ ा न करे, सूर ाा। पुरखे सरापेंगे।"[44] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि किसान को अपनी ामीन के प्रति कितना लगाव होता है। यह कहानी इस ब ो हुए आखरी टुकड़े को ब ाने की किसान के संघर्ष की कहानी है।

किसान संघर्ष की इस कहीन में किसान अंत में परा ित होता है। क्योंकि सूर ाा स्वयं उस भूमि को कारखाने में परिवर्तित करता है। इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार निम्न मध्यवर्ग के कम भूमिधर किसान से म ादूर बनते ाा रहे हैं। और किस तरह शोषित वर्ग के शोषण का शिकार होते ाा रहे हैं।

ैसे- ैसे समय बदलता ाा रहा है वैसे-वैसे शोषण की इस प्रक्रिया में भी बदलाव आ गया। अब शोषक वर्ग पहले की तरह अपना अधिकार नहीं

---

[43] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.57
[44] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.64

दिखा रहे हैं। शोषण तो ारूर करते हैं मगर बहुत ही ाालाकी से। शोषकों की इस ाालाकी युक्त शोषण हमें 'बो ा' नामक हानी में मिलती है।

'बो ा' कहानी म ादूर वर्ग के संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में 'वह' नामक पात्र गाँव में म ादूरी (कुली) करता है। दिन भर काम करके शाम लने पर ाब वह कमर सीधी कर उठने का प्रयत्न करता है तो उ ा वर्ग का भीमसिंह ातुरता से इस प्रकार कहता है-"ले यार! एक बीड़ी का दम लगा ले फिर ये दस-बारह पौधे रह गए हैं इन्हें भी निबटा देना इसी हाथ।"[45] इससे यह स्पष्ट होता है कि शोषक वर्ग कम दाम देकर श्रमिकों से यादा काम करवाता है। इस रूप में उनका शोषण होता रहा है। मगर ऐसी बात नहीं कि 'वह' इस बात को नहीं सम ाते, वह सब कुछ ाानते और सम ाते हुए भी वे सहने के लिए विवश हैं। इसका कारण उनकी आर्थिक स्थिति है। इसी की व ाह से वह सब कुछ सहने के लिए ला ाार है।

इस प्रकार के शोषण का सामना उन्हें कई बार करना पड़ा। दुकानदार रामदत्त ाी भी उन्हें इसी प्रकार शोषण करता है-"अरे भुला, ाा तो भैया, वह हल्दानी से लाला की प र्ी लाया होगा। उससे कह देना कल माल भी ले ाय" प र्ी लेकर लौटने पर आशीषते हुए कहता है-" ाीते रहो बेटा, ारा ये पल्ला भी उड़का दो, बड़ी हाड़-तोड़ हवा है। लगता है ौबटिया में फिर बर्फ पड़ गई है।"[46] आगे ाल कर वह म ादूरी के लिए गाँव से शहर पहुँ ाता है। वहाँ भी उसे इसी प्रकार के शोषण का सामना करना पड़ता है।

शहर में वह पहाड़ों की ा.ाइयाँ नापते हुए यात्रियों का सामान पीठ पर लादने का काम करता है तो वहाँ पर भी उ ावर्ग के शोषण का सामना करता है। पहाड़ों की ा.ाई पर ालते समय यात्री कुछ दूर ालने के बाद सामान के

[45] शेखर ोशी की प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.45
[46] शेखर ोशी की प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.45

साथ अपना ओवरकोट, छाता या थरमस इत्यादि भी सह ा भाव से पकड़ने के लिए देते थे और कभी-कभी प्रशंसा भी कर देते, "तुम तो भई खूब ाल लेते हो, हम तो इत्ते में थक गए।"[47] अतः स्पष्ट है कि गाँव हो या शहर कहीं पर भी म ादूर या कुली का शोषण हमेशा से होता रहा। इसी शोषण से वह हमेशा टकराता या संघर्ष करता है। निम्न वर्ग या सर्वहारा वह हमेशा से संघर्ष में अर्थात् किसान संघर्ष हो या ाातिपरक संघर्ष उसमें पराि ात होता आया है। लेकिन म ादूर इस संघर्ष में वह पहली बार वि ाीय हुआ है। कार्ल मार्क्स इसलिए दुनिया के म ादूरों को एक होने के लिए कहते हैं।

म ादूर वर्ग इस संघर्ष में वि ाय प्राप्त कर लिया है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि समा ा में वर्ग संघर्ष का अंत हो गया है। वर्ग संघर्ष निरंतर ालनेवाली एक ऐसी प्रक्रिया है ाो परिवर्तन को ान्म देती है। इसका ि ाक्र हमें 'सीि ियाँ' कहानी से मिलता है।

'सीि ियाँ' म ादूर वर्ग के संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में म ादूर वर्ग कारखाने के मालिकों से संघर्ष करता है। उनका संघर्ष टी-ब्रेक को लेकर होता है। म ादूर सुबह-शाम दोनों समय पंद्रह-बीस मिनट ब्रेक ाहते हैं ि ासका विरोध मैने ामेंट के लोग करते हैं, इससे दोनों वर्गों के बी ा संघर्ष होता है। मैने ामेंट वर्ग म ादूरों को खाली समय न देकर यादा से यादा काम करवाना ाहता है। लेकिन म ादूर उनके वि ाारों से सहमत न होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ना ाहते हैं। शोषक वर्ग के शोषण के प्रति उनका विरोध कहानी की इन पंक्तियों से पता ालता है-"बहुत हरामी है भैय्या, अपना काम निकालना हो तो बेटा-बेटा, भैय्या-भैय्या कहेगा और काम निकल गया तो बस-फिरी। कोई ि ान्ह पह ानै न रखेगा।"

---

[47] शेखर ाोशी की प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ाोशी-पृ.46

"कारीगरी की कोई इ ातै नहीं इसके लिए, उल्टा-सीधा कौसा ही होय बस काम ालाऊ हो ान ाहिए। दिन-भर बस हाब! हाब! प्रोडक्शन ब ाओ, प्रोडक्शन ब.ाओ।"[48]

कहानी में असली संघर्ष तब शुरू होता है ाब म ादूरों के व्यवहार से गुस्से में आकर क्लर्क कुछ इस तरह कहता है-"मु ो मालूम नहीं था कि तुम्हें नाली में रहना ही अ छा लगता है।"[49] क्लर्क की इस बात से म ादूर अपना विद्रोह परोक्ष रूप से व्यक्त करते हैं कोई कहता है "भैनयो... ामा हो गया-स्साला।"[50] और कोई पीठ-पीछे कुछ वि ात्र स्वर करते हैं। केमिकल स्टोरकीपर क्लर्क को देखकर भी इस बार अन ाने ही बैठ गया। इससे स्पष्ट होता है कि शोषित वर्ग अब इस शोषण को सहने के लिए तैयार नहीं है। वह संघर्ष के द्वारा वर्ग विहीन समा ा की स्थापना करना ाहता है।

संघर्ष केवल म ादूर और मैने ामेंट में ही नहीं बल्कि मेने ामेंट अफसरों के बी ा में भी होता है।

सिंह साहब सुपरवाइ ार सक्सेना का लिहा ा करता था और सिंह साहब की शराफत का सक्सेना गलत फायदा उठाते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि समा ा में ि ातने भी वर्ग हैं वह आपस में हमेशा कहीं न कहीं संघर्ष करते रहते हैं। कहानी के अंत में क्लर्क अपनी गलती महसूस करता है और म ादूरों से माफी मांगने के लिए उसका मध्यवर्गीय संस्कार उसे परमिट नहीं करता। ि ासके कारण वह माफी माँगने के अलावा अपनी केबिन के अंदर ाला ाता है।

---

[48] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.41
[49] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.40
[50] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.40

'आशीर्व ान' कहानी म ादूर संघर्ष की कहानी है। इसमें श्यामलाल अपनी सेवा निवृत्ति के दिन अपने अनुभवों को याद करता है। उन्हें याद है कि वर्षों पहले वह कैं ी-मशीन पर काम करता था। उन दिनों में ाार आदमियों का काम दो आदमियों से करवाते थे और उन्हें ब्रेक भी नहीं देते थे। इसलिए उन्हें कभी बहाना बनाना पड़ता, दो आदमी टट्टी-पेशाब गए हैं, लौट आएं तो ालू करें। कभी दो आदमी बीड़ी पीने गए हैं, लौट आएँ तो ालू करें। दिन भर काम करने पर भी अफसरों का थोबड़ा सू ा ही रहता। 'बस, इतना ही हुआ।' इस से स्पष्ट होता है कि वर्षों पहले शोषक वर्ग का शोषण और भी तीव्र होता था। परिवर्तित इस नये समा ा में शोषण अवश्य है लेकिन थोड़ा कम मात्रा में। मात्रा में यह परिवर्तन वर्ग संघर्ष से हुआ है।

शोषक वर्ग के इस शोषण से तंग आकर श्यामलाल ब ारंगी से पूछ लेता है कि-"साहेब, तुमको दिन भर में कितनी ादरों से पूरा पड़ेगा? एक बार बतला दो तो रो ा की क ा-क ा, खि ा-खि ा खत्म हो।"[51] अगले दिन वह ब ारंगी से बताया गया काम घंटा-डे ़ घंटा में खत्म करके दिखाता है। लेकिन शोषक वर्ग को यह पसंद नहीं है कि बाकी समय में म ादूर आराम करे। इस से स्पष्ट होता है कि शोषक वर्ग म ादूरों का और यादा शोषण करना ाहता है। श्रमिक वर्ग ितना भी काम करने पर भी शोषक वर्ग संतुष्ट नहीं है। इस प्रक्रिया में शोषक एवं शोषित वर्गों के बी ा निरंतर संघर्ष होता है ो इस कहानी में स्पष्ट दिखाई देता है।

वास्तव में श्रमिक या म ादूरों के बारे में कई रहस्यवादी अवधारणाएँ साहित्य और समा ा में प्र ालित हैं। म ादूर ईमानदार, मेहनती, सत्यवादी और स्वाभिमानी होता है। वह अपनाये गए काम को लगन से ितने देर तक भी

[51] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.104

करने के लिए तैयार है लेकिन ाब उनके काम को प्रोत्साहन न मिलने पर या उनके स्वाभिमान को ोट लगने पर वह अपने भावात्मक संतुलन को खो बैठता है। यही स्थिति हम शेखर ोशी की 'मेंटल' कहानी में देख सकते हैं।

'मेंटल' कहानी का सत्यवादी म ादूर काम में ईमानदार है। ाब उनकी ईमानदारी पर अफसर शक करते हुए इस प्रकार कहते हैं-"तो इसका मतलब है कि डिब्बा ही नहीं यह 'टूलकिट' भी किसी और का है। तुम उसका औ ार ुरा रहे थे।"[52] तो वह अपना बुद्धि परक संतुलन खो कर मेंटल हो ाता है। वह मेंटल तब होता है ाब उनका संघर्ष अफसर के साथ होता है। इस कहानी से यह बात स्पष्ट होती है कि संघर्ष श्रमिक और अफसरों के बी ा में होने पर भी अंत में म ादूर को ही परा ाय का अनुभव करना पड़ रहा है।

आ ा के आधुनिक समा ा में भी वर्ग संघर्ष नये-नये रूपों में अलग-अलग स्तर पर होता है। आ ा समा ा ि ातना भी आधुनिक हो पर वर्ग संघर्ष की स्थिति किसी न किसी रूप में अपना स्वरूप कायम रखती है। इसीका एक नया रूप हमें शेखर ोशी की 'उस्ताद' नामक कहानी में मिलता है।

'उस्ताद' कहानी मिस्त्री से उस्ताद तक बड़े एक तकनीशियन और उससे ुड़े प ़े-लिखे अपरेंटिस (प्रशिक्षु) के बी ा का संघर्ष की कहानी है। इस कहानी में उस्ताद अपनी पूरी विद्या शिष्य को नहीं बताना ाहते। वैद्य और हकीम ैसे बेमिसाल नुस्खे अपेन साथ लिए ाले ाते हैं। स्वर्ग या नरक, लेकिन कूप में महत्वपूर्ण बने रहने की लालसा ज्ञान को बांटने से रोकती है। यह हिंदुस्तान की प्रा ीन परंपरा है। इस कहानी में भी यही होता है। मोटर इं ान का काम ाननेवाले उस्ताद 'वाल्व टाइमिंग' को नियंत्रित करने का बारीक हुनर शिष्य को बताना नहीं ाहते। किसी शिष्य को नहीं बताया। इस से स्पष्ट होता

[52] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.34

है कि उस्ताद स्वयं अपने शिष्य को भी काम में उसके निकट पहुँ ाना पसंद नहीं करता। और खुद काम में अपनी एक अलग पह ाान बनाये रखना ाहता है। इसीलिए वह 'वाल्व टाइमिंग' नियंत्रित करने के काम को एक गुप्त विद्या की तरह संभाल कर रखना ाहता है। लेकिन अंत में एक शिष्य को तब बताते हैं ाब वह शहर छोड़कर कहीं और नौकरी करने ाा रहा है। इसमें भी उस्ताद का स्वार्थ है क्योंकि अब शिष्य बाहर ाा रहा है। अगर वह 'वाल्व टाइमिंग' का काम नहीं कर पाया तो उस्ताद की ही बदनामी होगी और साथ में कारखाने में उसका महत्व घटने का खतरा भी नहीं है। संघर्ष के मूल में स्वार्थ की भी महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि स्वार्थ के कारण ही मनुष्य अपना अलग अस्तित्व बनाये रखना ाहता है। इसके लिए उसे दूसरों से संघर्ष करना पड़ता है। तभी शोषक और शोषित वर्गों का निर्माण हो सकता है। शोषित वर्ग उ ा वर्ग या शोषक वर्ग के समकक्ष पहुँ ाने की महत्वाकांक्षा से निरंतर संघर्ष करते रहते हैं। इस संघर्ष में कभी वि ाय प्राप्त करता है तो कभी परा ाय। अतः स्पष्ट है कि 'उस्ताद' कहानी में उस्ताद म ादूरों का शोषण करता है और दोनों वर्गों के बी ा में वर्ग संघर्ष या टकराव होता है।

'मेंटल' कहानी शेखर ोशी की प्रसिद्ध एवं सर्वश्रेष्ठ कहानी है। इस कहानी में म ादूर और मालिकों के बी ा संघर्ष होता है। 'मेंटल' का सत्यवादी म ादूर अपने काम को ईमानदारी से करता है। उसकी ईमानदारी और मेहनत का ही नती ाा था कि उसकी सर्विस बुक में कहीं कोई लाल निशान नहीं लगा था। लेकिन इतने ईमानदार म ादूर पर भी मालिक ाब ोरी का अपवाद लगाता है तब म ादूर का अहं टूट ाता है और मालिक एवं म ादूर के बी ा टकराव की स्थिति पैदा होती है। यह स्थिति केवल मालिक और म ादूर के बी ा तक सीमित न रहकर पूरे वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। यह टकराव या संघर्ष

एक तरह से वर्ग संघर्ष को ान्म देता है। इस संघर्ष में ाब म ादूर ैसे सीधे आदमी के अहं पर ठेस पहुँ ाता है तो वह अपना मानसिक संतुलन खो कर मेंटल बन ाता है। इस प्रकार इस कहानी में हमें ो संघर्ष देखने को मिलता है वह म ादूर एवं मालिक वर्ग के बी ा के संघर्ष की कहानी है। यही संघर्ष हमें उनकी बदबू कहानी में भी मिलती है।

'बदबू' कहानी में 'वह' नामक पात्र म ादूर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। " ाहाँ पहले दिन साबुन लगाने पर भी 'वह' नामक पात्र को अपने हाथों में बदबू होती है। यानी वही अकेला ऐसा है, ि ासे बदबू लगातार मालूम हो रही है। अर्थ यह हुआ कि वह ो है, वैसा कोई दूसरा नहीं। अर्थात् वह कारखाने में भी एक बाहरी है। उसकी मान्यताएँ कारखाने के म ादूरों से भिन्न है और पग-पग पर उसे छोटे-छोटे स्वार्थ ि ासमें म ादूर अपने साथी का भी नुकसान कर बैठता है, इतना ही नहीं, वे मालिकों, साहबों के दलाल भी बनते हैं और अपने लिए अपमान ानक स्थितियों का स्वयं निर्माण भी करते हैं।"[53] इन सभी कारणों से कहानी में 'वह' नामक पात्र को न केवल मालिक वर्ग से संघर्ष करना पड़ता है बल्कि साथ में अपने साथियों से भी संघर्ष करना पड़ता है। उसका संघर्ष ाहाँ मालिकों के साथ होता है वह वर्ग संघष है। उसे हम म ादूर-मालिक संघर्ष भी कह सकते हैं। कहानी में यह संघर्ष सिर्फ 'वह' नामक पात्र का ही नहीं बल्कि कुछ अन्य पात्रों का भी है ैसे ाब बुद्धन को बीडी पीने के लिए दण्ड घोषित करते हैं तब भीड़ में से एक व्यक्ति कहता हे-"साहब, आग तो सभी की बीडी-सिगरेट से लग सकती है।"[54] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि कहानी में केवल एक व्यक्ति के द्वारा ही नहीं बल्कि कुछ मज़दूरों के द्वारा भी यह वर्ग संघर्ष करता है। मज़दूरों में कुछ ऐसे भी म ादूर हैं ो इस संघर्ष का विरोध

[53] कहानी की बात, मार्कण्डेय, लोक भारती प्रकाशन, प्र.सं.1984
[54] डांगरीवाले, शेखर ोशी-पृ.48

करते हुए कहते हैं-"एक आदमी के कारण इतने लोगों का नुकसान हो गया, ऐसे लड़ने-भिड़ने का ही ावानी बना रखी हो तो आदमी दंगल करे, अखाड़ में ाए, नौकरी में तो नौकर की ही तरह रहना ाहिए?"[55] मगर कहानी में वह नामक म ादूर पग-पग पर मालिकों से संघर्ष करते हुए भी कभी वह हार को स्वीकार नहीं करता। ाहाँ तक कि अंत में भी उन्हें अपने हाथां से कैरोसीन तेल की बदबू आती है अर्थात् वह इस संघर्ष से परा ाय को स्वीकार नहीं करता। अगर वह हार को स्वीकार करता है तो सभी के साथ उसे भी अपने हाथों से कैरोसीन तेल की बदबू नहीं आती। बदबू-वर्गीय एकता-सर्वहारा की अभिशप्त एकता की कहानी है।

* * *

[55] प्रतिनिधि कहानियाँ, शेखर ोशी-पृ.38

उपसंहार

हिंदी कहानी में पिछले ाार दशकों से भी अधिक समय से प्रेम ांद की पारदर्शी यथार्थवादी परंपरा में लिखने वालों में शेखर ोशी का स्थान-शीर्ष है। 'नई कहानी' के अधिकांश कहानीकारों की तरह शेखर ोशी ने 54-56 के आस पास लिखना शुरू किया था। 'नई कहानी' के दौर के कहानीकार आज़ादी के उपरांत की स्थिति से असंतुष्ट थे। इसीलिए उनकी कहानियों में कुंठा, हताशा, संत्रास, एकाकीपन तथा सेक्स आदि विषय प्रमुख रूप से ित्रित हैं और पूरी प्रामाणिकता तथा संवेदनशीलता के साथ नई कहानी को स्थापित कर पाने में सफल भी हुए। मगर उस समय भी कुछ कहानीकार दबे-पिछड़े संघर्षरत लोगों की ीवन स्थितियों के यथार्थ-ित्रण को अपनी कहानियों का विषय बनाया। इस परंपरा के कहानीकारों में शेखर ोशी प्रमुख हैं।

शेखर ोशी का ान्म उ ा सामंती और रू.-परंपराओं वाले परिवार में होने पर भी वे हमेशा आम आदमी के साथ खड़े होते हैं। यह अकस्मात नहीं है। बल्कि उन परिस्थितियों व अग्र ा लेखकों से मिली प्रेरणा की उप ा है ि न्हें उन्होंने आ ीवन देखा, भोगा और आत्मसात् किया है। गोर्की, राहुल, प्रेम ांद, यशपाल आदि की र ानाओं से मिली प्रेरणा के कारण उन्होंने परिवार की सामंती और रू. वादी मान्यताओं से मुक्ति पाया है।

साहित्य में उनका प्रवेश वास्तव में 'कोसी का घटवार' नामक कहानी से हुआ था ो हैदराबाद से निकलने वाली 'कल्पना' नामक पत्रिका के ानवरी

1957 ई. के अंक में प्रकाशित हुई थी। इसी कहानी से उनको विशेष ख्याति मिली। आरंभ से लेकर अब तक उन्होंने कुछ साठा कहानियों से यादा लिखी हैं। उनकी कहानी स ामु ा में 'शार्ट स्टोरी' होती है। इसलिए विभिन्न संकलनों में दोहराई ाने के बाव ूद उनके नौ संकलन हैं। वासतव में शेखर ोशी के लेखन की शुरुआत कविताओं से हुई और फिर मूलतः कहानियों पर केंद्रित रही। उनकी ि ास कहानी ने लोगों का ध्यान सब से यादा खीं ा था, वह थी 'कोसी का घटवार' और उसके कुछ दिनों बाद प्रकाशित कहानी 'बदबू' ये दोनों कहानियाँ उस दौर की सर्वाधिक ि ति कहानियों में से थी। सहसा इतनी ि ति हुई और आ ा भी प्रासंगिक बन गई हैं।

इनकी अधिकांश कहानियों की पृष्ठभूमि पर्वतीय ीवन और औद्योगिक परिवेश रही है। इसके साथ उन्होंने शहर के निम्नमध्यवर्ग और मध्यवर्गीय ीवन को अपनी गहरी संलग्नता से उद्घाटित किया है। उन्होंने रो ामर्रा के गैर ारूरी से लगते, छोटे-छोटे विषय की बड़ी कहानियों को रूप दिया है। इनकी कहानियाँ, संभवतः हिंदी कहानी में पहली बार, औद्योगिक परिवेश के ीवन की दस्तक देती हैं।

शेखर ोशी की शुरुआत की अधिकांश कहानियाँ 'सह ा' ही नहीं आसान किस्म की कहानियाँ हैं। लेकिन उनकी आसानी में सह ाता ि ास तरह शामिल है-वह उस आसानी को आसान नहीं रहने देती। उनकी 'दा यु' कहानी एक हद तक भावुकता से ग्रस्त है। लेकिन भावुकतापूर्ण कहानी होकर भी 'दा यु' भावुकता को रेखांकित नहीं करती। वह खौफनाक वर्ग भेद ो अपने घर परिवार और प्रदेश के आदमी को भी अपना आदमी नहीं रहने देता और इस तरह आदमी को आदमी नहीं रहने देता। 'दा यु' कहानी में वर्ग-भेद या वर्ग ारित्र का कोई फार्मूला नहीं है। वह बेहद-सह ा तथा आसान किस्म की

कहानी है पर उस दौर की सारी कहानियों में वर्ग भेद की वास्तविकता को इतनी सह ाता के साथ उ ागर करनेवाली कोई अन्य कहानी नहीं मिलती।

शेखर ोशी की कहानियों में शिल्प और संवेदना के अंतःसंबंधों की सुरम्य र ाना के साथ ीवन और समा ा के सह ा उन्नयन एवं परिवर्तनकारी दृष्टि के प्रति दायित्वबोध साफ दृष्टिगो ार होता है। कथात्मक गठन में भाषा के सूक्ष्म उपयोग का उन ैसा आधुनिक बोध हिंदी कहानी में अपरि ित है। उनकी कहानियों में अक्सर पहला वाक्य बड़ा अर्थवान होता है। लेकिन उसकी अर्थवत्ता का पता कहानी के अंत में ालता है। 'कोसी का घटवार' में पहला वाक्य है 'गुसाई का मन ि लम में नहीं लगा' पन ाक्की के घटवार की उदासी का संकेत है यहाँ और वही कथा का केंद्र बिंदु भी है।

शेखर ोशी यथार्थ और पाठक के बी ा एक गैप छोड़ते हैं। एक अंतराल रहता है ि ासमें आदर्श और यथार्थ दोनों की गुं ाइश रहती है। वह कहानियों में टिप्पणियाँ करने से ब ाते हैं। शब्दों के मामले में मितव्ययी हैं। इसीलिए यथार्थ और पाठक के बी ा के अंतराल के कारण उनके यहाँ 'बोला' ि ातना महत्वपूर्ण है, उतना ही अबोला भी। पहले वह पाठक को अपनी विश्वसनीयता की गिरफ्त में लेते हैं और फिर उसे निष्कर्ष पर पहुँ ाने के लिए छोड़ देते हैं। अत्यन्त सह ा और ठंडी भाषा के माध्यम से ये कहानियाँ हमारे समक्ष ि ास यथार्थ का उद्घाटन करती हैं, उसके पीछ समकालीन ान ीवन की बहुविध विडंबनाओं को महसूस किया ा सकता है। सपनों की वास्तविकता से अपरि ित ब ों की खुशी हो या बिरादरी की दलदल में फँसे व्यक्ति की मनोदशा लेखकीय दृष्टि उन्हें एक अर्थ-गांभीर्य से भर देती है। उसके पास आदर्शवादी निर्णय है तो उनके सामने खड़ा कठोर और भयावह यथार्थ भी है।

शेखर ोशी की अनेक कहानियाँ एक अर्थ में आँ ालिक कहानियाँ भी हैं। उनकी कहानियों का कथां ाल अलमोडा पहाड़ के आस-पास के गाँव हैं। आँ ालिक कहानियों में अं ाल का प्राकृतिक परिवेश के ित्रण के बिना अं ाल का स ाीव ित्रण संभव नहीं हो सकता इसीलिए शेखर ोशी अपनी आँ ालिक कहानियों में प्रकृति-ित्रण को विशेष स्थान दिया है। उन्होंने ांगलों का, पशु-पक्षियों का, पेड़-पौधों का, सूर्य- ांद्र का, पर्वतों-नदी, नालों आदि का सुंदर सह ा ित्रण किया है। िास से उस अं ाल का प्राकृतिक परिवेश पाठकों के सामने आता है। 'कोसी का घटवार' ैसी कहानियाँ अपनी आं ालिकता के कारण ही विशेष रूप से ाित हुई थीं। लेकिन इसमें आँ ालिक कहानी का व्याकरण नहीं मिलेगा। इस रूप में वह आं ालिक कहानी भी नहीं। बल्कि स्मृति से टटोलें तो उसकी परंपरा के अवशेष भटकते भटकते 'उसने कहा था' से ाा ुड़ेंगे। वैसी ही भावुकता भरी स्मृतियाँ की कहानी, वैसा ही फौ ाी टाट।

उस अं ाल की पहाड़ी गाँवों में व्याप्त ाातिगत भेद-भाव को हम समर्पण, गलता लोहा, हलवाहा आदि कहानियों में देख सकते हैं। 'समर्पण' कहानी का दुकानदार ाति भेद के कारण निम्न ाति के ब ुवा को गिलास धो लाने का आदेश देता है। कुछ लोग उ ा ाति के अधिकारों को स्वीकार करने के लिए तैयार हो ाते हैं ैसे 'गलता लोहा' कहानी का धनराम। वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं सम ाा बल्कि वह इसे मोहन का अधिकार ही सम ाता रहा था। क्योंकि मोहन एक ब्राह्मण हैं। इसी प्रकार अपनी ाति के प्रति प्रेम भाव 'समर्पण' कहानी के ब ुवा पात्र में देख सकते हैं। वह अपनी बिरादरी के ही एक व्यक्ति के क्रिया कलाप देखकर आश ार्य ाकित होता है।

शेखर ोशी ने अं ाल के वर्गगत भेदभाव का ित्रण 'दा यु, गलता लोहा, हलवाहा' आदि कहानियों में किया है। गाँव के लोग बड़े अंधविश्वासी होते हैं। भूत-प्रेत, ादू-टोना पर अधिक विश्वास करते हैं। इस प्रकार की सामाि ाक व्यवस्था अं ाल को विशिष्टता प्रदान करती है। इससे उस विशिष्ट अं ाल का परि ाय मिलता है। शेखर ोशी की कहानियों में वर्णित ग्रामीण समा ा में अनेक प्रकार के व्यक्तियों के होते हुए भी कोई व्यक्ति विशेष रूप से प्रमुख नहीं है। कहानियों में कई पात्रों की प्रधानता होने पर भी कोई नायक नहीं है वह केवल उस अं ाल की सामाि ाक व्यवस्था के अंग मात्र हैं। वह सामाि ाक व्यवस्था विशिष्ट अं ाल के पहाड़ी गाँव के ान- ीवन का ही परि ाय देती है।

अल्मोडा पहाड़ी अं ाल में ीनेवाले निम्न मध्यवर्ग और मध्यवर्ग के लोग विभिन्न पेशे के लोग हैं ैसे-हलवाहा, शिल्पकार, घटवार, बॉय (होटल में काम करनेवाला) फोटोग्राफर (Photographar), लोहार, कथाकार, मछलीवाला, मूंगफलीवाला आदि। निम्नमध्यवर्ग के होने के कारण आँ ालिक कहानियों में आर्थिक दबाव विशिष्ट रूप से दिखाई देता है। 'सिनारियो' कहानी में आमाँ की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। उसके पास माि ास खरीदने के लिए भी पैसा नहीं है। इसीलिए वह सरुली को किसी और के मकान से अंगारे तुषार माँग कर लाने के लिए भे ाती है। 'हलवाहा' कहानी के ीवानंद को म ादूरी पर हलवाही करवाने की क्षमता न होने के कारण वह स्वयं हल ालाता है। इस प्रकार शेखर ोशी अपनी अनेक कहानियों में उस अं ाल की आर्थिक स्थिति का ित्रण बहुत ही संवेदनात्मक रूप में करते हैं।

आं ालिक कहानियों में किसी व्यक्ति विशेष की कथा नहीं होती। उसमें किसी अं ाल विशेष की समग्र अभिव्यक्ति होती है। इसलिए इन कहानियों में कोई व्यक्ति नायक नहीं होता बल्कि समस्त अं ाल ही यहाँ पर नायक के रूप में ित्रित होता है। शेखर ोशी की कहानियों में ित्रित अं ाल अल्मोडा, अल्हड िले के पहाड़ी गाँव है। इसी पहाड़ी अं ाल को नायकत्व मिला है। उनकी कहानियों में एक-एक पात्र और उनके पेशे के द्वारा उस अं ाल की समस्या पर लेखक ने ोर दिया है। 'हलवाहा' कहानी में ीवानंद के द्वारा मध्यवर्गीय किसानों की समस्याओं को प्रतिपादित किया है तो 'गोपूली बुबु' नामक कहानी से उस अं ाल में वैद्य की कमी से हुए प्राण हानि को स्पष्ट करते हैं। इसी प्रकार 'गलता लोहा' कहानी से एक निम्न वर्गीय ब्राह्मण का बेटा नि ी ीवन में एक लोहार बन ाता है। इस प्रकार कहानियों में सारे पात्र उस अं ाल के अंग मात्र हैं। वास्तव में अं ाल ही नायक है।

शेखर ोशी ने उस अं ाल के लोगों के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, पर्व-त्यौहार आदि का ित्रण अपनी कहानियों में किया है। अल्मोडा पहाड़ी अं ाल एक पिछड़ा हुआ व ृ देहात होते हुए भी भारत के पिछड़े हुए गाँवों या अं ालों का प्रतिनिधित्व करता है। एक प्रकार से आँ ालिकता प्रतीकात्मक स्तर पर क्षेत्रीय भी है। उन्होंने अं ाल विशेष की लोक भाषा का पात्रानुकूल प्रयोग किया है।

शेखर ोशी के सृ ानशील ीवन का बड़ा हिस्सा कारखानों में बीता है। इसीलिए उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर 'डांगरीवाले' कहानी संग्रह की कहानियों में कारखानों में होनेवाले वर्ग संघर्ष का स ीव ित्रण किया है। इनकी कई कहानियों में ैसे-दा यु, आखरी टुकड़ा, गलता लोहा,

डांगरीवाले, आशीर्व ान, सीि ़याँ, हलवाहा, बो ा, बंद दरवा ो खुली खिड़कियाँ, समर्पण आदि में वर्ग संघर्ष का ि ात्रण हुआ है।

समय एक गतिशील प्रक्रिया है ो निरंतर बदलती हुई आगे ब ़ती है। समय के साथ समा ा में भी अनेक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों से कोई भी स ाग साहित्यकार अपरि ित नहीं रह सकता है। वह समय के साथ समा ा में हो रहे परिवर्तनों को अपने साहित्य के द्वारा पाठकों के सामने लाता है। इसी प्रकार शेखर ोशी ने युगीन समस्या को अपनी संपूर्ण ोतना और अनुभूति में उतारा है, इसमें संदेह नहीं। परिवर्तन की इस तीखी प्रतिक्रिया के कारण ही वे 'दा यु', 'कविप्रिया', 'कोसी का घटवार' और 'बदबू' ैसी श्रेष्ठ कहानियाँ लिख सके।

सन् 1950 से भारतीय समा ा में व्यापक परिवर्तनों का दौर शुरू हुआ था ैसे औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकीकरण। वास्तव में ये तीन क्रांतियाँ भारत में एक साथ प्रवेश की हैं और ये तीनों क्रांतियाँ एक दूसरे से संबंधित भी हैं क्योंकि उद्योग क्रांति के कारण औद्योगीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई है ि ासमें यांत्रिकीकरण का महत्वपूर्ण स्थान है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया के साथ स्वभावतः शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है। इन तीनों के समग्र रूप को ही आधुनिकीकरण कहते हैं।

औद्योगीकरण के फलस्वरूप उप ाऊ ामीन कारखानों में बदलने लगी और किसान स्वयं म ादूर बनने लगे। उस समय की इस समस्या को शेखर ोशी 'आखरी-टुकड़ा' और 'हलवाहा' शीर्षक कहानियों के द्वारा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं तो कारखानों में म ादूरों पर होनेवाले शोषण या ि ात्रण 'बदबू' और 'सीि ़याँ' कहानियों में करते हैं।

उद्योग क्रांति की व ाह से शहरीकरण का उदय हुआ है। रो ागार की तलाश में ग्रामीण लोग शहर आते हैं लेकिन गाँव या पहाड़ के प्रति उकना लगाव कम नहीं होता। इस विषय को 'व्यतीत' और 'टूटन' कहानियों में प्रस्तुत किया गया है। नौकरी और नई पीि.यों की सुविधाओं की व ाह से शहरी लोग वापस गाँव नहीं आ पाते परिणाम स्वरूप निराशा का शिकार बन ाते हैं। इस समस्या को उन्होंने 'विस ाि' और 'निर्णय' कहानियों में प्रस्तुत किया है। औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकीकरण से उत्पन्न समस्याएँ ैसे-पारिवारिक विघटन, बेरो ागारी आदि का ाित्रण अपनी कहानियों में दिखाते हुए उन समस्याओं का समाधान कविप्रिया, गलता लोहा ैसी अनेक कहानियों के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

सन् 1985 के बाद औद्योगिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है अब पेशे का आधार ाातिगत न रहकर व्यक्तिगत बन गया है। समय के साथ आये हुए इस महत्वपूर्ण परिवर्तन को उन्होंने 'हलवाहा' और 'गलता लोहा' कहानियों में प्रस्तुत किया है।

यही नहीं उन्होंने अपने समय की अनेक समस्याओं ैसे-बाल विवाह, ाकित्सा का अभाव, वर्ग संघर्ष, ाति और वर्गगत भेद-भावों का ाित्रण 'शुभो दीदी' 'गोपुली बुबु', 'दा यु', 'समर्पण' आदि कहानियों में किया है।

भारत की और एक महत्वपूर्ण क्रांति भूमंडलीकरण है ाि सकी शुरुआत सन् 1991 से मानी ा सकती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है ाि सका क्षेत्र समस्त भूमंडल है। अर्थात् इस प्रक्रिया के तहत स्वागत, प्रतिबंध या सीमाएँ नहीं होंगी। इस का यह भी अर्थ हुआ कि पश्ि ाम में विभिन्न स्वतंत्र राष्ट्रों के द्वारा अपनी प्रभुसत्ता के अधीन ो भौगोलिक सीमाएँ निर्धारित की गई थीं, उन्हें भूमंडलीकरण ुनौती देता है। इस प्रकार भूमंडलीकरण एक ऐसी भौगोलिक

प्रक्रिया है ो राष्ट्र-रा य की सीमाओं का अतिक्रमण करती है। भूमंडलीकरण के इस दौर में शोषण का रंग, रूप आकारहीन होता गया है। ि ासका शोषण होता है वे ही शोषक का पोषण करते हैं उसके पक्ष में लड़ते हैं। इस परिवर्तन का ि ात्रण शेखर ोशी 'बदबू' और 'बो ा' शीर्षक कहानियों में करते हैं।

भूमंडलीकरण द्वारा भारतीय समा ा में संर ानात्मक बदलाव आ ाुका है। पश्ि ाम की संस्कृति के आक्रमणकारी प्रभाव से भारतीय संस्कृति और सभ्यता बदल रही है। संस्कृति में आये हुए इन परिवर्तनों को हम विडुआ, डांगरीवाले, रंगरूट आदि कहानियों में देख सकते हैं। भूमंडलीकरण की व ाह से देशों के बी ा की दूरियाँ कम हो गईं। परिणामस्वरूप सारे संसार में हर एक देश अपनी ीाज़ों को कई देशों में बे ाने लगा। इस प्रकार भूमंडलीकरण ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे ीवन पर हावी कर दिया कि कोई भी वस्तु हाशिए पर नहीं रह ाती बल्कि इसके विपरीत वह ीवन का मुख्यांग बन ाती है।

'उपभोक्तावाद' का शिकार मध्यवर्ग है ो अपना व्यवहार तथा ीवन-शैली उ ातर बनाना ाहता है। मध्यवर्ग अब उपभोक्ता के रूप में आनंद के अनुभव को एक कर्तव्य मानने लगा है। वह खुश रहना ाहता है। केवल खुश रहना ही नहीं खुश दिखना भी ाहता है और गतिशील। एक अर्थ में वह पैसा ही प्रसन्नता का ि ह्न बन ाता है ो उसे वस्तुओं से मिलता है। यह उपभोग का 'आधीक्यीकरण' कहलाता है। उपभोक्तावाद के कारण समा ा के मध्यवर्ग में ो परिवर्तन आया है उसे शेखर ोशी ने 'डांगरीवाले' शीर्षक कहानी में सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। उपभोक्तावाद के इस दौर में मूल्यों में बदलाव आया है। ीवन मूल्यों में बदलावों को

शेखर ोशी ने 'नारंगी बीमार है', ' ी ह ूरिया', 'परिक्रमा', 'किं करोमि ानार्दन', 'मेंटल' आदि कहानियों में प्रस्तुत किया है।

लेखक ने परिवर्तनों के साथ-साथ अनेक सामा ाक समस्याओं को भी अपनी कहानियों के द्वारा प्रस्तुत किया है ैसे अकेलापन, मृत्युबोध, पी ़ियों में अंतर, आपसी संबंध, असफल प्रेम, वृद्ध और विधवाओं की उपेक्षा आदि शेखर ोशी की कहानियों के माध्यम से हम तत्कालीन समा ा और समय का लेखा- ोखा प्राप्त कर सकते हैं। लेखक ने अपने समय के समा ा को और उसकी स्थितियों को अपने र ाना-संसार के माध्यम से प्रस्तुत करने का बीड़ा उठाया है। स ाग र ानाकार अपने समय और समा ा को न ार अंदा ा करके किसी महान् वृत्ति की र ाना नहीं कर सकता, बल्कि कोई बड़ा र ानाकार अपने समय और समा ा से ुड़कर ही महान बनता है। शेखर ोशी भी उनमें से एक हैं।

* * *

ग्रंथ सू ी

आधार ग्रंथ

1. ोशी, शेखर, कोसी का घटवार, नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद 1958
2. ोशी, शेखर, साथ के लोग, संभावना प्रकाशन, हापुड़ 1978
3. ोशी, शेखर, नौरंगी बीमार हैं, रा ाकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली 1990
4. ोशी, शेखर, डांगरी वाले, आधार प्रकाशन, पं ाकूला 1994
5. ोशी शेखर, प्रतिनिधि कहानियाँ, रा ाकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली 1994
6. ोशी, शेखर, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली 1997
7. ोशी, शेखर, ब ो का सपना, संभावना प्रकाशन, हापुड़ 2004
8. ोशी, शेखर, मेरा पहाड़, रेमाधव पब्लिकेशन्स, गाि ियाबाद 2008

सहायक ग्रंथ

1. मार्कण्डेय, कहानी की बात, लोक भारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1984
2. वर्मा, ानेश्वर, हिंदी काव्य में मार्क्सवादी ोतना, रामबाग प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1974
3. कडवे, डॉ.ह.के, हिंदी उपन्यासों में आँ ालिकता की प्रवृत्ति, अन्नूपर्णा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1978

4. ैन, नगीना, आँ ालिकता और हिंदी उपन्यास, अक्षर प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 1976
5. श्रीवास्तव, बीना, हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्ग, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981
6. सक्सेना, आदर्श, हिंदी के आँ ालिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि, सूर्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1971
7. कुमार, डॉ.सुवास, आँ ालिकता, यथार्थवाद और फणीश्वरनाथ रेणु, साहित्य सहकार प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1998
8. कोटमे, डॉ.पी.वी., श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान, ांद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2004
9. गुप्त, डॉ.विश्वंभर दयाल, उपन्यास का समा ा शास्त्र, श्री पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1976
10. दिनकर, रामधारीसिंह, संस्कृति के ाार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1956
11. पाटील, आनंद, संस्कृति बनाम अपसंस्कृतीकरण, उ ावल ध्रुवतारा प्रकाशन, संस्करण 2010
12. लाल, डॉ.लक्ष्मीनारायण, हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, साहित्य भवन प्रकाशन, संस्करण 1996
13. मोहन, डॉ.नरेंद्र, आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी कहानी, ायश्री प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1982
14. यादव, रा ोंद्र, कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1996
15. सिंह, योगेंद्र, भारत में सामाि ाक परिवर्तन, ावाहर पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण 1999

16. भट्टा ार्य, प्रो.सब्यसा ी, आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, रा ाकमल प्रकाशन, संस्करण 1990
17. मोहन, डॉ.नरेंद्र, समकालीन कहानी की पह ान, प्रवीण प्रकाशन, संस्करण 1978
18. डॉ.बंशीधर, हिंदी के आँ ालिक उपन्यासःसिद्धांत और समीक्षा, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983
19. मेहरोत्रा, रा ोंद्र, कहानी और कहानी, प्रतिमान प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1979
20. सिंह, डॉ.श्रीमती प्रेम, समकालीन कहानी और उपेक्षित समा ा, नटरा ा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2009
21. सिंह, डॉ.लाल साहब, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युग बोध, अभय प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2005
22. तिवारी, डॉ.राम ंद्र, हिंदी का गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणासी, तृतीय संस्करण 1992
23. शर्मा, सुभाषिनी, स्वातंत्र्योत्तर आँ ालिक उपन्यास, सं ाय प्रकाशन, दिल्ली 1976
24. गुप्त, ज्ञान ंद्र, आँ ालिक उपन्यासःअनुभव और दृष्टि, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995
25. राय, डॉ.सुधीर कुमार, ग्रामीण सामा ाक संर ाना और परिवर्तन, नीलकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2006
26. देशमुख, डॉ.धरमेश, आठवें दशक की हिंदी कहानी में ीवन मूल्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1994
27. गर्ग, डॉ.भैरुलाल, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में सामा ाक परिवर्तन, ात्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1979

28. राय, डॉ.सुबेदार, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी का इतिहास, अनुभव प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1981
29. नेहरू, ावाहरलाल, विश्व इतिहास की ालक, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, संस्करण 1976
30. मदान, इंद्रनाथ, प्रेम ंदः एक विवे ान, रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1968
31. कुमार, डॉ.सुवास, आधुनिक हिंदी कविताः आत्मनिर्वासन और अकेलेपन का संदर्भ, भारतीय विद्या प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1989
32. मधुरेश, आ ा की हिंदी कहानीः वि ाार और प्रतिक्रिया, र ाना प्रेस, पटना, संस्करण 1971
33. मालती, डॉ.के.राम, साठोत्तर हिंदी कहानी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1991
34. त्रिपाठी, विश्वनाथ, कुछ कहानियाँः कुछ वि ाार, रा ाकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1998
35. कुमार, डॉ.सुवास, कथा का आँ ालिक शिल्प और राष्ट्रीयता का प्रश्न
36. श्रीवास्तव, ओंकारनाथ, हिंदी साहित्यः परिवर्तन के सौ वर्ष
37. शर्मा, डॉ.महेंद्र, हिंदी उपन्यासः सिद्धांत और विवे ान, वाणी प्रकाशन, प्रथम संसकरण 1963
38. ातुर्वेदी, महेंद्र, हिंदी उपन्यासः एक सर्वेक्षण, संस्करण 1970
39. अग्रवाल, अशोक, मीडिया और बा ाारवाद, राधा कृष्ण प्रकाशन, प्र.सं.2002
40. तिवारी, अ ाय, आलो ाना के सौ बरस, श्री प्रकाशन, 1973
41. डी.आर.नागरा ा, साहित्य कथन
42. कुमार ैनेंद्र, समयसीमा और सिद्धांत, एकांत पब्लिकेशन्स, 2007
43. ठाकुर, डॉ.देवेश, मैला आं ाल की र ाना-प्रक्रिया

44. नारायण, बद्री, साहित्य और सामा ि क परिवर्तन, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1997

पत्रिकाएँ

1. हंस, सं.रा ेंद्र यादव, मा र्ि 1932
2. आ ाकल, मा र्ि 1995 (ाटिल सादगी का कथा-संसार-अरुण प्रकाश)
3. साक्षात्कार, फरवरी-मा र्ि 1993 (नौरंगी बीमार है-प्रभुनाथ सिंह)
4. अनुसंधान, अप्रैल-2011 (शेखर ोशी के कथा साहित्य में संवेदना का स्वरूप-डॉ.विक्रम सिंह)
5. आधारशिला, ानवरी-मा र्ि 2006 (शेखर ोशी से उमा गस्याल की बात ीत)
6. कसौटी, अंक 15
7. हंस, अप्रैल-1990
8. नया प्रतीक-वीरेंद्र सिंह, अप्रैल-1977
9. कतार, डॉ.सुवास कुमार, ानवरी- ून 1990
10. हँस, नवंबर 2001
11. आलो ाना, अप्रैल- ून, 2002
12. समकालीन भारतीय साहित्य, अक्तूबर-दिसंबर 1995, वर्ष-16, अंक-62
13. भारतीय लेखक, ानवरी-मा र्ि 2003
14. भारतीय लेखक, अक्तूबर-दिसंबर 2005
15. आधार शिला, सं.दिवाकर भट्ट 2006
16. आ ाकल, फरवरी 1987

* * *